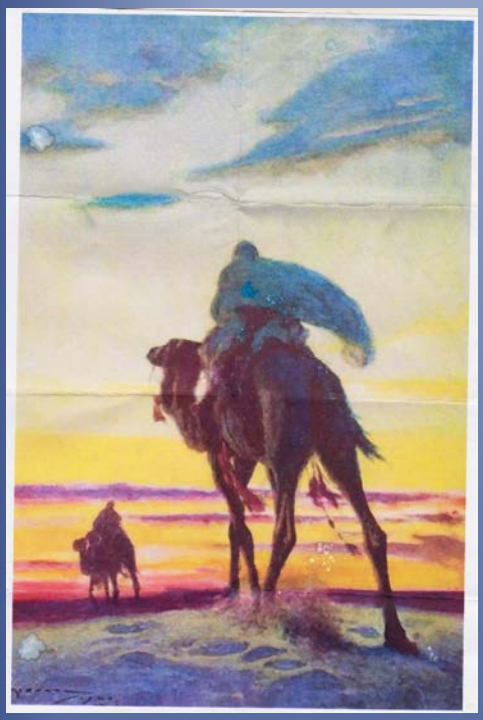

Madine se Manikpur tak

Az –Mir Syed Qutubuddin Muhammad Aquib

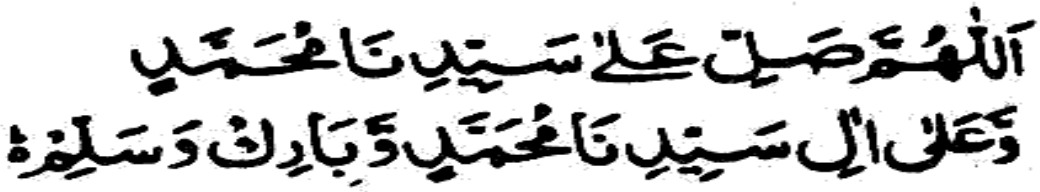

بسم الله الرحمن الرحيم

اللهم صل على سيدنا محمد
وعلى آل سيدنا محمد وبارك وسلم

नोट- ये किताब जिसका नाम मदीने से मानिकपुर तक है, तीन बाब पर मुश्तमिल एक किताब है जिसके पहले बाब मे आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अजदाद का ज़िक्र, दूसरे बाब मे आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदनी ज़िन्दगी और आपके अहले बैते पाक (अज़वाज व औलाद) का ज़िक्र, और तीसरे बाब मे सादात-ए-क़ुत्बिया ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर का ज़िक्र और इस ख़ानदान के जद् अमजद हज़रत ग़ौसुल आलमीन अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह और आपके बुज़ुर्गों का होगा जिसकी इब्तिदा हज़रत सैय्यदना इमाम ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु से होगी, ये किताब एक मुरत्तब करदह तज़किरह है जो उन अहेम तारीख़ी किताबों और रिसालों से तरतीब दिया गया है जिन्हे हिन्द और बैरूने हिन्द मे मुस्तनद और अहेम तारीख़ों मे शुमार किया जाता रहा है जैसे तारीख़ आईने अवध (हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी) तारीख़ अल बिदायह वन निहायह (अब्दुल रहमान इब्ने ख़लदून) तारीख़ तिबरी (इब्ने जरीर तिबरी) तारीख़ फ़रिश्ता (अबुल क़ासिम फ़रिश्ता) तारीख़ अल कामिल (इब्ने असीर) तारीख़ कड़ा व मानिकपुर (मुंशी अब्दुल्लाह खां अलवी) तारीख़ फ़िरोज़ शाही (ज़ियाउद्दीन बरनी) तारीख़ अल ख़ुलफ़ा (अल्लामा जलालुद्दीन सियुती) तारीख़ इब्ने हिश्शाम (अबु मुहम्मद अब्दुल मालिक इब्ने हिश्शाम) अन्साब अशराफ़ (अबुल क़ासिम अब्दुल सलाम हुसैनी हस्वी) ख़ानदाने मुस्तफ़ा (अल्लामा सैय्यद सईदुल हसन क़ादरी) तज़किरह सादाते क़ुत्बिया (डॉक्टर सैय्यद तुफ़ैल अहमद मदनी क़ुत्बी) जीवनी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की (सहबानुल हिन्द हज़रत मौलाना अहमद सईद) बहाजतुल असरार (इमाम अबुल हसन शतनोई) तसव्वुफ़ सिंध और अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी (डॉक्टर सिब्ते शब्बर ज़ैदी) और दीगर कई तारीख़ो अन्साब, रिसालों और आर्टिकल से तरतीब दिया गया है!

अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

क्या बयाँ हो शाने ख़ानदाने हज़रत अमीर कबीर (र.)

कह गयें बेसाख़्ता ये मख़दूम अशरफ़ जहाँगीर (र.)

अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

इन्तसाब

वालिदा माजिदा सैय्यदा अनीस फ़ातिमा बिन्त सैय्यद मोहम्मद हाशिम बांदवी रहमतुल्लाह अलैहा के नाम कि जिनके बलन्द किरदार और आला इख़लाक का आज भी ज़माना दादवर है-

ज़माना दादवर है आज भी
उनके हुस्ने सुलूक़ का
अन्दाज़ ही निराला था
हाशिम के बिन्त का

और

अपनी दादी सैय्यदा ख़ातून बिन्त सैय्यद यूसुफ़ अशरफ़ जायसी रहमतुल्लाह अलैहा के नाम कि जिनकी सख़ावत और हया आज भी मिसालआप है-

सख़ावत था जिनका वस्फ़
नाम जिनका था सैय्यदा
आलम था ये हया का
सरकी न सर से कभी रिदा

हमेशा आपके दुआओं का तलबगार
अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

हर्फ़े-अव्वल

सन् पाँच सौ इक्यावन (551) हिजरी मे मदीना तैयबा की सरज़मीं पर, ख़ानदाने रिसालत मे एक ऐसा नूर ज़हूर मे आया कि जिसके ज़रिये अल्लाह पाक को सरज़मीने हिन्द पर इस्लाम की इशाअत कराना था और काफिरों से इस सरज़मीं को पाक कराना था! हिन्दुस्तान मे उस वक़्त ऐसे ज़ालिम जाबिर और दुश्मनाने इस्लाम हाकिम हुकूमत करते थे कि जिनके वजह से मुसलमानों का सांस लेना भी मुश्किल गुज़र रहा था! कुफ्र और शिर्क का खुलेआम बोल बाला था वहीं ख़ुदा वाहिद की इबादत घरों के चार दिवारी मे महदूद होकर रह गई थी! हिन्दुस्तान का एक ख़ित्ता कड़ा कि जहाँ का हाकिम राजा जय चंद राठौर जो एक ज़ालिम जाबिर और दुश्मने इस्लाम राजा था उसने एक बुज़ुर्ग की उंगली सिर्फ़ इस सबब कटवा दिया कि वो दरियाए गंगा मे ग़ुस्ल बना रहें थे ये बात इनको इस क़द्र तकलीफ़ दे गई कि वो वहाँ से मदीना शरीफ़ तशरीफ़ ले गएं और वहाँ रौज़ा-ए-सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर ख़ूब रोएँ और फ़रियाद और शिकायत किया, रौज़ा-ए-सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से जवाब मिला कि घबराओ नहीं हिन्दुस्तान मे इस्लाम की इशाअत मेरे फ़रज़न्द "कुतुबउद्दीन" पर मुन्हसिर है!

अमीर कबीर सैय्यद कुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह वो हैं कि जिन्हें ख़ुद रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तरफ़ से हिन्दुस्तान जाने और फ़तेह की बशारत मिली ये किताब जो मैंने "मदीना से मानिकपुर तक" के नाम से लिखी ये आपकी हालाते ज़िंदगी पर मुश्तमिल एक किताब है जिसमे आप अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह की सवानेह हयात और आपके अजदाद और औलाद मानिकपुर का ज़िक्रे-ख़ैर आप क़ारीनकिराम के आँखों से गुज़रेगा हालांकि इससे पहले भी सैकड़ों किताबें आपकी शुजाअत और बुज़ुर्गी पर लिखी जा चुकी है लेकिन उनकी ज़बान उर्दू और फ़ारसी होने के सबब वो घरों के अलमारी की ज़ीनत बना दी गयीं इसलिये मैंने इस किताब की ज़बान हिंदी चुनी जिससे ज़्यादा से ज़्यादा लोग आसान और उम्दा तरीख़े से हज़रत अमीर क़ुतुबुद्दीन मदनी और आपके बुज़ुर्गों की वलायत और शुजाअत को जान सकें और हज़रत अमीर क़ुतुबुद्दीन मदनी के रूहानी फ़ैज़ जो आपके मज़ार-ए-मुबारक से जारी और सारी है फ़ैज़याब हो सकें कि जैसा की ख़ुद अमीर कबीर ने अपने मुताल्लिक़ फ़रमाया है-

انا المَلجالِمَن يَتَفَرعونّ اناالغوّاثُ لِلمُتَغَاوِثين ۝

तर्जुमा- मै हर उस शख़्स कि जाए पनाह और गुरेज़गाह हूँ
जो आहज़ारी करता है और अपनी इल्तिजा मेरे पास लाता है
और मै फ़रियाद करने वालों का फ़रियाद दर्स हूँ

और जैसा कि हज़रत मख़दूम मोईनुलहक़ झूँस्वी रहमतउल्लाह अलैह ने अपनी किताब "मँम्बउल अन्साब" मे आपके मुताल्लिक़ फ़रमाया है कि हज़रत मीर सैय्यद कुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ऐसे मक़बूल बारगाहे इलाही बुज़ुर्ग हैं कि जो कोई आपकी दरगाह मे पूरी अक़ीदत के साथ हाज़िर होता है वो मक़सद दिली पा लेता है!

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मेरी यही दुआ है कि वो हम सबको अमीर रहमतउल्लाह अलैह के रुहानी फैज़ से बरकत हासिल करने की ज़्यादा से ज़्यादा तौफ़ीक़ दे और ख़ानवादा-ए-क़ुत्बिया कबीरिया के तमाम बुज़ुर्गों और औलादों का बेहद एहतिराम और हुरमत का शर्फ़ हासिल करने की तौफ़ीक़ और रफ़ीक़ दे कि जैसा कि हर दौर के बड़े-बड़े बादशाहों वलियों और बुज़ुर्गों अब्दालों ने किया है! कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह जिनका मज़ार शरीफ कड़े ज़िला कौशाम्बी मे है और जिनकी मज़ार से क़सीर तादाद मे लोग फ़ैज़याब होते है उनके मुताल्लिक़ मुसन्निफ़ तारीख़ आईने-अवध सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (मुसन्निफ के जद् मोहतरम) ने लिखा है कि कड़क शाह अब्दाल जो एक बहुत बड़े मज्ज़ूब और वली थें मशहूर है कि वो अपने जज़्ब की कैफ़ियत से हमेशा बरैहना रहते थें बड़े-बड़े सलातीन और

बुज़ुर्ग हद दर्जे एहतिराम फ़रमाते थे मगर आपके जलाल से कोई आपके पास जा न पाता था मगर अमीर सैय्यद रुक़्नुद्दीन रहमतउल्लाह अलैह जो अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के पोते थें और सादात ख़ानकाह मानिकपुर के जद् मोहतरम थें उनको देखकर कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह को जो भी कपड़ा मिलता उसे उठाकर अपने तन पर जल्दी से ओढ़ लेते और फ़रमाते यही एक शख़्स है जिसको देखकर मुझे शर्म आती है! कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह अमीर सैय्यद रुक़्नउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह का हद दर्जे एहतिराम फ़रमाते और आपसे बेपनाह शफ़क़त और मोहब्बत का इज़हार करते थें आपसे जब भी वो मिलते यही कहते “तू सरदार है और तेरी औलादें भी सरदार रहेंगी तेरे फ़रज़न्द मेरे फ़रज़न्दैन है जो कोई उनको तकलीफ़ पहुँचाएगा उसके हक़ मे अच्छा न होगा! ये दुआ आज भी इनके नस्ल मे चलती चली आ रही है आज भी कोई इस ख़ानदान से बुग़्ज़ और इनाद रखता है उसके हक़ मे बेहतर नही होता है! मशहूर है कि हज़रत मख़दूम अशरफ़ किछौछवी रहमतउल्लाह अलैह ने अपने मलफूज़ात में हज़रत अमीर क़ुतुबुल अक़ताब ग़ौसुल आलमीन अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह के ख़ानदान के मुताल्लिक़ सुल्तान बलबन के सादात और अशराफ़ के नसब की तहक़ीक़ करवाने पर यहाँ तक इरशाद फ़रमाया ''कि सादात-ए-कड़ा जो सादात-ए-हसनी हैं उनके शान मे मेरे पास कोई कलाम या अलफ़ाज़ नही है यानी वो बेनज़ीर हैं! अल्लाह तबारको तआला हम सबको ज़्यादा से ज़्यादा सिलसिला-ए-क़ुत्बिया कबीरिया मे दाख़िल होने का शर्फ़ हासिल कराये और इस ख़ानवादे की मोहब्बत हमेशा-हमेश के लिए दिलों मे क़ायम हो जाये जो हमारे दुनिया मे फ़लाह पाने और आख़िरत मे निजात का सबब बन सके आमीन.....चूँकि हर किताब की शुरूआत हम्दे रब्बे करीम और नात पाक रसूले करीम से होती है इसी वजह से मुसन्निफ़ भी अपने ही हाथों लिखी हम्दो मुनाजात से इस किताब की शुरूआत करता है और आप से दुआओं का तालिब है ..... अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

हम्द रब्बे कायनात

- उठाया क़लम जो मैने लिखने को
रब की हम्दोसना

आँखों में छा गया अश्क़बार
दिल मे थी दरिया रवां

- जो किया ग़ौरो फिक्र उसकी अतातों पर
तो जाना किया कितना अदा शुक्र उसकी न्यामतों पर

- किया उसने बंदो को पैदा इसलिये
कि जारी रहे इबादत के सिलसिले

- न हुआ है ना हो सकेगा शुक्र अदा
उस रब्बे कायनात का

- कहाँ उसकी बेपनाह न्यामतें
और कहाँ हम बंदे आसिया

नात रसूले कायनात

- साया न पाया गया मोहम्मदे अरबी का ज़मीं पर
  न था न है न होगा उनसा ज़मीं ता अर्शे बरीं पर
- मिला हुस्न यूसुफ़ को अज़ तुफ़ैले मोहम्मदे अरबी
  न गुज़रा है न गुज़रेगा मेरे मोहम्मद सा हसीं
- हुआ ख़त्म सिलसिला नबूवत का उनपर
  न आया है न आएगा बाद उनके नबी कहीं पर
- कि यक ने बनाया है यक्ता नबी को
  मिला न ये रुत्बा कहीं भी किसी को
- कि भेजे है रब उनपर दरूदो सलाम
  और बोले है भेजो दरुद, हर ख़ासो-आम
- लिखे ये क़लम क्या तौसीफ़े नबी
  बयाँ क्या करे ये ज़ुबाने हक़ीर
- ख़ुदा ख़ुद भी शैदा है प्यारे नबी का
  और “आक़िब” है उनके दर का फक़ीर

(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)

नात पाक शाने वजहे तख़लीके कायनात

शजर था न हजर था न था चांद-तारा
ज़मीं थी न ज़मां था न था ये सय्यारा
न गुल से कोई गुलिस्तां था महका
न बागों मे कोई परिंदा था चहका
था रौशन जहां मे ख़ुदा और ख़ुदाई
फिर एक दिन ख़ुदा कि ख़ुदाई जोश खाई
किया उसने ख़ुद से एक नूर जुदा
कि पैदा हुए उस से रसूले ख़ुदा
फिर अरबहा दरख़्तों पर वो हुआ जलवा नुमा
इबादते ख़ुदा मे वो नूर हुआ मुब्तिला
किया उसने इबादत ख़ुदा कि इस तरह
कि बहने लगा नूर हो के ज़र्रा-ज़र्रा
उसी नूर से रब ने बनाया अर्शे बरीं
और दुनिया बनाई इतनी हसीं
उसी नूर से आफ़ताब है बना
बने चांद तारे और दोनों जहाँ
उसी नूर से है शजर सब बने
बने सब फ़रिश्ते बशर सब बने
न मालूम और भी क्या-क्या बना
कि जाने नबी और उनका ख़ुदा
फ़क़त “आक़िब” लिखता है इतना यहाँ
सिमट कर समाया है नबी मे दोनों जहाँ
(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)

ज़िक्र नूरे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

हर सुख़न पर ख़ुदा का नाम लिया मैंने यूँ हम्द तमाम किया और ख़ुदा के हम्द के बाद नज़र दरूदो सलाम बारगाहे ख़ैरुलानाम किया! अल्लाह तबारको तआला ने ख़ुद से एक नूर जुदा किया और उसको अपने हिजाबे रहमत मे रख दिया बारह हज़ार (12000) साल तक वो नूर ख़ुदा के हिजाबे रहमत मे रहा फिर उसी नूर से परवरदिगार ने हर कुछ पैदा किया! जब ख़ुदा ने पूरा बज़्म सजा लिया तो उसकी क़ुदरत ने चाहा कि उस नूर को कि जिसके लिये ये पूरा बज़्म सजाया है दुनिया मे जलवागर किया जाए तो उसने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया! जब आदम अलैहिस्सलाम बनकर तैयार हुए तो वो नूरे मुक़द्दस अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम के पेशानी मे जलवागर किया और तमाम मलाइका को ये हुक्म दिया कि आदम अलैहिस्सलाम को सजदा करें ये हुक्म पाते ही तमाम मलाइका आदम अलैहिस्सलाम के सजदे को झुक गएं सिवाए एक जो उस नूरे पाक से बुग़्ज़ और इनाद रखता था वो ये सोचता था कि वही ख़ुदा की बारगाह में सब से ज़्यादा मग़बूल है और उसी ने ख़ुदा की सबसे ज़्यादा इबादत किया है लेकिन उसके कोई सजदे उसके काम न आएं और नूर की ताज़ीम बजा न लाने के सबब ख़ुदा ने उसे लानत का तौक़ पहना दिया जिस सबब वो इबलीस मरदूद कहलाया! अल्लाह पाक ने आदम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि "ऐ आदम! अगर मुझे इस नूर को दुनिया मे रौशन न करना होता तो मुझे अपने इज़्ज़त की कसम तुझे भी पैदा न फ़रमाता! आदम अलैहिस्सलाम इस दुनिया मे उतारे गएं और आपकी औलादें इस दुनिया मे फलने फूलने लगी यहां तक कि हज़रत शीस अलैहिस्सलाम को आपकी औलादों मे अलग पैदा फ़रमाया गया और बाद आपके हज़रत शीस अलैहिस्सलाम को नबूवत का ताज पहनाया गया और वो नूर हज़रत से आप मे मुन्तक़िल हुआ फिर आपके बाद आपके फरज़न्द हज़रत आनूश ने इस दुनियाए फ़ानी को ख़ुदा वादहू की इबादत के लिए कोशा रखा! इस वक़्त आदम अलैहिस्सलाम की औलादों मे जितने भी लोग थें वो दो गिरोह मे बट चुके थें एक तो वो जो हज़रत आनूश के बताए हुए रास्ते पर चलते थें और दूसरे वो जो इबलीस के बहकावे मे थें यानी बुत परस्ती करने वाले जो ख़ुद ही बुतों को बनाते और उनसे मन्नतें और मुरादे मांगते मतलब ये कि वो पूरी तरह इबलीस के बहकावे मे थें! चूँकि इबलीस ने ख़ुदा से वादा किया था कि मै तेरे बंदो को हमेशा वरग़लाता रहूँगा और उन्हें तुझसे दूर रखूंगा कि जिनके सबब मै तुझसे दूर हुआ और तेरे लानत का हक़दार हुआ! फिर वो नूर हज़रत आनूश से पाक और मुक़द्दस लोगों मे कि जिन्होंने सदाए हक़ बुलंद रखा और दुनिया को इब्लीस के मक्र और फ़रेब से बचाए रखा यके बाद दीगरे मुन्तक़िल होता रहा यहाँ तक कि उस नूरे मुक़द्दस को हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की पेशानी मुबारक मे जलवागर किया गया और आपको नबूवत और रिसालत के मंसब से सरफ़राज़ किया गया और आपके बाद हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम को इस मंसब पर रौनक़ अफरोज़ किया गया और आपके बाद सिलसिला दर सिलसिला वो नूर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम में जलवागर हुआ! अपने अपने वक़्त मे तमाम नबीयों और रसूलों ने उस नूरे मुक़द्दस (जो हुज़ूर पुर नूर शहेंशाहे कुल कायनात फख़्रे बनि आदम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शक्ल में इस दुनिया मे रौशन हुई) की आमद का मुश्दह सुनाते रहें और नूर की ताज़ीम बख़ूबी बजा लाते रहें और इबलीस के मक्र से लोग़ों को महफ़ूज़ करने मे कोशा रहें! आज कुछ ऐसे फिरक़े टहल रहें हैं जो इबलीस मरदूद से बहुत मुतास्सिर हैं और उसके हर अमल से उन्हें बहुत लगाव है और इसी सबब उन्हें भी उस नूरे मुक़द्दस से और उस नूरे मुक़द्दस से वाबस्ता हर चीज़ों से बहुत ख़लिश है (अफ़सोस सद अफ़सोस उनकी किस्मत पर) ऐसे फिरक़े और लोगों से मुसन्निफ़ सिर्फ़ इतना कहना चाहेगा कि.....

- *हर दौर मे तारीख़ के औराख़ है जब पलटे*

आए है नज़र उसमे फ़िदायीने मोहम्मद

- *आया है ज़माना ये कैसा मेरे मौला*

फिरते नज़र आते हैं दुश्मनाने मोहम्मद

- *हैरत ज़दा हूँ सोच पर दिल फिक्रमन्द है*

गर सोचता हूँ तो जानता हूँ क्यों अक़्ल इनकी बन्द है

- *अल्लाह ने तौफ़ीक़ से महरूम जो कर दिया*

इबलीस ने फिर काम इनसे कुछ इस तरह लिया

- *पहनाके इनको चोला-ए-शफ़्फ़ाफ़ो बावक़ार*

फिरते हैं गली-गली ये नाचीज़ो कमशआर

- *इतराते हैं ये नमाज़ पर कहते हैं हूँ मुसलमान*

हूँ दीने-मोहम्मद पर पढ़ता हूँ मै क़ुरआन

- *पर अफसोस सद अफसोस न जाने ये क्या है क़ुरआन*

और जाने भला कैसे ये क्या है जुज़ए-ईमान

- *गर जानना है इस्लाम तो आओ क़रीब आओ*

ज़रा जिस्म से तुम चोला-ए-इबलीस तो उतारो

- *सुर्मा इश्क़े अहले बैत का आँखो मे लगा लो*

सरकार के वफ़ा का पैरहन अपने जिस्म पर सजा लो

- *सर पर इमामा बांधकर तुम नूरे बावक़ार*

लटकाओ तुम कमर पर फिर इस्लाम की कटार

- *लब्बैक कहकर उठ्ठो पुरजोश पुरईमान*

जानोगे तुम है अस्ल क्या इस्लाम और क़ुरआन

दुआओं का तालिब-----

अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन कुत्बी (आक़िब)

पहला-बाब

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अजदाद का ज़िक्र

शज्रा-ए-मुबारक सुल्ताने कुल जहाँ इमामुल अम्बिया हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम- जनाब हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इब्न जनाब अब्दुल्लह इब्न जनाब अब्दुल मुत्तलिब इब्न जनाब हाशिम इब्न जनाब अब्दे मुनाफ़ इब्न जनाब क़ुस्सई इब्न जनाब कलाब इब्न जनाब मुर्रह इब्न जनाब क़अब इब्न जनाब लुवई इब्न जनाब ग़ालिब इब्न जनाब फ़हर उर्फ़ (क़ुरैश)

तफ़्सील- अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को दो बेटे दिये- हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम! बहुक्मे ख़ुदा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम अरब के मशहूर शहर मक्का मे आकर आबाद हुए और उनकी औलाद वहां बढ़ती और फलती फूलती रही और धीरे धीरे उनकी औलादों ने बहुत से ख़ानदानों और क़बीलों की शक्ल अख्तियार कर ली! इन्हीं क़बीलों में सब से इज़्ज़त और बुज़ुर्गी वाला क़बीला "क़ुरैश" था! क़ुरैश जनाब फ़हर का लक़ब था जो हुज़ूर सरवरे कायनात फख़्रे मौजूदात हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग्यारवें जद् मोहतरम हैं!

फ़हर (क़ुरैश)- जनाब फ़हर को क़ुरैश कहने की वजहे तस्मिया ये है कि क़ुरैश लुग़द-ए-हिजाज़ मे व्हेल मछली को कहते है जो समुंदर मे सबसे बड़ा और ताक़तवर जानवर होता है और क्योंकि फ़हर और औलादे फ़हर इज़्ज़त और अज़मत बुज़ुर्गी और बहादुरी के मामले मे तमाम क़बाएले अरब मे मुम्ताज़ थे इसलिए उनको क़ुरैश कहा जाने लगा!
तारीख़ इब्ने कसीर मे है कि इनके ज़माने मे हाकिमे यमन हस्सान ने मक्का पर चढ़ाई कर दी ताकि (माज़अल्लाह) ख़ाने काबा को गिरा दे और उसके मलबे को लेजाकर यमन मे ख़ाना काबा बनवाए! जनाब फ़हर ने अपने भाईयों और दीगर अहले-ख़ाना की क़यादत करते हुए जवाँमर्दी और दिलेरी से फ़ौज का मुक़ाबला किया और हस्सान को शिक़स्त देकर गिरफ़्तार कर लिया! तीन साल तक क़ैद रखने के बाद जनाब फ़हर ने हस्सान को आज़ाद कर दिया और वो यमन जाते हुऐ रास्ते में मर गया! इस वाक़या के बाद जनाब फ़हर की अज़मत और शौकत का सिक्का ख़ित्ता-ए-अरब मे क़ायम हो गया!

औलादे जनाब फ़हर (क़ुरैश)- इब्ने हिश्शाम बहवाला इब्ने इसहाक़ नक़्ल फ़रमाते है कि जनाब फ़हर के चार बेटे थे 1-**ग़ालिब** 2-मुहारिब 3-हारिस 4-असद और ये सब सैय्यदा लैला बिंत साद बिन हज़ील बिन मुदरका के बत्न से थे!

जनाब ग़ालिब- हुज़ूर पुर नूर फ़ख़्रे बनि आदम मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जनाब ग़ालिब के नस्ल से थे इनकी कुन्नियत अबु तैएम थी इनके दो बेटे थे 1-तैएम 2-**लुवई**! हिश्शाम ने इनके एक और बेटे का ज़िक्र किया है जिनका नाम क़ैस था! जनाब ग़ालिब के ये सारे बेटे सैय्यदा सलमा बिंत कअब बिन अमरु के शिकम से थे!

जनाब लुवई- इनकी कुन्नियत अबु कअब थी! मदारिजिन्नबूवत मे है कि लुवई लाई की तसग़ीर है जिसके माइने ख़ूब ऐशो इशरत से ज़िन्दगी गुज़ारना है! इब्ने इसहाक ने जनाब लुवई बिन ग़ालिब के चार बेटो का ज़िक्र किया है यानी 1.**क़अब** 2.आमिर 3.सामअ और 4.औफ़
जिनमे जनाब क़अब आमिर और सामअ की वालिदा सैय्यदा मावेअ बिंत क़अब बिन अल कैस बिन जसर बनु ख़ज़ाअ से थी!

जनाब क़अब- जनाब क़अब की कुन्नियत अबु हुसैस थी आप आठवें पुश्त मे हुज़ूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जद् अमजद है! अरब मे इनकी इज़्ज़त और अज़मत का अंदाज़ा इस बात से बख़ूबी हो जाता है कि इनका सन् पैदाइश जारी हो गया था और ये सिलसिला तक़रीबन चार सदी तक यानी वाक़ेयाए असहाबे फ़ील तक जारी रहा! इब्ने ख़ल्दून, इब्ने हिश्शाम और इब्ने इसहाक ने जनाबे क़अब के तीन बेटे तहरीर किये है 1.**जनाब मुर्रह** 2.अदि 3.हुसैस और इनकी वालिदा का नाम सैय्यदा वहिशा बिंत शैयबान बिन मुहारिब बिन फ़हर दर्ज फ़रमाया है!

जनाब मुर्रह- इनकी कुन्नियत अबु यक़ैज़ थी! ये वो पहले शख़्स है कि जिन्होंने यौमे-अशेब (यौमे जुमा का पहला नाम) मुक़र्रर किया ये उस दिन क़ुरैश को जमा करते और ख़ुत्बा देते थे! जनाब मुर्रह बिन क़अब लोगों को हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत की ख़ुशख़बरी देते और फ़रमाते थे कि वो मेरे नस्ल से होंगे उनपर ईमान लाना और उनकी पैरवी करना बहुत ज़रूरी है! उन्होंने इस ज़मन मे बहुत से अशआर भी कहे है उनमे से एक ये है – **" تنفي قريش اذا داوته فهوا شاهدن ليتني خذلانا الحق"**
तर्जुमा- ऐ काश कि मै हाज़िर होता उनके इस दावत मे कि जब क़ुरैश अपनी पस्ती की वजह से हक़ का इनकार करेंगे !
जनाब मुर्रह बिन क़अब के तीन बेटे थे 1.**जनाब हकीम उर्फ कलाब** 2.तैम 3.यकज़

जनाब कलाब- इनका नाम हकीम कुन्नियत अबु ज़हरा थी! इन्होंने बहुत से शिकारी कुत्ते पाल रखे थे इसलिए कलाब के उर्फ़ से मशहूर हुए! इनके दो बेटे थे 1.**जनाब क़ुस्सई** और 2.जनाब ज़हरा (जद् जनाब सैय्यदा आमिना ख़ातून)

जनाब क़ुस्सई- इनका सही नाम ज़ैद था क़ुस्सई नाम का सबब साहिबे मदारिजिन्नबूवत ये नक़्ल फ़रमाते है कि जब उनकी विलादत हुई तो इनकी वालिदा फ़ातिमा बिंत सअद बिन सैल अपने क़बीले से बहुत दूर बिलादे क़ुस्साअ मे ठहरी थी क्यूंकि क़ुस्साअ के माईने बहुत दूर है इसलिये आपको क़ुस्सई कहा जाने लगा और ये भी कहा जाने लगा कि ज़ैद अभि आग़ोशे मादरी मे थे कि इनके वालिद का इन्तक़ाल हो गया! इनकी वालिदा ने दूसरा निकाह रबैय बिन ख़राम से कर लिया! ख़राम का क़बीला मुल्क शाम के सरहद पर रहता था इसलिए फ़ातिमा भी वहीं रहने लगीं और जनाब क़ुस्सई इसी क़बीले मे पल कर जवान हुएं! आलमे शबाब मे ये अपने भाई ज़हरा से मिलने आएं ज़हरा अगरचे नाबीना हो चुके थें मगर आवाज़ से अपने भाई को पहचान गएं! चूंकि आप दूर से चलकर आयें थे इसलिए भी आपको क़ुस्सई कहा जाने लगा था! क़ुस्सई जब अपने वतन मक्का मुकर्रमा वापस आए तो हुलैल खज़ाई हाकिमे मक्का ने अपनी बेटी जुब्बा का निकाह जनाब क़ुस्सई से कर दिया और जहेज़ मे काबातुल्लाह शरीफ़ की तवलियत अपनी बेटी जुब्बा को अता कर दिया और बेटी का वकील अबु-अब्शान को मुक़र्रर कर दिया! हुलैल के वफ़ात के बाद मामूली क़ीमत पर अबु-अब्शान ने हक़ वकालत क़ुस्सई के हाथ फ़रोख्त कर दिया नतीजतन जंग छिड़ गई बनु खज़ाअ ने इस फ़रोख्त को सही तस्लीम करने से इन्कार कर दिया! मक्के के गली कूचे ख़ून से नहा गए दोनों तरफ़ के अक़्लमन्द लोगों ने आतिशे जंग को बुझाने के लिये यामर बिन औफ़ को अपना सालिस तस्लीम कर लिया यामर बिन औफ़ ने फैसला सुनाया के बनु खज़ाअ के तमाम मक़तूलों का ख़ून बहा क़ुस्सई अदा करें जब कि बनु खज़ाअ मक्के की हुकूमत छोड़कर चले जाएं और आइंदा हुकूमत क़ुस्सई करें! इसके बाद बैतउल्लाह शरीफ़ उमूरे मक्का और अपनी क़ौम के घरों नेज़ मक्का मुकर्रमा के तमाम इन्तेज़ामी उमूर के सरपरस्त जनाब क़ुस्सई बन गएं दूसरे लफ्ज़ो मे जनाब क़ुस्सई पूरे मक्का के बादशाह बन गएं थे! चूंकि जनाब क़ुस्सई ने क़ुरैश को दोबारा जमा किया था और बहुत से ख़ूबियों के जामे थे इसलिए क़ुरैश ने इनका नाम मुजम्मा रख दिया! बनि क़अब मे जनाब क़ुस्सई पहले शख्स थे जिनको ऐसी शानदार हुकूमत हासिल हुई पूरी कौम ने इनकी इताअत की चुनांचे क़द्रो मंज़िलत के अज़ीम ओहदे मसलन हजाब (यानी ख़िदमत पर्दाह काबतउल्लाह) सिक़ाअ (यानी हाजियों को पानी पिलाने की ख़िदमत) रफ़ादह (यानी हाजियों की ज़ियाफ़त) नदवा (यानी मजलिसे शोरा या कमेटी घर) और लवा

(यानी बवक़्ते जंग परचम बांधने की ख़िदमत) वग़ैरा सब के सब जनाब क़ुस्सई के पास थें! जनाब क़ुस्सई ने मक्का मुकर्रमा के इन्तेज़ामी उमूर को चार हिस्से मे तक़्सीम कर दिया और अपनी क़ौम और क़बीले मे बाट दिया और क़ुरैश के हर क़बीले को कद्र मंज़िलत दी! लोगों ने इनकी हुकूमत को निहायत मुबारक पाया और जनाब क़ुस्सई के मज़हबि अंदाज़ मे इज़्ज़त वा तौक़ीर क़ुरैश के क़ुलूब मे यूँ बैठ गई कि इनके किसी मर्द वा औरत की शादी के मुश्किल मामलात मे मशवरह इनके घर ही मे होता इन्होंने इस मक़सद के लिए एक बड़ा सा घर बना रखा था जिसका दरवाज़ा बैतउल्लाह शरीफ़ के तरफ़ खुलता था इसको "दारुल नदवा" कहते थे! इसी जगह क़ुरैश की अदालत लगती और इसी जगह मशवरे किये जाते थे! क़ुरैश किसी जंग की तैयारी करते तो परचम जनाब क़ुस्सई के घर बांधा जाता था और परचम ख़ुद आप या आपका बेटा बांधता था! क़ुरैश जनाब क़ुस्सई को उनके ज़िन्दगी मे भी वाजिबुल इत्तिबा समझते थे और उनके वफ़ात के बाद भी उनके अक़्वाल को मज़हबी अहकाम के तरह समझते थे और उनके ख़िलाफ़ हरगिज़ न किया जाता था!

औलादे जनाब क़ुस्सई- जनाब क़ुस्सई के चार बेटे थे 1.**अब्दे मुनाफ़** 2.अब्दुल्लाह 3.अब्दुल उज़्ज़ा 4.अब्दुल दार और दो बेटियां तख़मर और बर्रह थी! जनाब सैय्यदा ख़तीजतुल कुबरा का नसब भी अब्दुल उज़्ज़ा बिन क़ुस्सई से था!

जनाब अब्दे मुनाफ़- जनाब क़ुस्सई के ज़िन्दगी मे ही जनाब अब्दे मुनाफ़ की इज़्ज़त वा अज़मत का शोहरा हो गया था! जनाब अब्दे मुनाफ़ इस क़दर हसीनो जमील थे कि इनको लक़ब क़मरुल बतहा यानी बतहा का चांद कहा जाने लगा! इनका सही नाम मुग़ैरह और कुन्नियत अबुल शम्स थी ये बड़े करीमुन्नफ़्स थे इनकी सख़ावत और हक़ शनासी का ज़माना मोतरिफ़ था! वो तंगदस्त और नादार लोगों के साथ बड़ी फ़य्याज़ी का सुलूक़ करते और फ़ैसला करने मे अदल और इंसाफ से काम लेते थे! अपने सरदारी के ज़माने मे क़ुरैश को भी इस बात की ताक़ीद करते रहते! जनाब अब्दे मुनाफ़ ने तीन शादिया किया था इनकी एक शादी सैय्यदा अल्क़ा अल कुबरा से हुई जो मुर्रह बिन हिलाल की बेटी थी इनके शिकम से जनाब **हाशिम**, मुत्तलिब, और अब्दुल शम्स तीन बेटे और आज़र, बर्रह, हिन्ना, हाला और कलाबा पांच बेटियां पैदा हुई!

जनाब हाशिम बिन अब्दे मुनाफ़- जनाब हाशिम का सही नाम अमरु था ये भी बहुत ख़ूबसूरत और साहिबे जाहो जलाल थे! इनका नाम अमरु के बजाए हाशिम मशहूर होने का सबब ये है कि एक मर्तबा ये तिजारत के लिए मुलके शाम गए हुए थे वहां इनको पता चला कि शहेर मक्का मे क़ैहेत पड़ गया है और लोग भूख से सख़्त परेशान हैं, वो तिजारति माल ख़रीदने के बजाए आटा और रोटियां ख़रीद कर ऊँटों पर लाद लाएं और मक्का मुकर्रमा पहुंच कर बहुत सा शोरबा तैयार करवाया और उन रोटियों को उसमे भिगो दिया (इस खाने को अहले अरब सरीद भी कहते है) इस काम से फ़ारिग़ होकर जनाब हाशिम ने मक्का मुकर्रमा मे ऐलान करवा दिया कि सब अहले शहेर आएं और खाना खाएं चुनांचे यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा यहाँ तक कि इन्होंने सब कुछ अल्लाह तआला के राह मे अहले मक्का पर लुटा दिया! चूंकि जनाब हाशिम ने अपने हाथों से रोटियों को तोड़कर गोश्त के शोरबे मे डाला था इसलिए इन को हाशिम (यानी टुकड़े टुकड़े कर देने वाला) कहा जाने लगा और मक्का की सरदारी भी आपको मिली!

औलादे हाशिम- जनाब हाशिम के चार बेटे थे- शैयबा इन्ही को **अब्दुल मुत्तलिब** कहा जाता है और ये हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दादा हैं! अबु सैफ़ी, फज़ला और असद (ये हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के वालिदा हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के वालिद है यानि हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के नाना हैं) जब कि लड़कियों की तादाद पांच है यानी रुक़य्या, शिफ़ा, ज़ईफ़ा, हिना, ख़ाल्दा!

जनाब अब्दुल मुत्तलिब- जनाब अब्दुल मुत्तलिब का सही नाम आमिर और लक़ब शैयबा था! शैयबा के माइने बूढ़े के है क्योंकि बवक़्ते पैदाइश इनके सर मे सफ़ेद बाल थे इसलिए इनको शैयबा कहा जाने लगा और इनका किरदार भी शानदार और क़ाबिले तारीफ़ था इसलिये इनको शैबतुल हम्द भी कहा जाता था! इनकी वालिदा बनु नज्जार की निहायत बवक़ार ख़ातून सैय्यदा सलमा बिंत अमरू थीं!

फ़ज़ाएले अब्दुल मुत्तलिब- हज़रत सैय्यदना अब्दुल मुत्तलिब के फज़ाएल मे अज़ीम तर फज़ीलत ये है कि वो हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जद् मोहतरम हैं और इन्होंने कमाल दर्जे की मोहब्बत और शफ़क़त हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ फ़रमाया! सीरत इब्ने हिश्शाम मे है कि जनाब मुत्तलिब की वफ़ात के बाद काबा की दरबानी और हाजियों को ज़म-ज़म का पानी पिलाने के ओहदे के साथ-साथ क़ौम के बाक़ी तमाम मामलात के इन्तेज़ामात भी अब्दुल मुत्तलिब ही किया करते थे! इन्हें क़ौम मे बुलन्द मर्तबा हसिल था अहले मक्का इनका बेहद एहतिराम करते थे और इनको सैय्यदे क़ुरैश कहा जाता था! साहिबे मदारिजन्नबूवत फ़रमाते है कि तमाम अहले मक्का इन के फ़रमाबर्दार हो गए और इनकी हद दर्जे ताज़ीम वा तकरीम करने लगे! हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के जिस्म से मुश्क़ और अम्बर की खुशबू आती थी और जब भी अहले मक्का को कोई हादसा या परेशानी दरपेश होती तो वो इनको जब्ले सबीर पर ले जाते और इनके वसीले से बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त मे दुआ करते तो उस नूरे मोहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बरकत से जो इनके पेशानी मे ताबे थीं मुश्किलें आसान हो जाती!

औलादे अब्दुल मुत्तलिब- बक़ौल इब्ने हिश्शाम हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पांच बीवियों से दस बेटे और छ: बेटियां पैदा हुई जिनमे हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वालिद **जनाब अब्दुल्लाह** और हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के वालिद जनाब अबुतालिब हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा बिन्त अमरू के बत्न अक़दस से थे!

जनाब अबु तालिब- हज़रत अबु तालिब का नाम अब्दे मुनाफ़ था मगर असल नाम पर क़ुन्नियत ग़ालिब आ गई! इनको ताजदारे अरब वा अजम हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से कमाल दर्जे की मोहब्बत थी हज़रत सैय्यदना अब्दुल मुत्तलिब के बाद आप ही ने हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत का ज़िम्मा संभाला इसकी एक वजह ये भी है कि आप सरकार के सगे चचा है! मशहूर है कि हज़रत अबु तालिब अपने अहले ख़ाना के साथ खाने के लिए दस्तरख़्वान पर बैठते तो उस वक़्त तक किसी को खाना खाने की इजाज़त ना देते कि जब तक इनके महबूब भतीजे हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम दस्तरख़्वान पर जलवाअफरोज़ ना हो जाते थे! आप ने हुजूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऐलाने नबूवत से पहले और बाद जिस क़द्र जाँनिसारी मोहब्बत और क़ुरबानी का नमूना पेश फ़रमाया है क़यामत तक इसकी मिसाल नही मिल सकती!

औलादे अबु तालिब- इनके चार बेटे 1.हज़रत तालिब 2.हज़रत अक़ील 3.हज़रत जाफ़रतैयार और 4.हज़रत सैय्यदना अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हुमा हुए और बेटियां दो हुई 1.हज़रत सैय्यदा उम्मे हानी 2.हज़रत सैय्यदा जमाना ! और हज़रत अली रज़िअल्लाहु तआला अन्हु के वालिदा का नाम सैय्यदा फ़ातिमा बिन्ते असद था!

जनाब सैय्यदना अब्दुल्लाह रज़िअल्लाहु तआला अन्हु (वालिदे मोहतरम हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)– हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अपने वालिद सैय्यदना अब्दुल मुत्तलिब के बड़े लाडले बेटे थे! क्योंकि हामिल नूरे मोहम्मदी थे इसलिए हुसनो जमाल मे बेमिसाल थें इनका लक़ब ज़बीह था! इसकि वजह ये बयान किया जाता है कि जब अब्दुल मुत्तलिब ने ग़ैबी इशारा पाकर चाहे ज़म-ज़म खोदने का इरादा फ़रमाया तो क़ुरैश ने सख़्त मुख़ालफ़त किया और उन्होंने इनको सख़्त परेशान किया सबब इसका ये था कि चाह ज़म-ज़म के मक़ाम के पास दो बुत नस्ब थे जिनका नाम असाफ़ और नाएला था और क़ुरैश नही चाहते थे कि इनके बुतों के दर्मियान कुँवे को खोदा जाए, लेकिन हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कुवां खोदना शुरु कर दिया (उस वक़्त उनके बेटे हारिस उनके साथ थे) उस वक़्त हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने जबकि ज़म-ज़म ज़ाहिर हो गया "नज़र" मानी की अगर अल्लाह तआला उनको दस बेटे अता फ़रमाए और वो सब जवान होकर उनके मददगार बने तो वो उनमे से एक को अल्लाह के राह मे क़ुरबान कर देंगे! एक शब हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ख़ाना काबा के क़रीब सोए हुए थे कि इन्हे ग़ैब से सुनाई दिया कि "ऐ अब्दुल मुत्तलिब अपनी नज़र को पूरा करो जो तूने रब्बे काबा से मानी थी, वो ख़्वाब से बेदार हुए और लरज़ने लगें उन्होंने फौरन एक दुम्बां क़ुरबान करवाकर खाना बनवाया और उसे फुक़रा और मसाकीन मे तक़्सीम कर दिया! इसके बाद फिर इन्हे ख़्वाब आया कि इससे बड़ी क़ुरबानी पेश करो तो उन्होंने गाय की क़ुरबानी दिया लेकिन फिर ख़्वाब मे हुक्म हुआ कि इससे बड़ी क़ुरबानी दो तो उन्होंने ऊँट क़ुरबान करवाकर फुक़रा मे तक़्सीम करवाया इसके बाद फिर साफ़ साफ़ बता दिया गया कि तुमने अपने फरज़न्दों मे से एक को क़ुरबान करने की मन्नत मांगी थी! इस ख़्वाब पर आप निहायत दर्जा ग़मगीन हो गए और तमाम फरज़न्दों को अपने ख़्वाब से आगाह फ़रमया तो तमाम फरज़न्दों ने एक ज़बान होकर कहा कि

अगर आप हममे से किसी को क़ुरबान करना चाहते हैं तो हम तैयार हैं! हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कहा कि तुम क़ुरआ अन्दाज़ी कर लो तो जिसका नाम आए उसको क़ुरबान करुंगा! जब क़ुरआ निकाला गया तो हज़रत अब्दुल्लाह का नाम आया अब्दुल्लाह निहायत हसीन जमील और बहादुर थे और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब इनसे बहुत ज़्यादा मोहब्बत फ़रमाते थे लेकिन इसके बावजूद हज़रत अब्दुल मुत्तलिब उठे और हज़रत अब्दुल्लाह का हाथ पकड़ कर असाफ़ और नाएला के क़रीब ख़ाने काबा से मिले क़ुरैश के क़ुर्बानगाह मे ले आएं ये देखकर क़ुरैश अपनी मजलिसों से उठकर आपके पास आ गए और पूछा कि "ऐ अब्दुल मुत्तलिब ये तुम क्या करने जा रहे हो? तब आपने पूरा वाक़ेआ उनपर वाज़ेह कर दिया! क़ुरैश ने कहा ख़ुदा तआला की क़सम ऐसा नही होगा जब तक आप मजबूर न हो जाएं इसको ज़िबाह न करे अगर आप ऐसा करेंगे तो फिर आपको देखकर हर शख़्स अपना बच्चा लाया करेगा और इस तरह नस्ले इन्सानी ख़त्म हो जाएगी! मुग़ैरह बिन अब्दुल्लह ने कहा अगर इसका फ़िदिया हमारे माल से है तो हम देने को तैयार है हुक्म फ़रमाएं (हज़रत अब्दुल्लाह की माँ जनाब सैय्यदा फ़ातिमा बिंत अमरू मुग़ैरह बिन अब्दुल्लाह के ख़ानदान से थीं) इसके बाद सब ने ये हल तज्वीज़ किया कि हिजाज़ मे एक अर्राफ़ा (यानी ग़ैब की बात बताने वाली) रहती है वह हालात सही सही बता देती है उसके पास चलकर इसका हल पूछते हैं! वो सब उसके पास गएं और उसने इसका हल ये बताया कि तुम अपने बेटे और दस ऊँटों को पास पास रखो और क़ुरआ करो अगर तुम्हारे बेटे का नाम क़ुरआ मे आया तो तुम दस दस ऊँटों को बढ़ाते जाओ और क़ुरआ उस वक़्त तक करते जाओ कि जब तक तुम्हारे बेटे के बजाए ऊँटों का नाम ना आ जाए और तुम्हारा रब राज़ी ना हो जाए! हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने यही किया और यहाँ तक ऊँटों की तादाद सौ हो गई और इस पर क़ुरआ ऊँटों पर आया तो सब ने रब का शुक्र अदा किया और उन ऊँटों को क़ुर्बान कर के गरीबों मे तक़्सीम किया गया!

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह और सैय्यदा आमिना का निकाह- मक्का की बहुत सी नौजवान और ख़ूबसूरत लड़कियों और औरतों ने आप के हुस्न जमाल से मुतास्सिर होकर आप से शादी करने की बहुत कोशिश किया कुछ ने तो बहुत दौलत की पेशकश भी किया लेकिन आपने सब की पेशकश ठुकरा दिया! कुछ अहले किताब बाज़ निशानियों से पहचान गए थे कि नबी आख़िरुज़्ज़मां का वजूदे गिरामी हज़रत अबदुल्लाह के सुल्ब मे जलवागर है इसलिए वो इनको हलाक करने की नियत से मक्का मे आने लगे! एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह जंगल मे किसी काम के गरज़ से तशरीफ़ लेगएं वहां मुल्के शाम के कुछ अहले किताब तल्वारों से आप पर हमलावर हो गए इत्तेफ़ाक़न हज़रत आमिना के वालिद वहब बिन मुनाफ़ भी जंगल मे मौजूद थे वो इन हमलावरों को देख कर फ़िक्रमंद हो गए फिर उन्होंने देखा कि यका यक चंद सवार ग़ैब से नमुदार हुए और उनकी शकल सूरत आम इंसानो जैसी नही थी उन्होंने उन हमलावरों को मार भगाया! वहब बिन मुनाफ़ इस वाक़िये से बहुत मुतास्सिर हुए और उन्होंने ये सोच लिया कि मै अपनी लख़्ते जिगर आमिना का निकाह इनसे करूँगा! आपने अपने दोस्तों से ये पैग़ाम हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पास भिजवाया जनाब अब्दुल मुत्तलिब जब इस बात से आगाह हुए तो वो बहुत खुश हुए और इस रिश्ते को ख़ुशि-ख़ुशि तस्लीम कर लिया और हज़रत अब्दुल्लाह का निकाह हज़रत आमिना से हो गया!
फिर वो हुआ जिससे सारी कायनात का निज़ाम बदलने वाला था, जिससे तमाम आलम को रौनक़ मिलने वाली थी, जिससे ज़िन्दगी को शऊर मिलने वाला था, जिससे फूलो को ख़ुशबू और कलियों को तबस्सुम मिलने वाला था, जिससे बहार को ताज़गी मिलने वाली थी, जिससे हवा को मौज और दरिया को रवानगी मिलने वाली थी, जिससे मशअले तारीख़ को एक नई रौशनी मिलने वाली थी, गोया पूरे कायनात को वो सब कुछ मिलने वाला था जो इससे क़ब्ल नही मिला था! वो नूर इस दुनिया मे जलवागर होने वाला था कि जिसकी दुआ इब्राहीम अलैहिस्स्लाम ने किया था, कि जिसकी बशारत ईसा अलैहिस्सलाम ने दिया था, कि जिसे जनाब सैय्यदा आमिना ख़ातून ने ख़्वाब मे देखा था! **" दुआए ख़लील बशारते मसीहा हुआ आमिना के पहलू से हुवैदा"**

हुज़ूर पुर नूर सरवरे कायनात जनाब मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम –यूँ तो किसी क़लम मे ये क़ूवत नही कि जो आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सीरत मुत्ताहिरा पर कुछ बयान करे, क्योंकि आप की सीरत मुत्ताहिरा का शाहिद तो पूरा क़ुरआन मजीद है! लेकिन आपके शाने करीमा का बयान हर अहम किताब के लिये बाईसे फख्र है तो मुसन्निफ यहाँ आपसे मुत्तालिक़ उन पहलुओं पर रौशनी डालेगा जो इस किताब के लिये बहुत ज़रूरी है!

हमारे पैग़म्बर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम 12 रबिउल अव्वल सन् 571 ईसवी को मक्का मे पैदा हुए ! आप रूहे ज़मीं के सबसे आला और बुज़ुर्ग ख़ानदान बनि हाशिम मे जलवागर हुए कि जैसा की अहदीसे मुबारिका से साबित है- हज़रत अबु हुरैरा रज़िअल्लाह अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया- मै हर ज़माने मे बनि आदम के अफज़ल लोग़ों मे मुन्तक़िल किया गया यहाँ तक कि मुझे उन मे मुन्तक़िल किया गया कि जिसमे मै हुआ हूँ!
सही मुस्लिम मे है कि हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया हक़ तआला ने औलादे इस्माईल अलैहिस्सलाम से कनाना को बर्गुज़ीदा फ़रमाया कनाना से क़ुरैश को क़ुरैश से बनि हाशिम को और बनि हाशिम से मुझको बर्गुज़ीदा फ़रमाया!
और एक हदीसे पाक मे है कि अल्लाह तआला ने अपने तमाम मख़लूक़ से इन्तख़ाब फ़रमाया तो औलादे आदम को बर्गुज़ीदा किया फिर बनि आदम से अरब को और फिर अरब से मुझे बर्गुज़ीदा किया, खूब ग़ौर से सुन लो जो अरब से मुहब्बत रखता है तो वो मुझसे मुहब्बत रखने कि वजह से और जो अरब से दुश्मनी रखता है तो मुझसे दुश्मनी रखने कि वजह से (मदारिजिंनबूवत)
हज़रत सैय्यदा आऐशा सिद्दिक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने हुज़ूर पाक से जिब्रील अलैहिस्सलाम का क़ौल सुना कि जिब्रील अमीन ने हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से फ़रमाया कि मैने मशारिक़ से मग़ारिब को देखा है लेकिन किसी शख़्स को आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ज़्यादा अफ़ज़ल नही पाया और ना किसी औलाद को बनि हाशिम से अफ़ज़ल पाया है!
हज़रत अनस रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आएते मुबारिक़ तिलावत फ़रमाया –**"لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ"**

यानी फ़ा को ज़बर से पढ़ा और फ़रमाया मै नसब ससराल और हसब मे तुम सबसे नफ़ीस तरीन हूँ और मेरे आबओ अजदाद मे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक कोई सफ़ाह नही बल्कि वो सब निकाह से हैं!
हज़रत अली करमअल्लाह तआला वजहुल करीम से मरवी है कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मेरे आबओ अजदाद निकाह से हैं सफ़ाहे जाहिलियत से नही हज़रत आदम अलैहिस्सलाम तक कोई इस बुराई के क़रीब तक न गया!
हज़रत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु आयते मुबारिका- **وتا كلل باكا فسساجدين** की तफ़्सीर मे फ़रमाते है कि नूरे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हमेशा अस्लाबे तय्यबा से अरहामे ताहिरा की तरफ़ मुन्तक़िल होता रहा है यहाँ तक कि हज़रत सैय्यदा आमिना खातून रज़िअल्लाह तआला अन्हा के यहाँ आप कि विलादत बासआदत हो गई!

ज़िक्र विलादत मुबारक- हज़रत आमिना खातून रज़िअल्लाह तआला अन्हा इरशाद फ़रमाती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत बा सआदत के वक़्त मै घर मे अकेले थी हज़रत अब्दुल मुत्तलिब तवाफ़े काबा मे मसरूफ़ थे मैने लेटे-लेटे जो हि ऊपर को देखा तो देखा कोई बड़ी शय छत के रास्ते से घर मे आ रही है इससे मुझ पर हैबत छा गई फिर मुझे यूँ मालूम हुआ कि एक सफेद रंग के परिंदे ने अपने पर मेरे जिस्म पर मले हों जिससे वो खौफ़ जाता रहा फिर वो दूध की तरह कोई चीज़ मुझे पीने को दे गए जिससे मुझे मज़ीद सुकून और क़रार मिल गया फिर मैने दराज़ क़ामद और खूबसूरत औरतें देखा जो कि अब्दे मुनाफ़ की बेटियों से मिलती जुलती थी मेरे इर्द गिर्द जमा हो गयीं और मेरा हाल पूछने लगी मुझे बहुत ताज्जुब हुआ मैने उन से पूछा कि आप लोग कौन हैं और कहाँ से तशरीफ़ लायीं हैं उन्होंने फ़रमाया हम आसिया बिन्त मज़ाहिम (फ़िरऔन की बीवी जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लायीं थी) व मरियम बिन्त इमरान (वालिदा माजिदा हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) हैं और ये सब औरतें जन्नत की हूरें हैं! फिर मैने एक सफेद रंग की चादर देखी जिसे ज़मीन से लेकर आसमान तक आवेज़ा कर दिया गया! फिर मैने देखा कि मेरा कमरा बहुत खुशनुमा परिंदो से भर गया इनकी चोंच याक़ूत और पर ज़मुर्रद के तरह मालूम हो रहे थे फिर यकायक मेरे निगाहों के सामने से हिजाबात को उठा लिया गया और मैने ज़मीन के मशारिक व मग़ारिब को देख लिया फिर मैने देखा कि तीन झण्डे लहरा रहें है इनमे से एक मशरिक़ मे है और दूसरा मग़ारिब मे जब की तीसरा ख़ाना काबा के छत पर नस्ब है बाद अज़ान बहुत सी औरतें मेरे इर्द गिर्द जमा हो गयीं इसी दौरान हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की विलादत बा सआदत हुई! सैय्यदा आमिना रज़िअल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती है कि विलादत के बाद आपने अपना सर सजदे मे रखा और अंगुश्ते मुक़द्दस आसमान के तरफ उठाई! विलादत बा सआदत के वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बदने मुक़द्दस पर कोई क़िस्म की आलाईश ना थी यूँ महसूस होता था कि अभी अभी ग़ुस्ल मुबारक फ़रमाया है जिस्म अनवर से निहायत पाकीज़ा और नफ़ीस तरीन ख़ुश्बू आ रही थी नाफ़ मुबारक कटी हुई थी और ख़त्ना किये हुए थे

रूए अनवर चौधवी रात के चाँद के तरह रौशन और आँखे ख़ुदरती तौर पर सुर्मा लगी हुई थी दोनों शानों के दरमियान मोहरे नबूवत शरीफ़ा थी!
आपके विलादत बा सआदत के वक़्त हज़रत उस्मान बिन अबिलआस रज़िअल्लाह तआला अन्हु की वालिदा सैय्यदा आमिना ख़ातून के घर पर मौजूद थीं वो फ़रमाती है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विलादत के वक़्त सितारे आसमान से ज़मीन के तरफ झुक गए इस वाक़िए से मै डर गई मुझे ऐसा महसूस हुआ कि ये हम पर गिर पड़ेंगे!
आपके विलादत के रोज़ बादशाहे ईरान कसरा के महेल मे एक बड़ा ज़लज़ला आया जिससे उसके महेल के चौदह कंगूरे गिर गए कसरा महेल के लरज़ने और कंगूरों के गिरने से ख़ौफ़ज़दा होगया हरचंद कि वो अपने ख़ौफ़ को छुपाता था लेकिन इतमिनान ख़ातिर जाता रहा! सुबह हुई तो तख़्त पर बैठते ही उसने अपने ख़ास वज़ीरों और दानाओं को हालते गुज़िश्ता से आगाह किया अभी उसकी बात तमाम ना हुई थी कि उसे आतिश कदा ईरान के बुझने की खबर मिल गई जो तक़रीबन एक हज़ार साल से मुसलसल जल रहा था!
चूँकि अहले फारस आतिश परस्त थे इसलिए उन्होंने इस आतिश कदा को कभी बुझने नही दिया इसलिए इसके अचानक बुझने से बादशाह मज़ीद ख़ौफ़ज़दा हो गया!
ख़रायती और अब्ने असाकिर अरवाह से रिवायत करते है कि क़ुरैश के कुछ अफ़राद जिनमे वरक़ा बिन नौफ़िल, ज़ैद बिन अमरू, उबैदउल्लाह हजश, और उस्मान बिन अल हुवैरस शामिल थे एक शब बुतख़ाना के तरफ़ आए तो देखा कि बड़ा बुत मुँह के बल गिरा पड़ा है इन लोगों ने बुत के इस हालत को मुनासिब न जाना और उसे सीधा कर दिया, लेकिन वो फिर धड़ाम से गिर पडा, इन्होने फिर सीधा किया, लेकिन तीसरी बार फिर गिर गया, तो उस्मान बिन हुवैरस बोला आज ज़रूर कोई न कोई अहम बात हुई है, और ये वही शब थी कि जिस शब के सुबह विलादत बा सआदत हुई, इस मौक़े पर उस्मान बिन हुवैरस ने कुछ अशआर कहे जिसका तर्जुमा ये है- ऐ सनम तेरे पास दूर दराज़ से सरदाराने अरब जमा है और तू उलटा गिरा है, बता तो क्या बात है, क्या तू खेल रहा है, अगर हमसे कोई गुनाह हुआ है, तो हम अपने ख़ता का इक़रार करते है, और आईन्दा ना करने का वाएदा करते है और अगर तू ज़लील व मग़लूब हो कर झुक गया है तो फिर आज से तू न बुतो का सरदार है और ना ही हमारा रब, ये कह कर बुत को फिर खड़ा कर दिया तो उसमे से आवाज़ आई – ये सनम तबाह हो गया उस नौ मौलूद के वजह से जिसके नूर से सारी दुनिया रौशन हो गई सारे सनम इसके आमद पर गिर पड़े और बादशाहों के दिल इसकी हैबत से कांपने लगे, नारे फारस बुझ गया जिसकी वजह से शाहे फारस ग़म से भर गया, काहिनो से उनके जिन भाग गए, अब उन्हे झूटी सच्ची कहानी सुनाने वाला ना रहा, ऐ क़ुस्सई की औलादों अपनी गुमराही से बाज़ आजाओ और इस्लाम के कुशादह दामन मे पनाह ले लो!

दूध पिलाने का शर्फ़- हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को आठ औरतों ने दूध पिलाने का शर्फ़ हासिल किया है जिनमे उनकी वालिदा के अलावा ख़ौला बिंत मन्ज़र, उम्मे ऐमन, क़बीला अवा की तीन औरतों ने, हज़रत हलीमा सादिया और एक सादिया नामी दूसरी ख़ातून ने और अबु लहेब की लौंडी सूबिया शामिल हैं!

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ख़्वाब- हदीस पाक मे है कि अबु लहेब के मरने के बाद हज़रत अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इसे ख़्वाब मे देखा तो पूछा- 'ऐ दुश्मनाने खुदा और रसूल तेरा क्या हाल है, तो उसने कहा तुमसे जुदा होकर मुझे सुकून ना मिला, सख्त अज़ाब मे गिरफ्तार हूँ, अलबत्ता सूबिया को आज़ाद करते वक़्त जिस उंगली से इशारा किया था हर पीर के दिन उस उंगली से मीठा और ठंडा पानी मिल जाता है जिसकी वजह से इस दिन के अज़ाब मे तख़फ़ीफ़ महसूस करता हूँ (सोचने की बात है कि अबु लहब काफ़िर था और इसकी मज़म्मत क़ुरान मजीद मे नाज़िल हो चुकि है लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मिलाद कि खुशी मे अपनी बांदी सूबिया को दूध पिलाने के ख़ातिर आज़ाद कर दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तरफ़ से हक़ तआला ने इसे इसका बदला इनायत फ़रमा दिया, अब मेरा उन भाईयों से सवाल है जो ये कहते है कि मिलाद मनाना बिदअत है (अल्लाह उन्हे हिदायत दे) तो मुझको ये जवाब दें कि जब एक काफ़िर को जिसने अपने ज़िन्दगी मे ख़ुदा और रसूल की बेहुर्मती किया लेकिन महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मिलाद की खुशी मे अपनी लौंडी को आज़ाद कर देने के सबब अल्लाह ने उसको इतना अज्र अता किया, तो जो ईमान के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत मे मुब्तिला है और जो अपने आक़ा की ख़ुशनूदी के लिए वो सब करता है जिसे आप बिदअत का नाम दे देते हैं तो उनको क़ब्र और हश्र मे कितना बड़ा अज्र हासिल होगा इसका अन्दाज़ा ईमान वाले बख़ूबी लगा सकते हैं) अल्लाह तआला हम सबको इबलीस के मक्र फ़रेब से महफूज़ रखे आमीन!

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हालातो वाक़्यात- आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र शरीफ़ जब छ: बरस की हुई तो आपकी वालिदा माजिदा सैय्यदा आमिना खातून रज़िअल्लाह तआला अन्हा का विसाल हो गया और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की कफ़ालत व ख़िदमतगुज़ारी कि ज़िम्मेदारी हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने बतरीक़े हसन पूरी फ़रमाई, और जब आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आठ बरस की उम्र मे क़दम रखा तो आपके दादाजान इस जहाने फ़ानी से रुख़सत हो गएं, तब आपके ख़िदमत की ज़िम्मेदारी जनाब अबु तालिब ने बख़ूबी सरअन्जाम दिया!

जब हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़िन्दगी के बारह बरस तय फरमाए तो हज़रत अबुतालिब के साथ मुल्के शाम के तरफ़ बग़ार्ज़ तिजारत रवाना हुएं, बसरह के क़रीब नसारा के जय्यद आलिमे दीन बहेरह राहिब से मुलाक़ात हुई, बहेरह दीने समावीय के बहुत बड़े आलिम और साहिबे तक़वा थे, चूंकि इन्होंने साबक़ा कितब समाविआ मे हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निशानियाँ और हालात बड़े तफ़सील के साथ पढ़ी थी तो वो इसलिये दीदार नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हद दर्जे मुश्ताक़ थे, जब क़ाफ़ला क़ुरैश मे बहेरह राहिब ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को देखा तो इन्होंने आपको उसी तरह पाया जिस तरह कि इन्होंने पहले आसमानी किताबों मे पढ़ा था! बहेरह राहिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पहचान कर हद दर्जे एहतिराम किया, आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का बोसा लिया और ईमान ले आयें, और अबु तालिब के ख़िदमत मे अर्ज़ किया कि वो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ूब हिफ़ाज़त करें क्योंकि ये नबी आखिरुज़्ज़मां हैं और इनका दीन साबक़ा तमाम अदयान का नासिख़ है, यहूदो नसारा इनके जानी दुश्मन है इसलिये इनको मुल्क शाम न ले जाया जाए, इस पर जनाब अबु तालिब ने अपना सारा सामान वहीं फ़रोख़्त किया और वापस मक्का मुकर्रमा आ गएं!

जब आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पचीस बरस के उम्र मे क़दम रखा तो इनके ख़िदमत अक़दस मे मक्का की एक बवक़ार मुजस्समा इफ़्फ़त व तहारत ख़ातून हज़रत सैय्यदा ख़तीजा कुबरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने पैग़ाम भेजा कि अगर आप मुनासिब ख़्याल फ़रमाएं तो उनका माले तिजारत मुल्क शाम के तरफ़ ले जाएं और जो मुनाफ़ा हासिल हो उससे जिस क़द्र चाहें खुद रखें और जिस क़द्र चाहें मुझे दे दें!
हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा की इस पेशकश को अपने प्यारे चचा हज़रत अबु तालिब के मशवरे से क़बूल फ़रमा लिया, इसके बाद हज़रत ख़दीजा ने अपने ग़ुलाम मैसराह और ख़ुज़ैमा को आपके ख़िदमत के लिये आपके हमराह कर दिया, जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बसराह पहुंचे तो वहा एक कलीसा के नज़दीक़ एक दरख़्त के नीचे बैठ गए, ये दरख़्त पुराना और सूखा हुआ था लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बरकत के वजह से वो दरख़्त यकायक सब्ज़ व शादाब हो गया और उसमे फल भी लग गए इर्द गिर्द भी सब्ज़ी फैल गई, ये देखकर उस कलीसा का नस्तूरा नामी राहिब एक किताब अपने हाथों मे लिए अपने कलीसा से बाहर निकला और मैसराह से पूछने लगा ये तुम्हारे साथ कौन है? मैसराह ने बताया ये शुर्फ़ा क़ुरैश और सादात बनु हाशिम से हैं, फिर नस्तूरा आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ख़िदमत मे हाज़िर हुआ और कहने लगा मै आपको लात और उज़्ज़ा की क़सम देता हूँ कि बताएं आप कौन हैं और आपका नाम क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास से दूर हो जाओ (यानी आप ने लात और उज़्ज़ा से सख़्त इज़हारे नफ़रत फ़रमाया) इसपर नस्तूरा ने अपने हाथ मे लिए हुए किताब को खोल कर पढ़ा और बोला मुझे उस ख़ुदा की कसम कि जिसने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर अन्जील उतारा ये वही नबी आखिरूज़्ज़मां है जिनकी बशारत ईसा अलैहिस्सलाम ने दी! इसके बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने बसरह मे अपना माल फ़रोख़्त किया और ख़ूब नफ़ा हासिल हुआ आप हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि ख़ैरो बरकत से क़ाफ़ले के दीगर अफ़राद भी मुस्तफैद हुएं! फिर जब आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मक्का मुकर्रमा वापस हुए तो दोपहर का वक़्त था हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा अपनी सहेलियों के साथ बाला ख़ाना मे बैठी थीं उन्होंने देखा कि दो परिंदे आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सर पर साया किये हुए हैं (वो दोनो फरिश्ते थे) हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के ग़ुलाम मैसराह और दूसरे शख़्स ख़ुज़ैमा ने भी राह मे पेश आने वाले वाक़ेआत का ज़िक्र किया जिससे हज़रत खदीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा निहायत मुत्तासिर हुई!

हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा अक़्ल और फ़रासत मे निहायत कामिल और हसब नसब मे बहुत आला और बहुत दौलत मंद ख़ातून थीं लेकिन बेवा थीं बहुत से क़ुरैश के मर्दो ने आप से पैग़ामे निकाह दिया मगर इन्होंने किसी को क़बूल न किया लेकिन आप हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इस क़द्र मुत्तासिर थी कि अपने हमराज़ औरत के ज़रिये खुद बारगाहे अक़दस मे निकाह की दरख़्वास्त पेश की जिसे आप सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने महबूब चचा हज़रत अबु तालिब के मशवरे से क़बूल फ़रमा लिया!

सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का निकाह- आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तरफ़ से आपके चचा हज़रत अबु तालिब, हज़रत हमज़ा, और दीगर चचा और हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु और दीगर क़ुरैश के रईस हज़रत खदीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के घर तशरीफ़ ले गएं और वहा आपका निकाह हुआ और आपके चचा अबु तालिब ने बलीग़ ख़ुत्बा पढ़ा जो ये है—
“तमाम तारीफ़े खुदा ही के लिये है जिसने हमको इब्राहीम की औलाद मे और इस्माईल के नस्ल मे पैदा किया और मादे मुज़र के ख़ानदान से किया हम को अपने घर का मुतवल्ली और पासबान बनाया, हमारे हज करने के लिये एक हरम मुक़र्रर फ़रमाया और हम लोगों को बनि आदम का सरदार और हाकिम होने की इज़्ज़त बख़्शी! यह मेरा भतीजा मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हमारे दर्मियान अपनी अख़लाकी ख़ूबियों और कमालात के लिहाज़ से जो इज़्ज़त बुज़ुर्गी और दर्जा रखते हैं कोई आदमी भी इसकी बराबरी नही कर सकता! यह मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जिनके रिश्ते के बारे मे आप सबको मालूम हो चुका है कि ख़दीजा बिंत ख़ुवैलद से निकाह करना चाहते हैं और इसका कुल महर मेरे माल से है! ख़ुदा की क़सम इनको बहुत बड़ा मरतबा हासिल होने वाला है और सबसे अहम वाक़ेआ पेश आने वाला है”!
और इस तरह जनाब सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को हुज़ूर पुर नूर मुख़तारे कुल कायनात फ़ख़्रे बनि आदम मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़ौजियत मे आने का शर्फ़ हासिल हुआ!

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब पैंतीस बरस के उम्र मे क़दम रखा तो उस वक़्त काबे शारीफ़ के तामीरे नौ मे हिस्सा लिया जब हज्रे असवद को नस्ब करने का वक़्त आया तो हर क़बीले के सरदारों ने ये चाहा कि ये ऐज़ाज़ उसे तन्हा हासिल हो, कशीदगी बढ़ी तो तलवारें निकल आई क़रीब था कि ज़मीने हरम ख़ून से रंगीन हो जाती, चंद रोज़ के लिये तामीरे हरम पाक रोक दिया गया! फिर थोड़ा सोचो फ़िक्र के बाद उमय्या बिन मुग़ैरह ने मशवरह दिया कि कल सुबह सूरज निकलने के बाद जो शख़्स सब से पहले बाब बनि शैय्बा से हरम पाक मे दाख़िल हो, उसे साबित मान लो इससे सब सरदार राज़ी हो गये! अगले सुबह सब क़बाएल के सरदार जमा हुए और नज़रें बाब बनि शैय्बा पर जम गई, इधर दो पहाड़ो के बीच से आफ़ताबे ज़माना ने सर निकाला और उधर बाब बनि शैय्बा से आफ़ताबे रिसालत महताबे नबूवत हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ ले आएं तो बेअख़्तियार सब पुकार उठे- ये तो अमीन आ रहें हैं, ये तो अमीन आ रहें हैं, हम राज़ी हैं, हम राज़ी हैं- रसूले कायनात फ़ख़्रे मौजूदात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी चादर मुबारक ज़मीन पर बिछा दिया ,हज्रे असवद उठाया और चादर मुबारक पर रख दिया, फिर हर क़बीले के सरदारों को फ़रमाया के चादर के कोनों को पकड़ कर उठाओ, सबने एक साथ मिलकर चादर को उठाया जब हज्रे असवद मक़ामे नस्ब तक पहुंचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया, अब तुम सब मुझे अपना नुमाइन्दा चुन लो, सब राज़ी हो गए, तो आपने हज्रे असवद उठाया और सब के तरफ़ से हरम-ए-काबा के दीवार मे नस्ब कर दिया! ये फैसला इस क़द्र दानिशमन्दाना था के ज़माना झूम उठा और क़ुरैशे मक्का ख़ून की होली खेलने से बच गये!

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जब चालीस बरस के उम्र मे क़दम रखा तो ये वक़्त ऐलाने नबूवत का हुआ आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर वह्यी व बशारत का ज़हूर हुआ जिससे आफ़ाक़े आलम मुनव्वर हुआ! नूरे वह्यी का ज़हूर पीर के दिन सन् इक्तालीस ईसवी आमुल फ़ील माहे रबीउल अव्वल के तीन या आठ तारीख़ को हुआ, जब ज़हूरे नबूवत का वक़्त क़रीब आया तो रसूल अल्लाह सलल्लललाहो अलैहे वसल्लम थोड़ी सी खजूरे सत्तू और पानी लेकर मक्का के क़रीबी पहाड़ “जब्ले नूर” पर तशरीफ़ ले जाते और उसके चोटी के क़रीब वाक़े “ग़ारे हिरा” मे कई-कई रोज़ तक इबादत मे मसरूफ़ रहते, फिर कभी जी मे ख़्वाहिश पैदा होती

पहाड़ से नीचे तशरीफ़ लाते जी भर तवाफ़े काबा फ़रमाते फिर अपने अहले ख़ाना से मुलाक़ात करते और तोशा लेकर दोबारा ग़ारे हिरा मे जलवागर हो जाते, इसी दौरान आप पर पहली वह्यी मुबारक का नज़ूल सूरह अल-अलक़, 1 से लेकर 5 तक का हुआ!

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दावतो तबलीग़ शुरु किया तो सब से पहले अपने घर के लोगों को दावत दिया जिसमे सबसे पहले आपकी रफ़ीक़े हयात सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ईमान से शर्फ़याब हुईं हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा तो उस वक़्त ईमान ले आयीं थीं जबकी हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ारे हिरा से तशरीफ़ लाएं ही थें और हालते वह्यी का ज़िक्र फ़रमाते हुए ये भी फ़रमाया था कि मै शब्रो-हब्र से सुनता हूँ कि वोह मुझे "या मोहम्मद या रसूल अल्लाह" कह कर सलाम अर्ज़ करते हैं, हज़रत ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा उसी दिन दिलो जान से ईमान ले आयीं थीं, इसके बाद हज़रत अली मुरतज़ा, हज़रत सिद्दिक़े अकबर , हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा भी शर्फ़े ईमान से मुशर्रफ़ हो गएं! फिर रोज़ बरोज़ ग़ुलामाने मुस्तफ़ा मे इज़ाफ़ा होता गया इस तरह तीन साल का अर्सा गुज़र गया, फिर रब करीम जल्ला शानहू के तरफ़ से ये हुक्म हुआ कि अब ऐलानिया तौर पर तबलीग़े इस्लाम करो, इस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐलानिया तौर पर तबलीग़े इस्लाम शुरु कर दिया! इसके बाद क़ुरैशे मक्का ने आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके ग़ुलामों पर अर्सए-हयात तंग कर दिया और इस क़द्र शदीद तकलीफ़ दिया कि जिनके तसव्वुर से रूहे इन्सानियत कांप उठती है, लेकिन आपके जाँनिसारों ने आपका साथ न छोड़ा और ईमान से उनका दिल सरशार रहा बल्कि इन ईमान वालों मे वो लोग शामिल होते रहें जिनको आपका ख़लीफ़ा होने का शर्फ़ हासिल हुआ और आपके असहाब होने की दौलत हासिल हुई!
इसी दौरान क़ुरैश ने हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आपके जाँनिसारों को एक घाटी मे कि जिसको शऐबे-अबि तालिब के नाम से याद किया जाता है महसोर कर दिया! इसी दौरान आमुलहुज़्न का साल भी ग़ुज़रा कि जिसमे आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रफ़ीक़ चचा हज़रत अबु तालिब और आपकी इन्तेहाई वफ़ाशिआर व जाँनिसार ख़िदमतगुज़ार रफ़ीक़े हयात हज़रत सैय्यदा तय्यबा ताहिरा उम्मुल मोमिनीन ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा का विसाल हो गया, इस वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र मुबारक उन्चास साल आठ माह और ग्यारह दिन की थी और आपके रफ़ीक़े हयात कि उम्र पैंसठ साल थी जबकि आपके चचा हज़रत अबु तालिब की उम्र सत्तासी बरस की थी, इस वाक़िए से हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर निहायत रंज तारी हो गया और आपने इस साल को "आमुलहुज़्न" के नाम से पुकारा! इसी साल आपने तबलीग़े इस्लाम के लिये ताइफ़ का सफ़र तय किया जहाँ आपको लोगों ने बहुत तकलीफ़ पहुंचाया और आप पर संगबारी शुरु कर दिया जिससे आपके जिस्म मुबारक से ख़ून जारी हो गया और आपकी नालैने मुबारक ख़ून से लबरेज़ हो गई लेकिन आपने वहाँ के लिये कोई बद्दुआ न किया और फ़रमाया कि यहाँ के लोग ईमान से शर्फ़याब होंगे जो बेशक आपके क़ौले शरीफ़ा के मुताबिक़ हुए भी!
आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी तिरपन साला ज़िन्दगी मक्कह मुकर्रमा मे गुज़ारी उसके बाद कुफ़्फ़ारे मक्का के ज़ुल्म सितम के सबब अपने वतन को अलविदा कहा और मदीना मुनव्वरा को हिजरत कर गएं!

दूसरा-बाब

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मदनी ज़िन्दगी और आपके अहले बैत का ज़िक्र

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की हिजरत के एक दिन पहले कि जब अबु जहल के साथ-साथ तमाम कुफ़्फ़ारे मक्का ने ये नापाक मन्सूबा बनाया कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को (माज़अल्लाह) क़त्ल कर देंगे और उन्होंने इस मकरूह तदबीर को अमली ख़ाका पहनाने के लिये तय्यारी भी करली तो उधर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने नबी मुकर्रम को इस मक्र से मुत्तिला फ़रमा कर हुक्म दिया कि आज रात आप अपने बिस्तर पर हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु को लेटा दें और हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु को लेकर मदीना मुनव्वरा को हिजरत कर जाएँ!

इधर जब कुफ़्फ़ारे मक्का ने आपके घर मे घुसकर आपके बिस्तर पर ये समझकर कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उसपर जलवागर हैं हमला किया, तो ये देखकर कि उसपर आपके भाई हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु लेटे हैं बहुत हैरान हुए और काफ़ी ग़ुस्सा भी, आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अली करमअल्लाह वजहुलकरीम से जाते वक़्त ये फ़रमा दिया था कि ऐ अली आज रात तुम पर कुफ़्फ़ारे मक्का हमलावर होंगे लेकिन तुम ज़रा भी न घबराना इन्शाअल्लाह तुम्हें कुछभी नही होगा और कल मेरे बाद लोगों की अमानते बाटकर मदीना मुनव्वरा आ जाना! हज़रत अली करमअल्लाह वजहुल करीम का क़ौल है कि मुझे इस दिन से ज़्यादा सुकून की नींद कभी नही आई क्यूंकि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ये क़ौल था कि तुम्हें कुछ नही होगा बस इसपर मेरा पूरा ईमान था और मुझे यक़ीन था कि अली को किसी और दिन तो मौत आ सकती है लेकिन इस दिन नही! उधर कुफ्फारे मक्का मे ये शोर मच गया कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अबु बक्र रज़िअल्लाह तआला अन्हु के साथ कही चले गये हैं इस पर कुरैश ने अपने जासूसों को हर सिम्त इनको खोजने के लिए रवाना कर दिया, उधर तीन रोज़ व शब ग़ारे सौर मे रहने के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अबुबक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु के साथ पीर के दिन कबा मे तशरीफ़ लाएँ! जब से अहले मदीना ने ये सुन रखा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मक्का छोड़ दिया है ये सब रोज़ाना सुबह सवेरे मदीना मुनव्वरा से बाहर निकल कर बुलंद टीलों पर बैठकर मक्का से आने वाले रास्तों को देखते रहते ताकि जमाले माहताबे रिसालत से मुस्तफैद हों, ये रोज़ाना दोपहर तक यहां बैठे रहते थे, एक दिन ये हज़रात इन्तेज़ार कर के वापस पलटे ही थे कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ ले आएँ, एक यहूदी ने पुकारा कि 'ऐ लोगों, जिनके तुम मुन्तज़िर थे वो आ गयें, ये देखकर तमाम लोग ख़ुशी से बेताब होकर नारऐ तकबीर बुलंद करते और नातें पढ़ते हुए मालिके कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इर्द गिर्द जमा हो गयें!

रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यहाँ चंद रोज़ क़याम फ़रमाया इसी जगह हज़रत सैय्यदना अली करमअल्लाह वजहुल करीम भी पा-पियादा चलते हुए हाज़िरे ख़िदमत हुएँ, मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा तक के तवील पैदल सफ़र की वजह से हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के पैर मे छाले पड़ गये थे जो कि आक़ा करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दस्ते अक़दस के मस कर देने से उसी वक़्त ठीक हो गयें, इस मुख़्तसर से क़याम के दौरान रसूले अकरम नबी मोअज़्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने 'कबा' मे उस बे-मिसाल मस्जिद की तामीर करवाई जिसे कुरआन मजीद ने "उस्सेसा अलातक़वा" के नाम से नवाज़ा और रसूले खुदा

हबीबे किबरिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस मस्जिद मे दो रिकअत नमाज़ नफ़िल पढ़ेगा उसे अल्लाह तआला उमरा के बराबर सवाब अता फ़रमाएगा!

(यकम सन् हिजरी बमुताबिक 622 ईस्वी) कबा मे चंद रोज़ क़याम के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मदीने मे दाख़िले का अज़्म फ़रमाया, ये जुमा का दिन और बारह रबीउल अव्वल की बारह तारीख़ थी जब हूज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कबा से सवार होकर बनु सालिम के घरों तक पहुंचे, तो जुमा का वक़्त हो गया आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उसी जगह तक़रीबन सौ आदमियों को लेकर नमाज़े ज़ुमा अदा किया ये इस्लाम मे पहला जुमा था और जिस जगह जुमा अदा किया गया उस जगह मस्जिद बना दिया गया जिसका नाम मस्जिदे जुमा पड़ा!
नमाज़े जुमा के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जुनूब के जानीब से इस शहर मे दाखिल हुएँ जिसे इस वक़्त तक दुनिया वाले यसरिब कहा करते थे इसे बलाओं और मुसीबतों का मरकज़ ग़रदायाँ करते थे बीमारियों और वबाओं के इस आम-जगह में हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़दम अनवर के बरकत से इस क़द्र रहमत नाज़िल हुई कि न सिर्फ बलाऐं और वबाऐं रफ़ू चक्कर हो गई बल्कि इसकी मटटी ख़ाके शिफ़ा हो गई और रसूले खुदा हबीबे किबरिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यहाँ तक इरशाद फरमाया कि दुनिया के दूसरे शहरो मे वबा, अमराज़, ताऊन और दज्जाल लईन वग़ैरह आ सकता है मगर मक्का मुकर्रमा और मेरे मदीना मुनव्वारा मे नही आ सकता है, (सुबहानअल्लाह) खुदावंदे करीम तमाम मुस्लमानों को इन तमाम वबाओं और बलाओं से महफ़ूज़ फरमाऐं आमीन!

मदीना तय्यबा मे रसूले खुदा सरवरे अम्बियां मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का दाख़ला अजब शानदार था गली कूचे तमहीद व तक़दीस के कलमाते ज़ीशान से गूंज उठे– सही मुस्लिम शरीफ़ बाब हिजरत मे हज़रत बर्रार रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है के

فَصَعدَالِرّجالُ والنِّسَاءُ فوقَ البُيُوتِ وتَفرّقَ الغُلمَانُ وَالخَدَمُ فی الّطُرقِ يُنَادُونَ يامُحَمَّدُ يارَسُولَ اللہِ يامُحَمَّدُ يارَسُولَ اللہِ

यानी हूज़ूर सरवरे कायनात मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदीना मुनव्वरा मे तशरीफ़आवरी के वक्त औरतें और मर्द अपने घरों के छतों पर चढ़ गए बच्चे और ग़ुलाम मदीना मुनव्वरा के गली कूचों मे घूमते हुए यानी जुलूस के शक्ल मे "या मोहम्मद या रसूलअल्लाह या मोहम्मद या रसूलअल्लाह" सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के नारे लगाते फिर रहे थे, औरतें मर्द बच्चे बूढ़े सभी नूरे खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जमाले जहाँआरा कि एक झलक देखने के लिये मुन्तज़िर थे, अंसार की मासूम व नौख़ेज़ लड़कियाँ प्यारे लहजे और पाकीज़ा ज़बान से नाते रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ये शेर पढ़ रहीं थीं!

طَلَع البَدرُ عَلَينا - مِن سَنِيَّانِ الوَدَاعِ وَجَبَ الشُّكرُ عَلَينا

- مَادَ عىٰلِلّٰہِ دَاعِ ايُّهَاالمَبعُوثُ فِيناَ

جِئَتَ بِالاَمراَلمطَاعِ

"सुन्नियात उल वदाअ नामी पहाड़ो के जानिब से (ये घाटी मक्कह मुर्करमा के राह मे है) हम पर चौधवी शब का चाँद तुलुऊ हो गया है हम पर वाजिब है कि शुक्र अदा करे, कि दाईइल्लल्लाह जलवागर हो गये!"
"ऐ हमारे पास तशरीफ़ लाने वाले आप हम पर वोह दीने मतीन लेकर तशरीफ़ लाये हैं कि जिसकी इताअत निहायत ज़रूरी है!"

जब कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ननिहयाल "क़बीला बनु-नज्जार" की भोली भाली बच्चियां ख़ुशी से झूम झूम कर दफ़ बजाते हुए कह रहीं थीं-

نَحنُ جَوَارٍمِّن بَنی النّجّاَ رِ - یَا حَبَّزَامُحمَّدًامِن جَا رِ

तर्जुमा- कि हम है बच्चियां नज्जार के आली घराने की! ख़ुशी है आमिना के लाल के तशरीफ़ लाने की!

सरकार की आमद कि वजह से जश्न का एक अजीब समा था, हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपनी ऊटँनी पर सवार उनके दरमियान से गुज़र रहें थें! जुमला क़बाएले अंसार के लोग अपनी आँखों को सरे राह बिछा कर सरापा न्याज़ बनकर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दामने करम को थाम कर अर्ज़ कर रहें थे हमारे ग़रीबख़ाने मे क़याम फ़रमा कर नियामत व सरवत के इज़हार और ख़िदमतगारी और जाँनिसारी की सआदत मरहम्मत फरमाऐं हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हर एक के हक़ मे दुआएं रहमत व बरकत फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाते, मेरी ये ऊँटनी को अल्लाह तआला के तरफ़ से जाये क़याम को बता दिया गया है; इसकी रस्सी को छोड़ दो ये जहाँ बैठेगी क़रारगाह होगी चुनाँचे ये ऊँटनी उस जगह बैठी जहाँ अब मस्ज़िदे नबवी है, थोड़ी देर बाद ऊँटनी खड़ी हुई और चंद क़दम आगे बढ़कर घूमी और हज़रत अबु अय्यूब अंसारी रज़िअल्लाह तआला अन्हु के दरवाज़े के बिल्कुल क़रीब बैठ गई हज़रत अबु अय्यूब रज़िअल्लाह तआला अन्हु के खुशी का कोई ठिकाना नही रहा था, कि आफ़ताबे मुक़द्दर बामे उरूज को पहुँच गया था!

फिर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने वहीं क़याम फ़रमाया, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मर्ज़ी के मुताबिक़ आपकी ऊँटनी के पहले क़याम की जगह मस्जिदे नबवी की तामीर कराया गया!

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदीना मे दस साला वक्फ़े मे वोह सब हुआ जो हदीस मुबारक से साबित है- जैसे हज़रत सैय्यदा आऐशा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से रफ़ाफ़ हुआ, ये नौ शव्वाल मुर्करम यकम सन् हिजरी को हुआ, इसी साल हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अंसार और मुहाजिर मे रिश्ता मुवाख़त (भाई चारा) अस्तवार फ़रमाया और एक दूसरे के जायदाद का वारिस बनाया इसी साल रिकअते नमाज़ मे इज़ाफ़ा हुआ यानी दो-दो रिकत नामाज़ फर्ज़ की गई और सफ़र के नमाज़ को पहले फ़राऐज़ पर बरक़रार रखा गया!

सन् दो हिजरी मे तहवील क़िबला हुआ, इब्तिदा मे क़िबला बैतुल मुक़द्दस था नबी मुकर्रम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मदीना मे जलवागरी के सोलह माह और अंदलबाज़ सतरह माह गुज़रने के बाद तक क़िबला बैतुल मुक़द्दस ही रहा फिर रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ख्वाहिश पर क़िबला ख़ाना काबा को क़रार दे दिया गया, और ये वाक़ेआ बनु सलमा के बस्ती मे ऐन उस जगह हुआ जहाँ आज मस्जिदे क़िबलतैन बनि हुई है!

हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने सहाबा के साथ नमाज़ ज़ोहर अदा कर रहें थें ऐन हालते नमाज़ मे नज़ुले 'वही' के इंतेज़ार मे आसमान के तरफ़ आसार मुलाहिज़ फ़रमाने के मुन्तज़िर थें आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शदीद ख़्वाहिश थी कि क़िबला ख़ाना काबा को क़रार दे दिया जाए! इसी हालत मे जिब्रील अमीन् पैग़ामे ख़ुदा वंदी लेकर हाज़िरे ख़िदमत हो गएँ

قَدْ نَرَىٰ تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۖ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۚ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ

(ऐ महबूब करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) हम आपका बार बार आसमान के तरफ़ देखना मुलाहिज़ फ़रमा रहें हैं, तो ज़रूर हम आपको उसी क़िबले के तरफ़ फेर देंगे जिसमे आपको ख़ुशि है तो अभी अपना मुँह मस्जिदे हराम के तरफ़ फेर दीजिये, चुनांचे उसी वक़्त

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दौराने नमाज़ ही अपना रुख़े अनवर बैतुल मुक़द्दस से घुमाकर हरम-ए-काबा के तरफ़ फ़रमा लिया, इसी तरह सब सहाबाकिराम भी घूम गएँ!
इसी सन् दो हिजरी मे सैय्यदा तैय्यबा ताहिरा आबिदा ज़ाहिदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा का निकाह हज़रत सैय्यदना अली शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाह तआला अन्हु से हुआ! इसी दो हिजरी मे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े फ़र्ज़ हुए, इसी मे ज़क़ात, फ़ितरा, सदक़ा, हुक्म जिहाद, नमाज़े ईद सब का ऐहकाम जारी हुआ! और ग़ज़्वाए बद्रे कुबरा भी इसी साल वजूद मे आया!

सन् तीन हिजरी मे ग़ज़्वाए 'ग़त्फ़ान' हुआ, इसी तीन हिजरी मे कअब बिन अशरफ बदबख़्त यहूदी का क़त्ल भी वाक़े हुआ, सुर्राया फ़रवाह भी इसी तीन हिजरी मे वाक़े पज़ीर हुआ गज़्वाए ओहद ग़ज़्वाए स्वंयक या क़रक़रूतुलक़द्र इसी तीन हिजरी मे हुआ, इसी तीन हिजरी मे सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाह तआला अन्हा की शादी हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु से हुई और इसी तीन हिजरी मे हज़रत इमाम सैय्यदना हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु की विलादत बासआदत भी हुई!

सन् चार हिजरी मे हज़रत ख़बीब और ज़ैद रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा कि शहादत हुई, इसी चार हिजरी मे ग़ज़्वाए बद्र सुग़रा भी वाक़े हुई!

सन् पाँच हिजरी मे ग़ज़्वाए ख़ंदक वाक़े हुई, इसी पाँच हिजरी मे ग़ज़्वाए बनु क़ैरेज़ा और ग़ज़्वाए बनु मुतलिक़ वाक़े हुई!

सन् छः हिजरी मे वाक़ेआते हुदैबिया हुआ इसी छः हिजरी मे हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तरफ़ से सलातीने ज़माना को दावते इस्लाम के ख़ुतूत भेजे गए!

सन् सात हिजरी मे ग़ज़्वाए ख़ैबर वाक़े हुआ और ग़ज़्वाए वादियुल क़ुआ हुआ, इसी साल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत सैय्यदा मैमूना बिन हारिस रज़िअल्लाह तआला अन्हा से निकाह फ़रमाया!

सन् आठ हिजरी मे जंग मूता वाक़े हुई और उसमे हज़रत जाफ़र बिन अबि तालिब रज़िअल्लाह तआला अन्हु की शहादत हुई, इसी हिजरत के आठवें साल मे ग़ज़्वाए फ़तह मक्का भी वाक़े हुई और मुसलमानों को फ़तह नसीब हुई और काबा को बुतों से पाक किया गया, इसी सन् आठ हिजरी मे ग़ज़्वाए हुनैन भी वाक़े हुई, और इसी साल हुज़ूर सरदारे कायनात मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शहज़ादी सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा की वफ़ात हुई इसी सन् आठ हिजरी मे हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के शहज़ादे हज़रत सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु की विलादत बासआदत हुई और इसी साल मे मिंबर शरीफ़ की तामीर भी हुई!

सन् नौ हिजरी मे ग़ज़्वाए तबूक़ वाक़े हुई और ये ग़ज़्वाते नबवी मे आखरी ग़ज़्वा है, हज और ऐलाने बरात का वाक़ेआ भी इसी साल हुआ!

सन् दस हिजरी मे हुज़ूर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का नजरान के ईसाईयों से मुबाहेला हुआ, हुज़ूर पुर नूर मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नजरान के नसारा के तरफ़ मकतूबे गिरामी अरसाल फ़रमाया जिसके जवाब मे नजरान का एक वफ़्द बारगाहे रिसालतमाब मे हाज़िर हुआ, इस वफ़्द मे नसारा के सत्तर सरदार शामिल थे, इनका सरदार अक़ब अब्दुल मसीह, इनका ख़तीब और मुदर्रिसे अज़्म अबुल हारिस बिन अलक़मा और दूसरा सरदार ऐयहम था!

जब ये लोग मदीना मुनव्वरा के तरफ़ आ रहे थे, तो रास्ते मे अबुल हारिस के ऊँट को ठोकर लगी तो इसके भाई करज़ ने बददुआ के तौर पर कहा ठोकर लगे उसको जो दूर है इससे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़ाते अक़दस मुराद थी (माज़अल्लाह) इसपर इसके भाई अबुल हारिस ने कहा ठोकर लगे तुझे, उनको क्यों लगे, करज़ ने हैरानी से पूछा भाई ये क्या? अबुल हारिस ने कहा, अल्लाह तआला की कसम मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के रसूल हैं ये वहीं हैं जिनके हम मुन्तज़िर थें, करज़ ने कहा फिर तुम मुसलमान क्यों नही हो जाते, अबुल हारिस ने कहा अगर मै मुसलमान हो गया तो मेरी क़ौम मेरे ख़िलाफ़ हो जाएगी और जो मरतबा मक़ाम और क़द्रो मन्ज़िलत हासिल है सब जाती रहेगी और जो तहाएफ़ और हदाया हमे मिलते है वो सब छिन जाएंगे, अबुल हारिस की इन बातो से करज़ के दिल मे इस्लाम की मोहब्बत पैदा हो गई और वो क़ाफ़ले से जुदा होकर पहले ही बारगाहे रिसालतमाब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मे हाज़िर हो गएँ और शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हो गएँ!

नजरान के नसारा का ये वफ़्द बारगाहे रिसालतमाब मे हाज़िर होकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे मे कज बक़्शी करने लगा, हर चंद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नाक़ाबिले तरदीद दलाएल से उनको समझाने की बहुत कोशिश किया मगर उन्होने हठ धरमी से काम लिया और कोई बात ना मानी तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दर्ज ज़ेल आयाते मुबारक नाज़िल फ़रमाई –

إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ

बेशक अल्लाह तआला के नज़दीक ईसा अलैहिस्सलाम की मिसाल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के तरह है, इनको मिट्टी से बना लिया फिर उसे फ़रमाया ज़िंदा इन्सान हो जा, और वोह हो गए 'ऐ सुन्ने वाले' ये तेरे रब की तरफ़ से बिलकुल हक़ है और तू शक करने वालों से ना होना तो फिर (ऐ महबूब अलैहिस्सलाम) अगर आप से ये ईसा अलैहिस्सलाम के बारे मे बहस करे इल्म आने के बाद तो इनसे फ़रमाएँ के आओ हम बुलाते हैं तुम्हारे बेटों यानी औलाद को और अपनी औलाद को, तुम्हारी औरतों को और अपनी औरतों को, हम ख़ुद भी आते हैं और तुम्हे भी बुलाते हैं, ताकि मुबहाएला करें और झूठों पर अल्लाह तआला की लानत करें! जब नजरान वाले इस इरशादे मुबारक के बाद भी अपने इन्कार पर क़ायम रहे तो हुज़ूर पुर नूर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनको बहुक्म आएते मुबहाएला पर बुलाया, इन्होने अर्ज़ किया कि हम मशवराह करेंगे और कल जवाब देंगे, जब वो सब मशवराह के लिए जमा हुएँ तो उन्होने अपने सरदार साहिबे राय आलिम अक़ब अब्दुल मसीह से कहा कि फ़रमाए हमारे लिए क्या हुक्म है? तो इसने कहा मेरे साथियों अल्लाह तआला की क़सम तुम पहचान चुके हो कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला के सच्चे नबी है, अगर तुमने इनसे मुबहाएला किया तो सबके सब हलाक हो जाओगे, अगर तुम इनपर ईमान नही लाना चाह रहे हो तो वतन वापस लौट जाओ और उनसे सुलाह कर लो! दूसरे दिन जब वो बारगाहे अक़दस मे हाज़िर हुए तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मुबहाएला के लिए तैयार पाया, इस वक़्त हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गोद मे थे, हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु का हाथ हुज़ूर सरवरे कायनात पकड़े हुए थे, सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा अक़ब मे और इनके अक़ब मे हज़रत मौला अली करम अल्लाह तआला वजहुल करीम थे, और रसूले अक़दस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इनसे फ़रमा रहें थें कि जब मै दुआ के लिए हाथ उठाऊँ तो तुम आमीन कहना!

गिरोहे नसारा ने जब इन हज़रात ज़ीवक़ार को अपनी तरफ़ आते देखा तो लरज़ गए इनका सदर मुदर्रिस अबुल हारिस कहने लगा ऐ लोगों अल्लाह तआला की क़सम मै ऐसी पाकीज़ा सूरतों को देख रहा हूँ कि वोह अगर अल्लाह तआला के हुज़ूर किसी पहाड़ के अपनी जगह टल जाने की दुआ करे तो वो भी टल जाएगा, खबरदार इनसे मुबहाएला ना करना वरना हलाक कर दिये जाओगे!
मरक़ूम है कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि कसम है मुझे उस ज़ाते अक़दस की कि जिसके कब्ज़ए कुदरत मे मेरी जान है, अगर ये लोग मुबहाएला करते तो इनकी सूरते मस्ख़ करके बंदरो और खंज़ीरो सी करदी जाती और ये वादी इनपर आग बरसाती और अहले नजरान को बेख़ो-बन से उखाड़ दिया जाता, यहां तक कि इस वादी के जानवरों को भी हलाक कर दिया जाता और एक साल के अंदर हि अंदर तमाम नसारा हलाक हो जाते!
नसारा ने अर्ज़ किया कि हम मुबहाएला नही करेंगे तो हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम मुसलमान हो जाओ इन्होंने कहा कि हम मुसलमान नही हो सकते, तो आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि जंग के लिये तैयार हो जाओ, इन्होंने अर्ज़ किया कि हम जंग नही कर सकते क्योंकि इसकी ताक़त ही नही है, हाँ अलबत्ता हम जज़िया पर सुलह करते हैं, चुनांचे इनके इस पेशकश पर सुलह करली गयी और मज़ीद इनपर ये शर्त आएद की गई कि ना वो सूद खाएंगे और नाही मुसलमानों पर हमला करेंगे!
इसी दस हिजरी मे हज़रत सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु फरज़न्द मुबारक सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का विसाल हुआ!

सन् ग्यारह हिजरी बमुताबिक़ 632 633 ईस्वी बरोज़ पीर बारह रबीउल अव्वल हुज़ूर ताजदारे अरब व अजम शफ़ीए उमम फख्रे बनि आदम रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सूरह अन्नस्र (इज़ा जा आ नसरुल्लाहे वल फ़तहू) के बाद ही अहले बैत अतहार व सहाबाएकिराम को अपने विसाल मुबारक की खबर दे दी थी!
हज़रत सैय्यदना इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के यौमे विसाल, हक़ तआला ने मलकुल मौत को हुक्म दिया कि ज़मीन पर मेरे महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुज़ूर हाज़िर हो, ख़बरदार बग़ैर इजाज़त के दाख़िल ना होना, और नाही बग़ैर इजाज़त के रुहे आली को क़ब्ज़ करना, तो हज़रत मल्कुल मौत दरवाज़ा-ए-अक़्दस पर अराबी के शक्ल मे हाज़िर हुए और बुलंद आवाज़ से अर्ज़ किया "अस्सलामो अलैकुम या अहलल बैते नबूवते व मादिनिर्रिसालते व मुख़तलिफ़िल मलाइकते" इस वक़्त सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बारगाहे अक़्दस मे मौजूद थी, इसपर आपने अर्ज़ किया कि इस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तबीयत कुछ नासाज़ है इस वक़्त वोह आपसे नही मिल सकते तो वोह वहाँ से तशरीफ़ ले गएँ लेकिन दोबारह फिर आएँ और फिर इजाज़त तलब किया, इसपर फिर आपको वही जवाब मिला तो आप लौट गएँ, लेकिन जब तीसरी मर्तबा फिर मल्कुलमौत आएँ और आपने फिर इजाज़त चाहा तो जनाब सैय्यदा ने चाहा कि फिर आपसे वही फ़रमाए जो पहले फ़रमाया था, तो हुज़ूरपुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपको मना फ़रमा दिया और अर्ज़ किया कि 'ऐ मेरी लख़्ते जिगर तुम जानती हो ये कौन हैं? ये लज़्ज़तों को तोड़ने वाले, ख़्वाहिशों और तमन्नाओं को कुचलने वाले, इजतिमाई बंधनों को अलग अलग करने वाले, ये बीवियों को बेवा करने वाले और बच्चियों को यतीम बनाने वाले "मल्कुल मौत" हैं, ये सुनकर जनाब सैय्यदा ज़ार क़तार रोने लगीं, रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इनको दिलासा दिया और ख़ुद अपने दस्ते मुक़द्दस से उनके रुख़े ज़ेबा से अश्क़ो को साफ़ किया, इस वक़्त घर मे मौजूद हर शख़्स रो रहा था, हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने शहज़ादगाने ज़ीवक़ार सैय्यदना हसन और सैय्यदना हुसैन अलैहिस्सलाम को बुलाया और अपनी आग़ोशे मोहब्बत मे लेलिया और चूमने लगे इस वक़्त ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम रो रहें थें, इसपर हज़रत उम्मे सलमह रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने

अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आप क्यों रो रहें हैं तो हुज़ूर रहमतुललिल आलमीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अर्ज़ किया कि मेरा रोना मेरे उम्मत पर रहमत और शफ़क़त के लिये है!

इसके बाद उम्माहातुल मोमिनीन बारी-बारी बारगाहे अक़दस मे हाज़िर होती रहीं और दौलते वसीहत से माला-माल होती रहीं, फिर हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मौला अली शेरेखुदा रज़िअल्लाह तआला अन्हु को बुलाया और अर्ज़ किया कि 'ऐ अली, फ़ला यहूदी का इतना दरहम मेरे ऊपर क़र्ज़ है, तुमको ताक़ीद है कि ये क़र्ज़ तुम उतारना और तुम हौज़े-क़ौसर पर मुझसे सबसे पहले मिलने वालों मे होगे, और फिर सब्रो इस्तिक़ामत और नमाज़ की पाबन्दी की नसीहत फ़रमाई!

मरवी है कि मल्कुलमौत ने हाज़िरे खिदमत होकर अर्ज़ किया- या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अल्लाह तआला ने मुझे आपके तरफ़ भेजा है और हुक्म दिया है कि मै आपकी इताअत करूँ, अल्लाह जल्ला शान्हू ने आपको ये अख़्तियार दिया है कि अगर आप इजाज़त दें तो रूहे आलिया को क़ब्ज़ करलूं, वरना नही, जो आपकी रज़ा है इरशाद फ़रमाए, इतने मे जिब्रील अमीन हाज़िरे ख़िदमत हुए और अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला आपको अपनी तरफ़ रुजुउ का इरशाद फ़रमाता है, इसपर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अज़राईल अलैहिस्सलाम को इजाज़त मरहम्मत फ़रमा दी और रफ़ीक़े आला के तरफ़ मुन्तक़िल हो गए!

हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का यौमे-विसाल दोशम्बा का दिन है और यही आपके विलादत का भी दिन है, यही दिन ऐलाने नबूवत का है, यही दिन मदीना मुनव्वरा मे तशरीफ़ आवरी का है, चुंकि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़मानए अलालत मे ये फ़रमा दिया था कि मुझे मेरे अहले बैत ख़ुसूसन अली मुर्तज़ा करमअल्लाह वजहुल करीम ही ग़ुस्ल दें, इसलिये हज़रत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने ग़ैर अहले बैत के लिये हुज्रए-मुबारक का दरवाज़ा बंद कर दिया, इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि ग़ुस्ल देने के चारो तरफ़ यमनी चादरो से पर्दा कर दिया गया और आपको मौला अली करम अल्लाह वजहुल करीम के साथ दीगर अहले बैत अतहार ने ग़ुस्ल दिया! फिर आपके हुक्म मुबारक के मुताबिक़ आपको तीन साफ़ सूती कपड़े मे कफ़नाया गया!

हुज़ूर पुर नूर सैय्यदे कौनैन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पहले ही फ़रमा दिया था कि मुझे ग़ुस्ल देने और कफ़नाने के बाद मुझे इस हुज्रे मे तन्हा छोड़ देना क्योंकि मुझपर सबसे पहले सलातो जनाज़ा जिब्रील अमीन पढ़ेंगे फिर मीकाईल अलैहिस्सलाम, फिर असराफ़ील अलैहिस्सलाम, फिर अज्राईल अलैहिस्सलाम फिर गिरोह मलाएका सलातो जनाज़ा पढ़ेंगे इसके बाद मेरे अहलेबैत पढ़ेंगे, फिर मेरे सहाबाकिराम पढ़ेंगे और मुझे मेरे क़ब्र मे मेरे अहलेबैत फरिश्तों के साथ मिलकर उतारेंगे!

आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हुज्रे सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा मे कि जहाँ आपका विसाल मुबारक हुआ और जहाँ आपको ग़ुस्ल मुबारक दिया गया आपके हुक्म के मुताबिक़ दफ़्न किया गया! उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने आपके विसाल मुबारक पर फ़रमाया- इन्ना रिजाला मिनअल मुनाफ़िकीन ज़ अम्वा इन्ना रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मात वइन्नह लमयम्त व इन्नह ज़हब इला रब्बह कमा ज़हब मूसा ---------इला आख़रह" बाज़ मुनाफ़िक़ीन का ख्याल है कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़ौत हो गएँ हैं, हालांकि वोह फ़ौत नही हुएं, बल्कि अपने रब के पास गएँ हैं जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम चंद रोज़ के लिये तौरैत लेने कोहे तूर पर गए थे, आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने मुनाफ़िक़ों को सज़ा देंगे वापस आकर, और मुझे अल्लाह तआला की कसम जिसने कहा कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम फ़ौत हो गयें है, मै उसकी गर्दन तलवार से उड़ा दूंगा!

मज़ार-ए-मुजल्ला इमामुल अम्बिया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की अज़वाज व औलाद- हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बग़ैर किसी इख़तिलाफ़ ग्यारह बीवियाँ थीं जिनमे छ: क़ुरैशा थीं जिनके नाम ये है-

(1) हज़रत सैय्यदा तैय्यबा ताहिरा ख़दीजा कुबरा बिंत ख़ुवैलद रज़िअल्लाह तआला अन्हा (इनके हयाते मुबारका मे सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दूसरी किसी ख़ातून से निकाह नही फ़रमाया और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि तमाम औलाद मुबारक सिर्फ़ सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु को छोड़कर आपही से तवल्लुद हुयीं!

(2) हज़रत सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा (आप हज़रत सैय्यदना अबु बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु की शहज़ादी हैं)!

(3) हज़रत सैय्यदा हफ़्सा रज़िअल्लाह तआला अन्हा (आप हज़रत सैय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु की शहज़ादी हैं)!

(4) हज़रत सैय्यदा उम्मे हबीबा रज़िअल्लाह तआला अन्हा (आप सैय्यदना अबु सुफ़यान रज़िअल्लाह तआला अन्हु की शहज़ादी हैं)!

(5) हज़रत सैय्यदा उम्मे सलमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

(6) हज़रत सैय्यदा सौदह रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

जबकि चार अरबिया लेकिन ग़ैर क़ुरैश हैं जो ये हैं-

(1) हज़रत सैय्यदा ज़ैनब बिंते ख़ुज़ैमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

(2) हज़रत सैय्यदा मैमूना रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

(3) हज़रत सैय्यदा जुवैरिया रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

(4) हज़रत सैय्यदा ज़ैनब बिंते हजश रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

और एक ग़ैर अरबिया जो बनि इसराईल से हैं वो हैं-

(1) हज़रत सैय्यदा सफ़िया रज़िअल्लाह तआला अन्हा!

और एक उम्मे वलद से भी आपने निकाह फ़रमाया जिनका नाम सैय्यदा मारिया क़िबतिया रज़िअल्लाह तआला अन्हा है और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के एक फ़रज़न्द सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु आपसे ही पैदा हुएँ!
इन अज़वाज मुत्तहारात मे से हज़रत ख़दीजा कुबरा और हज़रत ज़ैनब बिंत खुज़ैमा रज़िअल्लाह तआला अन्हमा ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रेहलत मुबारक से क़ब्ल वफ़ात पाई, बाक़ी अज़वाजे मुत्तहारात हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रेहलते मुबारक के वक़्त मौजूद थीं!
औलाद मुबारक—

(1) हज़रत सैय्यदना क़ासिम रज़िअल्लाह तआला अन्हु – आप रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के सबसे बड़े शहज़ादे हैं जो कि सैय्यदा ख़दीजा बिंत खुवैलद रज़िअल्लाह तआला अन्हा के बत्न अक़दस से पैदा हुएँ, आपही के वजह से हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अबुल क़ासिम कुन्नियत अख़्तियार फ़रमाई, आप ऐलाने नबूवत से क़ब्ल पैदा हुएँ, जब आपकी उम्र मुबारक दो साल की हुई तो आप पर्दा फ़रमा गए!

(2) हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह उर्फ़ तय्यब ताहिर रज़िअल्लाह तआला अन्हु- आप ऐलाने नबूवत के बाद हुज़ूरपुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के घर मे जलवागर हुएँ, आप भी हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के बत्ने अक़दस से पैदा हुएँ और अहदे तफ़ूलियत मे ही पर्दा फ़रमा गए, जब इनकी रेहलत मुबारका की ख़बर शहर मक्कह मे मशहूर हुई तो बदबख्त आस बिन वाएल ने कहा मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दोनो बेटे छोटी उम्र मे वफ़ात पा गए अब ये (माज़अल्लाह) अबतर हो गए है यानी न इनकी नस्ल बाक़ी रहेगी और ना ही इनका नाम लेवा होगा क्योंकि अबतर के माईने अपनी नस्ल बाक़ी ना रखने वाला, दुम कटा, बेफ़रज़न्द और बे नाम के है , आस बिन वाएल के इस गुस्ताख़ी के जवाब मे रब्बे ज़ुलजलाल ने सूरत अल क़ौसर का नज़ूल फ़रमाया जिसमे वाज़ेह तौर पर ये ऐलान फ़रमाया दिया गया कि (ऐ महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) आप तो साहिबे क़ौसर है जबकि (इन्ना शानियका हुवल अबतर) यानी ये बात शक व शुबहा से बालातर है कि आपका हर दुशमन चाहे वोह आस बिन वाएल हो या चाहे कोई और वही अबतर है यानी इज़्ज़त और अज़मत से तहे-दामन और नस्ल से दुम कटा है! गोया वोह बदनसीब दोनो जहाँ मे बरबाद हो गया जबकि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान इस तरह बयान किया गया- إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ।
उलेमाएकिराम ने क़ौसर का कई माईना बताया है जिसमे एक ये भी है की आपके औलादों का क़सरत से होना (अलहम्दुलिल्लाह) आज पूरे दुनिया मे इमाम हसन और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से आपकी नस्ल फैली हुई है और पूरी रूहेज़मीं सैय्यदों के आला वजूद से लबरेज़ है, और दूसरा माईना ये है कि दोनो जहान की सारी भलाईयां जो क़सरत मे इतनी अज़ीम है कि मख़लूक के इल्म की वहा तक रसाई ही मुमकिन नही और मख़लूक मे जो भी कोई बयान करता है, वोह शाने रिसालत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इस बहरेअज़ीम के मुक़ाबले मे एक क़तरह भी नही, ज़ाहिर है कि जिसकी शान ख़ुद ख़ालिके कायनात अपने ज़ुबाने क़ुदरत से बयान फ़रमाए उस शान को "कमा हक़्क़हु" बयान करना किसी इन्सान और दीगर मख़लूक के बस का रोग नही और जहाँ तक जन्नत के नहर हौज़े-क़ौसर का ताल्लुक़ है तो वोह मेरे आक़ा और मौला रसूले अरबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मिलने वाली ख़ैर कसीर का एक क़तरह है!

(3) हज़रत सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु- आप सैय्यदा मारिया क़िबतिया रज़िअल्लाह तआला अन्हा के बत्ने अक़दस से पैदा हुएँ, आप सन् आठ हिजरी ज़िलहिज्जातुल मुकर्रम मे पैदा हुएँ, आपके पैदाइश के वक़्त हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम

बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मे हाज़िरे खिदमत हुए, और सरकार दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को "या अबा इब्राहीम" कह कर मुख़ातिब किया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इस कुन्नियत पर बहुत ख़ुश हुए और लख़्तेजिगर का नाम अपने जद् बुज़ुर्गवार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के नाम पर इब्राहीम रखा! हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु की उम्र मुबारक अभि सतरह या अठ्ठारह माह की थी कि सन् दस हिजरी मे आपका विसाल हो गया!

(4) हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा- आप रसूले पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की औलाद पाक मे सैय्यदना क़ासिम के बाद सबसे बड़ी शहज़ादी हैं, आपकी विलादत बासआदत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह ताला अन्हा के साथ शादी के पांचवे साल हुई, इस वक़्त हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि उम्र शरीफ़ तीस बरस की थी! आपकी शादी रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कमसिनि मे ऐलाने नबूवत के क़ब्ल अबुलआस बिन रबिइ बिन अब्दुल उज़ा बिन अब्दुल शम्स बिन अब्दे मुनाफ़ के साथ हज़रत उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के ख़्वाहिश पर की!

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा को अल्लाह तबारको तआला ने दो औलादों से नवाज़ा एक बेटा जिनका नाम हज़रत अली बिन अबुल आस था और एक बेटी जिनका नाम हज़रत सैय्यदा इमामा रज़िअल्लाह तआला अन्हा था, आपको हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बेहद मोहब्बत फ़रमाते थे, और आपही के लिए बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने हज़रत अली करमअल्लाह वजहुल करीम से अपने ज़िन्दगी मे ये नसीहत की थी के मेरे बाद हसनैन करीमैन के परवरिश के लिये निकाह फ़रमा लीजियेगा! हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा का विसाल सन् आठ हिजरी मे हुआ!

(5) हज़रत सैय्यदा रुक़य्या रज़िअल्लाह तआला अन्हा- हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तैंतीसवे साल यानी ऐलाने नबूवत फ़रमाने से क़ब्ल हज़रत सैय्यदा ख़दीजा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के बत्ने अक़दस से पैदा हुई, हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपकी शादी ऐलाने नबूवत के क़ब्ल अपने चचा अबु लहब के बेटे उत्बा से कर दिया था, और आपकी दूसरी बहन सैय्यदा उम्मे कुलसूम रज़िअल्लाह तआला अन्हा की शादी अबु लहब के दूसरे बेटे उतैबा से हुई थी, जब रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ऐलाने नबूवत फ़रमाया तो कुफ़्फ़ारे मक्कह अबुल आस बिन रबिइया, उत्बा बिन अबु लहब और उतैबा बिन अबु लहब को तरग़ीब दी कि वोह रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शहज़ादियों को तलाक़ देदे, अबुल-आस ने तो इससे इन्कार कर दिया लेकिन अबु लहब के दोनो बदबख़्त बेटो ने इस बात को मान लिया, और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारगाह मे हाज़िर होकर गुस्ताख़ाना लहजे मे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुख़ातिब होकर सैय्यदा रुक़य्या रज़िअल्लाह तआला अन्हा को तलाक़ देदिया, और इस बदबख़्त ने सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कुर्ता मुबारक चाक कर दिया और अपना नापाक थूक इमामुल ताहिरीन सैय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जानिब फेका और कहा के मैने रुक़य्या को तलाक़ दिया, इसकी इस हरकत पर रसूले बरहक़ सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ज़बान मुबारक से अल्लाह तआला ने ये जुमला निकाल दिया- **بِكَ كلاَ مِن كَلبًا عَلَيهِ سَلِّطُ اَللّهُمَّ**

"ऐ अल्लाह ताला इस (मलऊन) पर अपने कुत्तो मे से एक कुत्ता मुसल्लत फ़रमा दे! उस वक़्त हज़रत अबु तालिब मजलिसे शरीफ़ा मे मौजूद थे इन्होने उत्बा बिन अबु लहब से फ़रमाया – मै नही जानता कि अब कौनसी चीज़ तुझे इस दुआ के तीर से बचा सकेगी!

अलग़रज़ ये सियाह बातिन अपने बदबख्त बाप के साथ मुल्के शाम के तरफ़ तिजारत के ग़रज़ से रवाना हुआ तो रास्ते मे एक जंगल मे हस्बे साबिक़ पड़ाओ किया, अबु लहब ने अहले क़ाफ़ला से कहा के आज रात तुम सब मेरी मदद करो क्योंकि मुझे अंदेशा है कि कही आज हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ मेरे बेटे के हक़ मे असर ना कर जाए, इसपर सब अहले क़ाफ़ला ने ऊंटो पर लदा हुआ माले तिजारत एक जगह जमा कर दिया और एक बुलंद चबुतरा बनाया फिर उसके ऊपर पूरी हिफ़ाज़त के साथ उत्बा के लिये सोने की जगह बना दी और खुद इसके इर्द-गिर्द घेरा डाल कर बैठ गए, जब ये अपना इन्तेज़ाम कर चुके तो अल्लाह ने इनपर नींद ग़ालिब कर दिया, इसके बाद एक शेर आया, इसने इनमे से एक-एक के मूंह को सूंघा मगर इनमे से किसी को कुछ न कहा, फिर उसने छलांग लगाई और माल-ए-तिजारत के उस ढेर पर चढ़ गया जहां उत्बा सोया हुआ था, शेर ने उसे गर्दन से जा दबोचा और टुकड़े-टुकड़े कर दिया!

सैय्यदा रुक़य्या रज़िअल्लाह तआला अन्हा की दोबारा शादी हज़रत सैय्यदना उस्मान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु से हुई और आप सैय्यदा से हज़रत उस्मान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक फ़र्ज़न्द नवाज़ा जिनका इस्म शरीफ़ हज़रत अब्दुल्लाह रज़िअल्लाह ताला अन्हु था और इनही के वजह से हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाह ताला अन्हु की कुन्नियत अबु-अब्दुल्लाह थी, आपका छ: बरस कि उम्र मे ही इन्तक़ाल हो गया!

हज़रत सैय्यदा रुक़य्या रज़िअल्लाह तआला अन्हा का सन् दो हिजरी मे विसाल हो गया!

(6) हज़रत सैय्यदा उम्मे क़ुलसूम रज़िअल्लाह तआला अन्हा- आप सैय्यदा का निकाह अव्वल अबु लहब के बेटे उतैबा से हुआ था लेकिन अभी रुख़सति नही हुई थी की तलाक़ हो गया था, और ये अल्लाह तबारको तआला का मख़सूस इनआम व इकराम था कि रब्बे दो जहाँ ने दोनो शहज़ादियों सैय्यदा रुक़य्या और सैय्यदा उम्मे क़ुलसूम को दुश्मने हक़ अबु लहब के घर मे जाने से बचा लिया!

जब दो हिजरी मे हज़रत सैय्यदा रुक़य्या रज़िअल्लाह तआला अन्हा का विसाल हो गया तो हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु बहुत रंजीदा रहने लगे जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपकी ये हालत देखा तो इरशाद फ़रमाया, क्या वजह है कि मै तुमको हर वक़्त रन्जो अलम मे डूबा हुआ देखता हूँ, हज़रत उसमान ग़नी ने फ़रमाया आपकी शहज़ादी के विसाल ने मेरी कमर तोड़ दिया है, क्योंकि जो रिश्ता क़राबत आप अलैहिस्सलातो वस्सलाम से वाबस्ता था, अब वोह मुनक़ता (तूट) गया है, और मै इस शर्फ़ से महरूम हो गया हूँ अभी हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु कि ये पुरमलाल गुफ़्तगू मुकम्मल ना हुई थी के रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, उसमान ये देखो जिब्रील अमीन मुझे अल्लाह तआला का ये हुक्म पहुंचा रहे है कि मै अपनी बेटी उम्मे क़ुलसूम को उसी महर पर जो मेरी बेटी रुक़य्या का था तुम्हारे अक़्द मे देंदू! चुनांचे रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने माहे रबिउल अव्वल शरीफ़ की तीन हिजरी को जनाब सैय्यदा उम्मे क़ुलसूम रज़िअल्लाह तआला अन्हा को हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु के अक़्द मे दे दिया और निकाह के दो माह बाद जमादुल आख़िर सन् दो हिजरी मे रुख़सति अमल मे आई, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दो शहज़ादियों के यका बाद दीगरे सैय्यदना उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु के अक़्द मे आने के सबब आपका लक़ब "ज़ुन्नूरैन" यानी दो नूरो वाले पड़ गया!

आप सैय्यदा उम्मे क़ुलसूम रज़िअल्लाह तआला अन्हा के यहां कोई औलाद नही हुई और आपका विसाल माहे शाबाने मोअज़्ज़म सन् नौ हिजरी मे हुआ!

ज़िक्र-मुबारक

शहज़ादिये आलमीन हज़रत सैय्यदा तय्यबा ताहिरा आबिदा ज़ाहिदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बिन्त मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

हुज़ूर पुर नूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि शहज़ादियों मे सबसे छोटी शहज़ादी का इस्म मुबारक हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा और कुन्नियत उम्मे मोहम्मद है! हमारे आक़ा रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि ये वोह शहज़ादी है की जिनपर तमाम मकारिम एख़लाक और औसाफ़े फ़ज़ाएल खत्म थे! या यूँ कहा जा सकता है कि ताजदारे अम्बिया सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि सीरते तय्यबा का एक बेहतरीन नमूना का दूसरा नाम "फ़ातिमा ज़हरा" था!

आपके अलक़ाबात मे सैय्यदुन्निसा, ज़हरा, तय्यबा, ताहिरा, मुत्तहरह, ज़ाकिया, राज़िया, मरज़िया, आबिदह, ज़ाहेदा, और बतूल मशहूर और निहायत मक़बूल अलक़ाबात है!

अल्लामा इब्ने हज्र अलैरहमा शरह क़सीदा हम्ज़िया मे फ़ातिमा, बतूल, ज़हरा, की वजह तस्मिया यूँ बयान करते है कि—फ़ातिमा इस वजह से कि अल्लाह तबारको तआला ने आप रज़िअल्लाह तआला अन्हा से मोहब्बत रखने वालो को आतिशे दोज़ख से महफ़ूज़ फ़रमाया, बतूल इसलिये कि आप ज़माने भर की औरतों मे मुम्ताज़ और साहिबे फ़ज़ीलत हैं, ज़हरा इसलिये कि अल्लाह तबारको तआला ने आपको हैज़ से महफ़ूज़ और मामून रखा!

विलादत बासआदत- आप रज़िअल्लाह ताला अन्हा कि विलादत ऐलाने नबूवत से पांच साल क़ब्ल हुई! ये वोह ज़माना था कि कुरैश ख़ाना काबा के तामीर में मश्ग़ूल थे, इस वक्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की उम्र शरीफ़ा चौतीस बरस की थी! हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने भी अपनी वालिदा माजिदा सैय्यदा तय्यबा ताहिरा ख़दीजा कुबरा रज़िअल्लाअह तआला अन्हा और हमशीराने ज़ीवक़ार के साथ ही रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दस्ते हक़ पर बैते इस्लाम का शर्फ़ हासिल किया –

फ़ज़ाएल व मुनाक़िब- हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के फ़ज़ाएल व मुनाक़िब बेशुमार है और आप फ़ज़्लो करामत के उस बुलंदी पर फ़ाऐज़ है कि उसके गंदे राह को पाना भी हर किसी के बस का रोग नही, इस ऐतराफ़े हक़ीक़त के साथ ये बन्दा नाचीज़ं (मुसन्निफ) जनाब सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के कुछ फ़ज़ाएल व मुनाक़िब कितब सीर व हदीस से नक़्ल करने का शर्फ़ हासिल कर रहा है, और रब्बे करीम गफ़ूरुरहीम से इस नाचीज़ कि यही दुआ है की वोह इसके इसी अमल को बख़्शिश का बहाना बना दे आमीन! हूज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया, "कोई शख्स उस वक़्त तक कामिल मोमिन नही होता, जब तक मै उसको उसकी जान से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ और मेरी ज़ात सब मख़लूक से ज़्यादा पसंदीदा और महबूब न हो जाये" और फरमाया जो मुझसे तवस्सुल की तमन्ना रखता हो और वोह चाहता हो कि क़यामत के दिन उसे मेरी शफ़ाअत नसीब हो, उसे चाहिये कि वो मेरी अहले बैत की न्याज़मंदी करे उनको ख़ुश रखे (बहयक़ी,देल्मी) और फिर फ़रमाया –जो मेरे इन अहले बैत से लड़ाई करेगा मै उससे लड़ूंगा और जो इनसे सुलह करेगा मै उससे सुलह करूंगा! (तिरमज़ी,इब्ने माजा,हबान,हाकिम)

फ़िर फ़रमाया फ़ातिमा मेरा जुज़ है, जो इन्हे नागवार होगा, वोह मुझे भी नागवार है, जो इन्हे पसन्द होगा वोह मुझे भी पसन्द होगा याद रखो क़यामत के दिन मेरे नसब, हसब, और रिश्तेदारी के सिवा बाक़ी तमाम लोगों के नसब बेफ़ाएदा हो जाएंगे! (रवाह,अहमद,हाकिम) अल्लाह तआला ने हुज़ूर सैय्यदे आलम रसूले अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शहज़ादियों को जो इज़्ज़त व रिफ़अत अता फ़रमाई है वोह इन्ही का हिस्सा है!

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया – बेशक मेरे पास एक फ़रिश्ता आया जो आज रात से पहले कभी ज़मीन पर नही उतरा, उसने अल्लाह तआला से इजाज़त मांगी कि वोह मुझको सलाम करे ,और खुशख़बरी दे कि फ़ातिमा जन्नती औरतो की सरदार है और हसन व हुसैन नौजवानाने जन्नत के सरदार है! (रवाहुल,तिरमज़ी)

इब्ने उमैर बयान फ़रमाते है कि मै अपनी फूफी साहेबा के साथ हज़रत सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह ताला अन्हा के खिदमत अक़दस मे हाज़िर हुआ, मैने उम्मुल मोमिनीन से अर्ज़ किया कि फ़रमाईये के रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सब इन्सानो मे से ज़्यादा किससे मोहब्बत फ़रमाते है , तो उन्होने फ़रमाया फ़ातिमा से, मैने अर्ज़ किया कि मर्दो मे महबूब कौन था, फ़रमाया के उनके शौहर अली रज़िअल्लाह ताला अन्हु! (तिरमज़ी शरीफ़)

मरवी है कि एक मर्तबा रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़मीन पर चार ख़त खीचे और फ़रमाया, तुम जानते हो ये क्या है? सबने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला और उसका रसूल ज़्यादा वाक़िफ़ है, तो फ़रमाया फ़ातिमा बिंत मोहम्मद, खदीजा बिंत खुवैलद, मरियम बिंत इमरान, और आसिया बिंत मज़ाहिम (ज़ौजा फ़िरऔन) इन औरतों को जन्नत की सब औरतों पर फ़ज़िलत हासिल है! (अलइस्तेयाब)

सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से मरवी है कि एक दिन हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ फ़र्मा थे कि इतने मे हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इन्हे अपने चादर मुबारक मे छुपा लिया, फिर हज़रत हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु आए तो इनको भी चादर मे दाखिल कर लिया फिर हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा आईं तो इन्हे भी चादर मे दाख़िल कर लिया फिर हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु आएँ तो इनको भी चादर मे दाख़िल कर लिया और ये आऐते करीमा पढ़ी إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا इसमे शक नही कि अल्लाह तआला चाहता है की तुम से नापाकी दूर फ़रमादे (ऐ मेरे अहले बैत) तुमको ख़ूब ख़ूब पाक और सुथरा बना दे! (सही मुस्लिम शरीफ़)

जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम किसी सफ़र या जंग से वापस आते तो सबसे पहले मस्जिद तशरीफ़ ले जाते और दो रिकअत नमाज़ अदा फ़रमाते, फिर हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के घर तशरीफ़ ले जाते, फिर उम्माहातुल मोमिनीन के हुजराते मुबारक मे जलवाअफ़रोज़ होते!

हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा हर अन्दाज़ मे, मसलन खाने पीने बोल चाल गर्ज़ के हर काम मे रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पूरी पूरी तक़लीद फ़रमाती थीं!

हज़रत आएशा रज़िअल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि मैने फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से ज़्यादा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुशाबहे किसी को नही देखा, जब हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा अपने वालिद ज़ीवक़ार के ख़िदमत मे हाज़िर होंती तो अल्लाह तआला के रसूल मक़बूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम खड़े हो जाते और अपनी लख़्ते जिगर कि पेशानी को चूमते और उनको अपनी जगह पर बैठा देते, और यही तरीक़ा और अमल हज़रत ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा का भी था! (अल-इस्तेयाब अबु दाऊद)

हज़रत तय्यबा ताहिरा सैय्यदा फ़तिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा की मुबारक ज़िन्दगी का तमाम तर हिस्सा ज़ोहदो कनाअत पर बसर हुआ, सब्र तहाम्मुल, ज़ोहदो बुर्दबारी दुनयावी परेशानी और तकलीफ़ हस्ते हस्ते बर्दाश्त कर लेना आपको अपने वालिदे ज़ीशान से विरासत मे मिला था!
आप सैय्यदा रज़िअल्लाह ताला अन्हा खुद ही अपने घर का सारा काम काज सर-अन्जाम देती, चक्की पीसना, कपड़े धोना, घर मे झाड़ू देना, बच्चो को सभांलना खाना तैयार करना, पानी भरना ये सब फ़राएज़ ख़ानगी मे शामिल था!

फ़तूहात की क़सरत थी, रब्बे कायनात कि अता से रसूले रहमत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम माल और ज़र के खज़ाने लुटा रहे थे, मगर इसमे अहले बैत नबवी के लिये कुछ भी नही था, अगर कभी इस बारे मे अर्ज़ किया भी तो रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम किसी दूसरे तरीक़े से तसकीन व तशफ़्फ़ी फ़रमा देते, कभी वाज़ो नसीहत फ़रमाते हुए दुनिया के बेसबाती का ज़िक्र कर के कोई वज़ीफ़ा इरशाद फ़रमा देते!
अइम्मा हदीस फ़रमाते है कि चक्की पीस पीस कर जनाबे सैय्यदा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के नरम व नाज़ुक हाथों पर छाले और गडढे पड़ गये थे, चूल्हा फूकते फूकते रुख़े ज़ेबा मुतग़ैयर हो जाते, धुँए से आँखे सुर्ख़ हो जाती थी एक दिन हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा आज कल दरबारे नबवी मे बहुत से क़ैदी आए हुए है, और आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ग़ुलाम और कनीज़ तक़सीम फ़रमा रहे है, तुम भी जाओ एक ख़ादिम या ख़ादमा मांगलो, हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के हुक्म पर जनाब सैय्यदा ख़ैरुन्निसा रज़िअल्लाह तआला अन्हा दरबारे अक़दस मे हाज़िरे खिदमत हुई, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने लख़्ते जिगर से आने का सबब पूछा, तो आपने फ़रमाया के बस ज़ियारत और सलाम के लिये हाज़िर हुई हूँ, शर्म और हया के सबब असल मक़सद न बयान कर सकी, ऐसे ही ख़ाली हाथ वापस लौट आईं और हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु से सारा हाल बयान कर दिया, फिर दोनो मिया बीवी बारगाहे अक़दस मे हाज़िर हुए, और हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अर्ज़ किया, या रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पानी भर भर कर सीना दर्द करने लगा है, हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने भी अर्ज़ किया, चक्की पीसते पीसते हाथों पर छाले पड़ गये है, हुज़ूर के बारगाह मे बहुत से क़ैदी आए हुए है, करम फ़रमाईये कि इनमे से कोई हमे भी अता कर दीजिये, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला की क़सम मै तुम्हे कोई ख़ादिम नही दूंगा, क्या मै अहले सुफ़्फ़ह के हक़ को छोड़दूं और उनको भूल जांऊ? जो फ़करो फ़ाक़ा के वजह से एक एक रोटी को मोहताज हैं, मेरे पास कोई चीज़ नही जो इन पर सर्फ़ करुँ और उनकी इमदाद करुँ, सिवाए इन ग़ुलामों के, मै इनको फ़रोख़्त करके इनकी क़ीमत से असहाबे सुफ़्फ़ह की ज़रुरियात को पूरा करुँगा!

जब ये दोनो मिया बीवी, सब्र शुक्र अदा करके वहां से लौट आएं तो ख़ुद रसूले करीम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनके काशान-ए-मुक़द्दस मे तशरीफ़ लायें और फ़रमाया कि तुम दोनो जो कुछ भी मेरे पास लेने गए थे क्या मै उससे आला चीज़ तुम्हे ना दे दूँ, उन्होंने अर्ज़ किया ज़रूर इरशाद फ़रमाएँ, तो आप हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, हर नमाज़ के बाद दस बार सुबहानअल्लाह, वलहम्दुलिल्लाह, वल्लाह हूअकबर पढ़ा करो और सोते वक़्त सुबहानअल्लाह तैंतीस बार, अलहम्दुलिल्लाह तैंतीस बार, और अल्लाह हूअकबर चौतीस बार पढ़ लिया करो यही तुम्हारे लिये बेहतरीन ख़ादिम है, इस वज़ीफ़े को पाकर मलिकाए ख़ुल्देबरी शहज़ादिये हूरो परी, मख़्दूमाए हिम्मतो जरी, सैय्यदा, आबिदा, ज़ाहिदा, तय्यबा, ताहिरा, फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा और उनके शौहर मौलाए कायनात हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ग़ाएत दर्जा ख़ुश हो गए और शुक्र बजा लाएँ!

सैय्यदना इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया कि मैने अपनी वालिदा मोहतरमा को देखा कि वोह घर की मस्जिद मे मशग़ूले नमाज़ रहती यहाँ तक की सुबह हो जाती, मैने उन्हे हमेशा मुसलमानों के हक़ मे बहुत ज़्यादा दुआएँ करते हुए सुना है, उन्होंने अपने ज़ात के लिये कोई दुआ न मांगी, मैने अर्ज़ किया कि ऐ मादरे मेहरबान क्या वजह है की आप अपने लिये कोई दुआ नही मांगती, तो इरशाद फ़रमाया ऐ मेरे लाडले बेटे पहले हमसाया फिर अपना घर! (मदारिजिन्नबूवत)

निकाह मुबारक– जब रसूले रहमत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मदीना मुनव्वरा मे जलवागर हुए तो कई सहाबाकिराम ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से शर्फ़े निसबत हासिल करने के लिये जनाब सैय्यदा कि ख़्वास्तगारी की मगर रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनको यही जवाब दिया कि अभी अल्लाह तआला के हुक्म का इन्तिज़ार है! एक बार हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु और हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु हज़रत अली करमअल्लाह तआला वजहुल करीम के पास तशरीफ़ ले गएँ, जबकी आप बाग़ को पानी दे रहे थे, इन दोनो हज़रात ने आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु को सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा कि ख़्वास्तगारी की तरग़ीब दी, हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अपने बेसरोसामानी का ज़िक्र किया, तो इन दोनो दोस्तो ने इसरार किया कि ऐ अली तुम ज़रूर जाओ मालूम होता है कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को आपके लिये ख़ासकर रखा है! चुनाँचे इस तरग़ीब पर हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु बारगाहे रिसालतमाब मे हाज़िर हुए, मगर शर्म कि वजह से कुछ कह नही पाएँ हमारे आक़ा व मौला दोआलम के मुख़्तार रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम निगाहे नबूवत से हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के मंशा को समझ गयें और फ़रमाया ''ऐ अली क्या कहना चाहते हो, हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अस्ल मक़सद अयाँ किया, तो रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बहुत मसरूर हुए और इरशाद फ़रमाया कि ऐ अली अल्लाह तआला ने आसमानो पर तुम्हारा निकाह फ़ातिमा से फ़रमाया है, फिर फ़रमाया तुम्हारे पास हक़ महर के लिये क्या है तो हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अर्ज़ किया कि एक ऊँट, एक तलवार और एक ज़िरह, तो सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़िरह फ़रोख़्त करने का हुक्म दिया, चुनाँचे हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने ज़िरह फ़रोख़्त करके रक़म बारगाहे अक़दस मे पेश कर दिया, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उस रक़म से एक मुट्ठी भरकर हज़रत बिलाल रज़िअल्लाहु अन्हु को दे दिया कि सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह ताला अन्हा के लिये इत्र और खुश्बू ले आएँ, दो मुट्ठी भरकर हज़रत अबु बक्र रज़िअल्लाह तआला अन्हु को दिया और फ़रमाया कि घरेलू सामान ख़रीद लाओ, फिर हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाह तआला अन्हु और जमाते सहाबा को बाज़ार भेजा, बहुक्म रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जो कोई कुछ भी ख़रीदता था तो हज़रत अबु बक्र रज़िअल्लाह तआला अन्हु के मशवरह से ख़रीदता था, चुनाँचे एक पैरहन सात दरहम मे एक मकनह चार दरहम मे एक चादर सियाह मिस्री, एक कुर्सी, दो अदद तोशक, चार तकिये कि जिनमे अज़खर घास भरे हुए थे, एक पर्दा पश्म और बोरियाए सहरी, एक डोल चमड़े का, एक प्याला

लकड़ी का, एक मशक़ीज़ा पानी के लिये, एक अफ़्ताबा रोग़नी, और मिट्टी के प्याले ख़रीदे गएँ जब सहाबाकिराम ने ये सामान बारगाहे अक़दस मे पेश किया, तो रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने एक एक चीज़ को दस्ते मुबारक मे लेकर मुलाहिज़ फ़रमाया और पसन्द फ़रमाया और अपने अहले बैत के लिये ख़ैरो बरकत की दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह तआला इस गिरोह को बरकत अता फ़रमा कि जिनके बरतन ज़्यादा तर मिट्टी के है-

हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा का निकाह बद्र से वापसी पर हुआ और माहे ज़ुलहिज्जा मे रुखसती हुई, और आपकी उम्र मुबारक पंद्रह साल साढ़े पाँच माह तहरीर है और हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु कि उम्र शरीफ़ इक्कीस साल की थी!

मन्क़ूल है कि चार लोग दुनिया मे सबसे ज़्यादा रोए है, एक हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ख़ता सरज़द होने के सबब, दूसरे हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के जुदाई के बाद, तीसरी हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा अपने वालिदे ज़ीशान सैय्यदुल कौनैन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विसाल मुबारक के बाद और चौथे हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़िअल्लाह तआला अन्हु वाक़याए करबला के बाद!

हज़रत सैय्यदा आएशा सिद्दिक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती है कि जनाब सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा अपने वालिद माजिद के विसाल के बाद कभी हंसती हुई नज़र नही आईं और यही वजह आपका विसाल हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के विसाल मुबारक के तक़रीबन छ: माह बाद ही हो गया!

हज़रत अनस रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि वोह हुज़ूर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तजवीज़ व तकफ़ीम से फ़ारिग़ हो कर सहाबाकिराम जनाब सैय्यदा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को तसल्ली व तशफ़्फ़ी देने लगे तो उन्होने हज़रत अनस रज़िअल्लाह तआला अन्हु से पूछा, क्या तुम रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दफ़्न कर आए हो? आपने फ़रमाया जी हाँ दफ़्न कर आए हैं, तो जनाब सैय्यदा ने आह भरकर कहा, तुम्हारे दिलों ने ये कैसे गवारा किया कि तुमने मनो ख़ाक के नीचे आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को दफ़्न कर दिया (असदुल ग़ाब)

इसके बाद जनाब सैय्यदा ख़ैरून्निसा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा क़ब्र अनवर पर हाज़िर होती हैं और एक मुश्त ख़ाक क़ब्रे अनवर से लेकर सूंघा और आँख़ो से लगाया और फिर ये अशआर पढ़े- **ما ذا علی من شم تربۃ احمد ان لا یشم مدی الزمان**
غوالیا صبت علی مصا ئب لوانھا صبت علی الا یا مر صدن لیا

لیا

उस शख़्स को और क्या चाहिये कि जिसे अहमदे मुजतबा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि तुरबत अनवर की ख़ुशबू सूंघने को मिल जाए (उसे तो लाज़िम है की) वो तमाम उम्र कोई दूसरी ख़ुशबू न सूंघे (कि इससे आला ख़ुशबू न मिलेगी) मुझपर जो मुसीबते पड़ी है अगर वो रोशन दिनों मे पड़ती तो वो सियाह राते बन जाती! (दारुल मन्सूर)

सैय्यदा उम्मे सलमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती है की जब वफ़ाते सैय्यदा का वक़्त क़रीब हुआ तो सैय्यदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु घर पर नही थे, हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने मुझे हुक्म फ़रमया कि पानी का इंतेज़ाम करो, मै ग़ुस्ल करूंगी, मैंने उनके हुक्म कि तामील की और पानी का इंतेज़ाम कर दिया तो सैय्यदा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने ख़ूब अच्छी

तरह ग़ुस्ल बनाया फिर साफ़ सुथरे कपडे ज़ेबतन फ़रमाया और उसके बाद बिस्तर पर क़िब्ला रुख़ होकर लेट गईं और मुझे फ़रमाया, अब मुफ़ारक़त का वक़्त क़रीब है, मै गुस्ल कर चुकि हूँ इसलिए दोबारा ग़ुस्ल देने की ज़रूरत नही और नाही मेरा जिस्म खोला जाए, चुनांचे इसके बाद आप रज़िअल्लाह तआला अन्हा का विसाल हो गया, जब हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु तशरीफ़ लाए, तो मैने सारा वाक़या सुना दिया, उन्होंने उसी ग़ुस्ल पर इक्तेफ़ा किया और नमाज़ जनाज़ा के बाद उन्हे दफ़्न कर दिया! (तब्क़ात असाबा)

मज़ार मुबारक शहज़ादी-ए-आलमीन जनाब सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हु (जन्नतुल बक़िया शरीफ़)

आपकी नमाज़े जनाज़ा हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने पढ़ाई और लहद मुबारक मे भी हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु उतरे, इसके बाद तजहीज़ व तकफ़ीन के मराहिल से फ़ारिग़ होकर हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु घर आएँ तो निहायत ग़म ज़दा थे शदीद परेशानी और हालते ग़म मे आपने चंद अशआर कहे जिसके माईने ये हैं-

- मै देख रहा हूँ कि दुनिया की बकसरत मुसीबतों ने मुझपर हमला कर दिया है, और ये मुसीबत चिमटी ही रहती है, जब तक मुसीबत ज़दा मौत के मुँह मे न चला जाए
- हर दो जाँनिसार दोस्तों मे बिल आख़िर जुदाई हो जाया ही करती है और वोह ज़माना जो जुदाई के बग़ैर (यानी क़ुर्बे वस्ल का ज़माना) होता है बहुत मुख़्तसर होता है –
- और इसमे शक नही कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा का दाग़े मुफ़ारक़त दे जाना इस बात की दलील है कि जॉनिसार दोस्त हमेशा हमेश नही रहा करते! (दरुल मन्सूर)

हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा को जन्नतुल बक़िया शरीफ़ मे दफ़्न किया गया! आप सैय्यदा तय्यबा ताहिरा आबिदा ज़ाहिदा मख़्दूमा फ़ातिमा ज़हरा की हयाते मुबारका और सीरते ताहिरा पूरे रूहे ज़मीं कि औरतों के लिए एक नमूना अज़ीम है , चाहे वोह किसी भी ऐतबार से हो, चाहे शौहर के साथ वफ़ा का ऐतबार हो, चाहे पाकी के ऐतबार से हो, चाहे अज़्दवाजी ज़िन्दगी के ऐतबार से, चाहे बेटी, बहन, बीवी, माँ हर ऐतबार से आपकी हयाते मुबारक मुकम्मल तौर पर नमूना अज़ीम है! आप सैय्यदा तय्यबा ताहिरा शहज़ादिये आलमीन के बारगाह मे (मुसन्निफ़) बहुत बहुत सलाम नज़र करता है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से यही दुआ करता है कि वो आपके सदक़े और तुफ़ैल पूरे उम्मते मुस्लिमा को ईमान की दौलत से माला माल फ़रमाए ------- आमीन!

ज़हरा बाग़े नबूवत की कली हैं
हसनैन हैं फूल तो गुलदान अली हैं
ज़हरा का नही सानी दुनिया मे कोई भी
बेशक ये क़ौल है रब का, यही क़ौले नबी है
पाकी का बयाँ उनके दुनिया क्या करेगी
दुनिया को पाकी उनके सदक़े मे मिली है
मरियम तो ईसा की निसबत से हैं अफ़ज़ल
कुबरा तो इस्लाम के ख़ातिर हैं मुकम्मल
ज़हरा से अफ़ज़ल न कोई और हुई हैं
ख़ातूने जन्नत तो ज़हरा ही बनी हैं

अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी
(आक़िब)

आप सैय्यदा तय्यबा ताहिरा के बत्ने अक़दस से ख़ानदाने रिसालत का सिलसिला जारी और सारी हुआ और क़यामत तक जारी और सारी रहेगा, आप सैय्यदा की औलादे हज़रत अली के तरफ़ मन्सूब न होकर सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तरफ़ मन्सूब होती है और इसमे भी रब्बे करीम की मशीयत थी, और ख़ुद रसूले पाक का क़ौले शरीफ़ा भी है कि हसन और हुसैन का जद् मै हूँ (कुछ जमाते ऐसी हैं जो सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की शान घटाने के लिये हर मुमकिन कोशिश करती है और आपके औलादों से बुग़्ज़ रखने के सबब हर वोह बात करती है जिसे आस बिन वाएल मरदूद ने अपनी ज़बान से निकाला और अल्लाह ने उसे तबाह और बरबाद कर दिया, अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपकी औलादे मुबारका की शान मे सूरह क़ौसर का नुज़ूल फ़रमाया! उस बदबख़्त ने आपके औलादे नरीना (बेटों) के वफ़ात के बाद आपको (माज़अल्लाह) अबतर यानी दुमकटा कि जिसकी नस्ल ख़त्म हो जाए कहा था! उस मरदूद और उस जैसे तमाम लोगों से मेरा यही सवाल है कि वोह ख़ुदा से लड़ने की क़ूवत रखते है, अगर रखते है तो पूछे ख़ुदा से कि उसने आदम अलैहिस्सलाम को बग़ैर माँ बाप के कैसे पैदा फ़रमाया, वोह पूछे कि उसने ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के कैसे पैदा फ़रमाया, है किसी के अन्दर इतनी क़ूवत (माज़अल्लाह)! ये सब अल्लाह रब्बे कायनात की मशीयते है, जिसके आगे किसी का कोई ज़ोर नही चलता, उसने जब-जब जो-जो चाहा है वही हुआ है, उसने चाहा कि आदम अलैहिस्सलाम को अपने शाने क़ुदरत से बग़ैर माँ बाप पैदा फ़रमाए तो उसने पैदा फ़रमा दिया, उसने चाहा कि ईसा अलैहिस्सलाम को बग़ैर बाप के दुनिया मे भेजे तो उसने ऐसा किया, उसने चाहा कि दुनिया मे नस्ल का ऐतबार बेटों से चलाए तो उसने ऐसा किया, अब अगर उसने अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नस्ल चलाने के लिये सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को चुना तो इसमे किसी को क्या परेशानी हो सकती है, बस ऐसे लोगों के लिये मेरी अल्लाह तआला से यही दुआ है कि वोह इन लोगों को हिदायत अता करे और ईमान मे पूरा पूरा दाख़िल फ़रमा दे आमीन!

औलाद मुबारक- हज़रत सैय्यदा तय्यबा ताहिरा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के तीन शहज़ादे और दो शहज़ादियाँ हुईं जिनका इस्म शरीफ़ ये है- हज़रत सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम, हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और हज़रत सैय्यदना मोहसिन अलैहिस्सलाम (आपका बचपन मे ही विसाल हो गया था) हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा और हज़रत सैय्यदा उम्मे क़ुलसूम रज़िअल्लाह तआला अन्हा!
हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को और आपके औलादों को अल्लाह ने जहन्नम से महफ़ूज़ फ़रमा दिया है जिसके मुताल्लिक़ हदीसे सहिया मौजूद है-

हज़रत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़िअल्लाह अन्हा से फ़रमाया कि अल्लाह तआला तुम्हें और तुम्हारी औलादों को जहन्नम का अज़ाब नही देगा! (हाकिम अल मुस्तदरक, तिबरानी अल मुअजमल कबीर)

इसी हदीस पाक के हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाह तआला अन्हु भी रावी हैं और वोह फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया की बेशक फ़ातिमा ने अपनी असमत और पाकदामनी की ऐसी हिफ़ाज़त फ़रमाया कि अल्लाह ने उसे और उसकी औलाद को आग से महफ़ूज़ फ़रमाया! (हाकिम अल मुस्तदरक, तिबरानी अल मुअजमल कबीर)

हज़रत सैय्यदना इमाम हसन और सैय्यदना इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा का ज़िक्र आपके वालिदे ज़ीशान हज़रत सैय्यदना मौला अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़िक्र के बाद आगे होगा (इन्शाअल्लाह)!

दामादे मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु

हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु इज़्ज़त और बुज़ुर्गी के इस क़द्र बुलन्दी पर हैं कि इनके मरतबे और मक़ाम के गर्दे राह तक रसाई भी किसी के बस की बात नही है तो आपकी बराबरी करना तो बहुत दूर की बात है!
आप रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बिरादरे अमज़ात हैं, दामाद हैं, बाब मदीनतुलइल्म, मशहूर शुजा, बेबदल ज़ाहिद, ज़बरदस्त ख़तीब अज़ीम हैं और हैदरे करार हैं बनु हाशिम मे सबसे पहले आपही को ख़लाफ़त मिली और आप सबसे पहले इस्लाम लाने वालों मे एक थें!

वालिदा माजिदा- हज़रत सैय्यदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की वालिदा माजिदा का इस्म मुबारक फ़ातिमा बिन्त असद बिन हाशिम था, और आपही वो पहली हाशमी ख़ातून है जिन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया, हज़रत फ़ातिमा बिन्त असद ने अपने नामदार ख़ाविंद हज़रत अबु तालिब के तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की निहायत जाँनिसारी और मोहब्बत के साथ ख़िदमत किया, आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अकसर फ़रमाया करते थे कि हज़रत अबु तालिब के बाद फ़ातिमा बिंत असद रज़िअल्लाह तआला अन्हा से बढ़कर मेरे साथ अच्छा सुलूक़ करने वाला कोई नही था! हज़रत फ़ातिमा बिंत असद रज़िअल्लाह तआला अन्हा के रेहलत के वक़्त आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना कुर्ता मुबारक इनके कफ़न के लिये दिया और आप फ़ातिमा बिंत असद के लहद मे कुछ देर के लिये लेटें और फ़रमाया कि मैने कुर्ता इन्हें इसलिये अता किया कि अल्लाह इन्हें जन्नतुल फ़िरदौस मे आला लिबास अता फ़रमाए और मै इनके लहद मे इसलिये लेटा कि अल्लाह इनके क़ब्र को नूर से भर दे!

विलादत बासआदत- हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की विलादत के वक़्त आपकी वालिदा माजिदा तवाफ़े काबा मे मशग़ूल थीं, और आपके साथ हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम भी तवाफ़े काबा मे थे, अभी इन्होंने तीन चक्कर भी मुकम्मल न किये थे कि दर्दे ज़ेह महसूस हुआ, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इनके चेहरे के तग़य्युर से पहचान लिया कि इन्हें दर्द हो रहा है, उनसे फ़रमाया कि आपने तवाफ़ पूरा कर लिया उन्होंने अर्ज़ किया कि नही, तो बोले आप तवाफ़ पूरा कर लीजिये अगर दर्द बीच मे बढ़ जाती है तो आप काबे के अन्दर चली जाईयेगा इसमे ज़रूर अल्लाह कि कोई मशीयत है, फिर आपने जैसे ही चौथे मरतबा तवाफ़ किया तो दर्द तेज़ हो गया और आप ख़ाने काबा मे तशरीफ़ ले गईं और जब बाहर आयीं तो आपके हाथ मे मौला अली शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाह तआला अन्हु थे!
आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के विलादत बासआदत से आपके वालिद हज़रत अबु तालिब रज़िअल्लाह तआला अन्हु बहुत ख़ुश हुएँ और उन्होंने आपको गोद मे लेकर आपका नाम ज़ैद रखा जबकी इनकी वालिदा ने इनका नाम असद रखा जब वहाँ आप सरवरे कायनात भी जलवागर हुएँ तो फ़रमाया कि इनका नाम क्या रखा इसपर आपके वालिद ने फ़रमाया कि ज़ैद, फ़िर इरशाद नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हुआ कि इनका नाम अली रखो तो इसपर आपकी वालिदा ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम मैने किसी को ग़ैब से कहते हुए सुना था कि इनका नाम अली रखो लेकिन मैने इस बात को नज़र अंदाज़ कर दिया था!

हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के विलादत बा सआदत के थोड़ी देर बाद हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी ज़ुबान मुबारक को आपके मुँह मे डाल दिया आप ने ज़ुबाने मुबारक को चूसा और यूँ दुनिया मे आने के बाद सबसे पहले जो चीज़ शिकमे अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु मे पहुँची वोह लुआबे दहन ख़ैरूल वरा मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम था!

आप अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु कि उम्र मुबारक छ: बरस की हुई तो क़बीला क़ुरैश एक क़हेत अज़ीम का शिकार हुआ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से फ़रमाया कि अबु तालिब के अफ़रादे ख़ाना ज़्यादा और अम्वाले ख़ाना कम है इसलिये इन्हें क़हेत साली ने ज़्यादा परेशान कर रखा है चलो इनकी औलाद की कफ़ालत करे, फ़िर आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु के साथ ख़ाना-ए-अबुतालिब मे जलवागर हुएँ और इज़हारे इरादा फ़रमाया, हज़रत अबुतालिब ने अर्ज़ किया कि अक़ील को मेरे पास रहने दो, बाक़ी औलादों मे जिसको चाहो लेलो इस पर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अली रज़िअल्लाहो तआला अन्हु को और हज़रत अब्बास रज़िअल्लाहो तआला अन्हु ने हज़रत जाफ़र रज़िअल्लाह तआला अन्हु को ले लिया और इस तरह हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की इब्तिदाई तालीम हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अग़ोशे नबवी मे हुई!

दरबारे नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपको बहुत से अल्क़ाबात मिले उनमे से चंद एक ये है- इमामुल औलिया, असदउल्लाह, मौला अल मोमिनीन, बाब मदीनतुल इल्म, वलीउल मुत्तक़ीन, यसुबउद्दीन, बैज़तुलबलद, हैदरे कर्रार, सैय्यदुल अरब, अमीरुल नहल, इमाम अलबराहरा, क़ातिल उल फ़ज्जार, इमाम अलमुत्तक़ीन (करम अल्लाह तआला वजहुल करीम) और आपकी कुन्नियत अबुलहसन और अबुतुराब थी! इमाम अहमद रहमतउल्लाह अलैह फ़रमाते है कि जिस क़द्र अहदीस मुबारका हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के फ़ज़ीलत मे वारिद है किसी और सहाबी के फ़ज़ीलत मे वारिद नही हुई यहाँ मुसन्निफ़ चंद अहदीस मुबारिका नक़्ल फ़रमाने की सआदत हासिल करता है-
बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ मे हज़रत साद बिन अबि वक़ास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़ज़्वाए तबूक मे आपको मदीना मे रहने का हुक्म दिया और दीगर सहाबाकिराम कि रफ़ाक़त के साथ अपनी माएत मे रवाना होने की इजाज़त ना दी तो हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आप मुझे यहाँ औरतों और बच्चों पर अपना ख़लीफ़ा बना कर छोड़े जा रहे हैं, तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने जवाबन इरशाद फ़रमाया क्या तुम इस बात से राज़ी नही हो कि तुम्हे मै इस तरह छोड़े जा रहा हूँ जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हरून अलैहिस्सलाम को छोड़ा था बस फ़र्क़ इतना है कि मेरे बाद कोई नबी नही होगा!

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ मे है कि जंगे ख़ैबर के दौरान एक दिन रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कल मै इस्लामी परचम उस शख़्स के हाथ मे दूंगा जिसके हाथ पर इन्शाअल्लाह ताला ख़ैबर फ़तह हो जाएगा वोह शख़्स अल्लाह ताला और उसके रसूल से मोहब्बत करने वाला है, जबकी अल्लाह तआला और उसका रसूल भी उससे राज़ी है! सहाबाकिराम रात को बहुत देर इस बात पर ग़ौर करते रहे कि देखे कल किस ख़ुशनसीब को अलम इनायत होगा, सुबह हुई तो दरबारे नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मे हर शख़्स इस बात का तलबगार था कि ये शर्फ़ उसे हासिल हो, जब सब सहाबाकिराम दरबारे नबवी मे जमा हो गएँ तो हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अर्ज़ किया कि अली कहाँ है? तो सब ने अर्ज़ किया कि अली आशोबे चश्म मे मुब्तिला हैं, इसलिये हाज़िरे ख़िदमत ना हो सके इसपर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुक्म दिया कि उन्हें जल्दी बुलाया जाए, चुनाँचे

दुखी हुई आँखो के साथ मौला अली रज़िअल्लाहु अन्हु दरबारे नबवी मे हाज़िर हुएँ, आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना लुआबे दहन मुबारक आपकी आँखो मे लगा दिया जिससे फ़ौरन ही आपकी आँखे ठीक हो गई और फिर कभी नही दुखी और उसके बाद अलम-ए-लश्कर आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु को नवाज़ा और आपके हाथों से ख़ैबर फ़तह हो गया!

हज़रत हब्शी बिन जनादह रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "अली मुझसे और मै अली से हूँ "(तिरमज़ी,नसाई,इब्नेमाजा)

हज़रत इब्ने अम्र रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि जब (हिजरत मदीना मुनव्वरा के बाद) हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबाकिराम के दर्मियान रिश्ता मुवाख़ात क़ायम किया तो हज़रत अली रज़िअल्लाह ताला अन्हु आँखो मे आंसू लिये बारगाह नबवी मे हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम आपने तमाम सहाबाकिराम मे रिश्ता मुवाख़ात क़ायम फ़रमा दिया है, मै यूँ ही रह गया, इसपर रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तुम दुनिया और आख़रत मे मेरे भाई हो- (तिरमज़ी शरीफ़)

इमाम तिरमज़ी ने अबु सुरैहा और हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा से रिवायत किया है कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिसका मै मौला हूँ अली भी उसका मौला है और मज़ीद फ़रमाया ऐ अल्लाह तआला जो अली से मोहब्बत करता है तू भी उससे मोहब्बत फ़रमा और जो अली से बुग़्ज़ रखे तू भी उससे दुश्मनी रख! (तारीख़ुल ख़ुलेफ़ा,अल सियूती)

हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया انا مدينتل علم و علی ان بابها यानि मै इल्म का शहर हूँ और अली उसका दरवाज़ा है! (तिरमज़ी,हाकिम,तिबरानी)

हज़रत सैयदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया मुझे इस ज़ाते अक़दस कि क़सम है की जिसने दाना उगाया और जान पैदा किया कि मुझको रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मोमिन तुमसे मोहब्बत फ़रमाएगा और मुनाफ़िक़ तुमसे बुग़्ज़ रखेगा (सही मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु रिवायत फ़रमाते है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मुझे यमन की तरफ़ (क़ाज़ी) बना कर भेजना चाहा तो मैने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मै तो अभी नौ उम्र हूँ और नतजुरबेकार हूँ कमाहक़्क़हू मुक़दमात फ़ैसला करना नही जनता और आप मुझे यमन भेज रहे है, ये सुनकर रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने मेरे सीने पर हाथ रख दिया और दुआ की कि ऐ अल्लाह तआला इसके दिल को रोशन फ़रमा दे, इसके ज़बान को तासीर अता फ़रमा दे, मुझे क़सम है उस रब्बे ज़ुलजलाल की कि जिसके हुक्म से तुख़्म से दरख़्त उगते है, इस दुआ के बाद फिर कभी भी मुझे मुक़दमा के फैसले मे कोई दग़दग़ा या तरद्दुद पैदा नही हुआ बग़ैर किसी शक व शुबहा मैंने हर मुक़दमा के फैसले दुरुस्त किये (हाकिम)

हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इस मुबारक दुआ ने हज़रत अली रज़िअल्लाहताला अन्हु के सीना अक़दस को इस क़द्र फ़राख व रौशन फरमा दिया था कि मुश्किल तरीन फैसले आप चंद लम्हों मे फ़रमा देते थे आपके फैसले हैरानकुन और इस क़द्र जचे तुले अंदाज़ मे होते कि किसी को चूँ-चरा की गुंजाईश ही नही मिलती हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की मोहब्बत निशाने ईमान है और आपसे दुश्मनी मुनाफ़िकत की अलामत!
अबु याअला और अल बज़ार ने हज़रत साद रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत किया है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि जिसने अली को इज़्ज़त दिया उसने मुझे इज़्ज़त दिया, हज़रत सैय्यदा उम्मे सलमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जिसने अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु को दोस्त रखा उसने मुझे दोस्त रखा और जिसने मुझे दोस्त रखा उसने गोया ख़ुदा को दोस्त रखा और जिसने अली से दुश्मनी रखी उसने मुझसे दुश्मनी रखी और जिसने मुझसे दुश्मनी रखी गोया उसने ख़ुदा से दुश्मनी रखी! (रवाह तिबरानी,तारीख़ अल ख़ुलेफ़ा)

हज़रत सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से मरवी है कि इनके सामने हज़रत सैय्यदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु का ज़िक्र हुआ तो आपने इरशाद फ़रमाया, हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु से ज़्यादा इल्मे सुन्नत को जानने वाला और कोई नही!

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के चेहरे के तरफ़ देखना भी इबादत है!

इब्ने असाकर हज़रत सैय्यदना इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत करते है कि क़ुरआन मजीद मे जो कुछ हज़रत सैय्यदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के शान मे नाज़िल हुआ है वोह किसी और के शान मे नाज़िल नही हुआ इन्ही से ये भी मरवी है कि हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के शान मे क़ुरआन करीम मे तीन सौ आयाते मुबारका नाज़िल हुई (तारीख़ अल खुलेफ़ा)

अमीरुल मोमिनीन हज़रत सैय्यदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़मानए ख़लाफ़त मे मुसलमानों की तरक़्क़ी उरूज पर थी- हज़रत सैय्यदना उसमाने ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु की शहादत के बाद इख़्तेलाफ़ व तफ़रीक़ की जो ख़लिज पैदा हो चुकी थी वो दिन ब दिन मज़ीद गहरी होती जा रही थी, हज़रत उस्माने ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु के दौर मे फ़तूहाते इस्लामिया का जो सुनहरा बाब रक़म हो रहा था वो तआत्तुल का शिकार हो चुका था, अहले इस्लाम की तमाम तर तवानाईया आपस मे ही एक दूसरे के ख़िलाफ़ सर्फ़ हो रही थी कि इस दौरान सैंतीस हिजरी को जंगे सिफ़्फ़ीन के इख़्तेताम पर सुलह के लिये हुकमैन के तक़र्रुर पर इख़्तेलाफ़ करते हुए हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की जमात से कुछ लोग "ला हुक्मुलिल्लाही" यानी अल्लाह तआला के सिवा कोई हुक्म फ़ैसला करने वाला नही है का नारा लगाते हुए आपकी जमात से अलग यानी ख़ारिज हो गए, इन ख़ारजियों ने आपकी शान मे बदतरीन गुस्ताख़ियाँ किया, हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के समझाने से बहुत से ख़ुशनसीब तोबा करके दोबारा लशकरे अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु मे वापिस आगए मगर बाज़ स्याह बातिन और बदबख़्त अज़ली ऐसे थे कि जो अपने बदअक़ीदा पर जमे रहें!

सन् अड़तीस मे नहरवान मे हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के साथ इन ख़ारजियों का ज़बरदस्त मुक़ाबला हुआ, रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की पेशिंगगोई के ऐन मुताबिक़ रब्बे करीम ने चंद एक के सिवा बाक़ी सब ख़ारजियों को हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के हाथो ज़िल्लत और रुसवाई के मौत सुला दिया, इसी बदबख़्त गिरोहे ख़वारिज के तीन अफ़राद अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम अलमरदी, बर्क बिन अब्दुल्लाह तमीमी, और अमरु बिन बकेर तमीमी मक्का मुकर्रमा मे जमा हुए और अज़्मऐ इस्लाम पर इल्ज़ाम तराशी के साथ साथ नहरवान के मक़तूलों पर इज़हारे अफ़सोस किया और बहुत देर तक ख़ामोश बैठे फिर इनमे से एक बोला, आएँ हम जानो पर खेलकर अली, मुआविया, और अमरु बिन अलआस (रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा) को क़त्ल कर दें ताकि मुसलमान इनके ज़ुल्म के हाथों से निजात पा जाए, इसपर इब्ने मुलजिम बोला अली के लिये मै काफ़ी हूँ, बर्क़ ने कहा मुआविया का काम मै तमाम कर दूंगा अमरु बिन बकेर ने अमरु बिन अलआस के क़त्ल की ज़िम्मेदारी ली, इसके बाद सब ने ये अहेद लिया या तो वो इन सब को क़त्ल कर देंगे या ख़ुद मर जाएंगे, ना मुराद इब्ने मुलजिम लईन ने कूफ़े मे आकर अपने दोस्तो पर ये राज़ फ़ाश न किया अलबत्ता शबेब बिन शजरह अशजई को अपने इरादे से मुत्तिला किया और मदद की दरख़्वास्त की इब्ने मुलजिम लईन ने कहा नमाज़े फज्र से क़ब्ल मस्जिद मे छुपकर बैठ जाऊंगा और जब वो नमाज़ के लिये आएंगे मै अचानक उन पर हमला कर दूंगा, फिर मै अली (रज़िअल्लाह तआला अन्हु) को क़त्ल करके बच निकला तो बहुत बेहतर वरना मुझे शहादत नसीब हो जाएगी और मुसलमान उनके ज़ुल्म से निजात पाएंगे (माज़अल्लाह) शबेब बोला अफ़सोस हो तुझ पर क्या तू ऐसे शख़्स को क़त्ल करने के लिये आया है जो साबिक़ुल इस्लाम और सब लोगों मे अफ़ज़ल व आला है, इब्ने मुलजिम नामुराद बोला; क्या ख़ूब, क्या इन्होंने जंगे नहरवान मे नेक बंदो को क़त्ल नही किया? शबेब ने कहा हाँ, फिर इब्ने मुलजिम ने बोला हम इनको इन्ही मक़तूलों के औज़ क़त्ल करना चाहते है, बदबख़्त शबेब इस मक्कार की बातों मे आगया और इसके साथ हो गया! फ़िर सतरह रमज़ानुल मुबारक शब जुमा को इब्ने मुलजिम अपने साथियों शबेब और दरवान के साथ मस्जिदे कूफ़ा मे आया और छुपकर बैठ गया, थोड़ी देर बाद शेरे ख़ुदा हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु तशरीफ़ लाएँ और "अय्योहन्नास अस्सलात अस्सलात" का ऐलान फ़रमाते हुए दाख़िले मस्जिद हुए शबेब ने लपक कर तलवार चलाई मगर वार ख़ाली चला गया और हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु आगे बढ़ गएँ, दूसरे लम्हें दुश्मने ख़ुदा इब्ने मुलजिम ने आगे बढ़कर पूरी क़ूवत से आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु की पुर नूर पेशानी पर वार किया, और साथ ही चिल्ला कर कहा "अल हुक्मुलिल्लाही वला लका या अली वला सहाबिका" यानी ऐ अली हुक्म सिर्फ़ अल्लाह का होता है, तू या तेरे दोस्तो का नही, तलवार का ज़ख्म बहुत गहरा था और ऐसी जगह लगा था कि जहां रोज़े ख़न्दक अमरु बिन अब्दूद के तलवार का ज़ख़्म लगा था, इस वाक़ेआ अज़ीम के बाद दरवान भागकर अपने घर आगया और अपने अहबाब से ज़िक्र किया तो उन्होंने इसको क़त्ल कर डाला, शबेब फ़रार होने मे कामियाब हो गया, जबकि इब्न मुलजिम गिरफ़्तार हो गया!

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने ज़ख़्मी हो जाने के बाद अपनी हमशीरा उम्मे हानी रज़िअल्लाह तआला अन्हा के बेटे जूदह बिन हुबैरह को नमाज़ पढ़ाने पर मामूर फ़रमाया, बाद नमाज़ फज्र आपको उठाकर घर लाया गया, अबतक सूरज निकल आया था, इब्ने मुलजिम को मश्के बांध कर पेश किया गया, हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इससे दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ दुशमने ख़ुदा तुझको किस चीज़ ने मेरे क़त्ल के लिये आमादा किया? जवाबन इब्ने मुलजिम बोला मैने इस तलवार को चालीस रोज़ तक तेज़ किया था और अल्लाह तआला के हुज़ूर दुआ किया था कि इससे वोह शख़्स मारा जाए जो शर्रे ख़ल्क है, इसपर आपने इरशाद फ़रमाया कि मै देख रहा हूँ कि तू भी इसी से क़त्ल किया जाएगा! फ़िर हाज़रीन से फ़रमाया, अगर मै जाबिर ना हुआ, तो मेरे बाद मेरे क़ातिल को मार डालना, जैसा की इसने मुझे क़त्ल कर दिया और अगर मै बच गया तो जैसा मुनासिब समझूंगा वैसा करूंगा, फिर फ़रमाया ऐ बनु अब्दुल मुत्तलिब लोगों को मुसलमानों कि ख़ूँरेज़ी की तरग़ीब न देना और ये सैलाब न उठाना कि अमीरुल मोमिनीन

क़त्ल कर दिये गए हैं, बल्कि सिर्फ़ मेरे क़ातिल को क़त्ल करना, हाज़िरीन मजलिस पर गिरयाँ तारी थी, फिर आपने अपने शहज़ादे इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को मुख़ातिब करके फ़रमाया, ऐ हसन (रज़िअल्लाह तआला अन्हु) अगर मै इस ज़ख़्म से मर जाऊँ, तो तुम भी इस बदबख़्त को तलवार से ऐसा ही एक वार करना बाक़ी और तक़लीफ़ न देना क्योंकि मैने रसूल अल्लाह सलल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुना है "इय्याकुम वल मसलहुन" फिर आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अहले ख़ाना ख़ुसूसन हसनैन करीमैन रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा को वसीअतें फ़रमाईं दीगर हाज़रीन को भी वसीअतें फ़रमाईं, और इक्कीस रमज़ानुल मुबारक को आपका विसाल हो गया, आख़िरी कलाम जो आपके ज़ुबान मुबारक से निकला था वो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ था!

हज़रत हसन और हज़रत हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा ने आपको ग़ुस्ल दिया, हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और दारुल इमारत कूफा मे आपको रात के वक़्त दफ़्न कर दिया गया, हज़रत अबु बक्र बिन अयाश फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की क़ब्र अनवर को इसलिये ज़ाहिर नही किया गया कि कही बदबख़्त ख़ारजी इसकी भी बेहुरमती न करे- (तारीख़ अल ख़ुलेफा,अल अल्लामा जलालउद्दीन सियूती)
मशहूर ये है कि आपका मज़ार मुबारक नजफ़े अशरफ़ मे है और मरजए ख़लायक है!

रौज़ा-ए-मुबारक हज़रत मौला अली शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाह अन्हु (नजफ़े अशरफ़)

आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु की ख़लाफ़त कि मुद्दत तीन माह कम पाँच बरस है!
आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु कि बारगाहे अक़दस मे (मुसन्निफ़) बेहद सलाम नज़्र करता है और अल्लाह से ये दुआ करता है कि आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के सदक़े और तुफ़ैल हम सबको ख़ारजियों और बदअक़ीदों के शर से महफ़ूज़ फ़रमाए आमीन....

ख़ुदा के शेर हैं दामादे मुसतफ़ा हैं अली
ज़हरा के हैं शौहर, पिदरे हसन मुजतबा हैं अली
मुजस्सम नूर हैं, बावफ़ा हैं अली
बीमार क़ल्ब के लिये एक शिफ़ा हैं अली
ख़ुदा कि बारगाह मे नबी की दुआ थी यही
जहां जहां हूँ मैं वहां वहां हों अली
अली का नाम लेने से मुश्किले दूर होती हैं
ख़ुदा कि क़सम मुश्किलों मे मुश्किलकुशा हैं अली
ईमान से ईमान को पहचान लो अगर
क़ुरआन से क़ुरआन को तुम जान लो अगर
पूछोगे ना ज़माने से तुम क्या हैं अली
बेसाख़्ता कहोगे कि जाने ईमाँ हैं अली

अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

अज़वाज व औलाद- आप रज़िअल्ल्लाह तआला अन्हु ने हज़रत सैय्यदा तय्यबा ताहिरा आबिदा ज़ाहिदा शहज़ादिये आलमीन फातिमा ज़हरा रजिअल्लाह तआला अन्हा के ज़िन्दगी मे किसी दूसरी ख़ातून से निकाह नही फ़रमाया लेकिन आपके विसाल के बाद कई शादिया फ़रमाई जिनमे कुछ के नाम मुसन्निफ़ यहा दर्ज करता है और उन ख़ातूनो के बत्न से आपकी औलादें भी हुई और उनसे दुनिया मे अलवी ख़ानदान मौजूद है! (1) उम्मुल बनीन रज़िअल्लाह तआला अन्हा (आप हज़रत अब्बास अलमदार रज़िअल्लाह तआला अन्हु की वालिदा है)! (2) हज़रत लैला बिन्त मसऊद रज़िअल्लाह तआला अन्हा (3) हज़रत असमा बिन्त उमैस रज़िअल्लाह तआला अन्हा (इनसे मोहम्मद अल असग़र पैदा हुएँ जो करबला मे शहीद हुएँ) (4) हज़रत इमामा बिन्त अबुल आस रज़िअल्लाह तआला अन्हा (ये हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा की लख़्ते जिगर है और सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा की भांजी हैं, इनके बत्ने अक़दस से मौला अली के एक फ़रज़न्द मोहम्माद अल औस्त पैदा हुएँ और आप भी करबला मे शहीद हुएँ थे) (5) ख़ौला बिन्त जाफ़र रज़िअल्लाह तआला अन्हा (इनके बत्ने अक़दस से मोहम्मद अल अकबर रज़िअल्लाह तआला अन्हु पैदा हुएँ और इन्हे ही इमाम हनीफ़ कहा जाता है! (6) उम्मे हबीबा बिन्त रबिया अल सालबिया रज़िअल्लाह तआला अन्हा! (7) उम्मे सईद बिन्त अरवाह रज़िअल्लाह तआला अन्हा! (8) ममयात बिन्त उम्र अल क़ैस रज़िअल्लाह तआला अन्हा (तारीख़ अल तिबरी, तरीख़ इब्ने ख़लदून)

हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने कई शादियाँ फ़रमाई और औलादें भी हुईं लेकिन मुसन्निफ़ ने यहा चंद औलादों के नाम के अलावा किसी का नाम नही दर्ज किया चूंकि मुसन्निफ़ सादात के उस शाख़ से ताल्लुक़ रखता है जिन्हे हसनी हुसैनी कहा जाता है इसलिए मुसन्निफ़ अपने अजदाद इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा का ख़ुसूसी ज़िक्र करेगा जिनसे सादाते क़ुत्बिया की शाख़ है अलबत्ता जो क़ारीनकिराम इससे दिलचस्पी रखते हैं वोह तारीख़ और अंसाब की दूसरी किताबों का मुताला करें!

हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम
हसन अलैहिस्सलाम

आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु की विलादत बासआदत पंद्रह रमज़ानुल मुबारक सन् तीन हिजरी में, मदीना मुनव्वरा मे हुई, जब ये मुबारक ख़बर बारगाहे नबवी मे पहुँची तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ख़ुशी और मसर्रत के साथ काशाने सैय्यदा मे तशरीफ़ लाएँ और फ़रमाया मेरे बेटे को मुझे दिखाओ, हज़रत असमा बिंत उमैस रज़िअल्लाह तआला अन्हा उस वक़्त वहाँ मौजूद थी उन्होंने शहज़ादे को एक ज़र्द रंग के कपड़े मे लपेटकर आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के आगोशे मोहब्बत मे दे दिया हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ज़र्द रंग के कपड़े को देखकर फ़रमाया मेरे बेटे को ज़र्द रंग के कपड़े मे ना लपेटा करो चुनांचे उसी वक़्त उस ज़र्द रंग के कपड़े को हटा दिया गया और सफेद रंग के कपड़े मे लपेट दिया गया, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने प्यारे शहज़ादे के दाएँ कान मे अज़ान और बाएँ कान मे अक़ामत इरशाद फ़रमाया फिर हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु से फ़रमाया, इसका क्या नाम तजवीज़ फ़रमाया उन्होंने अर्ज किया कि इसका इख़्तियार तो आपको है, अगर चाहें तो मौलूद का नाम हरब रख लें - हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "मै वही का मुन्तज़िर हूँ! इतने मे ज़िब्रील अमीन अलैहिस्सलाम सब्ज़ कपड़े यानि पारचऐ जन्नती पर आपका मुनक्कश मुबारक नाम लेकर हाज़िरे ख़िदमत हुऐ, फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु से फ़रमाया कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के बड़े बेटे का नाम 'शब्बर' था, इसका अरबी तर्जुमा 'हसन' बनता है, मेरे बेटे का नाम यही होगा!

रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सातवें दिन दो मेण्ढे ज़िबाह करके प्यारे शहज़ादे इमाम हसन अलैहिस्सलाम का अकीक़ा किया, और सरके बालों के बराबर सदक़ा दिया (नसाई)

हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु सर से लेकर सीने तक रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मुशाबहत रखते थे (तिरमज़ी शरीफ)

हज़रत अनस रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि इमामे हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत ज़्यादा मुशाबेह थे और फ़रमाते है कि मैने उनसे बढ़कर किसी को रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का हमशक़्ल नही देखा (सही बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि मैने रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस हाल मे देखा कि इन्होंने हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को अपने दोश मुबारक पर उठा रखा था और कह रहें थे ऐ इलाही मै इससे मोहब्बत करता हूँ तू भी इससे मोहब्बत फरमा (बुख़ारी,मुस्लिम)

हज़रत अबु बक़रह रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि एक दिन रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मिम्बर शरीफ़ पर रौनक़ अफ़रोज़ थे आपके पहलू मे हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु बैठे थे हुज़ूर अक़दस कभी लोगों की तरफ़ देखते और कभी जनाब हसन के तरफ़, फिर फ़रमाया मेरा ये बेटा "सैय्यद" है और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इसके ज़रिये से मुसलमानों के दो गिरोहों के दरमियान सुलाह करवाएगा (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अम्र रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया हसन और हुसैन दुनिया मे मेरे फूल है (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को कन्धों पर उठाए थें कि किसी शख़्स ने देख कर कहा वाह साहबज़ादे तुम्हारी सवारी कितनी अच्छी है, ये सुनकर सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया देखो सवार भी तो कितना अच्छा है (हाकिम)

हज़रत इब्ने ज़ुबैर रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु से बेहद मोहब्बत फ़रमाते थे, मैने बचश्म ख़ुद देखा की बाज़ औक़ात रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सजदे मे होते और इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु गर्दन या पीठ पर सवार हो जाते और जब तक वो खुद न उतरते हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उनको ना उतारते, मैने येभी देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हालते रुकूउ मे थे कि हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु आएँ और सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़दम मुबारक के दरमियान से निकल कर दूसरी तरफ़ चले गएँ!

हज़रत ज़ुबैर बिन अरक़म रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि एक दिन हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु ख़ुत्बा देने के लिए खड़े हुए तो क़बीला अज़्दशनु का एक शख़्स खड़ा हुआ और उसने कहा कि ऐ लोगों मै इस बात की गवाहि देता हूँ कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सैय्यदना हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हू को गोद मे लिए हुए फ़रमा रहें थे कि जो मुझसे मोहब्बत करता है उसे चाहिये कि वो इनसे भी मोहब्बत फ़रमाये, जो लोग यहां मौजूद हैं, वो मेरी बात उन लोगों को पहुँचा दें जो यहाँ मौजूद नही हैं, उस शख़्स ने मज़ीद कहा अगर मुझे रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के फ़रमाने ज़ीशान की इताअत मन्ज़ूर न होती तो मै ये बात अपनी ज़बान पर ना लाता (रवाह अल हाकिम)

हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु बड़े ही बुर्दबार इज़्ज़त और शान वाले पुरवक़ार और साहिबे जाहो हशम थें आप फ़ितना फ़साद और ख़ूँरेज़ी को सख़्त नापसंद फ़रमाते थें, सख़ावत मे बेबदल थें, बसाऔक़ात एक एक शख़्स को एक एक लाख दरहम अता फ़रमाते थें (तारीख़ अल ख़ुलेफ़ा,अल सियूती)

आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़माने ख़लाफ़त मे एक अराबी हाज़िरे ख़िदमत हुआ, उसने आते ही आपके आबाओ अजदाद के शान मे गुस्ताख़ी करना शुरु कर दिया जब वो ख़ुब गुस्ताख़िया कर चुका तो आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने ख़ादिम को तलब फ़रमा कर उसे बहुत कुछ अता फ़रमा दिया फिर माज़रत करते हुए इरशाद फ़रमाया इस वक़्त मजबूर हूँ यही कुछ मौजूद था जो दे दिया है वरना और अता फ़रमाता, वो अराबी ये इल्म और शाने सख़ावत देख कर रो पड़ा और क़दमो मे गिर कर कहने लगा, हुज़ूर मैने जो ग़ुस्ताख़िया की वो बनामे ख़ुदा माफ़ फ़रमा दीजिये मैने ये सब बतौरे इम्तेहान किया था!

सन् चालिस हिजरी मे हज़रत सैय्यदना इमाम अली अलैहिस्सलाम की शहादत के बाद अहले कूफ़ा ने बिला इत्तेफ़ाक़ हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के हाथों पर बैअत किया, रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हदीस मुबारक़ के मुताबिक़ आप आख़री ख़लिफ़ा राशिद हैं!

सबसे अवल क़ैस इब्ने साद ने बैअत के लिए हाथ बढ़ा कर कहा क़ुरआन वा सुन्नत के नफ़ाज़ और मुलहदों से क़ताल के लिए अपना हाथ बढ़ाएं और बैअत क़ुबूल फरमाएं, आपने जवाबन इरशाद फ़रमाया- " عصا كتابللاه و سنت رسولےهي وبا تيان عصا كل شرط "इस के बाद और लोग भी बैअत करने लगे, आप फ़रमाते जाते थे कि तुम लोग मेरे कहने को सुनते रहना, मेरी इताअत करना, जिससे मै सुलाह करूँ उससे तुम भी सुलाह करना, जिससे मै जंग करूँ तुमभी उससे लड़ना, इन फुकरों से लोगों को शुबह पैदा हो गया और अहले कूफ़ा आपस मे सरगोशियाँ करने लगें कि ये तो हमारे अमीर नहीं हैं और ना ही ये जंग का इरादा रखते हैं (इब्ने ख़लदून)

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने मरतबा शहादत पर फ़ाऐज़ होने से महज़ चंद रोज़ बेशतर मुल्के शाम पर हमला करने के लिए दावए मोहब्बत करने वाले ईराक़ियो का एक लशकर तरतीब दिया था चालीस हज़ार आदमियों से अमीर शाम के ख़िलाफ जंग और मौत पर बैअत ली थी, लेकिन अभी ये लशकर अपनी मन्ज़िल के तरफ़ रवाना ना हुआ था कि हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु शहीद कर दिए गएँ, फिर जब लोगों ने अमीरूल मोमिनीन हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत कर ली और हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु कि शहादत की ख़बर मशहूर हो गई तो अमीर शाम लश्करे जर्रार लेकर हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु से जंग के लिए कूफ़ा के तरफ़ बढ़ा ये वाक़्या सन् इक्तालीस हिजरी का है (तारीख़ अल कामील इब्ने असीर)

हज़रत इमाम आली मक़ाम हसन अलैहिस्सलाम भी अपने हमराहियों का लशकर लेकर मुक़ाबले के लिए कूफ़ा से बाहर आए, आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के आगे चलने वाले दस्ते पर बारह हज़ार का लशकर था जिसकी कमान क़ैस बिन साद और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा के हाथ मे थी, जबकी क़ैस लशकर के एक हिस्से पर कमाण्डर थे, जब ये लशकर इमाम हसन के क़यादत मे मदाएन पहुँचा तो क़याम के साथ मशहूर हो गया कि क़ैस बिन साद को क़त्ल कर दिया गया है, इस ख़बर के फ़ैलते ही लशकर मे बेचैनी की कैफ़ियत तारी हो गई, लोग एक दूसरे से उलझ पड़े कुछ नआक़बत अन्देश हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के क्रेमे पर हमलावर हो गए, जो कुछ पाया लूट लिया अन्दर दाख़िल हुए तो न सिर्फ़ ये कि आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के नीचे से जानमाज़ खीच लिया बल्कि वो चादर भी छीन ली जो आप ओढ़े थे, एक बदबख़्त ने मज़ीद नआक़बत अन्देशी का मुज़ाहिरा किया आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के रान मुबारक पर नेज़ा मार दिया, ये सूरते हाल देखकर ख़ानदाने रबिअ व हमदान आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के हिमायत मे उठ खड़े हुए और अदबाशों के मजमा को मुन्तशिर कर दिया आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु को ज़ख़्मी हालत मे एक तख़्त पर उठा कर मदाएन लाया गया और क़सरे उबैज़ मे ठहराया गया (इब्ने ख़लदून)

इस बेहंगम शोर व ग़ुल के ख़त्म होने के बाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन इमाम हसन मुजतबा रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अहले कूफ़ा की बेवफ़ाई और ग़द्दारी देखकर अमीर शाम के तरफ़ ख़त तहरीर किया, मै ख़लाफ़त से दस्तकश होना चाहता हूँ बशर्ते कि मुझको जो कूफ़ा के बैतउलमाल मे है दे दिया जाए (उस वक़्त वहा तक़रीबन पाँच लाख दीनार थे) और दारुल जबर (मज़ाफ़ाते फ़ारस) का ख़राज मुझे दिया जाए और मेरे वालिद बुज़ुर्गवार को मेरे सामने गालियां न दी जाए और ना ही उनको मेरे सामने सख़्त अलफ़ाज़ व कलमात से याद किया जाए, ख़त रवाना करने के बाद हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने इसका ज़िक्र इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़िअल्लाह तआला अन्हु से किया उन्होंने आपको बहुत समझाया बुझाया मगर आप अपनी राय पर क़ायम रहे, दरबारे शाम मे हज़रत मुआविया एक सादे कागज़ पर दस्तख़त और मोहर लगाकर अब्दुल्लाह बिन आमिर और अब्दुल्लाह बिन समरह के मारफ़त हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के ख़िदमत मे भेज चुके थे, साथ ही दूसरे काग़ाज़ पर लिखा था कि सुलह के लिये जो शराएत आप चाहे तहरीर फ़रमा दे हमे मन्ज़ूर है, हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इस काग़ाज़ पर कि जिसपर हज़रत मुआविया की मोहर और दस्तख़त थी, पहले शराएत के अलावा चंद शराएत और भी तहरीर फ़रमा दिया जिसे हज़रत मुआविया बिन अबु सुफ़ियान ने मानने से इन्कार कर दिया और कहा कि सिर्फ़ वही शरते काफ़ी है जिनका तुम पहले ज़िक्र कर चुके हो (तारीख़ इब्ने ख़लदून)

हज़रत जलालउद्दीन सियूती रहमतउल्लाह अलैह नक़्ल फ़रमाते है कि हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु और हज़रत मुआविया बिन अबु सुफ़ियान के दरमियान इन शराएत पर सुलह हुई कि फ़िल वक़्त हज़रत मुआविया ख़लीफ़ा बनाए जाते हैं लेकिन इनके इन्तक़ाल के बाद ख़लीफ़ा अल मुस्लिमीन हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु होंगे, ईराक़ हिजाज़ के बाशिन्दों पर मज़ीद कोई टेक्स आएद नही किया जाएगा, और सिर्फ़ वही टेक्स वसूल किया जाएगा जो हज़रत अली के ज़माने से किया जा रहा है, हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़िम्मे जो कर्ज़ है उसे हज़रत मुआविया अदा करेंगे, इन शराएत को दोनो फ़रीक़ों ने क़बूल किया और इन्ही पर बाहेमी सुलह हो गई और रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मोजज़ह ज़ाहिर हो गया, जो आपने फ़रमाया था कि "मेरा ये बेटा मुसलमानों के दो गिरोहों के बीच सुलह कराएगा (तारीख़ अल ख़ुलेफ़ा)

बाद तफ़वीज़े अमारत आपके लश्करों ने ख़राज दारुल जबर हज़रत इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को देने से इन्कार कर दिया और कहा कि ये तो हमारा माले ग़नीमत है, हम इसे नही दे सकते, आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अहले ईराख़ को जमा करके ख़ुत्बा दिया, बाद हम्दो सना के इरशाद फ़रमाया, ऐ अहले ईराक़, मैने तीन मरतबा तुमसे दरगुज़र किया तुमने मेरे वालिद को क़त्ल किया मैने सब्र किया मेरे घर को लूटा मैने सब्र किया, फ़िर फ़रमाया तुम पर वाज़ेह हो जाना चाहिए कि तुमने दो मख़तूलों के दरमियान सुलह की, एक मक़तूल सिफ़्फ़ीन के हैं कि जिनपर तुम रो रहे हो, दूसरे मक़तूल नहरवान के हैं कि जिनके मुआवज़ा का मुतालबा कर रहे हो और जो बाक़ी हैं वो ख़ाजिल हैं और रोने वाले और बदला लेने वाले हैं, जनाब मुआविया ने मुझे एक अम्र पेश किया है जिसमे ना तो इज़्ज़त है और ना ही इन्साफ़, बस अगर तुम मौत पर राज़ी हो (यानि जंग कर सकते हो तो) हम इस अम्र को क़ुबूल न करें और इनसे अल्लाह तआला के भरोसे पर तलवारों से फ़ैसला करें (लशकरे शाम का मुक़ाबला मैदाने जंग मे करें) तो हम मुआविया के उस अम्र को क़ुबूल कर लें और तुम्हें राज़ी कर दें, लोगों ने हर तरफ़ से चिल्ला चिल्ला कर कहा सुलह क़ायम रखिये, सुलह क़ायम रखिये चुनाँचे हज़रत हसन अलैहिस्सलाम ने अपने ख़लाफत के छटे महीने हज़रत मुआविया की बैअत कर ली!

अल्लामा सियूती अलैहरहमा फ़रमाते है कि हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम माहे रबिउल अव्वल सन् इक्तालिस हिजरी मे ख़लाफ़त से दस्तबर्दार हुएं (तारीख़ अल ख़ुलेफ़ा)

सैय्यदना अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़माने ख़लाफ़त मे शहर कूफ़ा को दरुल ख़ुलफ़ा क़रार दिया था और आप वहीं मुन्तक़िल हो गएँ थे, इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने अहले कूफ़ा के मुसलसल बेवफ़ाई के वजह से ख़लाफ़त से दस्तबर्दारी के बाद कूफ़ा को छोड़ दिया और मदीना तय्यबा की तरफ़ रवाना हो गएँ, इब्ने ख़लदून मे है कि हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम मै अपने अहले बैत और अपने मुताल्लिक़ीन के मदीना मुनव्वरा के तरफ़ रवाना हुएँ तो अहले कूफ़ा आपको अलविदा कहने के लिए कूफ़ा के बाहर दूर तक रोते हुए आयें इसके बाद आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु मदीना मुनव्वरा मे ही मुक़ीम रहे!

शहादत- इब्ने साद ने इमरान बिन अब्दुल्लाह के हवाले से तहरीर फ़रमाया है कि हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने एक मर्तबा ख्वाब में देखा कि इनके दोनो आँखो के दरमियान قل هوللاهو عبد लिखा है, अहले बैत ने ये ख़्वाब सुना तो बहुत ख़ुश हुएँ लेकिन जब हज़रत सैद इब्ने अल मुसैब रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने ये ख़्वाब सुना तो अर्ज़ किया कि हुज़ूर अगर ये ख़्वाब पूरा हो गया तो आपकी ज़िन्दगी मुबारक क़रीब अल इख़्तेताम है, इस वाक़ेआ के चन्द रोज़ बाद ही आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु को ज़हर दिया गया और आप शहीद हो गएँ!
हज़रत सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम की शहादत ज़हर ख़ुरानी से पाँच रबिउल अव्वल सन् पचास हिजरी बाज़ के नज़्दीक़ सन् इक्क्यावन हिजरी मे हुआ! (तारीख़ अल ख़ुलेफ़ा,तिबरी,इब्ने ख़लदून)

जब सैय्यदना हसन अलैहिस्सलाम को ज़हर दिया गया तो आपकी तबियत शरीफ़ा सख़्त बेचैन हो गई, आपने हुसैन अलैहिस्सलाम को तलब फ़रमाया, आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु जब हाज़िरे ख़िदमत हुएँ, तो फ़रमाया, भाई मुझे कई मरतबे ज़हर दिया गया मगर हर बार अल्लाह तआला ने मुझे बचा लिया, लेकिन इसबार इतना सख़्त ज़हर दिया गया है कि इसने मेरा कलेजा टुकड़े-टुकड़े कर दिया है, इसी दौरान सख़्त कर्ब और तकलीफ़ के साथ आपको ख़ून की क़य आई जिसमे जिगर के कई टुकड़े थे, जब चंद मर्तबा ऐसे ही ख़ून की क़य आई तो आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के जिस्म अनवर का रंग बदल गया, हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने सख़्त बेताबी के आलम मे रोते हुए पूछा कि भाई जान बताईये कि आपके साथ ये ज़ुल्म किसने किया है, आपने फ़रमाया किस लिये पूछ रहे हो, तो इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने कहा कि क़त्ल करने के लिये तो हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मेरे भाई नही, अगर वो वही है जिसका मुझे ग़ुमान है तो अल्लाह तआला उससे ज़बरदस्त इन्तेक़ाम लेने वाला है और अगर वो नही है, तो मै नही चाहता कि किसी बेगुनाह को मेरी वजह से कोई तकलीफ़ पहुँचे, आपने किसी का भी नाम नही लिया, और सब्रोरज़ा का पैग़ाम पूरी दुनिया को दे गये!
आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु को आपकी वालिदा माजिदा सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के पहलू मे जन्नतुल बक़िया शरीफ़ मे दफ़्न कर दिया गया!

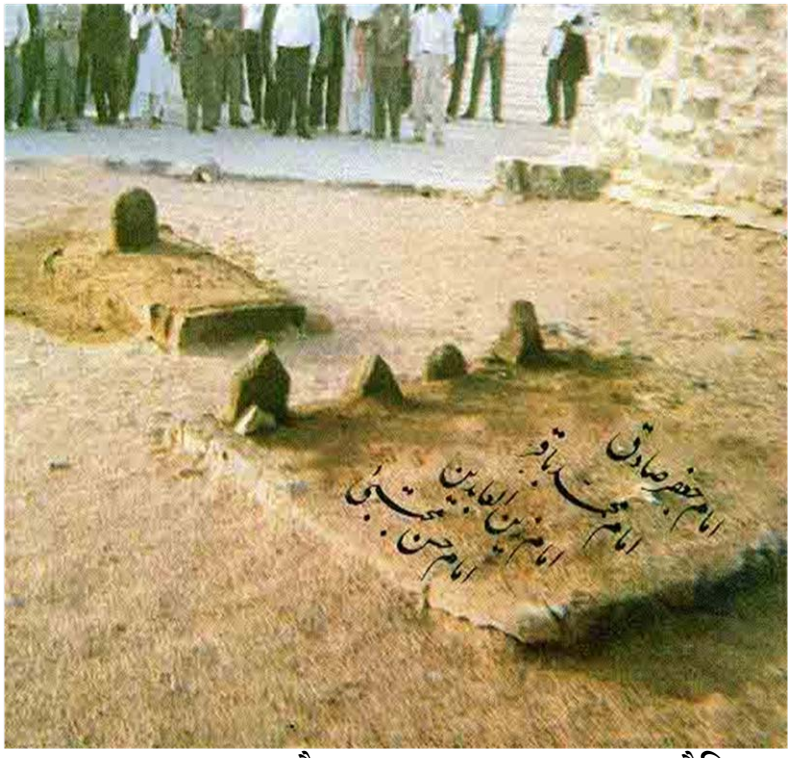

मज़ार पुर अनवार हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम (जन्नतुल बक़िया)

आपकी उम्र शरीफ़ उस वक़्त तक़रीबन छियालीस (46) बरस की थी!

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु के सब्रो तहाम्मुल के सदक़े उम्मते मुस्लिमां पर ख़ैर फ़रमाए, और हम सबको आपके नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ और रफ़ीक़ अता फ़रमाए! आमीन----------

हसन मुजतबा है नाम लक़ब आपका है शब्बर
वालिदे ज़ीशान हैं अली फ़ातहे ख़ैबर
वालिदा हैं सैय्यदुन्निसा नाना हैं इमामुल अम्बिया
भाई हैं हुसैन आपके शब्बीरे मुअतबर
हमशक्ले मुसतफ़ा हैं, हैं ज़ीशाने बावक़ार
फ़रख़ुन्दा बख़्शो ने पाया आपका दीदार
ख़लीफ़ा राशिद थे आख़िरी, थे इस्लाम की पतवार
दुश्मन हो गए आपके जहन्नम के हक़दार
करिये ख़ुदारा एक नज़रे करम इधर
जाए कहाँ ये मँगता छोड़के आपका दर
औलाद हूँ मै आपकी कोई हूँ नही दीगर
एक चश्मे रहमत से सँवर जाए मुक़द्दर
(आमीन)

अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

अज़वाज वा औलाद - हज़रत इमाम आली मक़ाम इमाम हसन अलैहिस्सलाम ने कई शादियाँ फ़रमाई जिन मे बाज़ अज़वाज के नाम ये है-

(1) हज़रत फ़ातिमा बिन्त अबु मसऊद रज़िअल्लाह तआला अन्हा (इनके शिकमे अतहर से हज़रत ज़ैद रज़िअल्लाह तआला अन्हु पैदा हुए)

(2) हज़रत ख़ौला बिन्त मन्ज़ूर बिन रियान बिन अम्र बिन जाबिर बिन अक़ील रज़िअल्लाह तआला अन्हा (इनके बत्ने अकदस से हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु पैदा हुएँ, और सादाते क़ुत्बिया आपके ही नस्ल से हैं आपका तफ़्सीली ज़िक्र आगे आएगा)

(3) हज़रत सलमा बिन्त अमरूल क़ैस रज़िअल्लाह तआला अन्हा

(4) हज़रत उम्मे इसहाक़ बिन्त तुलैह बिन उबैदउल्लाह (हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के बाद इनके साथ इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने निकाह किया)

(5) हज़रत हब्दाह बिन्त हुबैरा मख़ज़ूमी रज़िअल्लाह तआला अन्हा

(6) हज़रत आएशा बिन्त हज़रत उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हा

(7) हज़रत उम्मे क़ुलसूम बिन्त फ़ज़ल बिन अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़िअल्लाह तआला अन्हा (इनके बत्ने अक़्दस से हज़रत अबु बक्र, हज़रत अब्दुल्लाह, और हज़रत अम्र रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा पैदा हुए)

हज़रत सैय्यदना इमाम हसन अलैहिस्सलाम के बारह साहबज़ादे थे जिनका नाम ये है - 1.हज़रत ज़ैद 2.हज़रत तल्हा 3.हज़रत इस्माईल 4.हज़रत अब्दुल्लाह 5.हज़रत हम्ज़ा 6.हज़रत याक़ूब 7.हज़रत अब्दुल रहमान 8.हज़रत अबु बक्र 9.हज़रत हुसैन अल अशरम 10. हज़रत क़ासिम 11.हज़रत अम्र और 12.हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा!

हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के बेटे हज़रत अम्र, हज़रत क़ासिम और हज़रत अब्दुल्लाह रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा क़रबला मे अपने चचा मोहतरम हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के रफ़ाक़त मे शहीद हुए और आपकी नस्ल पाक आपके चार फ़रज़न्दों से जारी हुई यानी हज़रत ज़ैद, हज़रत हसन मुसन्ना, हज़रत हुसैन अलअशरम, और हज़रत अम्र रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा से लेकिन हज़रत हुसैन अल अशरम और हज़रत अम्र का सिलसिलए नस्ल ख़त्म हो गया और पूरी दुनिया मे हज़रत ज़ैद और हज़रत हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा की नस्ल जारी और सारी है! हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की पाँच शहज़ादिया भी थी जिनका नाम ये है

(1) हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा (2) हज़रत सैय्यदा उम्मे सलमा (3) हज़रत सैय्यदा उम्मे अब्दुल्लाह (4) हज़रत सैय्यदा उम्मुल हुसैन और (5) हज़रत सैय्यदा उम्मुल हसन जिनमे सैय्यदा फ़ातिमा की शादी हज़रत सैय्यदना इमाम ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम से हुई थी!

हज़रत इमाम हसन के फ़रज़न्द हज़रत इमाम हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु के नस्ल पाक से ख़ानवादा क़ुत्बिया मौजूद है और इन्शाअल्लाह इनका तफ़्सीली ज़िक्र इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद होगा!

हज़रत सैय्यदना इमाम आली मक़ाम हुसैन अलैहिस्सलाम

विलादत बासआदत- आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु की विलादत मुबारक पाँच शाबानुल मुबारक सन् चार हिजरी मे सनीचर के दिन मदीना तय्यबा मे हुई, हुज़ूर पुर नूर मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपका नाम हज़रत हारुन अलैहिस्सलाम के छोटे बेटे शब्बीर के नाम पर रखा, जिसका अरबी तर्जुमा "हुसैन" बनता है, आप अलैहिस्सलाम की कुन्नियत अबु अब्दुल्लाह और अलक़ाबात ज़की, शहीदे अज़ीम, सैय्यद शबाब अहले जन्नत, सिब्ते रसूल, रिहानुर्रसूल मशहूर है!

हुज़ूर पुर नूर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की चच्ची मोहतरमा हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़िअल्लाह तआला अन्हु की ज़ौजा उम्मुल फ़ज़ल बिन्त अलहारिस रज़िअल्लाह तआला अन्हा एक दिन बारगाहे अक़्दस मे हाज़िर हुईं और अर्ज़

किया कि मैने एक निहायत ही परेशानकुन ख़्वाब देखा है हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कहा के बेझिझक कहीये, तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मैने देखा आपके जिस्म अनवर का एक टुकड़ा काटकर मेरे गोद मे रख दिया गया, ये सुनकर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया कि तुमने बहुत अच्छा ख़्वाब देखा है, इसकी ताबीर ये है की इन्शाअल्लाह तआला फ़ातिमा ज़हरा (रज़िअल्लाह तआला अन्हा) के घर बेटा पैदा होगा जो तुम्हारी गोद मे खेलेगा, चुनांचे ऐसा ही हुआ, इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पैदा हुए और हज़रत उम्मुल फ़ज़ल की गोद मे दिये गए!
इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम से ग्यारह माह दस दिन छोटे थे, आपके पैदाइश के सातवें दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने दो मेण्ढे लेकर क़ुरबान करवाया और आपका अकीक़ा किया

हज़रत उम्मुल फ़ज़ल रज़िअल्लाह तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन बारगाहे अक़दस मे हाज़िर हुई तो देखा कि हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के गोद मे शहज़ादा हुसैन है और आप रो रहें हैं, मैने अर्ज़ किया कि मेरे माँ बाप आप पर क़ुरबान हो क्या हुआ? तो फ़रमाया जिब्रील अमीन मेरे पास आएँ थे और उन्होंने ये बताया कि मेरी उम्मत मेरे इस फ़रज़न्द को शहीद करदेगी, मैने अर्ज़ किया कि इस हुसैन को? फ़रमाया हाँ! मेरे पास जिब्रील अमीन इनके मक़तल की सुर्ख मिट्टी लाए हैं!

जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि आप अलैहिस्सलाम की शहादत की ख़बर आपके पैदाइश के साथ दी जा चुकी थी, फिर ये ख़बर अहले बैत अतहार सहाबाकिराम मे फैल गई, हज़रत उम्मुल मोमिनीन सैय्यदा आएशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया, मुझे जिब्रील अमीन ने ख़बर दी के मेरे बाद मेरा ये फ़रज़न्द हुसैन (अलैहिस्सलाम) सर ज़मीने "तुफ़" मे शहीद कर दिये जाएंगे और इनके मक़तल की मिट्टी भी दिया है! (तुफ़ कूफ़ा के क़रीब उस जगह का नाम है जिसे "करबला" कहते है) (इब्ने साद,तिबरानी)
हज़रत इब्ने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु फ़रमाते है कि हमे इसमे कोई शक न था, और सब अहले बैत बहुत अच्छी तरह जानते थे कि हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम करबला मे शहीद कर दिये जाएंगे!
इस मौज़ू पर बकसरत रिवायत पाई जाती है, हत्ता के मालूम होता है कि हज़रत सैय्यदना अली मुरतज़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हु को अहले बैत अतहार के उतरने की जगह मक़ामे शहादत, ऊँटो के बाँधने; कजावे रखने तक की जगह बता दिया गया था!
हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा के रिवायत के मुताबिक़ तो उनको वो मिट्टी भी अता फ़रमाई गई थी जिसे बवक़्ते शहादत ख़ून बन जाना था!

फ़ज़ाएले इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम- हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु के यूँ तो बेहद और बेशुमार फ़ज़ाएल हैं लेकिन यहाँ चन्द फ़ज़ाएल व शुमाएल को मुसन्निफ़ नक़्ल करने की सआदत हासिल करता है!
हज़रत साद बिन अबि वक़ास रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है जब आयते करीमा تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ नाज़िल हुई तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा को बुलाया और बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त मे अर्ज़ किया "ऐ अल्लाह ये मेरी अहले बैत है" (सही मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत अनस रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि हसन व हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा से बढ़कर कोई रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुशाबहे नही था (बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अबु सईद ख़ुदरी रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि हसन व हुसैन नौजवानाने जन्नत के सरदार हैं (तिरमज़ी शरीफ़)

हज़रत लैला बिन्त मुर्रह रज़िअल्लाह तआला अन्हा से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया हुसैन मुझसे और मै हुसैन से हूँ जो हुसैन से मोहब्बत करे अल्लाह तआला उससे मोहब्बत फ़रमाए, हुसैन मेरे जिगर के टुकड़ों मे से एक टुकड़ा है! (तिरमाज़ी शरीफ़)

हज़रत अबु ज़र ग़फ़्फ़री रज़िअल्लाह तआला अन्हु से मरवी है कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मेरे अहले बैत की मिसाल तुम मे इस तरह है जैसे सैय्यदना नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती थी कि जो उसपर सवार हो गया निजात पा गया, जो पीछे रह गया हलाक हो गया! (रवाह अहमद)

सन् साठ हिजरी मे यज़ीद तख़्ते हुकूमत पर बैठा तो इस वक़्त मदीना तय्यबा मे वलीद बिन उत्बा बिन अबु सुफ़ियान मक्का मुकर्रमा मे अम्र बिन सैद बिन आस बसरा मे उबैद उल्लाह बिन ज़ियाद और कूफ़ा मे नोमान बिन बशीर गवर्नर थे, यज़ीद ने हुकूमत सभांलते ही गवर्नर मदीना वलीद बिन उत्बा को ख़त तहरीर करवाया कि बिला ताख़ीर हुसैन इब्ने अली, अब्दुल्लाह बिन अम्र और उबैदउल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा से मेरी ख़लाफ़त की बैअत ले लो, वलीद ने मरवान की तरग़ीब पर इन हज़रात को पैग़ाम भेजा, तो हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम वलीद के पास तशरीफ़ लाएँ वलीद ने मरवान की मौजूदगी मे यज़ीद का ख़त आपके ख़िदमत मे पेश किया आपने ख़त पढ़कर जवाब दिया कि ये बात मुनासिब नही कि मै कोई ख़ुफ़िया बात करूँ दुसरे लोगों को तलब करो जब वो आएंगे तो उनमे मै भी हूँगा, ये कहा और उठ खड़े हुए, मरवान चिल्लाया की इनको जाने ना देना वरना फ़िर ये हाथ ना आएंगे अगर बैअत करे तो ठीक वरना क़त्ल कर देना, हज़रत इमाम आली मक़ाम ने सख़्ती के साथ मरवान को डाँट दिया और घर तशरीफ़ लेगएँ, मरवान वलीद को मलामत करने लगा, तो वलीद ने कहा ऐ मरवान सुन मुझे अल्लाह तआला कि कसम अगर हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु यज़ीद की बैअत ना करें और मुझे पूरी दुनिया व जहान के माल वा दौलत का मालिक बनाकर कहा जाए कि हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम को क़त्ल करदो तो मै सारा माल व दौलत ठुकरा दूँगा मगर क़त्ले हुसैन का जुर्म नही करूँगा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लाह तआला अन्हु को जब यज़ीद की तख़्त नशीनी और तल्बे बैअत का इल्म हुआ तो दानाई से काम लेते हुए रात के वक़्त मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा के तरफ़ रवाना हो गए, सुबह को वलीद को मालूम हुआ तो उसने तअक़्क़ुब मे आदमी रवाना किये, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लाह तआला अन्हु जा चुके थे!
इस वाक़ये के दूसरे दिन चार शाबानुल मोअज़्ज़म सन् साठ हिजरी को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अपने अज़ीज़ो अक़ारिब के साथ रात के वक़्त मक्का मुकर्रमा के तरफ़ रवाना हो गएँ, ये मशवरह मोहम्मद बिन हनीफ़ा रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने दिया था, मरवान ने ये तमाम वाक़ेआत यज़ीद को लिखा तो उसने वलीद बिन उत्बा को माज़ूल करके अम्र बिन सईद अल अशरक को गवर्नर मदीना बना दिया!
मक्का मुकर्रमा के तरफ़ आते हुए रास्ते मे हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात हज़रत अबदुल्लाह बिन मतीअ रज़िअल्लाह तआला अन्हु से हुई सूरते हाल से मुत्तिला होकर अब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप मक्का मुक़र्रमा मे ही क़याम करे, आप कूफ़ा हरगिज़ हरगिज़ कस्द ना फ़रमाए ये बड़े ही बद अहद लोग है किसी से वफ़ा नही करते, इन्होंने आप के वालिद माजिद को शहीद किया

और आपके भाईजान से नाज़ेबा सुलूक़ किया, वो आपके ख़ैरख़्वाह नही हो सकते हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने हज़रत अब्दुल्लाह का शुक्रिया अदा किया और मक्का मे दाख़िल हो गए! उसी वक़्त उन्हें कूफ़ा वालों की तरफ़ से बुलावे पर बुलावा आना शुरू हो गया!

बेशुमार ख़ुतूत और पैग़ामात इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को मिल रहे थे जिनमे कूफ़ा वाले उन्हे कूफ़ा पहुँचने की दावत दे रहे थे और हलफ़ उठा उठा कर इल्तिजाए कर रहे थे कि आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु कूफ़ा तशरीफ़ लाकर बैअत लीजिये, हम फ़ासिक़ व फ़ाजिर यज़ीद की बैअत नही करेंगे! इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम मक्का की फिज़ा को साज़गार नही समझ रहे थे क्योंकि मक्का के अक्सर लोग अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लाह तआला अन्हु के हामी थे! चुनाँचे आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु अहले कूफ़ा के मुसलमान पैग़ामात को रद्द न कर सके और कूफ़ा जाने का इरादा फ़रमाया उनके ख़ैरख़्वाहों ने मशवरा किया कि कूफ़े के लोग क़ाबिले एतिमाद नही है, आप रज़िअल्लाह अन्हु कूफ़ा न जाएँ!

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने भी अपने प्यारे भाई को वही मशवरह दिया और फ़िर अर्ज़ किया कि पहले किसी को भेजकर अच्छी तरह हालात का अन्दाज़ा कर लें! इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को यह मशवरह बहुत पसन्द आया और उन्होंने अपने चचाज़ाद भाई मुस्लिम बिन अक़ील रज़िअल्लाह तआला अन्हु को अपना नाएब और सफ़ीर बना कर कूफ़ा रवाना किया, जब हज़रत मुस्लिम कूफ़ा पहुँचे तो अहले कूफ़ा ने उनका पुर्तपाक ख़ैरमक़दम किया और कूफ़ा के हज़ारो लोगों ने उनके हाथ पर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की बैअत करली! हालात साज़गार पाकर मुस्लिम बिन अक़ील रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को पैग़ाम दिया कि आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु कूफ़ा तशरीफ़ ले आएँ! जब मुस्लिम बिन अक़ील रज़िअल्लाह तआला अन्हु के क़ासिद अब्दुल्लाह बिन सनान के ज़रिये इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को कूफ़े के लोगों की अक़ीदत का हाल मालूम हुआ तो उन्होंने मक्का से सफ़र की तैयारी शुरु कर दी! हज़रत अम्र बिन अब्दुर्रहमान, अब्दुल्लाह बिन अब्बास, अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा और दूसरे ख़ैरख़्वाहों ने उन्हें बहुत रोका लेकिन उन्होंने फ़रमाया कि दावते हक़ देने से मै बाज़ न रहूंगा और जो लोग हक़ की तलाश मे है, उन्हें मायूस ना करूंगा, मक्का मे ख़ूरेज़ी मुझे पसन्द नही क्योंकि मै नही चाहता कि मेरी वजह से काबे की बेहुरमती हो! मशीयते इलाही के सामने मेरा सर झुका हुआ है और मै कूफ़ा ज़रूर जाऊंगा! उसके बाद आठ ज़िलहिज्जह सन् साठ हिजरी को आप अपने अहले बैत और मोतक़िदीन के साथ मक्का से कूफ़ा के तरफ़ रवाना हुए!

हज़रत सैय्यदा ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा अपने दो बेटों हज़रत औन और हज़रत मोहम्मद समेत हुसैनी काफ़िले मे शामिल हो गयीं, उनके शौहर अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़िअल्लाह तआला अन्हु मक्का मे ही थे और उनलोगों के हमराय थे जो इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सफ़रे कूफ़ा से मुत्तफ़िक़ नही थे! जब इमम हुसैन चलने लगें तो हज़रत ज़ैनब ने अपने शौहर से जाने की इजाज़त माँगी, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बहन भाईयों की मोहब्बत से आगाह थे उन्होंने हज़रत ज़ैनब और अपने बच्चों को उनके साथ जाने की इजाज़त दे दिया और अपने बच्चों को ये हिदायत की कि ख़ुदा न करे मामू पर कोई मुसीबत आए तो उनके लिए अपनी जाने क़ुरबान कर देना! उसके बाद वो मक्का मुकर्रमा वापस चले गए!

इधर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम कूफ़ा के सफ़र पर रवाना हुए उधर कूफ़े मे हालात का पासा पलट गया पहले-पहल तो कूफ़ियो ने मुस्लिम बिन अक़ील का दम भरा और हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु पर जाने क़ुरबान करने के हलफ़ उठाए लेकिन जब यज़ीद ने नोमान बिन बशीर को कूफ़ा की इमारत से माज़ूल करके उबैद उल्लाह बिन ज़ियाद को वहा का हाकिम बनाकर भेजा और उसने सख़्ती से काम लिया तो अहले कूफ़ा मुस्लिम बिन अक़ील का साथ छोड़ गए! उबैद उल्लाह बिन ज़ियाद ने उन्हें गिरफ़्तार करके निहायत बेदर्दी से शहीद करा दिया!

शहादत से पहले हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील ने मोहम्मद बिन अशअस से फरमाया तुम मेरे बचाने पर क़ादिर नही हो लेकिन किसी तरह मेरा ये पैगाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु तक पहुंचा देना कि वह कूफ़ा वालों पर हरग़िज़ हरग़िज़ एतिबार ना करें और जहाँ तक पहुंच चुके हो वहीं से लौट जाएं!

मोहम्मद बिन अशअस ने मुस्लिम बिन अक़ील की वसीअत पूरी की और अपने एक क़ासिद के ज़रिये इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु को मुस्लिम बिन अक़ील रज़िअल्लाह तआला अन्हु का पैगाम भेजवा दिया! लेकिन उस वक़्त तीर कमान से निकल चुका था मुस्लिम बिन अक़ील को शहीद करने के बाद उनके दो छोटे छोटे बच्चों मोहम्मद और इब्राहीम को भी पत्थर दिल उबैदउल्लाह ने पकड़वा कर शहीद करवा दिया!

हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु ज्यो ज्यो कूफ़ा की तरफ़ बढ़ते उन्हें तशवीशनाक ख़बरे मिलती जब वह तअलबा के मुकाम पर पहुंचे तो बनु असद के एक शख़्स ने जो कूफ़ा से आ रहे थें उन्हे मुस्लिम उनके बच्चों और हानी की शहादत कि ख़बर दी! मुस्लिम बिन अक़ील बहुत बहादुर थे और हक़ीक़त ये थी की वो इमाम हुसैन के एक मज़बूत बाज़ू थे उनकी शाहादत की ख़बर सुनकर जनाब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को सख़्त सदमा पहुँचा मुस्लिम बिन अक़ील के भाईयों ने कहा ख़ुदा की कसम जबतक अपने भाई का बदला ना लेंगे या क़त्ल ना हो जाएंगे उसवक़्त तक वापस ना लौटेंगे! इमाम हुसैन ने फ़रमाया जब तुम लोग न होगे तो हमारी ज़िन्दगी किस काम की, उस वक़्त इमाम हुसैन के काफ़िले मे बेशुमार लोग रास्ते मे शामिल हो गए थे आपने सब साथियों को जमा किया और फ़रमाया "कूफियों ने हमारे साथ गद्दारी की है! उनसे मदद की उम्मीद नही! तुम लोगों की मोहब्बत व अक़ीदत का मै शुक्रगुज़ार हूँ लेकिन मै नही चाहता कि तुम लोग मेरी वजह से अपनी जाने ख़तरे मे डालो! इसलिए तुममे से जो शख़्स जाना चाहे वह खुशी से जा सकता है मेरी तरफ़ से उसपर कोई इलज़ाम नही है! यह ऐलान सुनकर तमाम लोग अपने घरो को लौट गए जो मक्का से आए थे!

दो मोहर्रम सन् इक्सठ हिजरी को इमाम हुसैन का काफ़िला करबला के रेगिस्तान मे उतरा, हुर बिन यज़ीद तमीमी के एक हज़ार सोलह सवार हुकूमते शाम की तरफ़ से ज़ीहशम के मुक़ाम से इस काफ़िले के इर्द गिर्द मंडला रहे थे!

तीन मोहर्रम को अम्र बिन सअद चार हज़ार फ़ौज के साथ करबला पहुंचा! यह इमाम हुसैन का अज़ीज़ था लेकिन रे की हुकूमत के लालच मे उसने अपने ज़मीर को कुचल दिया था, नमालूम किस ख़्याल के ज़ेरे असर करबला पहुंचकर इमाम हुसैन से गुफ़्तगू की तरह डाली, उन्होंने फ़रमाया मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो, मै मक्का या मदीना चला जाऊंगा!

अम्र बिन सअद ने इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु का जवाब इब्ने ज़ियाद को लिखकर भेजा, उसने हुक्म भेजा कि हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु पहले मेरी इताअत करे फिर देखा जाएगा! उसके बाद फिर दूसरा हुक्म भेजा कि हुसैन और उसके साथियों पर पानी बंद कर दो!

अम्र बिन सअद ने इस हुक्म की तामील मे सात मोहर्रम सन् इक्सठ हिजरी को फ़ुरात पर पहरा बिठा दिया लेकिन नौ मोहर्रम तक जंग टालता रहा कि शायद मुफ़ाहमत की कोई सूरत निकल आए! इधर इब्ने ज़ियाद बेताब हो गया उसने शिम्र ज़िलजोशन के हाथ कहला भेजा कि मैने तुम्हे हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु की ख़ैरख़्वाही के लिये नही भेजा! अगर उनसे बैअत नही ले सकते तो फ़ौज शिम्र के हवाले करदो! अब अम्र बिन सअद की अक़्ल व होश जवाब दे गयी और वह नवास-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ जंग करने को आमादह हो गया!

नौ और दस मोहर्रम सन् इक्सठ हिजरी को दर्मियानी रात इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु और उनके जाँनिसारों की इस आलम मे आख़िरी रात थी! इमाम आली मक़ाम ने अपने साथियों को जमा किया और फ़रमाया "मेरे दोस्तों! मै तुम्हारा ममनून हूँ कि तुमने निहायत साबित क़दमी से मेरा साथ दिया, तुम्हारे जैसे नेक और वफ़ादार साथी मैने कही नही देखे और अपने अहले ख़ानदान से ज़्यादा

नेकोकार और सिलारहमी करने वाले कोई दूसरा घराना नही देखा, ख़ुदावन्द तआला तुमको जज़ाए ख़ैर दे! कलके दिन मेरे दुश्मनों और मेरे दर्मियान आख़िरी फ़ैसला हो जाएगा मै तुम लोगों को बखुशी वापस जाने की इजाज़त देता हूँ रात का वक्त है, मेरे अहले ख़ानदान को वापस लेलो और अपने ऊँटों पर सवार होकर अपने घरों को लौट जाओ ताकि ख़ुदा यह मुसीबत आसान कर दे!"

सैय्दुश्शोहदा के मुठ्ठी भर साथियों ने यह तक़रीर सुनी, मौत सामने नज़र आ रही थी लेकिन जिस शुजाअत, वफ़ादारी बहादूरी और साबित क़दमी का मुज़ाहरा उन्होंने किया ताक़यामत इन्सान और जिन्नात सलामती भेजते रहेंगे! इमाम मज़लूम के साथ वफ़ादारी ने उन्हे हयाते जावेद अता करदी सबने एक आवाज़ मे रिक़्क़त भरे लहजे मे कहा; "ऐ फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हमारे माँ बाप आप पर क़ुरबान क्या हम आपको खंजरों और तीरों का निशाना बना जाएं और हम ज़िन्दा रहें, ख़ुदा हमे उस दिन के लिए बाक़ी न रखे!"

इन मुक़द्दस लोगों के जवाब से जनाब इमाम आली मक़ाम की आँख छलक गई! बेइख़्तियार दुआ के लिए हाथ उठाया और फ़रमाया 'ऐ अल्लाह इन्हें जज़ाए ख़ैर दे, आज इन्होंने मेरे बेक़सी मे मेरा साथ दिया है हश्र के दिन भी इन्हें मेरा साथी बनाना! इसके बाद इमाम हुसैन और उनके साथी हथियारों की सफ़ाई मे लग गएं!

ज़ैनब क़ुबरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को होने वाले वाक़ेआत का अंदाज़ा हो गया था! सख़्त बेचेन थी लेकिन सब्र से काम ले रहीं थीं! जब इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु की तलवार साफ़ की जाने लगी तो उन्होंने चन्द इबरत अंगेज़ अशआर पढ़े! "ऐ काश आज का दिन देखने के लिए मै ज़िन्दा न रहती हाय मेरे नाना सलल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम, मेरी माँ फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा, मेरे बाप अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु, मेरे भाई हसन रज़िल्लाह तआला अन्हु सब दाग़े मुफ़ारक़त दे गए, ऐ भाई अब हमारे सिर्फ़ आप ही तो है हम आपके बग़ैर कैसे ज़िन्दा रहेंगे!

इमाम हुसैन ने फ़रमाया ज़ैनब ज़रा चैन रखो इस जवाब से हज़रत ज़ैनब की आह ज़ारी और शिद्दत से हो गई फ़रमाया मेरे माँ जाए (भाई) आप के बदले मे मै अपनी जान देना चाहती हूँ!

इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु अपनी प्यारी बहेन की दिलदोज़ बाते और फ़रियाद सुनकर अश्क़बार हो गएं लेकिन बहुत ही हौसले से फ़रमाया "ऐ बहेन सब्र करो ख़ुदा से तसक़ीन हासिल करो ख़ुदा के ज़ात के सिवा सारी कायनात के लिए फ़ना है, हमारे लिए हमारे नाना ख़ैरूल बशर की ज़ाते अक़दस नमूना है, तुम उन्हीं के उसवाए हुसना की पैरवी करना! "ऐ बहेन तुम्हे ख़ुदा की कसम है अगर मै राहे हक़ मे काम आ जाऊँ तो मेरे बाद सब्र से काम लेना!

इस वसीयत के बाद हज़रत इमाम हुसैन ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ लाएँ और सुबहे सादिक़ तक तमाम मुक़द्दस मेहमानाने करबला तसबीह वा तहलील मे मसरूफ़ रहे!

शबे आशूरा ख़त्म हुई और आशूरा का सूरज क़यामते सुग़रा अपने दामन मे लिए हुए नमुदार हुआ! इमाम हुसैन समेत बहत्तर मुक़द्दस लोग एक तरफ़ थे और हज़ारो बदबख़्त संग दिलों की फ़ौज दूसरी तरफ़, लड़ाई से पहले जनाब हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके चंद साथियों ने निहायत दिलदोज़ तक़रीरे की जिनमे दुशमनों को तरग़ीब दी की वो अपनी आक़बत ख़राब ना करे लेकिन सिवाए एक मर्द मोमिन हुर बिन यज़ीद तमीमी के उन बदबख़्तों पर कोई असर ना हुआ! बाज़ रिवायतों मे हुर बिन यज़ीद तमीमी का बेटा भी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के झंडे तले आकर अपनी आक़बत सवार गया! जिस वक़्त इमाम हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हु तक़रीर फ़रमा रहे थें शिद्दते ग़म से हज़रते ज़ैनब और दूसरी ख़्वातीन अहले बैत की चीख़े निकल गई, आपने अब्बास रज़िअल्लाह तआला अन्हु और अलीअकबर रज़िअल्लाह तआला अन्हु को उन्हे ख़ामोश कराने के लिए भेजा और फ़रमाया कि मेरी उम्र की कसम अभी उनको बहुत रोना है! इसके बाद जंग के लिए बाहर निकलने लगे, दोनो तरफ़ से एक एक आदमी निकलता और अपने हरीफ़ से लड़ता! हुसैनी फ़ौज के कुछ मुजाहिदों ने जामे शहादत नोश फ़रमाया और बहुत से इराक़ी भी जहन्नम वासिल हुए, इसके बाद आम लड़ाई शुरू हुई! हुर बिन

यज़ीद तमीमी और दूसरे जानिसाराने अहले बैत पामर्दी से लड़े, दुशमनों की सफ़े दरहम बरहम करदी लेकिन दोनो जमातों की तादाद मे कोई निसबत ना थी! दोपहर तक ये तमाम मरदाने हक़ दादे शुजाअत देते हुए दोशे रसूल के सवार पर क़ुरबान होगए! उसके बाद जवानाने अहले बैत की बारी आई, सबसे पहले शबीहे पैग़म्बर अली अकबर बिन हुसैन मैदान मे आए, उस बहादुरी से लड़े की अपने दादा साहिबे ज़ुल्फ़क़ार हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की याद ताज़ा करदी! जब उन्होंने कई दुशमनों को वासिले जहन्नम कर दिया तो सैकड़ो लईनो ने उन्हे घेरे मे लेकर शहीद कर दिया! हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने अपने इस भतीजो को बड़े नाज़ नख़रो से पाला था ख़ेमे से जब उन्होंने हज़रत अली अकबर को ख़ाक़ व ख़ूं मे लोटते हुए देख़ा, तो बेताब हो गई थी 'इब्ने अख़ाह (भतीजा) कहते हुए दीवानावार ख़ैमे से बाहर दौड़ी और भतीजे के लाश से चिपट गईं जनाब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने उन्हे वहाँ से ख़ैमे मे भेजा और जवान बेटे की लाश उठाकर ख़ेमे के सामने ले आएँ! हज़रत अली अकबर के बाद अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील, अहमद बिन इमाम हसन, अबु बक़र बिन इमाम हसन, अब्दुल्लाह बिन इमाम हसन, अब्दुर्रहमान बिन अक़ील, जाफ़र बिन अक़ील, उमर बिन अली, क़ासिम बिन इमाम हसन, उस्मान बिन अली रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा और दूसरे अज़ीज़ सिवाए सात लोगों के एक एक करके बहुत बहादुरी से लड़ते हुए शहादत का जाम नोश फ़रमाते गए!

अब हज़रत ज़ैनब ने अपने कमसिन बेटों औन और मोहम्मद को मैदाने जंग मे भेजने के लिये अपने महबूब भाई से इजाज़त चाही, उन्होंने इन जिगर के टुकड़ों को लड़ाई मे भेजने मे पसोपेश किया! हज़रत ज़ैनब रोती हुई भाई के गले से लग गईं और कहा भाई मेरा दिल मत तोड़ो औन और मोहम्मद को पाल पोसकर इसी लिये बड़ा किया है कि अपने मामू पर जाननिसार करे इससे बढ़कर मुसीबत का दिन कभी नही आएगा! इधर हज़रत ज़ैनब ने उन्हें रुख़सत करते हुए नसीहत किया कि मेरे फ़रज़न्दों अपने नाना अली और अपने दादा जाफ़र तय्यार रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा की रूहों को शरमिन्दा न करना और मैदाने जंग मे पीछे मुड़कर ना देखना! हज़रत औन और मोहम्मद ने दुशमनाने दीन पर एक ज़बरदस्त हमला किया, देखने मे बच्चे थे लेकिन बिन्ते हैदर ज़ैनब कुबरा का दूध पिया था बड़ो से बढ़कर बहादुरी दिखाई कई बदबख़्त उनकी तलवारों का शिकार हुए! आख़िर मे उन्होंने घेरे मे लेकर तलवारों और नेज़ों की बारिश कर दी! और हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा के दोनों लख़्ते जिगर ने सफ़रे आख़िरत तय फ़रमाया! सैय्यदा ज़ैनब और सैय्यदना इमाम हुसैन के क़लबो जिगर के टुकड़े उड़ गए लेकिन आसमान की तरफ़ नज़र की और ख़ामोश होगए! हज़रत औन और मोहम्मद की शहादत के बाद ख़ानदाने नबूवत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मुजाहिदीन ने एक एक करके जामे शहादत नोश फ़रमाया! अब हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अकेले रह गए! हज़रत ज़ैनुल आबिदीन बीमार थे और लड़ाई करने के क़ाबिल नही थे उन्हें अल्लाह और अपनी बहन के सुपुर्द किया और सबको ख़ुदा हाफ़िज़ कह कर फ़रज़न्दाने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अपने आख़िरी सफ़र पर रवाना हुए! प्यास का ग़लबा था, अपने जिगर के टुकड़ों और जाँनिसारों की शहादत से दिल तूटा हुआ था लेकिन इस क़यामत का हमला किया कि दुशमनों के बादल के बादल छट गए! शेरे ख़ुदा हैदरे कर्रार के फ़रज़न्द जिस तरफ़ रुख़ करते सफ़ो की सफ़े उलटकर रख देते! यज़ीदी बार बार नरग़ा करते थे, लेकिन हुसैनी तलवार ज्यो ही चमकती भाग खड़े होते! रसूल के कंधो का सवार अब ज़ख़्मों से चूर चूर हो गया था! हर तरफ़ से नेज़ों, तलवारों, ख़ंजरों, तीरों की बारिश हो रही थी, इतने मे हुसैन बिन नुमैर ने एक नेज़ा फ़ेका जो गले मुबारक से उतर गया मुँह मुबारक से ख़ून का फव्वारा फूट पड़ा! अपने चुल्लू मे थोड़ा सा ख़ून लेकर आसमान की तरफ़ उछाला और फ़रमाया "मौला! जो कुछ तेरे महबूब के औलादों के साथ हो रहा है, तुझी से इसकी फ़रियाद करता हूँ! अपने जलीलुलक़द्र भाई की प्यारी बहन हज़रत ज़ैनब रज़िअल्लाह तआला अन्हा दिल पर हाथ रखे आफ़ताबे इमामत की हालत देख रहीं थी! जब उन्हे ख़ून की कुल्लियाँ करते देखा तो दौड़ी हुई मैदाने जंग के क़रीब एक टीले पर खड़ी होकर पुकारने लगी "ऐ अम्र बिन सअद क्या क़यामत है अबु अब्दुल्लाह क़त्ल किये जा रहें है और तुम देख रहे हो!

अम्र बिन सअद की आँखो पर लालच ने पर्दा डाल दिया था लेकिन क़राबतदार था नदामत की वजह से हज़रत ज़ैनब की तरफ़ से मुँह फेर लिया!

जनाबे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की हालत अब लम्हा ब लम्हा ग़ैर होती जा रही थी! दुश्मनों ने हर तरफ़ से घेर लिया था जुरआ बिन शरीक तमीमी ने हाथ और गर्दन पर तलवार चलाई, सनान ने नेज़ा मार कर आप रज़िअल्लाह तआला अन्हु को ज़मीन पर गिरा दिया फिर सनान बिन अनस और कुछ रिवायतों के मुताबिक़ शिम्र ज़िलजोशन ने उस गर्दन पर खंजर फेर दिया जिस पर शहंशाहे कुलकायनात इमामुल अम्बिया रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बोसे दिया करते थे! शहादत के वक़्त हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के जिस्म अनवर पर तीस ज़ख़्म तलवार के, तैंतीस ज़ख़्म नेज़े के और लातादाद ज़ख़्म तीरों के थे! इमाम आली मक़ाम की शहादत दस मोहर्रमुल हराम सन् इक्सठ हिजरी यौमुल जुमा को नमाज़ के हालत मे हुई!

"ख़ुद को ख़ुदा कि राह मे करता है जो क़ुरबान
राहे वफ़ा मे देता है जो हर लम्हा इम्तिहान
मिटता नही कभी भी वो हक़ परस्त इंसान
बाद मरने के भी रहता है कामियाबो कामरान
जिन्दा मिसाल देता हूँ अफ़ज़ल सी मैं यहाँ
रहकर यज़ीद ज़िन्दा ज़िल्लत का हुआ सामान
मिटकर भी हो गए हुसैन शादाबो शादमान" (अलैहिस्सलाम)

हज़रत जलालउद्दीन सियूती रहमतउल्लाह अलैह (तारीख़ अल ख़ुलेफ़ा) मे फ़रमाते है कि सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत के बाद इंसान तो इंसान रूहे ज़मीन व आसमान ने भी ख़ून के आंसू बहाए, आपके शहादात के बाद सात दिन तक अंधेरा सा रहा दिवारों पर धूप का रंग ज़र्द पड़ गया था! उस दिन बहुत से सितारे भी तूटे, आपके शाहादत के दिन सूरज को गिरहन लग गया था और मुसलसल छः माह तक आसमान के किनारे सुर्ख़ रहे! ये सुर्ख़ी रफ़्ता रफ़्ता तो जाती रही, लेकिन 'अफ़क' की सुर्ख़ी जिसको 'शफ़क' कहते है आजतक मौजूद है! ये सुर्ख़ी शहादते हुसैन अलैहिस्सलाम से क़ब्ल मौजूद नही थी! आप अलैहिस्सलाम के शहादत के दिन जो भी पत्थर बैतुल मुक़द्दस मे उठाए जाते उसके नीचे ताज़ा ख़ून निकलता था! इराक़ी फ़ौज के पास जिस कद्र भी कसनभ (ज़ाफरान के तरह क़ीमती घास) मौजूद था, वो सारे का सारा राख़ बन गया! लशकरे अशकिया ने अपने लिए ऊँट ज़िबह किया तो उसका गोश्त आग की तरह सुर्ख़ हो गया! गोश्त को पकाया गया तो इतना शदीद कड़वा था कि मुँह मे ना रख़ा जा सका! एक बदबख़त ने इमाम आली मकाम के शान मे गुस्ताख़ियाँ किया तो बहुक्मे इलाही आसमान से एक तारा तूटा और वो शख़्स अन्धा हो गया!

(बड़ी शर्म और अफ़सोस की बात है आज कुछ लोग और जमातें ऐसी पैदा हो गईं हैं कि वो इमाम आली मुक़ाम की मोहब्बत मे रोना हराम और बिदअत बताते हैं, लेकिन उन यज़ीदियों को ये नही मालूम की मोहब्बत का कनेक्शन दिल से होता है, और अपने और अपने महबूब की मोहब्बत मे आँसू अपने आपही आँखों से जारी हो जाते हैं, लेकिन ये बातें ये क्या जाने कि जिनके दिल पर ख़ुदा की तरफ़ से ख़ारजियत और मुनाफ़िक़त की मोहरें लगा दी गई हैं ये तो वाक़्याए करबला को भी झुठलाने मे लगे हुए हैं, और अपने आपको मुसलमान और ईमान वाला कहते हैं और अपनी जमातों को हक़ पर साबित करने की कोशिश मे लगे रहते हैं, ऐसे दुश्मनाने अहले बैत नबवी और वक़्त के यज़ीदियों से मै यही कहना चाँहूगा कि

"ख़ुद को छुपा के लेकर कहाँ जाएगा ऐ यज़ीद
मिटना है तेरी क़िस्मत ज़िल्लत है तेरा नसीब
जब-जब तू अपने सर को उठाएगा ऐ हक़ीर
तब-तब जहाँ मे पैदा होगा मेरा सफ़ीर
औलादे नबी से जो तू टकराया ऐ लईन
मैहशर मे न सुकून तुझे और दुनिया मे भी कही
ख़ूने रसूल दुनिया मे फैलेगा बनके नूर
होगा जहाँ मे हसनैन की औलाद का ज़हूर"

अहलेबैत नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने हर एक मोमिन पर फर्ज़ क़रार दिया है, बल्कि ये तो ईमान का जुज़ है अहलेबैत पाक की मोहब्बत के बग़ैर कोई पहाड़ के बराबर भी इबादत करेगा और वो सोचेगा उसकी इबादत और रियाज़त ख़ुदा की बारगाह मे क़ुबूल होगी, तो ये उसकी भूल है बल्कि ऐसी इबादत जो बुग़्ज़ और इनादे अहले बैत के साथ करेगा उसकी इबादतों और तमाम नेक आमालों को क़यामत मे अल्लाह रब्बे क़ुद्दूस मुँह पर लपेट कर मार देगा इसकी सच्चाई हर मोमिन बख़ूबी जानता है और ये अहदिसे मुबारका से पूरी पुख़्तगी के साथ साबित है-
हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़िअल्लाह तआला अन्हु जो एक जैय्यद सहाबी और सैकड़ों हदीसे पाक के 'रावी' है, आप फ़रमाते है कि, अहले बैत नबवी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत (हरम मे किये जाने वाली सौ दिन की इबादत से अफ़ज़ल है) और यही वजह है कि ख़ुलेफाए राशिदीन, सहाबाकिराम, और वक़्त के इमामों का दिल हमेशा इससे लबरेज़ रहा है!
हज़रत हाफ़िज़ बिन कसीर अलैहरहमा जो निहायत मोहतात मेअर्रिख़ और बलन्द पाए मोहक़्क़िक्क है फ़रमाते है कि हज़रत अबुबक़्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु हसनैन करीमैन से हद दर्जे मोहब्बत करते थे बल्कि बेहद ताज़ीम और ऐहतिराम बजा लाते थे और यही अमल हज़रत उमर फ़ारूक़ और हज़रत उस्मान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा का था!
हज़रत इमाम शाफ़ई रज़िअल्लाह तआला अन्हु की मोहब्बत का आलम तो ये था कि जब माहे मोहर्रम शुरू होता तो आप पर एक लरज़ा तारी हो जाता और अहले बैत पाक की मोहब्बत मे इस क़द्र रोते कि रोते रोते बेहोश हो जाते हत्ता की आप पर राफ़िज़यत का फ़तवा लागा दिया गया इसके जवाब मे आपने लोगों से यही कहा कि अगर अहले बैत नबवी के इश्क़ मे रोना राफ़िज़यत है तो जानलो मुझसे बड़ा राफ़ज़ी दुनिया मे कोई नही! और यही हाल अलसुन्नत वलजमात के सब इमामों का था!
अल्लाह तबारको तआला की ये बहुत बड़ी मशीयत रही है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत से लेकर अबतक आपके नाम पर जितने अश्क़ बहाए गए है दुनिया के तारीख़ों के औराख़ों पर बफज़ले ख़ुदा ये भी बहुत बड़ा रिर्काड रहा है और सुबहो क़यामत तक रहेगा बल्कि मेरा तो ये भी मानना है कि जिस दिन लोगों के दिलों से उस क़यामते सुग़रा (इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत का दिन) के नक़्श मिट जाएंगे उनपर अल्लाह तबारको तआला क़यामते कुबरा मुसल्लत कर देगा और उसका दिन भी मोर्हरम की दस तारीख़ और यौमे जुमा होगा! अल्लाह तबारको तआला हम सबको इस नमक हरामी से महफ़ूज़ फ़रमाए आमीन!

हज़रत इमाम आली मक़ाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ख़ानवादे मे जितने लोग बचे उनको बड़े ज़ुल्मोसितम के साथ बन्दी बनाकर करबला से कूफ़ा और कूफ़े से शाम यज़ीद पलीद के दरबार मे यज़ीदी फ़ौज ले गई और फिर लोगों की लानत और मलामत के बाद यज़ीद बत्कार ने उन्हे इस ख़ौफ़ से कि कही उसकी हुकूमत और जब्री बादशाहत पर कोई आँच न आ जाए मदीना मुनव्वरा भेज दिया!

इमाम आली मुक़ाम हज़रत हुसैन अलैहिस्सलाम और आपकी अहले बैत पर ज़ुल्मो सितम करने वालों का इबरतनाक अन्जाम हुआ उनपर ख़ुदा की तरफ़ से ऐसे ऐसे इबरतनाक आज़ाब हुए कि जिनके देखने वालों के दिल काँप उठे! यज़ीद पलीद मर्ज़े कौलन्ज मे ऐसा मुब्तिला हुआ कि एक बूंद पानी भी उसके गले मे जाता तो तीर के तरह गले को छलनी कर देता इसी बीमारी मे वो दुनिया से तड़प तड़प कर मरा और उसका इबरत नाक हश्र हुआ!
इस सवानेह अज़ीम और दर्द अन्दोज़ वाक़ेआ की सबसे बड़ी रावी ख़ुद जनाब सैय्यदा ज़ैनब सलामउल्लाह अलैहा और हज़रत सैय्यदना ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम रहें है!

यज़ीद पलीद की मज़ीद बदबख़्ती- तमाम इस्लामी मुअतबर तारीख़ों मे मसलन तारीख़ इब्ने असीर, तारीख़ तबरी, तारीख़ इब्ने ख़लदून से पता चलता है कि सन् तिरसठ (63) हिजरी मे यज़ीद पलीद के हुक्म से मदीना तय्यबा की ज़बरदस्त तौहीन की गई जो शहादत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बाद अज़ीमतर बुराईयों मे से एक थी! यज़ीद पलीद ने बदबख़्त और बत्कार मुस्लिम बिन उकबा को एक बड़े लश्कर के साथ मदीना तय्यबा पर चढ़ाई करने का हुक्म दिया और साथ मे ये भी हुक्म दिया कि लोगों को बेदर्दी के साथ क़त्ल करो और उन पर जितना चाहे ज़ुल्मों सितम करो और मदीना मुनव्वरा व रौज़ा-ए-सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़ूब बेअदबी करो तुम्हे पूरी इजाज़त दी जाती है! मुस्लिम बिन उकबा बत्कार ने यज़ीद पलीद के हुक्म की पूरी तामील किया और अपने बेदीन होने का मुज़ाहिरा पेश किया! उसने तीन दिन तक हरम-ए-नबी की बेहुरमती किया, तीन हज़ार सात आदमियों को बेशुमार औरतों और बच्चों को सात सौ हाफ़िज़ों को बेशुमार मुहाजिरीनो अंसारो ताबेईन को शहीद करवा दिया और सत्तानवे (97) अफ़रादे क़ुरैश को भी बड़े बेदर्दी से शहीद करवा दिया! फ़िस्को फ़साद और ज़िना को जाएज़ क़रार दिया और तो और रौज़ा-ए-अनवर और मिंबर शरीफ़ के दरमियानी जगह कि जहाँ के मुताल्लिक़ हदीसे सहिया मे है कि वो जन्नत के बाग़ों मे से एक बाग़ है वहाँ उनके घोड़ें पेशाब और लीद करते थें! बदज़ात और बेदीन मुस्लिम बिन उकबा लोग़ों को यज़ीद पलीद की बैअत पर इस तरह आमादह करता था कि वो हर हाल में यज़ीद का हर हुक्म माने चाहे वो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी ही क्यों न हो! हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़मआ रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इसकी मुख़ालफ़त करते हुए लोग़ों को क़ुरआन और हदीस की रौशनी मे बैअत के माईने बताएं तो फ़ौरन ही उन बदबख़्तों ने उनके सर को तन से जुदा कर दिया! जब यज़ीद पलीद के उन बदबख़्त नआक़बत अन्देश लश्करियों ने पूरी तरह मदीना मुनव्वरा और रौज़ा-ए-अक़दस की इज़्ज़त और अज़मत को पामाल कर लिया तो यज़ीद फ़ासिख़ो फाजिर के हुक्म से मक्के का रुख़ किया लेकिन अभी आधी दूर पहुँचे थे की इनका सिपहसालार मुस्लिम बिन उकबा नामुराद मर गया! जब यज़ीद को इस की ख़बर मिली तो उसने हुस्सैन बिन नुमैर बदबख़्त (क़ातिलाने अहले बैत) को सिपहसालार बना कर मक्का रवाना किया और वहाँ पहुँचकर उसका मुहासरह कर लिया और ख़ाने काबा पर पत्थरों की बारिश करवाई इसी दरमियान हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इनपर चढ़ाई करदी और इनसे आमादा-ए-जंग हुएं जब ये मरदूर आपको शिकस्त ना दे सके तो इन्होंने ख़ाने काबा पर आग के गोले बरसाना शुरु कर दिया जिससे ग़िलाफ़े काबा जल गया और उस मेण्ढे की सींग जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के जगह ज़िबह किया गया था और जिसे हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने बतौरे यादगार हरम-ए-काबा मे लटका दिया था वो भी जल गयी, इसी दरमियान इन बदबख़्त दुनियादारों को इनके पेशवा यज़ीद पलीद की मौत की ख़बर मिली जिसको सुनकर ये बदबख़्त वहाँ से भाग निकले ये वाक़ेआ माहे मुक़द्दस रबिउल अव्वल सन् 64 हिजरी का है जिस महीने के सदक़े मे अल्लाह तआला ने इन बदबख़्त यज़ीदियों के शर से हरम-ए-पाक को निजात अता किया!

मुआविया बिन यज़ीद का ख़ुत्बा और ख़लाफ़त से दस्तबर्दारी- मशहूर है कि यज़ीद के मरने के बाद जब बनु उमय्या ने चाहा कि उसके बेटे मुआविया बिन यज़ीद को ख़लीफ़ा बनाया जाये और उनकी वलीअहदी के लिये लोगों से बैअत भी लेने लगें तो मुआविया बिन यज़ीद ने उससे दस्तबर्दारी अख़्तियार की और मिंबर पर चढ़कर एक ख़ुत्बा दिया जिसको अल्लामा दमेरी रहमतउल्लाह अलैह ने अपनी किताब हयातुल हैवान मे क़लमबन्द किया है जो इस तरह है- फिर यज़ीद बिन मुआविया के बाद उसका बेटा मुआविया बिन यज़ीद तख़्त नशीन हुआ वो अपने वालिद से ज़्यादा बेहतर थें दीनदारी और दानिशमंदी दोनो सिफ़अतों से मुतसफ़ थें उनसे बैअत उस दिन ली गयी जिस दिन उनके बाप का इन्तक़ाल हुआ! मुआविया बिन यज़ीद चालीस रोज़ तक मस्नदे ख़लाफ़त पर रहें उसके बाद ख़ुद ही दस्तबर्दार हो गयें! जब वो दस्तबर्दार हुएं तो मिंबर पर तशरीफ़ लाकर ख़ामोश बैठे रहें फिर उम्दा अन्दाज़ मे हम्दो सना और दरूदशरीफ़ पढ़ने के बाद फ़रमाया "ऐ लोगों मुझे हुकूमत व ख़लाफ़त की ख़्वाहिश नही है इसलिए कि ये अहेम ज़िम्मेदारी है और तुम लोग मुझसे राज़ी भी नही हो! हमने भी और तुमने भी मोतअदद बार आज़माया लेकिन जो तक़दीर मे था हो के रहा! हमारे दादा अमीर मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हु इस ख़लाफ़त के बारे मे आगे बढ़े झगड़ा किया कि आख़िरकार इस ख़लाफ़त का मुस्तहक़ कौन है और झग़ड़ा किससे किया जो आफ़ताबे नबूवत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का क़रीबी रिश्तेदार मर्तबा और इस्लाम मे सबक़त की वजह से अकाबिर मुहाजिरीन मे बाइज़्ज़त सबसे दिलेर व बहादुर साहिबे इल्मो फ़ज़ल, चचाज़ाद भाई, दामादे नबी, जनाबे रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी छोटी साहबज़ादी फ़ातिमा रज़िअल्लाह अन्हा का ख़ुद ही इनका शौहर बनने के लिये इन्तख़ाब किया, इस उम्मत के नौजवानों मे सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल और जन्नत के नौजवानों के सरदार हसन व हुसैन रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा के वालिद मोहतरम थें!

जैसे कि तुम लोग ख़ूब वाक़िफ़ हो मेरे दादा अमीर मुआविया रज़िअल्लाहु अन्हु से ऐसे शख़्स से बरसरेपैकार हुए और तुम लोगों ने भी इनका साथ दिया यहाँ तक कि मेरे दादा उमूर के मालिक बन गयें लेकिन जब वक़्त मुक़र्ररह आ गया मौत ने उन्हें अपना लिया तो वो अपने अमल और किरदार के साथ मुरतहन हो गयें! कब्र मे अकेले दफ़्न कर दिये गये जो उन्होंने किया था उसका बदला उन्हे मिल गया! उसके बाद ख़लाफ़त फिर मेरे अब्बा जान यज़ीद के पास आगई वो तुम्हारे मामलात के मुन्तज़िम बना दिये गये वो अपनी बदकिरदारी और फ़ुज़ूल ख़र्ची के वजह से जो ख़लाफत के शायानेशान नही थी ख़्वाहिशात से मग़लूब हो गये! गुनाहो का इरतिकाब करने लगे अहकामे इलाही मे जरी हो गये! जो कोई औलादे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इज़्ज़त करता तो वो उनके पीछे पड़ जाते! आख़िरकार मामला यहाँ तक पहुँचा कि उम्र ने वफ़ा न की बहुत कम ज़िन्दा रहे! मरने के बाद उनके असरात ख़त्म हो गये! अपने साथ अपने अमल लेकर दुनिया से रुख़सत हो गये! क़ब्र के हलीफ़ बन गये! बदआमाली मे घिर गये! वो ख़ुद ही अपने नुकसानात मे दब गये! जो उन्होंने किया था उसका सिलह उन्हें मिल गया! फिर वो उस वक़्त नादिम हुए जबकि नदामत और तोबा का वक़्त जा चुका था तो हम भी उनके पैहम रन्जोअलम से शरीके कार हो गये! हाय अफ़सोस उन्होंने जो कहा और किया और जो उनके बारे मे तबसिरे किये जाते है अब आया जो उन्होंने किया था उनको सज़ा दी गयी या जज़ा दी गयी मुझे मालूम नही ये मेरा तसव्वुर है वहेम व गुमान है फिर बाद मे ग़ैरत ने उनका गला घोट दिया! उसके बाद मुआविया बिन यज़ीद देर तक रोते रहें साथ मे लोग भी रोने लगे, कुछ देर के बाद मुआविया बिन यज़ीद ने फ़रमाया "अब इस वक़्त मै तुम्हारा तीसरा वाली हूँ जिस पर नाराज़ होने वाले लोगों की अकसरियत है मै तुम्हारे बोझ को उठा नही सकता और ना ख़ुदावंद क़ुद्दूस मुझे ये समझता है कि मै तुम्हारे ख़लाफ़त का मुस्तहेक़ था या गिरआँबार अमानत का हक़दार था! तुम्हारे ख़लाफ़त की अमानत एक अहमियत रखती है इसकी हिफ़ाज़त करो और जिसे तुम इसका मुस्तहक़ समझो उसको ये अमानत सुपुर्द करदो मैने तुम्हारे ख़लाफ़त का कुलादह अपनी गर्दन से उतार दिया है! अब मै दस्तबर्दार हो रहा हूँ!

इतने मे मरवान अल हकम ने कहा जो मिंबर के नीचे बैठा हुआ था कि यही उमर रज़िअल्लाहु अन्हु की सुन्नत है तो मुआविया बिन यज़ीद ने कहा क्या तुम मुझे मेरे दीन से हटाना चाहते हो! मुझे धोके मे डालना चाहते हो! ख़ुदा की कसम मै तुम्हारी ख़लाफ़त की हलावत नही चख सका तो इसकी कड़वाहट को कैसे बर्दाश्त कर सकता हूँ! तुम मेरे पास उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु जैसे लोग लाओ जिस वक़्त उन्होंने मजलिसे शोरा की तशकील दी थी और उन्होंने ऐसी तजवीज़ रख दी थी कि कोई ज़ालिम भी अदना स शुबह नही कर सकता था और ना ही उनकी अदालत को मशकूक गरदाँ सकता था! ख़ुदा की कसम ख़लाफ़त अगर ग़नीमत की चीज़ थी तो उसका मज़ा मेरे अब्बा जान ने तावउन या गुनाह की शक्ल में चख लिया और अगर ख़लाफ़त बुरी चीज़ है तो इसके मज़रात जो मेरे अब्बा जान को पहुँच चुकि है बस वही काफ़ी है! इतना कहकर मुआविया बिन यज़ीद नीचे उतर आयें और मुसलसल रोते रहें और इस तरह ख़लाफ़त से दस्तबर्दार हुएं!

तुरबत मुबारक- हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का जिस्म मुबारक करबला मुअल्ला और सरे अनवर जन्नतुल बक़ी शरीफ़ मे आपके वालिदा सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा के पहलू मे दफ़्न किया गया!

रौज़ा-ए-अक़दस हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम (करबला मुअल्ला)

अर्ज़े करबला –

एक बार सबा से पूछा मैने यही

करबोबला कि ख़ाक सी मिली ख़ुशबू तुझे कहीं

बोली बड़ी हैरत से मुझसे वो यही

करबोबला कि ख़ाक सी न पाई ख़ुशबू कहीं

उस ख़ाक से मिलती है मुझे ख़ुशबू बतूल की

उस ख़ाक मे बसी है जैसे महक रसूल की

उस ख़ाक मे ही हैदर की ख़ुशबू समाई है

दुनिया मे मिस्ल ख़ुशबू की न ऐसी पाई है

उस ख़ाक मे समाया है हसनैन का चमन

उस ख़ाक की ख़ुशबू है ख़ुशबू-ए-पंजतन

करती हूँ मै दुआ बस ये रब्बे करीम से

करना मुझे कभी न जुदा उस ख़ाके अज़ीम से

सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अज़वाज व औलाद---

(1) हज़रत लैला बिन्त अबि मुर्रह अरवाह बिन मसऊद सक़फ़ी (इनके बत्ने अक़दस से हज़रत अली अकबर रज़िअल्लाह तआला अन्हु पैदा हुएँ!

(2) हज़रत शहर बानो बिन्त शहनशाहे ईरान यज़्द जर्द बिन ख़ुसरू परवेज़ बिन नौशेरवां शहज़ादी ईरान थी (इनके बत्ने अक़दस से हज़रत इमाम अली औस्त उर्फ ज़ैनुल आबिदीन रज़िअल्लाह तआला अन्हु हैं!

(3) हज़रत उम्मे इसहाक़ बिन्त हज़रत तलहा रज़िअल्लाह तआला अन्हु (इनके बत्ने अक़दस से हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा क़ुबरा और हज़रत सैय्यदा फ़ातिमा सुग़रा रज़िअल्लाह तआला अन्हा है!

(4) हज़रत रबाब बिन्त अमरूल क़ैस बिन अदि-इनके बत्ने अक़दस से हज़रत सैय्यदा सुक़ैना उर्फ सकीना रज़िअल्लाह तआला अन्हा हुई और हज़रत अब्दुल्लाह उर्फ अली असग़र रज़िअल्लाह तआला अन्हु हुएँ!

(5) हज़रत उम्मे जाफ़र (इनके बत्ने अक़दस से हज़रत ज़ाफर पैदा हुएँ)!

(6) हज़रत हफ़्सा बिन अब्दुर्रहमान ये हज़रत सैय्यदना अबु बक्र रज़िअल्लाह ताला अन्हु की पोती और हज़रत आयशा रज़िअल्लाह ताला अन्हा की सगी भतीजी हैं (इनके बत्ने अक़दस से हज़रत मोहम्मद रज़िअल्लाह तआला अन्हु पैदा हुएँ)!

(7) बिन्त अबु मसऊद अन्सारी रज़िअल्लाह अन्हा!

इस तरह हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के पाँच शहज़ादे हुए यानी (1) हज़रत अली अकबर (2) हज़रत अली औस्त ज़ैनुल आबिदीन (3) हज़रत अब्दुल्लाह अली असग़र (4) हज़रत मोहम्मद और (5) हज़रत जाफ़र (रज़िअल्लाहु अन्हुमा) और तीन शहज़ादियाँ हुई यानी (1) हज़रत फ़ातिमा क़ुबरा (2) हज़रत फ़ातिमा सुग़रा (3) और हज़रत सुकैना (रज़िअल्लाहो अन्हमा) हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के तमाम शहज़ादे कर्बला मे शहादत के दर्जे पर फ़ाऐज़ हुए सिवाए इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़िअल्लाह तआला अन्हु के और हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम की औलादों में सिवाय हज़रत हसन मुसन्ना और हज़रत ज़ैद

रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा के सब करबला में शहीद कर दिए गएँ! इस तरह रूहे ज़मीं पर आज जितने भी हसनी हुसैनी सादात मौजूद हैं वो इमाम आली मुकाम हसन और हुसैन अलैहिस्सलाम के तीन शहज़ादों से है यानी (1) हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन बिन इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम (2) हज़रत ज़ैद बिन इमाम हसन अलैहिस्सलाम और (3) हज़रत इमाम हसन मुसन्ना (जद् सादात क़ुत्बिया) बिन इमाम हसन अलैहिस्सलाम से हैं!

हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु -

"वाक़िफ़ हैं इनसे कायनात के सब इन्सो अजिन्ना
बा ख़ुदा ये हैं फ़रज़न्दे हसन, हसन मुसन्ना"

हज़रत इमाम आली मक़ाम इमाम हसन अलैहिस्सलाम के शहज़ादे इमाम हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम हूबहू शबीह इमाम हसन थें ! और इसीलिये आपका नाम हसन मुसन्ना हुआ! क्योंकि आप सूरत और सीरत हर चीज़ मे अपने वालिदे ज़ीशान के मुशाबहे थें इसलिये आपको "मुसन्ना" का लक़ब मिला जिसका मतलब होता है (सानी)!
हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु की वालिदा माजिदा का इस्म मुबारक सैय्यदा ख़ौला बिन्त मन्ज़ूर फ़ज़्ज़ारी था, जो कूफ़ा के एक मोअज़्ज़िज़ ख़ानदान बनु फ़ज़्ज़ार से ताल्लुक़ रखती थीं!
हज़रत सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु के मुताल्लिक़ मोअर्रिख़ो ने लिखा है कि आप बहुत ख़ूबसूरत और बावक़ार शख़्सियत के मालिक थें!
जनाब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम आपसे हद दर्जे मोहब्बत फ़रमाते थे और आपको अपना दामाद बनाना चाहते थें! आपके निकाह मे जनाब हुसैन अलैहिस्सलाम की शहज़ादी सैय्यदा फ़ातिमा सुग़रा रज़िअल्लाह तआला अन्हा थीं!
कुछ तारीख़ निगारो ने ये लिखा है कि आप भी वाक़याए करबला मे मौजूद थें और अपने तमाम भाईयों और अज़ीज़ों के तरह आपने भी हाशमी शुजाअत का मुज़ाहिरा पेश किया काफ़ी यज़ीदियों को वासिले जहन्नम किया और ख़ुद भी काफ़ी ज़ख़्मी हो गए, काफ़ी चोट खाने के बाद आप बेहोश होकर मैदाने कारज़ार मे गिरपड़े, जनाब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ये देखकर अश्क़बार हो गएँ और सोचा कि ख़ानदाने रिसालत का एक और चिराग़ बुझ गया, आपने अपने दिल पर पत्थर रखकर जनाब हसन मुसन्ना को उठाकर हाशमी शहीदों मे रख दिया, लेकिन अल्लाह को कुछ और ही मन्ज़ूर था कि इतना ज़ख़्म खाने के बावजूद आप ज़िन्दा थें, यज़ीदियों ने आपको भी बन्दी बना लिया, और जब क़ाफ़ले को करबला से शाम के जानिब लेजाने लगे तो रास्ते मे कुछ यज़ीदियों ने चाहा कि आपको क़त्ल करदें लेकिन आपके वालिदा के क़बीले की एक ख़ातून अस्मा बिन्त अलहकम फ़ज़्ज़ारिया ने आड़े आकर आपको अमरु बिन साद से छुड़वा लिया और कूफ़ा लेजाकर आपकी ख़ूब तिमारदारी किया जिससे आप कुछ ही दिनों मे तंदरुस्त हो गएँ और अपने वतन मदीना मुनव्वरा वापस लौट गएँ!

कुछ मोअर्रिख़ो ने ये भी लिखा है कि आप वाक़ेआए करबला मे नही थे क्योंकि आप बीमार थे और जनाब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने आप ही के ख़िदमत के लिये सैय्यदा फ़ातिमा सुग़रा रज़िअल्लाह तआला अन्हा को आपके पास मदीना मे छोड़ दिया था!

उमवी ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मुल्क के कहने पर आपको भी दो बार ज़हर दिलवाया गया, जिसमे पहली बार तो वो कामियाब ना हो पाएँ, लेकिन दूसरी बार कामियाबी मिल गई, और आप शहीद हो गएँ, आपने पचासी साल की उम्र मुबारक पाई थी!
हज़रत इमाम बुख़ारी रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने आपके मुताल्लिक़ काफ़ी हदीसे मुबारिका दर्ज किया है, जिसमे से एक मे वो फ़रमाते हैं कि इमाम हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु के विसाल के बाद आपकी ज़ौजा सैय्यदा फ़ातिमा सुग़ारा रज़िअल्लाह तआला अन्हा ने आपके मज़ार मुबारक पर एक गुँम्बद नस्ब किया और एक साल तक उसी मे इबादत मे मशग़ूल रहीं! जब वो पूरा तैयार हुआ तो आपको किसी की ग़ैब से आवाज़ सुनाई दी, जिसमे वो कह रहे थें कि "ऐ सुग़ारा तुमने एक ज़रूरी चीज़ की बुनियाद क़ायम किया है!

अज़वाज व औलाद- इमाम सैय्यदना हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने दो शादियाँ फ़रमाई थी, पहली शादी तो आपने अपने चचा सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की बेटी सैय्यदा फ़ातिमा सुग़ारा रज़िअल्लाह तआला अन्हा से फ़रमाई थी जिनसे आपके तीन शहज़ादे हुऐ यानी-(1) हज़रत सैय्यदना हसन मुसल्लस रज़िअल्लाह तआला अन्हु (2) हज़रत सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु और (3) हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु (जद् सादात क़ुत्बिया)
दूसरी शादी आपने एक रोमिया जारिया से फ़रमाई कि जिनके शिकम मुबारक से हज़रत सैय्यदना दाऊद, सैय्यदना जाफ़र, और सैय्यदना यहया रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा पैदा हुए!
हज़रत सैय्यदना दाऊद बिन हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु हज़रत सैय्यदना इमाम जाफ़र सादिक़ रज़िअल्लाहु अन्हु के रज़ाई भाई थे!
इनके दूसरे भाई हज़रत सैय्यदना जाफ़र बिन हसन मुसन्ना रज़िअल्लाहु अन्हुमा की कुन्नियत अबुल हसन थी, इनके एक बेटे हसन थे, जिनकी नस्ल इनके बेटों हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत जाफ़र और मोहम्मद अल शैयलक़ से आगे चली! हज़रत यहया की नस्ल आगे नही चली (बहवाला रहमतललिल आलमीन)
हज़रत सैय्यदना हसन मुसल्लस, हज़रत सैय्यदना इब्राहीम अल ग़मर और हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा को ज़माने भर मे ये शर्फ़ हासिल है कि ये तरफ़ैन से फ़ातिमी हैं हसनी और हुसैनी हैं, यानी इनके वालिद हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना शहज़ादे हैं इमाम हसन अलैहिस्सलाम के और इनकी वालिदा सैय्यदा फ़ातिमा सुग़ारा शहज़ादी हैं सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिसस्सलाम की इस तरह इस घराने मे कि जिनमे इमाम हसन और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नजाबत शामिल हो गई रूहे ज़मीं पर सबसे ख़ालिस सादात होने का शर्फ़ हासिल हुआ और इसीलिये जहाँ इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के नस्ल मे यके बाद दीगरे इमाम मुन्तक़िल होते रहें वहीं इमाम हसन अलैहिस्सलाम की नस्ल पाक मे औलियाए कामलीन का नुज़ूल होता रहा है और जिनमे इमामुल औलिया हुज़ूर सैय्यदना ग़ौसुलवरा हज़रत मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह और हुज़ूर सैय्यदना क़ुतुबुल अक़ताब ग़ौसुलवरा अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह जैसी मुक़द्दस हस्तियाँ जलवागर हुईं और बहुक्मे ख़ुदा सादात-ए-क़ुत्बिया को ये शर्फ़ हासिल है कि इन दोनों बाबरकत शख़्सियतों की नस्ल पाक से होने के सबब इस घराने आली शान को सैय्यदुस्सादात होने का वक़ार हासिल हुआ और इस घराने मे इतने शहीद और औलिया अल्लाह हुए कि तारीख़ निगारों ने लिखा है कि दूसरे ख़ानदानों मे अगर चिराग़ लेकर ढून्डा जाए तो शायद ही मिलेंगे! बफ़ज़्ले ख़ुदा तआला (मुसन्निफ़) को भी इस ख़ानवादे आली शान मे पैदा होने का शर्फ़ हासिल है और इस न्यामते अज़ीमा के लिये मै अपने रब का बहुत-बहुत शुक्र गुज़ार हूँ!

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु-

"अब्दुल्लाह है नाम, महज़ है लक़ब
निसबत है इनको हसनो हुसैन से
ज़माने भर मे है ये शर्फ़ हासिल
सैय्यद हैं ये तरफ़ैन से"

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु का लक़ब जो महज़ है उसकी वजह तस्मिया यूँ बयान है कि "महज़"के माईने होता है ख़ालिस, जिसमे किसी और चीज़ की मिलावट ना हो, बस ये माँ बाप के तरफ़ से फ़ातिमी थें, इसलिये इनका लक़ब "महज़"हुआ!

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु बहुत ही मुत्तक़ी परहेज़गार निहायत इबादतगुज़ार और सख़ी और बलन्द किरदार के मालिक थें और ये भी इनको अपने ख़ानदाने ज़ीवक़ार से विरासत मे मिला था और इसी के सबब आपको लोग "शैख़ बनु हाशिम" कहने लगे!

तरीख़ इब्ने ख़लदून "अल बिदाया वन निहाया" मे मरक़ूम है कि सन् एक सौ चव्वालीस हिजरी मे अब्बासी ख़लीफ़ा अबु जाफ़र मंसूर का काबे के रास्ते मे लोगों ने इस्तक़बाल किया जिनमे हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु भी थें, मन्सूर ने इन्हें अपने साथ दस्तरख़्वान पर बैठाया और फिर इनसे बड़ी तवज्जो से गुफ़्तगू की, उसने इनसे इनके दोनो बेटों हज़रत सैय्यदना मोहम्मद नफ़्से ज़किया और हज़रत सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा (जो इसके मुख़ालिफ़ थे और ख़लाफ़त का दावा किया था) के मुताल्लिक़ दरयाफ़्त किया कि वो लोगों के साथ मेरे पास क्यों नही आएं? इसके जवाब मे हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने उसे बताया कि उन्हे नही मालूम की वो ख़ुदा के ज़मीन मे कहाँ हैं! मुआमला ये है कि मरवान अल हम्मार की हुकूमत के आख़ीर मे अहले हिजाज़ के एक जमात ने हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु की बैअत कर ली थी और उन्होंने मरवान को माज़ूल कर दिया था, और उनकी बैअत करने वालों मे ख़ुद अबु जाफ़र मन्सूर भी शामिल था और ये बात बनु अब्बास के तरफ़ ख़लाफ़त मुन्तक़िल होने से पहले की है! जब अबु जाफ़र मन्सूर ख़लीफ़ा बन गया तो हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया और उनके भाई हज़रत इब्राहीम से ख़ौफ़ज़दा हो गया क्योंकि उसको ये शुबह हो गया था कि ये दोनों उसके ख़िलाफ़ इसी तरह बग़ावत करेंगे जैसे उन्होंने मरवान अल हम्मार के ख़िलाफ़ बग़ावत किया था! मन्सूर ने जो वहम किया था उसमे वो फस गया और वो दोनों दूर दराज़ इलाकों मे रूह पोश रहे फिर जब हसन बिन यज़ीद ने इनके मुताल्लिक़ बताया तो वो फिर किसी दूसरी जगह रूहपोश हो गएं! हसन बिन यज़ीद मन्सूर के यहाँ इन दोनों के अदावत पर क़ायम रहा जबकी हैरत कि बात तो ये है की वो इन दोनों के पैरोकारों मे से था! मन्सूर ने हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु और आपके भाई हज़रत इब्राहीम को हासिल करने की हर तरीक़े से कोशिश किया मगर वो नाकाम रहा! जब उसने उनके वालिद हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु से उनके मुताल्लिक़ पूछा तो उन्होंने क़सम खाकर कहा कि मुझे नही मालूम कि वो दोनों ख़ुदा की इस ज़मीन पर किस जगह चले गए हैं! मन्सूर ने जब सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ से इनके दोनों बेटों के तलाश के बारे मे इसरार किया तो आपको ग़ुस्सा आ गया और कहने लगे ख़ुदा की क़सम अगर वो दोनों मेरे पैरों के नीचे भी हों तो मै तुझे इसके मुताल्लिक़ नही बताऊंगा! मन्सूर ने गुस्सा होकर उनको क़ैद करने का हुक्म दे दिया और उनके ग़ुलामों और अमवालों को भी फ़रोख़्त करने का हुक्म दे दिया और वो तीन साल तक क़ैद ख़ाने मे रहें, और लोगों ने मन्सूर को मशवरह दिया कि वो सब बनु हसन मुजतबा को क़ैद करदे तो उसने वही किया! उसने हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु और उनके भाई हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु की तलाश मे बड़ी जद्दो-

जहेद किया जबकी दोनों अकसर सालों मे हज मे हाज़िर होते रहें, और दोनों अकसर अवक़ात मदीना मे रूह पोश हो जाते, इन दोनों के मुताल्लिक़ चुग़ल ख़ोरो मे किसी को पता न चला! वल्लाहुल हम्द और मन्सूर मदीना के नाएब को माज़ूल करता रहता और दूसरे को उसकी जगह नाएब मुक़र्रर करता और उन्हें उन दोनों को पकड़ने की तरग़ीब देता और उसने उन दोनों की तलाश मे अमवाल को ख़र्च किया और जो वो चहता था तक़दीर इलाही ने उसको उससे आजिज़ रखा!

मन्सूर के उमरा मे से एक अमीर अबुल असाकिर ख़ालिद बिन हस्सान ने हज़रत नफ़्से ज़किया और हज़रत इब्राहीम से मंसूर के मुक़ाबले मे इत्तिफ़ाक़ किया और उन्होंने एक हज मे सफ़ाह और मरवह के दरमियान मन्सूर को अचानक क़त्ल कर देने का इरादा किया तो हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ ने इन्हें इस ख़ित्तए ज़मीन के शर्फ़ के वजह से रोक दिया और मन्सूर को इसकी इत्तिला मिली और जिस अमीर ने उन दोनो कि मदद की थी उसका भी पता चल गया तो उसने उसे सज़ा दिया, फिर मन्सूर ने उस अमीर से पूछा कि तुम्हे किसने मुझे क़त्ल कर देने की बात से रोका? तो उसने कहा कि जनाब अब्दुल्लाह अल महज़ बिन सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने हमे इस बात से रोका था!

मन्सूर ने अपने साहिबे राय उमरा और वुज़रा से मशवरह लिया जो हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ के दोनों बेटो के मामले को जानते थे और उसने जासूसो और मुतलाशियो को शहरो मे भेजा, मगर इन्हें उनदोनो के मुताल्लिक़ कोई ख़बर नही मिली और इनको उनका कोई नामो निशान ना मिला और अल्लाह अपने अम्र पर ग़ालिब है!

हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया ने अपनी वालिदा से आकर कहा कि "ऐ मेरी वालिदा मोहतरमा मुझसे अब अपने वालिद और चचाओं का ये हाल नही देखा जाता है, मैने इरादा किया है कि मै अपना हाथ उन लोगों के हाथो पर रख दूँ ताकि अपने अहल को आराम दे सकूँ (आप अपने आपको खलीफ़ा मन्सूर के हवाले करने की बात सोच रहे थे) तो इनकी वालिदा क़ैदख़ाने के तरफ़ गईं और जनाब अब्दुल्लाह अल महज़ के सामने वो बातें पेश किया जो आपके बेटे इमाम मोहम्मद नफ़्से ज़किया ने आपसे कही थी, इसको सुनकर जनाब अब्दुल्लाह कहने लगे, नही ये कोई इज़्ज़त की बात नही है, बल्कि हम इसके मामले मे सब्र करेंगे, शायद अल्लाह तआला इसके हाथो भलाई का दरवाज़ा खोल दे, हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से कुशादगी हासिल करेंगे चाहे वो हम पर कुशादगी करे या तंगी करे और इस मामले मे सबने एक दूसरे कि मदद की!

सन् एक सौ चव्वालीस हिजरी मे ख़ानवाद-ए-हसन मुजतबा पर बहुत ज़ुल्मो सितम ढाया गया! इस साल आले हसन मुजतबा को मदीना के क़ैद ख़ाने से इराक़ के क़ैद ख़ाने मे मुन्तक़िल किया गया और इनके पाँओ मे बेड़ियाँ और गर्दनों मे तौक़ पड़े हुए थे और अबु जाफ़र मनसूर के हुक्म से इन्हें बेड़ियाँ डालने की इब्तिदा रब्ज़ह से हुई! उसने आले सैय्यदना हसन मुजतबा के साथ साथ मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह उसमानी को भी तकलीफ़ दिया जो हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु के माँ जाया भाई थे और इनकी बेटी इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु को बियाही थी और थोड़े दिनों से हामला थीं! ख़लीफ़ा मन्सूर ने मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह उसमानी को बुलाकर कहा कि अगर तू मुझसे फ़रेब ना करे तो मैने तलाक़ और अताक़ की क़सम खाई है, और ये तेरी बेटी हामला है, और अगर वो अपने ख़ाविन्द से हामला हुई है तो तुझे इसके मुताल्लिक़ इल्म होगा और अगर वो किसी और से हामला हुई है तो तू दय्यूस है! हज़रत अब्दुल्लाह बिन उसमानी ने उसे ऐसा जवाब दिया जिसने उसे बुरा फ़रोख़्ताँ कर दिया, बस उसने मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह के कपड़े उतरवाए, तो उनका जिस्म चाँदी के तरह शफ़्फ़ाफ़ था, फिर मन्सूर ने अपने सामने उन्हें डेढ़ सौ कोड़े मरवाए जिनमे से तीस कोड़े उनके सर पर मारे जिनमे से एक उनके आँख पर लगा जिससे वो फूट गई! फिर उसने उन्हें क़ैद ख़ाने मे भेज दिया और वो मार की निलाहट और जिल्द के ऊपर ख़ून जम जाने से एक सियाह फ़ाम ग़ुलाम की तरह हो गए, उनको उनके माँ जाया भाई हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ के पहलू मे बिठा दिया गया, हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह उसमानी ने पानी माँगा लेकिन किसी ने उन्हें मन्सूर के ख़ौफ़ से पानी पिलाने की जसारत ना किया हत्ता कि एक ख़ुरासानी ने उन्हें पानी पिलाया जो उन

जल्लादों मे से एक था जो उनपर मुसल्लत किया गया था! फिर मन्सूर अपने हौंदज पर सवार हुआ और उन्हें तंग महमलों मे सवार किया गया और ये बेड़ियों मे जकड़े हुए थें और तौक़ भी पहने हुए थें! मन्सूर अपने हौंदज मे उनके पास से गुज़रा तो अब्दुल्लाह अल महज़ बिन हसन मुसन्ना बिन इमाम हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने उसे आवाज़ दी, "ऐ अबु जाफ़र मन्सूर क़सम ब ख़ुदा हमने मारकऐ बद्र मे तुम्हारे क़ैदियों से ये सुलूक़ नही किया था, जो तुम हम लोगों के साथ कर रहे हो और इस बात से मन्सूर को ज़लील कर दिया और ये बात उसे गिरआँ गुज़री और उसने उनसे ऐराज़ किया और जब वो इराक़ पहुँचे तो उन्हें हाश्मिया मे क़ैद कर दिया गया और उनमे मोहम्मद बिन इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह अल महज़ भी थे जो बहुत ख़ूबसूरत जवान थे, लोग उनके हुस्न जमाल को देखते रहते थे, और उन्हें ज़र्द दयाबाज कहते थे! मन्सूर ने उन्हें अपने सामने बुलाया और कहा कि मै तुझे ऐसे क़त्ल करुंगा कि मैने किसी को ऐसे क़त्ल न किया होगा, फिर उन्हें दो सुतूनो के दर्मियान लटका दिया गया और उन्हें बन्द कर दिया (यानी चुन्वा दिया गया) तो उन्हें उसमे शहादत हासिल हुई! बस मन्सूर पर अल्लाह की लानत हो जिसका वो मुसतहक़ है, और आले हसन मे से बहुत से लोगों ने क़ैद ख़ाने मे शहादत का जाम नोश फ़रमाया हत्ता कि मन्सूर के मरने के बाद उन्हें क़ैद ख़ाने से रिहाई मिली! क़ैद ख़ाने मे हलाक होने वालों मे हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ बिन इमाम हसन मुसन्ना बिन इमाम हसन अलैहिस्सलाम भी थे और इनको बान्ध कर शहीद किया गया था, और इनके साथ इनके भाई इब्राहीम अल ग़मर बिन हसन मुसन्ना और हसन मुसल्लस बिन हसन मुसन्ना भी शहीद कर दिये गएं! क़ैद ख़ाने मे से कम ही लोग क़ैद से बाहर निकल पाए, मन्सूर ने उन्हें ऐसे क़ैद ख़ाने मे रखा था कि जिसमे वो अज़ान तक ना सुन पाते थे, और उन्हें सिर्फ़ तिलावत से नमाज़ का वक़्त मालूम होता था!

अहले ख़ुरासान ने मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह उसमानी के बारे मे सिफ़ारिश भेजा तो मन्सूर ने उनके मुताल्लिक़ हुक्म दिया कि उन्हें क़त्ल करके उनका सर अहले ख़ुरासान के पास भेज दिया जाए फिर उसके हुक्म की तामील हुई!

हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अमरू बिन उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु की माँ सैय्यदा फ़ातिमा सुग़रा बिंत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम थी (हज़रत सैय्यदा फातिमा सुग़रा की पहली शादी हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना बिन इमाम हसन अलैहिस्सलाम से हुई थी) जब हज़रत सैय्यदना इमाम हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु का विसाल हो गया तो सैय्यदा फ़ातिमा सुग़रा का दूसरा निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमरू बिन उसमान ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु से हुआ और इसीलिये हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ बिन हज़रत हसन मुसन्ना और हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बीच माँ जाया भाई का रिश्ता था! मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह उसमानी रज़िअल्लाहु तआला अन्हु की बेटी रूक़य्या हज़रत सैय्यदना इब्राहीम बिन सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु की बीवी थीं!

अज़वाज व औलाद- हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु की ज़ौजा सैय्यदा हिंद बिन्त अबु उबैदा रज़िअल्लाह तआला अन्हा थीं जिनके शिकम से आपके पाँच फ़रज़न्द पैदा हुए यानी- (1) हज़रत सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाहु तआला अन्हु (जद् सादात क़ुत्बिया) (2) हज़रत सैय्यदना इब्राहीम रज़िअल्लाहु तआला अन्हु (3) हज़रत सैय्यदना मूसा अल जून रज़िअल्लाहु तआला अन्हु (जद् हज़रत मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह) (4) हज़रत सैय्यदना सुलैमान रज़िअल्लाहु तआला अन्हु और (5) हज़रत सैय्यदना इद्रीस रज़िअल्लाहु तआला अन्हु!

और सादात हसनी आपके चार फ़रज़न्दों से दुनिया मे मौजूद हैं यानी हज़रत इमाम मोहम्मद नफ़्से ज़किया, हज़रत मूसा अल जून, हज़रत सुलैमान और हज़रत इद्रीस रज़िअल्लाह तआला अन्हुमा से! हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु के एक फ़रज़न्द जिनका नाम मोहम्मद रज़िअल्लाह तआला अन्हु था और जिनको मन्सूर ने बड़ी बेरहमी से क़त्ल करवा दिया था (जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है)! (तारीख़ इब्ने ख़लदून अल बिदाया वन निहाया, तारीख़ इब्ने क़सीर अल कामिल फ़ित्तारीख़, ख़ानदाने मुस्तफा)

तीसरा-बाब (बाब-ए-क़ुत्बिया)

सादात-ए-क़ुत्बिया कड़ा व मानिकपुर के अजदाद एक नज़र में-

1-हज़रत सैय्यदना इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने सन् सौ (100) हिजरी मे मदीना मुनव्वरा मे आँखे खोली, फिर सन् एक सौ अड़तीस (138) हिजरी मे आपने अलवी ख़लाफ़त की तहरीक शुरू की, फिर सन् एक सौ पैंतालीस (145) हिजरी मे आपने अब्बासी ख़लीफ़ा जाफ़र अल मंसूर के ख़िलाफ़ मदीना मुनव्वरा मे ख़ुरूज किया और मक़ाम अहजाज़-अल-ज़ैत मे शहादत पाई-

2-हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह ने तक़रीबन सन् एक सौ बीस (120) हिजरी मे मदीना मुनव्वरा मे इमाम नफ़्से ज़किया के यहाँ आँखे खोली, फिर एक सौ अड़तीस (138) हिजरी मे अपने वालिद माजिद का पैग़ामे हक़ पहुँचाने सिंध के सर-ज़मीन पर तशरीफ़ लाएं और जहाँ सन् एक सौ तिरपन (153) हिजरी मे सफ़ीह बिन अमरु से जंग करते हुए दर्जा-ए-शहादत पर फ़ाएज़ हुएं-

3-हज़रत सैय्यदना मोहम्मद असग़र अल सानी रहमतउल्लाह अलैह ने अपने वालिद माजिद अब्दुल्लाह शाह गाज़ी रहमतउल्लाह अलैह के साथ सिंध कूच किया, सफ़ीह बिन अमरु ने आपको भी शहीद करना चाहा लेकिन राजा सिंध ने आपको छुपा दिया और बाद मे सफ़ीह बिन अमरु राजा सिंध पर ग़ालिब आ गया और आपको क़ैद करके मंसूर के पास बग़दाद भेज दिया जहाँ से मंसूर ने आपको अपके ख़ानदान वालों के पास आपके वतन मदीना मुनव्वरा भेज दिया-

4-हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह कूफ़ा मे पैदा हुएं, आप कूफ़ा के नक़ीब थे, नक़ाबते अशराफ़ और सादात की सरबराही का मन्सब आपको ही हासिल था और आपके बाद यके बाद दीगरे आपकी औलादों मे मुन्तक़िल होता रहा-

5-हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह की सिलसिला-ए-औलाद मे हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह ने सन् पाँच सौ अट्ठाइस (528) हिजरी मे मदीना मुनव्वरा मे आँखे खोली, आप अपने अजदाद में पहले वो शख़्स हैं जो मदीना से बग़दाद तशरीफ़ लाएं और वहीं सैय्यदना ग़ौसुल आज़म मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह की हमशीरा से शादी फ़रमाई और सन् छ: सौ आठ (608) हिजरी मे तातारियों के हंगामे मे शहादत पाई-

6-हज़रत सैय्यदना ग़ौसुल आलमीन क़ुतुब अल अक़ताब अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह ने सन् पाँच सौ इक्यावन (551) हिजारी मे मदीना मुनव्वरा मे आँखे खोली,फिर आप सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी के दौर-ए-हुकूमत मे ग़ज़नी आएं और वहाँ से सुल्तान क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ के दौर-ए-हुकूमत मे हिंदुस्तान का क़स्द किया फिर राजा कन्नौज, हँस्वाह, कोर्रह, कड़ा व मानिकपुर से जंग किया और मुज़फ़्फ़र व मंसूर हुए और कड़ा (करआ) ज़िला कौशाँम्बी मे तीन (3) रमज़ानुल मुबारक सन् छ: सौ सतत्तर (677) हिजरी मे पर्दा फ़रमाया और वहीं आपका मज़ार मुबारक मर्जा-ए-ख़लायक है-

7-आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना हसन निज़ामउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह क़िला मानिकपुर को फ़तेह करने मे काफ़ी ज़ख़्मी हो गए जिसके सबब अलील रहने लगे और सन् छ: सौ सत्तर (670) हिजरी मे पर्दा फ़रमा गए-

8-आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह सन् छ: सौ छियानवे (696) हिजरी मे अहेद सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी मे क़ाज़ी-ए-कड़ा हुए, हज़रत ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह आपका हद दर्जे एहतिराम फ़र्माते थें-

9-आपके सिलसिला-ए-औलाद मे हज़रत सैय्यदना अमीर इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने कड़ा से मुन्तक़िल होकर कोर्रह ज़िला फ़तेहपुर मे सुकूनत अख़्तियार किया और वहीं पर्दा फ़रमाया-

10-आपके सिलसिला-ए-औलाद मे हज़रत सैय्यदना शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (मुसन्निफ़ तारीख़ आईना-ए-अवध) ने कोर्रह से सुकूनत तर्क करके ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे सुकूनत अख़्तियार कर लिया जहाँ कुछ हासिदो ने आपके जाहो हशम के सबब आपको शहीद करवा दिया! **अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)**

हज़रत सैय्यदना इमाम मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की (रज़िअल्लाह तआला अन्हु)

"मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह कहें
या कहें ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की
औलाद हैं वो हसनैन के
घराने के हैं बहुत सख़ी
इमामों के हैं इमाम हैं वक़्त के मेहंदी
अब्बासियों के बरअक्स थे तेज़ी हुसैनी
अल्लाह ने बनाया है पाक उनको इतना
कहता है ज़माना उन्हें नफ़्से मुत्तक़ी"

पैदाइश- हज़रत सैय्यदना इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु के घर मे सन् सौ (100) हिजरी मे मदीना मुनव्वरा मे आँखे खोली! आप निहायत हसीनो जमील थें!

नाम कुन्नियत और परवरिश- आपका नाम मोहम्मद, और लक़ब अबुल क़ासिम पड़ा! अपनी वालिदा सैय्यदा हिंद बिंत अबु उबैदा और अपने वालिद सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन हसन मुसन्ना के आग़ोशे मोहब्बत मे पल कर जवान हुए! आपकी पाकी हया अज़मत और बुज़ुर्गी को देखकर अहले ख़ानदान और ग़ैर सब आपको नफ़्से ज़किया कहते थे!

नसब मुबारक- आप सादात की उस शाख़ से ताल्लुक़ रखते है जिन्हें हर जानिब से सयादत हासिल हैं यानि आपका पूरा ख़ानदान सरकार दो आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से क़राबत रखता था, आपके वालिद मोहतरम हज़रत अब्दुल्लाह शहज़ादे थें हज़रत इमाम हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु के जो बेटे थें हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम के आपकी दादी सैय्यदा फ़ातिमा सुग़रा शहज़ादी थीं इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की आपकी वालिदा सैय्यदा हिंद दुख़्तर थीं हज़रत सैय्यदना अबु उबैदा रज़िअल्लाहु तआला अन्हु की जो ख़ानदाने अब्दुल मुत्तलिब से थें!

इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु का ख़ुरूज करना- इस्लामी तारीख़ों से आपके मुताल्लिक़ जो सबसे अहेम वाक़ेआ खुलके सामने आता है वो है आपका अब्बासी ख़लीफ़ा अबुजाफ़र मंसूर (सन् 136 हिजरी) के ख़िलाफ़ बग़ावत और ख़ुरूजो क़याम करना जिसका तफ़्सीली ज़िक्र आगे आपके ज़ेरे नज़र होगा लेकिन उससे पहले हम अबुजाफ़र मंसूर के किरदार पर एक नज़र डालले तो हमे इस मौज़ूउ को समझने मे आसानी होगी!

अब्बासी ख़लीफ़ा अबु जाफ़र मंसूर का किरदार- हज़रत सैय्यदना मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के हालात पर रौशनी डालने से पहले ख़लाफ़ते अब्बासिया के दूसरे हुक्मरान अबु जाफ़र मंसूर का किरदार और ख़ानदाने रिसालत व अईम्माए वक़्त के लिये इसका क्या रवईया था ये जान लेना ज़रूरी है! सन् एक सौ छत्तीस (136) हिजरी मे पहले अब्बासी ख़लीफ़ा अबुअब्बास सफ़ाह ने इन्तक़ाल किया तो उसके भाई अबुजाफ़र मंसूर ने दूसरे ख़लीफ़ा के हैसियत से बागडोर सँभाली, ख़लीफ़ा बनते ही उसने सबसे पहला जो काम किया वो हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के क़ब्रे अनवर को पामाल करना और आपके ख़ानदान और तमाम ख़ानदाने रिसालत पर ज़ुल्मो सितम ढाना था जिससे अब्बासी तारीख़ के सफ़ात सियाह हो गयें थें! इसके ज़ुल्मो सितम का आलम तो ये था कि वो किसी ऐसे आदमी को न छोड़ता था जिसपर इसको ख़फ़ीफ़ सा भी शक हो जाता था कि वो इसके ख़िलाफ़ जा रहा है!

इसने हज़रत इमाम अबु हनीफ़ा को काज़ी ना बनने के सिलसिले मे जेल मे डलवा दिया और उनके उस फ़तवे पर जो आपने हज़रत नफ़्से ज़किया के ख़ुरूज करने के हिमायत मे दिया था कोड़े लगवायें और फिर ज़हर देकर ख़त्म करवा दिया! सन् एक सौ अड़तालीस (148) हिजरी मे इसने ख़ानदाने रिसालत के अज़ीम फ़र्द हज़रत सैय्यदना इमाम जाफ़र सादिक़ अलैहिस्स्लाम को भी ज़हर देकर शहीद करवा दिया! अल्लामा दमेरी ने अपनी किताब हयातुल हैवान मे इसके मुताल्लिक़ लिखा है कि ये बहुत कंजूस और लालची तबियत का मालिक था! इसकी बख़ालत और हिर्स का आलम तो ये था कि अपने मातहत अफ़राद से पैसे पैसे और दाने दाने का हिसाब लेता था! मंसूर ने अपने दौरे ख़लाफ़त मे अलवी और अब्बासी अफ़राद के दरमियान फ़ितनाअंगेज़ी किया जो इससे क़ब्ल कभी नही हुआ था दूसरे अल्फ़ाज़ों मे ये कहना बेजा ना होगा कि ये दौर दूसरा यज़ीदी दौर था जिसमे इमाम हुसैन और ख़ानदाने रिसालत के साथ इस क़द्र ज़ुल्मों सितम का मुज़ाहिरा पेश किया गया था! बस मंसूर के ख़िलाफ़ और उसके ज़ुल्मो तशद्दुद के सबब हज़रत सैय्यदना इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने भी अपने ख़ानदान के तरह आवाज़ उठाई और अपने ख़लाफ़त का दावा किया जिसकी हिमायत इमाम मालिक और इमाम अबु हनीफ़ा ने किया जिसकी तफ़्सील इस तरह बयान की जाती है!

तफ़्सील- सन् एक सौ अड़तीस (138) हिजरी मे कि जब बनु उमय्या की हुकूमत ज़वाल पज़ीर हो चुकी थी, तो हज़रत सैय्यदना मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अलवी ख़लाफ़त की तहरीक शुरू की और अपने भाई हज़रत इब्राहीम को इस ज़मन मे बसरह रवाना किया! इस ज़माने मे सादात के साथ इन्तेहाई ज़ुल्म का रवईया रखा गया था, जब आपने ख़लाफ़त का दावा किया तो ज़्यादा तर अहले मदीना ने आपके हाथो पर बैअत किया और बैअत करने वालों मे हज़रत इमाम मालिक और हज़रत इमाम मोहम्मद हनीफ़ा भी थें और आप लोगों ने हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़की के हिमायत मे फ़तवा भी दिया कि वो हक़ पर हैं! हज़रत मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की की बैअत करने वालों मे अब्बासी ख़लीफ़ा अबु जाफ़र मन्सूर भी था ये वाक़ेआ मरवान अल हम्मार की हुकूमत के आख़िर का है और बनु अब्बास के तरफ़ ख़लाफ़त मुन्तक़िल होने से पहले का है! जब अबु जाफ़र मंसूर ख़लीफ़ा बना तो उसने आपकी हिमायत और पैरवी करने के बजाए आप और आपके अहले ख़ाना पर ज़ुल्मो सितम जारी कर दिया (क्योंकि वो डर गया था कि कहीं आप उसके ख़िलाफ़ बग़ावत ना कर दें जैसे आपने मरवान अल हम्मार के ख़िलाफ़ किया था) बस उसने तमाम आले हसन मुजतबा (अलैहिस्सलाम) पर ज़ुल्मो सितम शुरू कर दिया! इमाम नफ़्से ज़किया उस वक़्त रुहपोश थे और अबु जाफ़र मंसूर ने आपको और आपके भाई इब्राहीम को ढूंडने के लिए काफ़ी जद्दो जहद किया लेकिन कामियाब न हो पाया! सन् एक सौ चव्वालीस (144) हिजरी के आख़िर मे मंसूर ने आपके वालिद सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ और आपके अहले ख़ाना को ऐसे क़ैद ख़ाने मे बंद करवाया जहाँ वो अज़ान की आवाज़ तक न सुन पाते थे और ना ही अज़कार और तिलावत के बग़ैर औक़ात नमाज़ का पता चलता था, हत्ता की ज़्यादा तर लोगों ने वहीं वफ़ात पाई जिनमे आपके वालिद मोहतरम हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु भी शहीद कर दिये गएं! इस वाक़िये के बाद हज़रत मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने मदीना मे और आपके भाई हज़रत इब्राहीम ने बसरह मे ख़ुरुज किया और ये सन् एक सौ पैंतालीस (145) हिजरी मे हुआ! इसकी ख़बर जब मदीना के मुन्तज़िम को हुई तो वो घबरा गया और अपने फ़ौजों के साथ सवार होकर मदीना और मरवान के घर के इर्द गिर्द चक्कर लगाया और फिर वहीं इकठ्ठे रहे, लेकिन हज़रत मोहम्मद ज़किया के बारे मे कुछ पता न चला और फिर वापस अपने घर के तरफ़ आया तो उसने बनु हुसैन (अलैहिस्सलाम) के पास पैग़ाम भेजा और उन्हें इकठ्ठा किया और उनके साथ क़ुरैश के सरगिरोह लोग भी थे! फिर उसने उन्हें नसीयत व मलामत भी की और कहा कि 'ऐ अहले मदीना, मंसूर ने नफ़्से ज़किया को मशारिक से मग़ारिब मे तलाशा और वो तुम्हारे दर्मियान मौजूद था और तुमने समीओ इताअत पे उसकी बैअत की है, ख़ुदा की क़सम मुझे जिसके मुताल्लिक़ ख़बर मिलेगी कि वो उसके साथ है तो मै उसे क़त्ल कर दूंगा, इस पर तमाम बनु हुसैन (अलैहिस्सलाम) ने कहा कि इसके मुताल्लिक़ हमे कुछ इल्म नही! फिर इसी दर्मियान ये पता चला कि हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया के असहाब ज़ाहिर हो गए हैं, और उन्होंने बुलन्द आवाज़ मे तकबीर कही और लोग नस्ब शब को घबरा गए और बाज़ लोगों ने अमीर को ये मशवरा दिया कि वो सब बनु हुसैन (अलैहिस्सलाम) को क़त्ल

करदे! फिर मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु दो सौ पचास आदमियों के साथ आएं और क़ैद ख़ाने के पास से गुज़रे और जो लोग उस मे मौजूद थे उन्हें निकाला और आकर दारूल इमारत का मुहासरा कर लिया और उसे फ़तेह कर लिया और मदीना के नाएब रबाह बिन उसमान को पकड़ कर मरवान के घर मे क़ैद कर दिया क्योंकि उसी ने उस शब के आग़ाज़ मे बनु हुसैन (अलैहिस्सलाम) के क़त्ल का मशवरह दिया था, बस तमाम बनु हुसैन अलैहिस्सलाम बच गएं और रबाह बिन उसमान का घेराव हो गया! हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु सुबह को मदीना पर ग़ालिब आगएं और अहले मदीना ने उनकी इताअत करली और उन्होंने सुबह मे लोगों को नमाज़ पढ़ाई और उसी मे सूरह إنا فتحنا لك فتحا مبينا पढ़ी और उस शब ने उस साल के रजब के चाँद को वाज़ेह कर दिया!

उस दिन हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अहले मदीना से ख़िताब किया और बनु अब्बास पर ऐतराज़ात किया गया और उनके क़ाबिले मज़म्मत बातो का ज़िक्र किया गया और उन्हें बताया गया कि वो यानि (मोहम्मद नफ़्से ज़किया) जिस शहर मे भी गए है लोगों ने समिओ इताअत पर उनकी बैअत की है, और थोड़े से आदमियों के सिवा सब अहले मदीना ने उनकी बैअत कर ली! इब्ने जरीर ने बहवाला इमाम मालिक रज़िअल्लाह तआला अन्हु रिवायत किया है कि आपने हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु की वुसअत करने का फ़तवा दिया था और उनसे दर्याफ़्त किया गया कि हमारी गर्दनों मे मंसूर की बैअत है, तो हज़रत इमाम मालिक रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया तुम्हें मजबूर किया गया है और मजबूर की कोई बैअत नही होती, बस लोगों ने हज़रत नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु से बैअत करली और इमाम मालिक रज़िअल्लाह तआला अन्हु के क़ौल की पैरवी किया! इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इस्माईल बिन अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़िअल्लाह तआला अन्हु को अपनी बैअत की दावत दी तो उन्होंने उनसे कहा कि ऐ मेरे भतीजे बिला शुबहा आप मक़तूल है तो इस बात से ख़ौफ़ज़दा होकर कुछ लोग आपकी बैअत से बाज़ रहें लेकिन अक़सरियत आपके साथ थी! हज़रत नफ़्से ज़किया ने उस्मान बिन मोहम्मद बिन ख़ालिद बिन ज़ुबैर को मदीना पर नाएब बनाया और अब्दुल अज़ीज़ बिन अल मुत्तलिब बिन अब्दुल्लाह मख़ज़ूमी को मदीना का क़ाज़ी मुक़र्रर किया और उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल ख़त्ताब को इसका पोलिस सुप्रीटेंडेंट मुक़र्रर किया और अब्दुल्लाह बिन जाफ़र बिन अब्दुल्लाह बिन मसऊद बिन मुख़रमा को अतयात के दफ़्तर का अमीर मुक़र्रर किया, हज़रत नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने हुसैन बिन मुआविया को सत्तर पियादों और तक़रीबन दस सवारों के साथ मक्का के तरफ़ नाएब बना कर रवाना किया कि अगर वो मक्का मे दाख़िल हो जाए तो वो भी मक्का चले आएंगे, जब अहले मक्का को इनके आमद का इल्म हुआ तो वो हज़ारो लड़ाकुओं के साथ इनके मुक़ाबले मे निकले तो हुसैन बिन मुआविया ने इन से कहा कि अबुजाफ़र फ़ौत हो चुका है तुम क्यों लड़ते हो? अहले मक्का के सरदार अलसरी बिन अब्दुल्लाह ने कहा उनकी डाक चार रातों मे हमारे पास आती है और मैने उसके तरफ़ ख़त रवाना किया है और मै चार रातों तक उसके जवाब का इन्तेज़ार करूंगा, बस अगर तुम्हारी बात सच हुई तो मै शहर को तुम्हारे सुपुर्द करूंगा और तुम्हारे जवानों और घोड़ों का ख़र्च मेरे ज़िम्मे होगा मगर हुसैन बिन मुआविया ने इन्तेज़ार करने से इन्कार कर दिया और क़सम खाई कि वो मक्का मे रात बसर नही करेगा सिवाए इसके कि वो मर जाए और उसने अलसरी को पैग़ाम भेजा कि हरम से निकल कर हल के तरफ़ आजाओ ताकि हरम मे ख़ूरेंज़ी ना हो, मगर वो हल के तरफ़ ना आया तो ये उनके तरफ़ बढ़े और उनके मुक़ाबले मे सफ़बन्दी की और हुसैन और उनके साथियों ने यकबारगी उन पर हमला कर दिया और उन्हें शिक़स्त दी और उनके साथ आदमी मारे गए और ये मक्का मे दाख़िल हो गए और जब सुबह हुई तो हुसैन बिन मुआविया ने लोगों से ख़िताब किया उन्हें अबु जाफ़र मंसूर के ख़िलाफ़ बरअंगेख़्ता किया और उन्हें मोहम्मद नफ़्से ज़किया (मेहन्दी) रज़िअल्लाह तआला अन्हु के तरफ़ दावत दी! और इसी तरह आपके भाई इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने बसरह मे एक ही वक़्त मे सन् एक सौ पैंतालीस (145) हिजरी मे ख़ुरूज किया!

मंसूर ने ईसा बिन मूसा को बग़दाद से दस हज़ार चुनिंदा बहादुर इराक़ी सवारो का जैश हज़रत मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की रज़िअल्लाह तआला अन्हु से लड़ने के लिये मदीना रवाना किया जिनमे मोहम्मद बिन अबुल अब्बास सफ़ह, जाफ़र बिन हंज़ला अल बहरानी और हमीद बिन कैहतबा भी शामिल थे! मंसूर ने ईसा बिन मूसा के ज़रिये अहले मदीना के क़ुरैश और अंसार के सरदारों के नाम ख़तूत लिखे कि वो इन्हें ख़ुफ़िया तौर पर नफ़्से ज़किया के पास भिजवा दे और उन्हें इताअत की तरफ़ वापस आने की दावत दे! जब ईसा बिन मूसा मदीना मुनव्वरा के नज़दीक़ आया तो उसने एक शख़्स के हाथ ख़तूत भेजे जिसे हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया के मुहाफ़िज़ो ने पकड़ लिया और उन्होंने उन ख़तों को हज़रत नफ़्से ज़किया के पास भेज दिया जिसके बाद उस शख़्स को पकड़ कर क़ैद ख़ाने मे डलवा दिया गया, फिर हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने अपने असहाब से मदीना मे ठहरने का मशवरह लिया ताकि ईसा बिन मूसा आकर मदीना मे उनका मुहासरा करले या ये कि वो अपने साथियों के साथ बाहर चले जाए और ईसा बिन मूसा के साथ जंग करे! कुछ लोगों ने ये मशवरह दिया के वो मदीना ठहरे और कुछ ने मदीना से बाहर जाकर जंग करने पर रज़ामंदी दी, फिर मदीना मे क़याम करने पर इत्तिफ़ाक़ राय हो गया, इसलिये कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जंग-ए-ओहद के रोज़ मदीना से बाहर निकलने पर नादिम हुए थे, फिर नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु और आपके असहाब ने मदीना के इर्द गिर्द ख़न्दक खोदने पर इत्तिफ़ाक़ किया जैसे की जंग एहज़ाब के रोज़ रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने किया था, बस सब लोगों ने इस बात को क़ुबूल किया और जनाब नफ़्से ज़किया ने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कि इक़तिदा मे लोगों के साथ अपने हाथो से ख़न्दक खोदा, और उन्हें इस ख़न्दक से एक ईंट नज़र आई तो वो ख़ुश हो गयें और हज़रत नफ़्से ज़किया को फ़तेह की बशारत दी गई, और उन्होंने तकबीर कही, और जब ईसा बिन मूसा हौज़ मे उतरा और मदीना के नज़दीक़ हुआ तो मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने मिंबर पर चढ़कर लोगों से ख़िताब किया और उन्हें बैअत के बारे मे आज़ादी दी कि तुममे से जो चाहे बैअत पर क़ायम रहे और जो चाहे उससे आज़ाद हो जाए, आपने लोगों को जिहाद के लिये भी तरग़ीब दिया, जो तक़रीबन एक लाख आदमी थे, लेकिन उनमे ज़्यादातर लोग अपने अहल के साथ मदीना से अलग हो गयें और आपके साथ कम लोग रह गयें! फिर ईसा बिन मूसा बारह (12) रमज़ानुल मुबारक हफ़्ते के दिन सन् एक सौ पैंतालीस (145) हिजरी मे अलजरफ़ मे सुलैमान बिन अब्दुल मुल्क के हौज़ पर मदीना के चार मील के फ़ासले पर उतरा, और उसने अपने पाँच सवारों को मक्का के रास्ते मे दरख़्त के पास भेजा ताकि अगर हज़रत नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु उधर जाएं तो उन्हें पकड़ लें! ईसा बिन मूसा ने सैय्यदना मोहम्मद नफ़्से ज़किया को मंसूर की इताअत अख़्तियार करने का पैग़ाम भेजा और कहा कि वो अगर उसकी बात मान ले, तो वो उनको और उनके अहले बैत को आज़ादी दे देगा, हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने ईसा बिन मूसा के ऐलची से कहा अगर ऐलचियों को क़त्ल ना करने का कोई उसूल न होता तो मै तुझे क़त्ल कर देता, फिर उन्होंने ईसा बिन मूसा को पैग़ाम भेजा 'मै तुझे किताबउल्लाह और सुन्नते रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के तरफ़ दावत देता हूँ, और तू इन्कार से बच वरना मै तुझे क़त्ल करदूंगा और तू बड़ा मक़तूल होगा और या तू मुझे क़त्ल करदेगा और तू उस शख़्स का क़ातिल होगा जिसने तुझे किताबउल्लाह और सुन्नते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तरफ़ दावत दी है! फिर उनदोनो के दरमियान तीन दिन तक ऐलची आते-जाते रहे और वो इन्हें दावत देता और आप उसे दावत देते! ईसा बिन मूसा इन तीनों दिनों मे सलअ की नज़दीकी घाटी पर खड़े होकर यही ऐलान करता रहता था कि 'ऐ अहले मदीना हम पर तुम्हारा ख़ून हराम है बस जो महज़ हमारे झण्डे तले आकर खड़ा हो जायेगा उसको अमान है जो अपने घर मे दाख़िल हो जायेगा उसको अमान है जो मदीना से बाहर चला जायेगा उसे अमान है और जो अभी अपने हथियारों को फेंक देगा उसको अमान है हमे तुमसे जंग नही करना हमे तो बस 'मोहम्मद' चाहिये कि हम उसे ख़लीफ़ा के पास ले जायें! इस बात पर अहले मदीना ने उस पर और उसकी माँ पर लानत भेजी और उससे कहा कि ऐ ईसा बिन मूसा हमारे पास मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का साहबज़ादा है और हम उसकी हिफ़ाज़त करेंगे और तेरे साथ जंग करेंगे! बस इस बात पर ईसा बिन मूसा बुरा ज़लील हुआ और उसने जंग की ठान ली! उसने अपने फ़ौजों को कई दस्तों मे तक़सीम कर दिया और उसने हरावल पर हमीद बिन कैहतबा को मैमना पर मोहम्मद बिन सफ़ाह को मैसरह पर दाऊद बिन करार को और साका पर अल हशैम बिन शैबा को अमीर

मुक़र्रर किया और उनके पास ऐसे जंगी हथियार थे जो इससे क़ब्ल नही देखे गयें थें लेकिन हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के पास आपके जद् बुज़ुर्गवार हज़रत अली हैदरे कर्रार शेरे ख़ुदा की तलवार 'ज़ुल्फ़िकार' थी जिसका कोई मुक़ाबिल नही था!

शहादत- पन्द्रह (15) रमज़ानुल मुबारक सन् एक सौ पैंतालीस (145) हिजरी तक़रीबन सात सौ तिरसठ (763) ईस्वी को दोशम्बे के दिन मक़ाम "अहजाज़ अल ज़ैत" (जो मदीना तय्यबा के कुछ फ़ासले पर है) हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु और ईसा बिन मूसा के फ़ौज के दरमियान जंग छिड़ गई बड़े ज़ोर का रन हुआ, जहां ईसा बिन मूसा का लश्करे जर्रार था वहीं हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया के साथ सिर्फ़ तीन सौ तेरह (313) फ़िदायीन थे, मगर उन सब पर भारी थे काफ़ी क़त्लो ग़ारत हुई यहाँ तक अस्र का वक़्त हो गया हज़रत मोहम्मद ज़किया अस्र की नमाज़ अदा करने के लिये सलअ मे वादी के पानी बहने की जगह चले गयें और कुछ देर के लिये जंग मुलतवी हो गयी! नमाज़ अदा करने के बाद हज़रत ने अपनी तलवार का म्यान तोड़ दिया और घोड़े की कूँचें काट दी और आपके तमाम असहाबों ने भी यही किया और फिर जंग छिड़ गयी जिसमे आपके काफ़ी असहाब को फरीक़ैन ने क़त्ल कर दिया और आप भी पा प्यादह हो गयें! मशहूर है कि हज़रत मोहम्मद नफ़्से ज़किया ने ईसा बिन मूसा के सत्तर बहादुरों को अपने हाथों से क़त्ल किया, अहले इराक़ ने आप पर हमला बोल दिया और हज़रत इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के जाँनिसारों की एक टुकड़ी ने शहादत का जाम नोश फ़रमाया, जंग बहुत तेज़ हो गयी और आपके जाँनिसारों की तादाद बहुत कम हो गयी लेकिन आप रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने शेर के तरह ईसा बिन मूसा के फ़ौज का सामना किया काफ़ी देर तक इसी हालत मे लड़ाई चलती रही लेकिन आपके फ़िदायीनों कि कमी हो जाने और आपके तन्हा हो जाने के सबब अहले इराक़ आप पर ग़ालिब आ गयें और अपना स्याह झण्डा सलअ पर बलन्द कर दिया और फिर मदीना मुनव्वरा मे दाख़िल होकर मस्जिदे नबवी पर स्याह झण्डे को नस्ब कर दिया ये देखकर हज़रत मोहम्मद ज़किया के असहाब एक दूसरे से कहने लगे मदीना छिन गया, मदीना छिन गया और हज़रत सैय्यदना इमाम मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की रज़िअल्लाह तआला अन्हु को तन्हा छोड़ कर वहाँ से भाग खड़े हुए आपके साथियों की बेवफ़ाई के वजह से आप तन्हा हो गयें लेकिन आपके हाथों मे ज़ुल्फ़िकार थी और जो कोई आपके तरफ़ बढ़ता आप उसे क़त्ल करते जाते थे हत्ता की आपने काफ़ी इराक़ियों को वासिले जहन्नम किया ये देखकर अहले इराक़ियों ने हुजूम बनाकर आप पर हमला कर दिया इनमे से एक ने आपके दायें कान के लौ के नीचे बड़े बेरहमी से हमला किया जिससे आप ज़मीन पर गिर पड़े और अपने आपको बचाने लगें और कहने लगें तुम हलाक हो जाओ तुम्हारे नबी का बेटा मजरुह और मज़लूम है! हमीद बिन कैहतबा कहने लगा ऐ लोगों इनको क़त्ल न करो तो इससे लोग रुक गयें और उसके बाद ख़ुद आगे बढ़कर उसने हज़रत इमाम ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के सरे अनवर को जिस्म मुबारक से जुदा कर दिया और उसको ईसा बिन मूसा के पास भेज दिया! ईसा बिन मूसा ने आपके सर को मंसूर के सामने ले जाकर रख दिया! मंसूर ने आपके सरे अनवर को सफ़ेद तश्त पर रख दिया और ये हुक्म दिया कि उसे बाज़ारों और सूबों मे घुमाया जाये तो उसके ग़ुलामों ने उसके हुक्म की तामील की! मंसूर ने इमाम नफ़्से ज़किया के साथ ख़ुरूज करने वाले अशराफ़े क़ुरैश को अपने दरबार मे बुलाना शुरु किया और उनमे से बाज़ लोगों को मौत की सज़ा दी बाज़ को तड़पा कर मौत के घाट उतारा और बाज़ को उसने माफ़ कर दिया!

ज़ुल्फ़िक़ारे अली रज़िअल्लाहु अन्हु- हज़रत अली रज़िअल्लाह तआला अन्हु की तलवार ज़ुल्फ़िकार जो आपसे हज़रत इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के पास पहुँची थी वो हज़रत की शहादत के बाद अब्बासी ख़लीफ़ा मंसूर के पास भेज दी गयी और जो अबु जाफ़र मंसूर से पुश्त दर पुश्त अब्बासी ख़लीफ़ाओं के पास मुन्तक़िल होती रही!

हदीसे पाक- हज़रत सैय्यदना अबु ज़र ग़फ़्फ़ारी रज़िअल्लाहु अन्हु से हदीसे पाक मरवी है कि आप रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि "ऐ लोगों तुम्हे कैसा महसूस होगा जब मेरा एक फ़रज़न्द मक़ाम "अहजाज़-अल-ज़ैत" मे बड़ी बेदर्दी से क़त्ल कर दिया जाएगा! और ये हदीस मुबारक हज़रत इमाम सैय्यदना ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के शक्ल मे पूरी हुई और आपको आपके अहले ख़ानदान के तरह (जिनमे हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और हज़रत सैय्यदना ज़ैद शहीद रज़िअल्लाहु अन्हु को भी बड़ी बेदर्दी से सदाए-हक़ बुलन्द करने की वजह से क़त्ल कर दिया गया था) क़त्ल कर दिया गया!

हज़रत इमाम बुख़ारी फ़रमाते हैं कि हज़रत नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु अपने हदीस पर मुवाफ़कत नही करते थें और आपही ने बयान किया है कि आपकी वालिदा आपको चार साल तक अपने हमल मे लिये रहीं और आपही ने ये भी बयान किया है कि आप तवील फ़रबह गन्दुमगो आली सतूत बलन्द हिम्मत और शुजाअत वाले थें और आपको 15 रमज़ानुल मुबारक सन् 145 मे 45 साल की उम्र मे क़त्ल कर दिया गया!

हज़रत सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत सी किताबें तसव्वुफ़ पर लिखी जिनमे मुस्तक़बिल के ऐसे ऐसे राज़ अयाँ थे कि अगर वो किसी अहले दीन के हाथों मे होती तो वो दीन पर साबित क़दम होता और वो किताब ख़िदमते ख़ल्क मे काफ़ी मददगार साबित होती, लेकिन वहीं किसी ऐसे इन्सान (बददीन) के हाथों मे आजाती तो वो उसका ग़लत फ़ाएदा उठाता और दीन को तल्क़ मल्क़ कर देता और इसीलिये हज़रत इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने जंग पर जाने से पहले अपने अहले ख़ाना से ताक़ीद किया कि अगर वो जंग मे शहीद हो जाते हैं तो वो उनकी तमाम किताबों को जला दें क्योंकि अगर वो अब्बासियों के हाथ लग गई तो शायद वो उसका ग़लत इस्तेमाल करेंगे!

मज़ार मुबारक- हज़रत सैय्यदना इमाम मोहम्मद नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के सरे अनवर को मंसूर के पास भेज दिया गया था जिसकी बेहुर्मती करने के लिये उसने उसे गली कूँचों मे फिरवाया और फिर उसे इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह अन्हु की हमशीरा सैय्यदा ज़ैनब को सौंप दिया जिसे उन्होंने जन्नतुल बक़िया मे दफ़्न करवा दिया और जिस्म मुबारक को मक़ाम "अहजाज़-अल-ज़ैत" मे दफ़्न किया गया था और आपकी मज़ार भी वहीं मौजूद थी जिसको 1925 मे नज्दियों ने मुनहदिम करा दिया था और उसके जगह (सैप्ट्को बस स्टैण्ड) बनवा दिया था!

हज़रत सैय्यदना इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु को भी आपके भाई सैय्यदना नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के तरह 25 ज़ीक़अद 145 हिजरी तक़रीबन 763 ईस्वी को बसरह मे शहीद कर दिया गया! (तारीख़ इब्ने ख़लदून, तरीख़ इब्ने कसीर, तारीख़ तिबरी)

औलाद मुबारक- हज़रत सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु को आपकी ज़ौजा सैय्यदा सलमह के बत्ने अक़दस से दो फ़रज़न्द अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अता किये (1) हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह (जद् सादात-ए-क़ुत्बिया) (आपको आपके वालिद हज़रत इमाम नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु ने इस्लाम के तबलीग़ के लिये सरज़मीने सिन्ध के तरफ़ रवाना किया जिसका ज़िक्र अभी आगे होगा) और (2) सैय्यदना हसन उर्फ़ मिस्री शाह रहमतउल्लाह अलैह (आप भी बहुत बड़े वली है, आपने भी गिरआँक़द्र ख़िदमत इस्लाम की सरअंजाम दिया है, आपका मज़ार मराकश मे है और वहाँ का सबसे मारूफ़ मज़ार है और मर्जा-ए-ख़लायक बना हुआ है और मिस्री शाह रहमतउल्लाह अलैह के नाम से मशहूर और मारूफ़ है!

सिन्ध की मुख़्तसर तारीख़- हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की हालाते ज़िन्दगी पर रौशनी डालने से पहले ये जानलेना ज़रूरी है कि आपके यहाँ तशरीफ़ावरी से पहले क्या हालात थे, इसका नाम सिन्ध होने की वजेह तस्मिया, और यहाँ इस्लाम

की कितनी तबलीग़ हुई और उसे फ़ैलाने मे मुसलमान कितना कामियाब हो पायें! "मोहम्मद क़ासिम फ़रिश्ता" इस मौज़ूउ पर इस तरह अपनी किताब "तारीख़ फ़रिश्ता" मे रक़मतराज़ हैं कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने तूफ़ान थम जाने के बाद अपने तीनो फ़रज़न्दों हाम, साम, और साफ़िस को ख़ेती बाड़ी और कारोबार का हुक्म देकर दुनिया के चारो एतराफ़ मे रवाना किया! हाम बिन नूह अलैहिस्सलाम दुनिया के जुनूबी हिस्से के तरफ़ गयें और उसको आबाद और ख़ुशहाल किया! हाम बिन नूह अलैहिस्सलाम के छ: फ़रज़न्द हुए जिनमे एक का नाम सिन्द था और यही सिन्द बिन हाम ने सरज़मीने सिन्ध को सरसब्ज़ो शादाब किया और इन्हीं के नाम के मुनास्बत से इस ख़ित्ते का नाम सिन्द हुआ जो बाद मे सिन्ध कहा जाने लगा! इसी मौज़ूउ पर तारीख़ फ़रिश्ता और मुस्तनद किताबों के हवाले से "जनाब मौलाना डा. सिब्ते शब्बर ज़ैदी साहब" अपनी किताब "सिन्ध तसव्वुफ़ और अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी" मे लिखते हैं कि सिन्ध की तारीख़ उस वक़्त से बयान की जाती है जब "अर्या" क़बाएल यहाँ हमलावर हुई और यहाँ मौजूद क़दीम बशिन्दों यानी "दारुड़" (द्रविड) क़ौम को अपना ग़ुलाम बना लिया और ये वाक़ेआ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से तक़रीबन दो हज़ार (2000) साल पहले का है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से तक़रीबन आठ सौ (800) साल पहले सिन्ध और अरब के दरमियान तिजारती ताल्लुक़ात कायम हुए! तीन सौ पचीस साल क़ब्ल मसीह सिकन्दरे आज़म ने इस ख़ित्ते को फतेह करने की ग़रज़ से यहाँ हमला किया जिससे इस इलाक़े को मज़ीद शोहरत हासिल हुई! "मोहन जोदड़ो" के असरात और ख़ण्डरात से यहाँ के तहज़ीब का बख़ूबी अन्दाज़ा किया जा सकता है यहाँ के लोग मुख़्तलिफ़ मज़हबों और ज़बानों के हामिल रहें हैं! सिन्ध और अरब के तिजारती ताल्लुक़ात ज़्यादा क़दीमी और अहम थे सिन्ध के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के अम्वाल अरब जाया करते थे और अरब के मुख़्तलिफ़ बाज़ारों मे फरोख़्त होते थे और अरब यहाँ अच्छे क़िस्म के घोड़ों को फ़रोख़्त करते थे! सिन्ध नाम की दूसरी वजेह जनाब शब्बर ज़ैदी साहब इस तरह बयान करते हैं कि जब अर्या समाज यहाँ आयें तो यहाँ एक बड़ी दरिया को बहते देखा जिसे इनकी ज़बान मे सिन्धू कहा जाता था बस इसी मुनास्बत से ये लोग इस पूरे इलाक़े को सिन्धू कहने लगे जो बाद मे सिन्धू से सिन्ध हो गया!

सिन्ध मे इस्लाम- हज़रत जनाब उमर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़माने सन् पन्द्रह (15) हिजरी मे उस्मान बिन अबिलआस सक़फ़ी बहरैन और उमान के गवर्नर मुक़र्रर किये गयें इनके हुक्म से हकम बिन अबिलआस ने भरुच पर फ़ौजकशी की और मुग़ैरा बिन अबिलआस के लश्कर ने दैबल के तरफ़ कूच किया अरबों का सिन्ध पर ये पहला हमला शुमार किया जाता है, इस तरह सिन्ध का एक हिस्सा मुसलमानों के ज़ेरे असर आया, फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़माने सन् पचीस (25) हिजरी मे हकीम बिन जब्ला अब्दी ने इधर का रुख़ किया लेकिन मुश्किलात के सबब तसख़ीरे सिन्ध का मंसूबा मुलतवी कर दिया गया और लश्कर सिन्ध पर हमला न कर सका, फिर जनाब मौला अली शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाह तआला अन्हु के दौरे हुकूमत सन् उन्तालीस (39) हिजरी मे सिन्ध पर हारिस बिन मुर्रह अब्दी ने हमला किया और फ़तेह हासिल की, फिर हज़रत अमीर मुआविया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के दौरे हुकूमत सन् चव्वालिस (44) हिजरी मे महलब बिन अबि सफ़रह की दानिस्त मे फौज को सिन्ध के तरफ़ भेजा गया लेकिन उन्हें भी शिकस्त हासिल हुई, फिर उसी दौर मे अब्दुल्लाह बिन सवार ने सिन्ध पर लश्करकशी किया लेकिन उन्हें भी कोई ख़ास कामियाबी हासिल न हुई, फिर उसके बाद बड़ा लश्कर बनि उमय्या के ख़लीफा वलीद बिन अब्दुल मुल्क के दौरे हुकूमत मे चौरानबे (94) हिजरी मे सिन्ध के तरफ़ रवाना हुआ जिसके सिपेहसालार मोहम्मद बिन क़ासिम थे! मोहम्मद बिन क़ासिम से क़ब्ल मुसलमान सिन्ध के सरज़मीं पर अपनी कोई मुकम्मल हुकूमत बनाने मे कामियाब न हो सके अलबत्ता इस्लाम सिन्ध मे पहुँच चुका था लेकिन मुकम्मल तौर पर इस्लाम की इशाअत अभी बाक़ी थी जिसे शायद ख़ुदा को हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी के दस्ते अक़दस से कराना था!

सिन्ध मे मुसलमान गवर्नर- सन् चौरानबे (94) हिजरी मे मोहम्मद बिन क़ासिम ने सिन्ध को फ़तेह किया और पहले गवर्नर के हैसियत से वहाँ की ज़िम्मेदारी सँभाली और उनके बाद हज़रत सैय्यदना अबु अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की शहादत तक दर्ज ज़ेल गवर्नर नामज़द हुए!

(1) यज़ीद बिन अबि कब्शा

(2) आमिर बिन अब्दुल्लाह

(3) हबीब बिन महलब

(4) अम्र बिन मुस्लिम बाहली

(5) जुनैद बिन अब्दुल रहमान अलर्री

(6) तमीम बिन ज़ैद अतबी

(7) हकम बिन अवॉन क़ल्बी

(8) अम्र बिन मोहम्मद बिन क़ासिम

(9) यज़ीद बिन अरारी

(10) मंसूर बिन जम्हूर

(11) मूसा बिन क़अब तमीमी

(12) अय्यना बिन मूसा तमीमी

(13) अम्र बिन हफ़्स बिन उस्मान (इन्हीं के दौरे हुकूमत मे हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी सिन्ध तशरीफ़ लायें)

(14) हिश्शाम बिन अमरु तग़लबी (इन्हीं के वक़्त मे इस्लाम पूरी तरह सिन्ध की सरज़मीं पर पहुँचा जिसका वाहिद सबब हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की बाबरकत शख़्सियत थी जिसका ज़िक्र आपके ज़मन मे अभी आगे आएगा)

रौज़ा मुबारक हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ (अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी र.अ)

हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ (अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी) बिन सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रहमतउल्लाह अलैह-

पैदाइश और नाम- सन् (120) हिजरी मे हज़रत सैय्यदना अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह ने हज़रत सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु के यहाँ मदीना मुनव्वरा मे आँखे खोली! आपका नाम अब्दुल्लाह कुन्नियत अबु मोहम्मद और लक़ब अल अशतर पड़ा! तारीखों से पता चलता है कि आपकी तालीम व तरबियत आपके वालिद साहब हज़रत नफ़्से ज़किया और दादा हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु के ज़ेरेसाया मदीना मुनव्वरा मे ही हुई और कुछ मुअर्रिख़ ये भी बयान करते हैं कि आपकी परवरिश हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रज़िअल्लाह अन्हु के आग़ोशे रहमत मे हुई है! आप इल्मे हदीस पर उबूर रखते थे और मोहद्दिस थे!

नसब मुबारक- हज़रत अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी बिन हज़रत इमाम मोहम्मद नफ़्से ज़किया बिन हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ बिन हज़रत हसन मुसन्ना बिन हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम बिन हज़रत जनाब सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बिन्त हुज़ूर पुर नूर जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम! जबकि आपकी वालिदा की तरफ़ से आपका शज्रह नसब इस तरह है- हज़रत अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी बिन सैय्यदा सलमह बीबी बिन्त हज़रत मोहम्मद रज़िअल्लाह अन्हु बिन हज़रत हसन मुसन्ना अलैहिस्सलाम बिन हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम बिन हज़रत जनाब सैय्यदा फ़ातिमा रज़िअल्लाह तआला अन्हा बिन्त हुज़ूर पुर नूर जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम!

आपकी सिंध आमद- आपके वालिद मोहतरम जनाब सैय्यदना मोहम्मद ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की रज़िअल्लाह तआला अंन्हु ने (138) हिजरी मे जब अलवी ख़िलाफ़त की तहरीक शुरु की तो आपको इसकी तरग़ीब और इस्लाम की तब्लीग़ के लिये सिन्ध के तरफ़ रवाना किया! हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह पहले मदीना से बसरह तशरीफ़ ले गए और कुछ दिन अपने चचा सैय्यदना इब्राहीम के पास बसरह मे ठहरे, फिर वहाँ से होते हुए समंदर का दुशवार तरीन सफ़र तय करते हुए सिंध तशरीफ़ लाए! सरज़मीने सिंध भी इस्लाम के नाम पर क़ाबिज़ अब्बासी हुक्मरानों के ज़ेरे तसल्लुत थी! सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी के आमद के वक़्त ख़लीफ़ा

मंसूर अब्बासी के तरफ़ से अम्र बिन हफ़्स सिंध के गवर्नर थे, लिहाज़ा आपके लिये यहाँ भी तबलीग़ के ज़रिये दीन-ए-हक़ पहुचाना कोई आसान बात न थी और वो अब्बासी दौर-ए-हुकूमत मे इन्तेहाई मतलूब थे! लिहाज़ा हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह पैग़ामे करबला को मोअस्सर तरीक़े से पहुँचाने के लिये बतौर घोड़े के ताजिर सिंध मे दाख़िल हुए (वो घोड़े आपने अपने कमोबेश बीस मुरीदों से ख़रीदे थे) और गवर्नर सिंध अम्र बिन हफ़्स से मुलाक़ात किया! अम्र बिन हफ्स जो मोहब्बत अहले बैत दिल मे रखते थे, ख़ानदाने अहले बैत की ख़िदमत को बाइसे अज्र समझते थे, उन्होंने आपको तिजारत के सिलसिले मे तमाम सहूलत मुहैया कराई! हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह ने तिजारत के शक्ल मे अपना अस्ल काम शुरू कर दिया और पैग़ामे हुसैनी को पहुँचाने मे दिन रात कोशा रहे जिससे सिंध मे बहुत से मोहिब्बाने अहले बैत सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पैरोकारो मे इज़ाफ़ा होता चला गया!

गवर्नरेसिंध की ताज़ीम और आपसे बैअत- गवर्नर सिंध अम्र बिन हफ़्स को जब इस बात की ख़बर हुई तो वो इस काविश मे आपके साथ हो गए और आपके हाथो पर बैअत कर लिया, जिससे दिन ब दिन मोहिब्बाने अहले बैत मे इज़ाफ़ा होता चला गया! गवर्नर सिंध आपका हद दर्जे एहतिराम बजा लाता और आपसे मोहब्बत का मुज़ाहिरा पेश करता रहता था! इसी दौरान आप रहमतउल्लाह अलैह को ये ख़बर मिली कि आपके वालिदे मोहतरम जनाब इमाम नफ्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु को 145 हिजरी मे मदीना मे और आपके चचा हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाह तआला अन्हु को बसरह मे सदा-ए-हक़ बुलन्द करने के जुर्म मे शहीद कर दिया गया! (जिसका तफ़्सीली ज़िक्र पहले हो चुका है)

अबु जाफ़र मंसूर का आपके गिरफ़्तारी का हुक्म और आपका साहिली हुकूमत पर हिजरत करना - हज़रत अब्दुल्लाह शाह गाज़ी रहमतउल्लाह अलैह के वालिद साहब और चचा के शहादत के बाद अब्बासी ख़लाफ़त के मरकज़ (ख़लीफ़ा मंसूर) से आपकी गिरफ्तारी का अहकाम सादिर हुआ मगर आपके हिस्से मे भी मैदाने जंग मे शहादत लिखी जा चुकी थी लिहाज़ा आपकी गिरफ़्तरी तो अमल मे नही आ सकी! हज़रत अम्र बिन हफ़्स (गवर्नर सिंध) आपकी गिरफ़्तारी के मामले को मुसलसल टालते रहे, इनका ख़्याल था कि इस तरह कुछ वक़्त गुज़र जाएगा और ख़लीफा मंसूर आपकी गिरफ्तारी को भूल जाएगा मगर मंसूर के दिल मे एक लम्हा के लिये हज़रत अब्दुल्लाह शाह गाज़ी रहमतउल्लाह अलैह कि गिरफ़्तारी का ख़्याल मानिंद नही पड़ा और वो मुसलसल गवर्नर सिंध के पास आपके गिरफ़्तरी का अहकाम भेजता रहा!

हज़रत अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह की हिफ़ाज़त के लिये अम्र बिन हफ़्स ने अपने दानिस्त मे आपको साहिली हुकूमत मे पहुँचा दिया, वहाँ का राजा जो हिंदु था मगर नबी पाक सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से बहुत ज़्यादा अक़ीदत रखता था इसी सबब उसने हज़रत अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह को शहज़ादो के तरह रखा और वो आपकी बहुत इज़्ज़त और ऐहतिराम बजा लाता था!

हज़रत अम्र बिन हफ़्स अपने दानिस्त मे हज़रत अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह को एक महफ़ूज़ मुक़ाम पर पहुँचा चुके थे मगर मंसूर को किसी न किसी ज़रिये से इस बात की ख़बर लग गयी और उसने अम्र बिन हफ़्स से मुतालबा कर दिया कि अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह का सर या ख़ुद अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह को बग़दाद भेज दो!

हज़रत अम्र बिन हफ़्स का गवर्नरी से माज़ूली- हज़रत अम्र बिन हफ़्स का मुसलसल अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह के गिरफ़्तारी को टालने के वजह से मंसूर ने बिल आख़िर अम्र बिन हफ़्स को सिंध की गवर्नरी से माज़ूल करके अफ़रीक़ा भेज दिया और आपके जगह 146 हिजरी मे हिश्शाम को सिंध का गवर्नर बना दिया! ख़लीफ़ा मंसूर ने हिश्शाम को भी वही ताक़ीद की कि अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह को ज़िन्दा या मुर्दा फ़ौरन पेश किया जाए अगर सिंध का कोई राजा इन्कार करे तो उसपर हमला करके

उसके इलाक़े पर कब्ज़ा कर लिया जाए! दूसरी तरफ़ सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह राजा की पनाह मे मुकम्मल आज़ादी के साथ अपना काम करते रहे ज़ैदिया फ़िर्क़े के लोग भी सैय्यद के ताबे थे उन्होंने भी यहीं पनाह ली! 'ड़ा. मिर्ज़ा इमाम अली बेग' अपनी किताब 'सिंध जी अज़ादारी' मे लिखते है कि हिश्शाम जब सिंध मे दाख़िल हुआ तो उसने हिंदु राजा को तलब करके अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह के हवाल्गी का मुतालबा किया मगर राजा ने इन्कार कर दिया! हिश्शाम इस सोच मे था कि मंसूर के हुक्म पर किस तरह अमल किया जाए चूंकि हिश्शाम ख़ुद भी ख़ानदाने अहले बैत के मुहिब थे वो इस बात को गवारा नही कर सकते थे कि सैय्यदुन्निसा आलमीन सलामउल्लाह अलैहा की ज़िंदा जावेद निशानी को मौत के हवाले किया जाए काफ़ी सोच और फ़िक्र के बाद सिंध के तमाम शहरों और फ़ौजी हलकों मे मशहूर कर दिया गया कि अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह के बारे मे राजा से मुज़ाकरात जारी है और ख़लीफ़ा मंसूर को भी यही पैग़ाम भेज दिया गया!

सिंध मे इस्लाम की तबलीग़- जैसा की पहले सिन्ध की तारीख़ मे ज़िक्र हो चुका है कि सहाबाकिराम के बाद कोई इस्लाम की तालीम देने या तबलीग़ करने सिंध नही आया था (उमवी और अब्बासी हुक्मरानों के तरफ़ से जो गवर्नर यहाँ नामज़द हुए भी तो उनका काम इस ख़ित्ते पर अपनी मुकम्मल हुकूमत क़ायम करना था) सिवाए हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह अशतर रहमतउल्लाह अलैह के कि जिन्होंने सिंधियो के बंजर दिल के ज़मीन मे सबसे पहले इस्लामी बीज बोया फिर इसकी आबयारी की और मोहब्बत और बुर्दबारी से दिलों को गरमाया और ईमान की ज़रख़ेज़ी से रोशनास कराया इसलिये जो काम इनके ज़िम्मे था वो सिर्फ़ ज़ाहिर से नही होसकता था तारीख़ को रुख़ अता करने वाले ज़ाहिर के साथ बातिन के दुनिया के शहसवार भी होते है जिनकी ज़ाहिर पर कम और बातिन पर ज़्यादा ज़ोरावर तवज्जो होती है!

असबाब ग़ैब- दरअस्ल इन हस्तियों के लिये इस दारुल अमल मे जिस जगह का इन्तख़ाब होता है वहाँ इनके लिये असबाब भी मुहैया होते है (गवर्नर सिंध हज़रत अम्र बिन हफ़्स का मतीअ होना और आप रहमतउल्लाह अलैह की गिरफ़्तारी के ख़लीफ़ा मंसूर के अहकमात टालना, आपको बहिफ़ाज़त दूसरी रियासत मे भेजना ये सब ग़ैबी अआनत थी और आपके अमल की ताएद थी) अगर्चे अब्बासी ख़लीफ़ा मंसूर आप समेत तमाम सादात के क़त्ल के साज़िश मे था इसे आपकी इत्तिला मिलने पर आपको बारहा गिरफ़्तार करने के अहकमात दिये लेकिन क़ुदरत को जो काम आपसे लेने थे इसके लिये पूरा पूरा ऐहतिमाम किया हुआ था! एक ऐसा गवर्नर सिंध मे मौजूद था जो आपकी ताज़ीम और ख़्याल करता था और किसी क़ीमत पर आपको तकलीफ़ न पहुँचाता था बल्कि इन नेक बख़्त गवर्नर यानी अम्र बिन हफ़्स ने आपके हाथ पर बैअत भी करली थी और दरपर्दाह आपकी हिमायत करता था!

सैरो-शिकार- तारीख़ से साबित है कि उस ज़माने मे जब सैय्यदना शाह अब्दुल्लाह अल अशतर सैरो-शिकार के ग़रज़ से कही जाते थे तो शान व शौक़त और कारोफ़र से जाते और साज़ो सामान भी साथ होता था जिससे आपकी शान व शौक़त का इज़हार होता था और ये ग़ालिबन इस लिये भी था कि आपके दरवेशी पर अमारत का पर्दा पड़ा रहे और जो अमानत आपके सुपुर्द थी आपके सीने मे महफ़ूज़ रहे!

शहादत- हिश्शाम का भाई सफ़ीह बिन अमरू जो कि मंसूर का ख़ास ताबेदार था उसने सैय्यदना शाह अब्दुल्लाह अल अशतर पर जो कि अपने कुछ साथियों के साथ थे हमला कर दिया! आप रहमतउल्लाह अलैह ने भागने के बजाए मर्दानावार मुक़ाबला किया! "तारीख़ शियाने अली" मे "सैय्यद अली हुसैन रिज़्वी" लिखते है कि सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह ने लाशों के अम्बार लगा दिये और इनके साथी हक़ सरफरोशी अदा करते रहे मगर आख़िरकार इनके तमाम साथी एक एक करके लहू लुहान होकर गिर गए और वो भी ज़ख़्मी होकर लाशों के दर्मियान गिर गए और शहीद हो गए, ज़ख़्मी हमराहियों ने आपके जिस्म अनवर को करवट बदल बदल कर अपने कटे-फटे जिस्म के नीचे छुपा दिया ताकि आपका सर मुबारक ख़लीफ़ा मंसूर के पास जाने से बच जाए और वही हुआ सफ़ीह बिन अमरू आपको पहचान भी न सका और ऐसे ही वापस लौट गया!

मज़ार पुर अनवार- आपका मज़ार पुर अनवार क्लिफ़्टन (clifton) कराँची पाकिस्तान मे समुन्द्र के किनारे है और आज तक आपके मज़ार पर अक़ीदतमंदो का रश लगा रहता है और ज़ायरीन पूरे दुनिया से हाज़िरी देते हैं जहां पर समुन्द्र के किनारे होने के बावजूद आपके करामात के बाइस मीठे पानी का चश्मा जारी और सारी है और जो तक़रीबन बारह सौ अस्सी (1280) साल से मुसलसल जारी और सारी है और आज तक न सूखा और न कम पड़ा!

मज़ार पुर अनवार हज़रत अब्दुल्लाह शाह अल अशतर (अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी र.अ)

बिलावल भुट्टो ज़रदारी और आसिफ़ ज़रदारी हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पर चादर चढ़ाते हुए!

"इनसे भी फ़ैज़याब हुएं लोग बेशतर

कहते है इन्हें सब अहले ज़माँ अब्दुल्लाह अल अशतर"

हुक्मरानी- हुकूमत दो क़िस्म की होती है एक ख़ित्ते पर और दूसरी हुकूमत जो हक़ीक़ी हुकूमत है वो क़ुलूब पर होती है! हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह की हुकूमत दोनो पर क़ायम है सारे दफ़्तरान इन्हीं के यहाँ है जहाँ तमाम ज़ाएरीन कि अरज़ियां मौसूल की जाती है और फिर इनपर अहकमात सादिर होते हैं इसका सबूत इनके यहाँ होने वाले उस जम-ग़फ़ीर से है जो हर आने वाले दिन के साथ बढ़ रहा है जुमेरात को तो आप रहमतउल्लाह अलैह के मज़ार की सीढ़ियां भी चढ़ना दुशवार होती है आम अय्याम मे भी ज़ायरीन का ताँता लगा रहता है! अहले पाकिस्तान इस बात को तस्लीम करते हैं कि सरज़मीने सिंध और सरज़मीने कराँची आप रहमतउल्लाह अलैह के रूहानी फ़ैज़ के बदौलत कई समुन्द्री तूफ़ानों से महफ़ूज़ रहे हैं!

उर्स मुबारक- हज़रत अब्दुल्लाह शाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह का विसाल मुबारक 20 ज़िलहिज्ज सन् 153 हिजरी मे हुआ था इसीलिये आपका उर्स मुबारक ज़िलहिज्ज की 20,21,22 तारीख़ को हर साल बहुत शानो शौक़त के साथ मनाया जाता है! (तारीख़ सिंध, तारीख़

इब्ने ख़लदून,मजालिस मोमिनीन,आर्टिकल शहीद फ़ाउण्डेशन आफ़ पाकिस्तान)

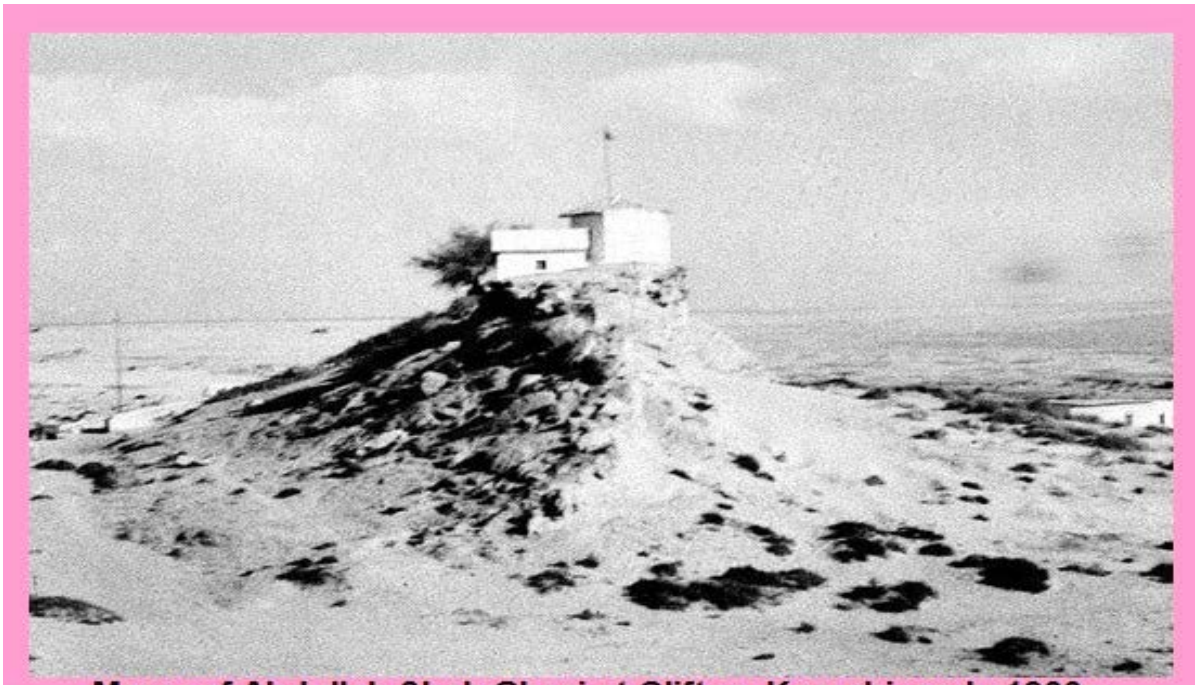

हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह का पुराना रौज़ा मुबारक

औलाद मुबारक- तारीख़ी मुताला से पता चलता है कि आपने दो शादियां फ़रमाई थी! पहली शादी तो आपकी मदीना मुनव्वरा मे सैय्यदा क़ुरैशा बीबी से हुई जिनसे आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुएं (जो तमाम सादात-ए-क़ुत्बिया के जद् आला हैं) दूसरी शादी आपकी सिंध के राजा की बेटी से हुई थी जो आपके ख़िदमत मे रहती थीं जिनके बत्न से आपके एक फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना हसन अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह पैदा हुएं (लेकिन आपसे नस्ल आगे नही चली)

हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की नस्ल सिर्फ़ आपके फ़र्ज़न्दे अकबर हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह से दुनिया मे क़ायम है!

हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह - आपकी विलादत मुबारक मदीना मुनव्वरा मे ही हुई और आपका नाम मोहम्मद, लक़ब असग़र सानी पड़ा, आपके ही वजह से आपके वालिद हज़रत अबु मोहम्मद अब्दुल्लाह अल अशतर की कुन्नियत अबु मोहम्मद पड़ी, शुरु मे आपकी तालीम व तरबियत आपके वालिद मोहतरम हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह के ज़ेरे साया हुई और आपके विसाल के बाद राजा सिंध ने आपकी परवरिश फ़रमाई!

आपके वालिदे मोहतरम हज़रत सैय्यदना अबदुल्लाह अल अशतर रहमतउल्लाह अलैह ने जब मदीना मुनव्वरा से सिंध कूच किया तो उनके साथ आप भी मौजूद थे! हज़रत अब्दुल्लाह शाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की शहादत के बाद अब्बासी गवर्नर सफ़ीह बिन अमरू ने आपको भी क़त्ल करना चाहा लेकिन राजा सिंध ने आपको छुपा दिया और सफ़ीह बिन

अमरू इस मंसूबे मे कामियाब न हो पाया, बाद मे मंसूर के हुक्म से सफ़ीह बिन अमरु ने राजा से जंग करने के लिये उस पर चढ़ाई कर दी जिसमे राजा ने शिकस्त खाया और उसके मुल्क पर सफ़ीह बिन अमरु काबिज़ हुआ और राजा और उसके हरमों को जिनमे उसकी बेटी जो हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी के ज़ौजियत मे थीं और हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी के बेटों को जिनमे हज़रत मोहम्मद असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह भी थे मंसूर के पास बग़दाद रवाना कर दिया! मंसूर ने हज़रत अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह के कुनबे को उनके ख़ानदान वालों के पास मदीना मुनव्वरा रवाना कर दिया जहाँ कुछ दिन क़याम के बाद ख़ानवादा-ए-इमाम सैय्यदना ज़िउन्नफ़्स अज़ ज़की रज़िअल्लाह तआला अन्हु कूफ़ा मुन्तक़िल होगया! हज़रत सैय्यदना मोहम्मद असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह ताहयात इबादत इलाही मे मसरूफ़ रहें और पैग़ामे हुसैनी जारी और सारी रखा! आपका विसाल कूफ़ा मे हुआ और आपको मदीना मुनव्वरा मे जन्नतुल बक़िया मे सुपुर्द ख़ाक किया गया!

हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह की शादी आपके ताया के बेटी से हुई जिनके बत्न से आप के पाँच फ़रज़न्द हुए-(1) हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद (2) हज़रत सैय्यदना मोहम्मद (3) हज़रत सैय्यदना अली (4) हज़रत सैय्यदना इब्राहीम और (5) हज़रत सैय्यदना ताहिर! लेकिन तमाम मोअर्रख़ीन का मानना है कि हज़रत मोहम्मद अल असग़र सानी रहमतउल्लाह अलैह की नस्ल पाक सिर्फ़ हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद से चली!

हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह - सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह कूफ़ा मे ही पैदा हुए! आप कूफ़ा के नक़ीब भी थे! आपका शुमार उस वक़्त अहले बैत व बनि हाशिम के अकाबिर मे था! जूदो सख़ा और मेहमान नवाज़ी के वजह से आपका लक़ब जव्वाद यानी (सख़ी) पड़ गया! नक़ाबते अशराफ़ और सादात की सरबराही का मन्सब आपही को हासिल था और आपके बाद यके बाद दीगरे आपकी औलादों मे मुन्तक़िल होता रहा! हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह के पाँच बेटे हुएं और बुख़ारा, ग़ज़नी, और क़ाबुल मे जो भी हसनी सादात मुन्तक़िल हुएं वो सब आपही के नस्ले पाक से हैं!

हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह के बाद नक़ाबते अशराफ़ और सादात की सरबराही का मन्सब आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना अबु मोहम्मद रहमतउल्लाह अलैह को मिला और उनके बाद उनके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना क़ासिम इस मरतबे पर फ़ाएज़ हुए और उनके बाद उनके फ़रज़न्द सैय्यदना अबु जाफ़र को और उनके बाद उनके फ़रज़न्द सैय्यदना हुसैन अल मकनी बाबुल हसन को और उनके बाद उनके फ़रज़न्द सैय्यदना हसन को और उनके बाद उनके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना ईसा रहमतउल्लाह अलैह को इस मन्सब से सरफ़राज़ किया गया और आपके बाद आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना यूसुफ़ रहमतउल्लाह अलैह को इस मन्सब की बागडोर दिया गया!

हज़रत सैय्यदना यूसुफ़ रहमतउल्लाह अलैह बहुत जलीलुल क़द्र औलिया थे! आप रहमतउल्लाह अलैह की पैदाइश मदीना मुनव्वारा मे हुई और विसाल भी वहीं हुआ! आपके एक फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह हुएं!

हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह- हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह सन् 528 हिजरी मे मदीना तय्यबा मे हज़रत सैय्यदना यूसुफ़ रहमतउल्लाह अलैह के यहाँ पैदा हुए! हज़रत सैय्यदना हसन अल जव्वाद रहमतउल्लाह अलैह की सिलसिला-ए-औलाद मे हज़रत रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह वो पहले शख़्स हैं जो मदीना मुनव्वरा से बग़दाद तशरीफ़ लाएं! इनके जलालते शान और मर्तबा रूहानी का अन्दाज़ा इस बात से किया जा सकता है कि सैकड़ो तुल्बा व उलेमा हर वक़्त इनके काफ़ले के साथ रहते थें! हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह जब बग़दाद तशरीफ़ लाएं तो उस वक़्त वहाँ हज़रत सैय्यदना मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह मस्नदे हिदायत पर जलवा

फ़िकन थें, हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह ने हज़रत अमीर रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का पूरे जोशो ख़रोश के साथ ख़ैरमख़दम किया और आपको अपनी ख़ानकाह मे ठहराया! हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह और हज़रत सैय्यदना मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह अमज़ात थें और इसी ताल्लुक़े नस्बी और हमराही होने के सबब हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को हज़रत सैय्यदना अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह की हमशीरा सैय्यदा बीबी मात रहमतउल्लाह अलैहा मन्सूब थीं! हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने कुछ साल बग़दाद मे क़याम किया और उसके बाद मै अपने ज़ौजा (आप उस वक़्त हामला थीं) और मुरीदों मोतक़िद के साथ हज बैतउल्लह शरीफ़ के लिये मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गएँ और उसके बाद अपने वतन मदीना मुनव्वरा लौट गएँ और वहाँ पहुंचते ही अपने जद् अमजद पैग़म्बरे ख़ुदा शहेंशाहे कुल जहाँ इमामुल अम्बिया व औलिया वजहे तख़लीके कायनात व लौहो क़लम जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रौज़ा-ए-अतहर की ज़ियारत मे मशग़ूल हुएं बस उसी के दो चार दिन के बाद क़ुतुबउल अक़ताब ग़ौसुल आलमीन हज़रत सैय्यदना क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह ने मदीना तय्यबा मे आँखे खोली! हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने अस्सी साल हयाते ज़ाहिरी पाया और सन् 608 हिजरी मे इस दुनियाए फ़ानी से पर्दा फ़रमा गएँ और आपकी रफ़ाक़त मे सात सौ अठ्ठाईस (728) आदमी थें जो सब की सब आलिम व ज़ाहिद थें! कुछ सीरत व तारीख़ से पता चलता है कि आप ने तातारियों के हंगामे मे जाम-ए-शहादत नोश फ़रमाया और आपके साथ बहुत से उलेमा ने भी शहादत नोश फ़रमाया जो आपके हमराह रहते थें! बाज़ दूसरे तज़किरह निगारों ने लिखा है कि वो आख़िर तक बग़दाद मे मुक़ीम रहें और वहीं वफ़ात पाई और हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह के ख़ज़ीरे मे मदफ़न हुए

हज़रत अमीर कबीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह - हुज़ूर पुर नूर फ़ख़्रे बनि आदम जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सत्रहवीं (seventeen) पुश्त में और हज़रत सैय्यदना अबु अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह की ग्यारहवीं (eleventh) पुश्त में हुज़ूर क़ुतुबउल अक़्ताब ग़ौसुल आलमीन हज़रत अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने सन् पाँच सौ इक्यावन (551) हिजरी मे मदीना मुनव्वरा में हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के घर में आँखे खोला! आपका नाम क़ुतुबउद्दीन और लक़ब मोहम्मद रखा गया! आपकी विलादत आपके मामू सैय्यदना मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह के विसाल के पचीस साल बाद हुई (क्योंकि इसमे ख़ुदा की मशियत थी और वो ये कि अल्लाह पाक एक वक़्त मे एक ही ग़ौस रूहे ज़मीं पर पैदा फ़रमाता है)! हुज़ूर ग़ौस पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह की ज़िन्दगी पर लिखी जाने वाली सबसे मुस्तनद किताब "बहाजतुल असरार" मे शैख़ अबु सअद रहमतउल्लाह अलैह का मक़ामे ग़ौसियत और क़ुत्बियत के लिये क़ौले पाक नक़्ल है कि ग़ौस और क़ुतुब के तरफ़ उनके वक़्त के अम्र की रियासत पहुँचती है और उनके पास उस शान के जलालत के कुचादे उतारे जाते हैं, और उन्हीं के तरफ़ उनके ज़माने मे उस मौजूदात के रहने वाले और उसका अम्र सुपुर्द किया जाता है! गोया की तमाम रूहे ज़मीं की बादशाहत क़ुतुब-ए-वक़्त को सुपुर्द की जाती है!

वलायत मे आपका दर्जा- हज़रत सैय्यदना क़ुतुबउल अक़्ताब ग़ौसुल आलमीन हज़रत अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह मक़ामे ग़ौसियत और क़ुत्बियत पर फ़ाएज़ थें जो वलायत मे सबसे ऊँचा दर्जा होता है!

इल्म व मार्फ़त- अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने इल्म व मार्फ़त फ़ज़ीलत रखने वाले उलेमा और मुस्तनद व मारूफ़ असातज़ह से हासिल किया इनमे से इनके वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत अल्लामा सैय्यदना रशीदउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह और शैख़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ बिन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह और शैख़ अल आरिफ़ अबि जनाब नजमुद्दीन कुबरा रहमतउल्लाह अलैह से इल्म हासिल किया!

रुहानी तरबियत और हुसूले ख़िलाफ़त- अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मादनी रहमतउल्लाह अलैह पहले हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन सहरवर्दी के पास हाज़िरे ख़िदमत हुएं लेकिन आपको वहां पूरी तस्कीन हासिल न हो सकी चुनाँचे फिर शैख़ नजमुद्दीन कुबरा रहमतउल्लाह अलैह से बैअत व इरादत का ताल्लुक़ क़ायम किया जिनसे पूरी तस्कीन हासिल हुई और ख़िलाफ़त व ख़िरका-ए-फ़िरदौसिया सहरवर्दिया हासिल किया!

सिलसिला बैअत व ख़लाफ़त- (1) क़ुतुबउल अक़ताब ग़ौसुल आलमीन अल अमीर अल कबीर बदरुल मलतउल मुनीर शैख़ुल इस्लाम क़दवतुल अईम्मातुलकिराम सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी अल हसनी अल हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (2) हज़रत शैख़ नजमुद्दीन कुबरा रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (3) हज़रत अम्मार यासिर रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (4) हज़रत अबु नजीब सहरवर्दी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (5) हज़रत शैख़ अहमद ग़ज़ाली रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (6) हज़रत अबु बक्र नसाज रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (7) हज़रत अबुल क़ासिम गिरगानी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (8) हज़रत अबु अली कातिब रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (9) हज़रत अली रोदबारी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (10) हज़रत अबुल क़ासिम कशेरी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (11) हज़रत अबु अली दक़्क़ाक़ रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (12) हज़रत अबुल क़ासिम नसीराबादी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (13) हज़रत अबु बक्र शिबली रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (14) हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (15) हज़रत सरी सक़्ती रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (16) हज़रत मारूफ़ करख़ी रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (17) हज़रत इमाम अली रज़ा रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (18) हज़रत इमाम मूसा काज़िम रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (19) हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (20) हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर रहमतउल्लाह अलैह के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (21) हज़रत इमाम सैय्यदना ज़ैनुल आबिदीन रज़िअल्लाह तआला अन्हु के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (22) हज़रत इमाम सैय्यदना हुसैन अलैहिस्सलाम के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं(23) हज़रत इमाम सैय्यदना मौला अली करमअल्लाह वजहुल करीम के और वो मुरीद और ख़लीफ़ा हैं (24) इमामुल अम्बिया व औलिया नबी आख़िरुज़्ज़मां बादशाहे कुल जहां हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के और वो नाएब और ख़लीफ़ा हैं (25) अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के! (बहवाला तारीख़ कड़ा व मानिकपुर)

हुज़ूर ग़ौसुल आलमीन सैय्यदना क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह की हिन्दुस्तान मे पहली आमद- जैसा कि आपके मलफ़ूज़ात से पता चलता है कि आपके अहले ख़ाना के विसाल के बाद आपका दिल वतन से उचाट हो गया लिहाज़ा पहले हज की अदाएगी के लिये मदीना मुनव्वरा से ऐहराम बान्धकर मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाएं और बाद अदाए हज व उमरह हिन्दुस्तान जाने के इरादे से जद्दह पहुँचे और अरमिनियों के जहाज़ पर सवार होकर बँगाल की बन्दरगाह पर उतरे और बराहे ख़ुश्की घूमते फ़िरते मंज़िल ब मंज़िल अफ़ग़ानिस्तान व बग़दाद होते हुए पश्चिम के तरफ़ चलें! रास्ते मे बाज़ बाज़ मक़ामात की आबोहवा पसंद आई लेकिन वहाँ के लोग कहीं ठहरने नही देते थे कि रुक के रास्ते की थकान मिटाएं, यहाँ तक की रफ़्ता-रफ़्ता कड़ा पहुँचे जहाँ का इलाक़ा उन्हें बहुत पसंद आया और ये ख़्वाहिश हुई कि अगर यहाँ के बाशिंदे इनको इनके हाल पर छोड़ दें तो वहां कुछ दिन क़याम करके इबादते इलाही मे मसरूफ़ हों! इतने मे एक हिंदू ने पास आकर पूछा कि वो कौन हैं? और कहाँ से आये हैं? उन्होंने अपनी ज़बान (अरबी) मे ये जवाब दिया कि मुसलमान मुसाफ़िर हूँ! वो हिंदू इनकी बात तो न समझ सका लेकिन लफ़्ज़े मुसलमान पर तमाम रात अपनी क़ौम के साथ आपको सख़्त तकलीफ़ पहुँचाता रहा! उन लोगों के मुसलसल तकालीफ़ पहुँचाने से तंग आकर आप चाहते थें उनसे लड़कर मर जाएं, लेकिन इसमे अपना ही नुक़सान समझकर उन लोगों को अपनी ज़बान मे सख़्त जवाब देते थें! सुबह को आप मग़रिब के जानिब रवाना

हुएं और जिस वक़्त कड़ा के बाज़ारों से गुज़रें तो आपने दरियाए गंगा के किनारे बने हुए क़िला संगीन की मज़बूती देखी जो बुलंदी मे पहाड़ की तरह था और ये ये बात भी आप अच्छी तरह समझ गएँ कि इस शहर की आबादी जुनूब से शुमाल तक तीन कोस से ज़्यादा थी! मशारिक़ के तरफ़ दरियाए गँगा थी, और मग़ारिब के तरफ़ ख़ुदा जाने कहाँ तक आबादी थी! मुख़्तसर ये कि आप वहाँ से मदीना मुनव्वरा के तरफ़ दिल मे ग़म लिये और आँखो मे आंसू लिये वापस लौट गएं! आप जब मदीना तय्यबा पहुँचे तो अपने जद् हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रौज़ा-ए-अक़दस पर तशरीफ़ ले गएं और एक हफ़्ते तक वहीं क़याम किया, इस अर्से मे आप ख़्वाब मे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दीदार से मुशर्रफ़ हुएं और ज़बान रिसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इरशाद हुआ कि "ऐ फ़रज़न्द बादशाह ग़ज़नी के पास जाओ उसकी मदद से मुल्क हिंद पर क़ाबिज़ होगे, वहीं क़याम करना और दीने मोहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तबलीग़ मे कोशा रहना, वहाँ की वलायत तुमको दी जाती है! इस बशारत से हुज़ूर सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को काफी ख़ुशी हुई क्योंकि आपके अहले ख़ाना का विसाल हो चुका था लिहाज़ा आप अपने तीन बेटों यानी हज़रत सैय्यदना अमीर हसन निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह, हज़रत सैय्यदना क़वामउद्दीन महमूद मदनी रहमतउल्लाह अलैह और हज़रत सैय्यदना ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को और अपने और अपने वालिद के मुरीदों को लेकर ग़ज़नी के लिये रवाना हुएं!

हुज़ूर ग़ौसुल आलमीन सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह की हिन्दुस्तान मे दूसरी आमद -

मदीना मुनव्वरा से जब आप ग़ज़नी पहुँचे तो सुल्ताने वक़्त ***सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी पहले ही से आपके मुन्तज़िर थे (क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इनको अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह कि आमद की बशारत दे दी थी और साथ मे आपकी मदद का हुक्म भी दिया था) आपकी आमद पर सुल्तान ने पूरे जोशो ख़रोश से आपका ख़ैरमख़्दम किया और आपसे ताल्लुक़ क़ायम करने के लिये अपनी बेटी शहज़ादी ख़ुनैज़ा ख़ातून को आपके बड़े बेटे अमीर सैय्यद हसन निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के निकाह मे दे दिया! कुछ दिन ग़ज़नी मे क़याम के बाद हज़रत सैय्यदना अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने हिन्दुस्तान का क़स्द किया, सुल्तान मसऊद ने आपके हमराह अठ्ठारह हज़ार फ़ौज और प्यादे कर दिया और आप उन फौजों, तीनो बेटों और अपने तमाम मुरीदों के हमराह हिन्दुस्तान के तरफ़ मुंतक़िल हुएं और शहर देहली तशरीफ़ लायें! ये वक़्त सुल्तान क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ का आख़िरी ज़माना था! सुल्तान क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ ने गरम जोशी के साथ अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह कि पज़िराई की और उनकी ख़िदमत मे कोई कमी नही छोड़ी! क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ ने हज़रत क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के दस्ते मुबारक पर बैअत करली और आपका मुरीद और मोतक़िद हो गया!

***(सुल्तान मसूद इब्न सुल्तान महमूद इब्न सुल्तान सुबुक्तिगीन! सुल्तान सुबुक्तिगीन के नसब के मुताल्लिक़ मुहम्मद क़ासिम फरिश्ता ने अपनी मशहूर तस्नीफ़ "तारीख़ फरिश्ता में मोअर्रिख़ 'जूज़ जानी' कि इबारत नक़्ल की है कि वो सुल्तान सुबुक्तिगीन के नसब के बाबत लिखते हैं कि ये बादशाह ईरान 'यज़्द जर्द' की औलाद से थें जिनका शजरह नसब इस तरह है कि सुल्तान सुबुक्तिगीन इब्न जूकान इब्न कराअल हुक्म इब्न कज़्ल अरसलान इब्न करानामान इब्न फ़िरोज़ इब्न यज़्द जर्द बादशाह ईरान और सुल्तान महमूद ग़ज़नवी इन्हीं सुल्तान सुबुक्तिगीन के फ़रज़न्द थें लेकिन ये नसब नामा मुसन्निफ़ के नज़दीक़ सही नही है क्यूंकि दूसरी मुअतबर तारीखों से ये ज़ाहिर होता है कि सुल्तान महमूद ग़ज़नवी सैय्यद थें और उनके वालिद का नाम सैय्यद सुबुक्तिगीन था)

जंग और फ़तेह कन्नौज- कन्नौज पर हमलावर होने से पहले हज़रत अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने राजा कन्नौज "जय चन्द राठौर" और उसके फ़ौज की कैफ़ियत मालूम करने के लिये जासूस रवाना किये जिन्होंने लौटकर ये ख़बर दी कि राजा हमेशा शराब के नशे मे मस्त रहता है और ख़ुमार बाज़ी, नाच व रंग मे मसरूफ़ रहता है और इसकी ये हालत देख कर इसकी

फ़ौज भी अपने कामो और अपनी ज़िम्मेदारी से ग़ाफिल रहती है! ये ख़बर पाकर अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह ने अपने लशकर के साथ कन्नौज के तरफ कूच किया! जब कन्नौज पन्द्रह कोस के फ़ासले पर रह गया तो आपको इत्तिला मिली के राजा कन्नौज की फ़ौज इस्लामी लशकर का रास्ता रोकने के लिये चल पड़ी है! जब दोनों फौजों के दरमियान सात कोस का फ़ासला रह गया तो रात हो गई और दोनों फौजें अपनी अपनी जगह ठहर गई! अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह की फ़ौज ने क़रावली के तरीक़े के मुताबिक़ शबख़ून मारा और अन्धेरे मे बनुसरत ख़ुदावन्दी हिन्दु फ़ौज के कश्तो के पुश्ते लगा दिये और मुज़फ़्फ़र व मंसूर हुएं और लौट आयें! दूसरे दिन राजा जय चन्द राठौर ख़ुद हाथी पर सवार होकर एक लशकरे जर्रार के साथ फ़ौजे इस्लाम से आमादए जंग हुआ! अमीर कबीर ने भी अरबों के क़ायदे के मुताबिक़ अपनी फ़ौज की सफ़ आराई की और जंग छिड़ गई, राजा के फ़ौज के हाथियों को देखकर इस्लामी फ़ौज के घोड़े भड़कने लगे क्योंकि वो इनसे अनजान थें,चुनाँचे क़रआवल दस्ते ने बज़ाब्ता क़रावली दुशमन फ़ौज के मुक़ाबले से क़सदन अपने घोड़े पीछे की तरफ़ भगाएं, राजा कन्नौज की फ़ौज समझी कि मुसलमान हमलावर शिकस्त खाकर भागे जा रहें है, लिहाज़ा अपनी सफ़े तोड़कर बेपरवाह इनके पीछे दौड़ पड़ी और इस तरह अफ़रा तफ़री का शिकार हुई! उधर राजा राठौर हाथी पर सवार मैदान मे सिर्फ़ अपने मुहाफ़िज़ दस्ते के साथ रह गया, ये देख कर अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह और उनकी फ़ौज ने इस पर तीरों की बारिश कर दी, नतीजा ये हुआ के राजा राठौर ताब न ला सका और मुँह फेर कर भाग निकला, इसको भागते देखकर इसकी फ़ौज भी भाग खड़ी हुई, और इस भागने मे राजा की बहुत फ़ौज मारी गई और जिसमे अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह की फ़ौज के काफ़ी लोग भी शहीद हुएं! बिलआख़िर इस्लामी फ़ौज फ़तेहयाब हुई और काफ़ी माले ग़नीमत इनके हाथ आया!

फ़तेह हँस्वाह और क़याम कोर्रह सादात- हुज़ूर ग़ौसुल आलमीन हज़रत अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने जब राजा जय चन्द राठौर के तआक़्क़ुब मे कड़े को कूच किया तो उन्होंने बख़याल दूर अन्देशी सैय्यद अलाउद्दीन और उनके भांजे सैय्यद क़ासिम के सिपाहसालारी मे फ़ौज का एक दस्ता देकर इस हिदायत के साथ रवाना फ़रमाया कि वो दरियाए गंगा और जमुना के आस पास हिन्दु राजाओं और ज़मींदारों की छोटी छोटी गढ़ईयों और कोटों को फ़तेह करते हुए आगे आगे चलें ताकि इस्लामी लशकर की राह मे जो ख़ुद इनकी मातहती मे पीछे पीछे आ रहा है कोई मज़ाहेम न हो, चुनाँचे इस हुक्म की तामील मे वो दोनों दो तीन मंज़िल आगे आगे चल रहे थें, जब वो क़स्बा हँस्वाह के क़रीब जो शहर फ़तेहपुर से क़रीब तीन कोस पूरब के तरफ़ है पहुंचे तो उन्हें मालूम हुआ के यहां का राजा हँस जो राजा कन्नौज जय चन्द राठौर के रिश्तेदारों मे से है निहायत मग़रूर है, और इसी ने ये क़स्बा आबाद करके इसका नाम अपने नाम के मुनास्बत से हँस्वाह रखा है! इस्लामी फ़ौज के आमद की ख़बर पाकर वो राजा एक बड़ी फ़ौज लेकर हँस्वाह से कई कोस आगे आया और मुसलमानों से जंग के लिये आमादा हुआ! दोनों फौजों मे लड़ाई छिड़ गई और यहां तक मारका हुआ कि दोनों लशकर लड़ते मरते हँस्वाह पहुंचे! आखिर सैय्यद अलाउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह और राजा हँस के दरमियान तलवार चली, वो इनके हाथों से मारा गया और ये उसके हाथ से शहीद हुए और कई क़दम तने बेसर से चलकर जाए मदफ़न पर गिरे और शहीद हुएं और सैय्यद क़ासिम रहमतउल्लाह अलैह राजा की फ़ौज से लड़ते हुए मक़ाम नत्थनपुर तक गए जो हँस्वाह से एक कोस जानिब पूरब है और वहीं शहीद हुएं! सैय्यद अलाउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह का मज़ार एक बुलन्द टीकरे पर है जो दरगाह के नाम से मशहूर है, और इसके उत्तर मे मस्जिद है इसकी ऊंचाई से साफ़ ज़ाहिर होता है कि वो मक़ाम राजा हँस का क़िला रहा होगा! इस लड़ाई मे मुजाहिदीन को फ़तेह नसीब हुई और काफ़ी माल ग़नीमत हाथ आया! कन्नौज के बाद कड़ा के तरफ़ मंज़िल ब मंज़िल कूच करते हुए जब अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह अपने लशकर के साथ इस जगह पहुंचकर ख़ेमाज़न हुए जहां अब मौज़ा कोर्रह सादात की बस्ती है, जो हँस्वाह से दो कोस जानिब पूरब है तो इस वक़्त वो मक़ाम राजा जय चँद राठौर के अहले ख़ानदान मे से किसी जागीरदार अहले क़िला के क़ब्ज़े मे था, जो थोड़ी सी लड़ाई मे मारा गया, उस वक़्त के शोहदा के मक़ाबिर मौज़ा कोर्रह सादात के पश्चिम मे अब तक मौजूद है (मुसन्निफ़ ख़ुद वहां के चश्मदीद हालात से रूबरु हुआ है) अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को वहां का मंज़र और आबोहवा इस क़द्र पसंद आयी कि आपने वहां कुछ दिन क़याम करने का इरादा किया!

इस अर्से मे इस मौज़ा मे इनके हुक्म से एक मस्जिद तामीर की गई जिसमे पाँच ईंटे जो इन के हमराह मक्कह मोअज़्ज़मा से आए थे तबर्रुक़न नस्ब किये गए और मस्जिद के सामने एक कुँआ जिसका पानी उनकी ज़र्ब असा की करामात से निकला था खोदकर तैयार किया गया और उसमे आब ज़म-ज़म बनज़रे बरकत डाला गया, यहीं इनको हज़रत सैय्यद अलाउद्दीन और सैय्यद क़ासिम की शहादत की और हँस्वाह फ़तेह होने की ख़बर मिली! कुछ अर्सा मौज़ा कोर्रह सादात मे क़याम करने के बाद अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह ने एहतियातन मुताल्लक़ीन व बीमाराने लशकर को इसी जगह छोड़कर कड़े को कूच किया और इस ख़ाके पाक के लिये दुआए ख़ैर फ़रमाई! हज़रत सैय्यद लाल मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने जो अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह के नस्ल मुबारक से एक बहुत बड़े आलिम, मोअर्रिख़, नस्साब, मोतअदद किताबों के मुसन्निफ़ और बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, इस मौज़ा कोर्रह सादात के शान मे जहां हज़रत क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने कुछ अर्सा क़याम फ़रमाया था और उस कुँए के शान मे हसब ज़ेल अशआर कहे हैं!

''ये मक़ाम दिलपज़ीर व ख़ुशफ़िज़ा

ये सवादे दिलकश व जन्नत नुमा

दरमियाने काफ़िराने बद ख़िसाल

है ये मक्कह और मदीना की मिसाल

क्यों न हो फिर बा सआदत ये मक़ाम

कर चुके हैं 'शाह' ख़ुद इस जा क़याम

चश्माँ आबे फ़ैज़ का है ये कुँआ

मिस्ल ज़म ज़म रहता है हरदम रवां

इस कुएं से जिसने पाया एक जाम

नारे दोज़ख़ हो गई उस पर हराम''

फ़तेह कड़ा व मानिकपुर- कोर्रह सादात से रवाना होकर हज़रत अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह अपने लशकर के साथ ख़ित्तए कड़ा पहुँचे! इनके आमद की ख़बर मिलते ही 'राजा जय चँद राठौर' लड़ाई के क़ाबिल तमाम लोगों को लेकर क़िला बंद हो गया! चुनाँचे शहर कड़ा पहुँचते ही अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह के हुक्म से इनके फ़रज़न्दे अकबर (बड़े बेटे) हज़रत सैय्यद निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने क़िला का मुहासरह कर लिया! ये मुहासरह काफ़ी दिनों तक जारी रहा क्योंकि क़िला की मज़बूती और बुलंदी इसके गिर्द खुदी हुई ख़ंदक की चौड़ाई और गहराई के वजह से फतेह की सूरत नही निकलती थी! उधर चूंकि मुसलमान मुजाहिदीन खुले मैदान मे रहकर क़िला पर धावा कर रहे थे इसलिये इनके जानो का ज़्यादा नुक़सान हो रहा था! चुनाँचे इस मुहासरे के दौरान बहुत बड़ी तादाद मे मुसलामानों ने जामे शहादत नोश फ़रमाया! इसी बीच मे ये मशहूर हुआ कि सुल्तान क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ मुजाहीदीन की मदद को आ रहा है! जब इसकी ख़बर राजा राठौर को हुई तो वो ख़ौफ़ ज़दा होकर अपनी औरतों और बच्चों को रात के अंधेरे मे दरियाए गंगा के दूसरे किनारे पर वाक़े क़िला मानिकपुर मे अपने भाई राजा मानिकचंद के पास भेज दिया और ख़ुद अपने सरदारों से मशवरह किये बग़ैर कश्ती पर सवार होकर ना मालूम कैसे और कब मानिकपुर या बनारस के तरफ़ फ़रार हो गया! राजा जय चंद के कड़ा से फ़रार होने की तहक़ीक़ हो जाने पर मुजाहिदीनों के हौसले बढ़ गये और वो मज़ीद सरगर्मी वलवला और जोश से अपने

मोरचों से निकल निकल कर क़िले पर धावा करने लगें और उन्हीं धावों और सर हथेली पर रखकर किये जाने वाले हमलों से सालार शुजाउद्दीन और कई दूसरे मुसलमान सरदार क़िला के ऊपर से फ़ेके जाने वाले पत्थरों की ज़र्ब से दर्जाए शहादत को पहुँचे और अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के बड़े फ़रज़न्द अमीर सैय्यद निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह शदीद ज़ख़्मी हो गएँ! सुल्तान क़ुतुबउद्दीन ऐबक़ जो हज़रत क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का मुरीद था उस वक़्त अवध के मुहिम पर मसरूफ़ था, ये ख़बर उसे पहुँचते ही वो अपने लशकर के साथ यलग़ार करते हुए मदद को पहुँचा और उसकी कमक से बिलआख़िर फ़तेह हुई और क़िला कड़ा पर परचम इस्लामी लहराने लगा! फ़तेहयाबी के बाद वो ख़ादिमाने क़ुतुबउल अक़ताब हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को इस इलाक़े की हुकूमत सुपुर्द करके बँगाल के तरफ़ कूच कर गया!

राजा राठौर के क़िला कड़ा से यक बयक फ़रार होने की ख़बर मिलते ही अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह ने अपने छोटे फ़रज़न्द अमीर सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को दो हज़ार सवार व प्यादह के साथ दरियाए गंगा के उस पार भेज दिया था कि वो वहाँ जाकर क़िला मानिकपुर का मुहासरह करलें चुनाँचे उन्होंने वहाँ जाकर बड़ी होशयारी से क़िला का मुहासरह कर लिया, लेकिन अभी धावे की नौबत भी नही आई थी कि मानिक चँद इस मुहासरे से घबरा कर उसी रात को जिस रोज़ कड़ा फ़तेह हुआ, पोशीदा तौर पर अपने घराने की तमाम औरतों और बच्चों के साथ क़िला मानिकपुर से फ़रार होकर राजा जय चँद के पास बनारस चला गया! फिर तो मुसलामानों ने बहुत आसानी से क़िला पर हमला करके जो कुछ माल व असबाब था लूट लिया और शहर मानिकपुर पर मुसलामानों का क़ब्ज़ा हो गया! इस फ़तेह अज़ीम के बाद क़सीर तादाद मे हाथी घोड़े और बेशुमार ज़र व जवाहर माले ग़नीमत मे हासिल हुई! उनमे बाज़ क़ीमती ज़र और जवाहरात सुल्ताने ग़ज़नी को अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह ने अपने बड़े फ़रज़न्द अमीर निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के हमराह भेजी (क्योंकि वो सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी से निसबते फ़रज़न्दी रखते थे) और बाक़ी सामान मुजाहिदीन के दर्मियान बराबर बराबर तक़सीम हुई!

इस फ़तेह अज़ीम के बाद मुसलमान फ़ौज बनारस पर हमलावर हुई, जिसके ख़ौफ़ से राजा जय चँद राठौर ज़हर खाकर मर गया लेकिन राजा मानिक चँद मै अपने मुताल्लिक़ीन के फ़रार होकर बमुक़ाम इलाक़ा राज कन्तित जा ठहरा! ये इलाक़ा राज कन्तित इलाहाबाद से जुनूब के जानिब ज़ेर दाँगकोह बिँध्याचल है जिसकी सरहद राज रींवा से मिली है और अब इलाहाबाद और मिर्ज़ापुर पर मुनक़सिम है! वहीं राजा मानिक चँद ने नई रियासत की बुनियाद डाली जो जँगलात के कट जाने से एक ज़रख़ेज़ रियासत हो गई!

मुसन्निफ़ आईना-ए-अवध हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी (शहीद) रहमतउल्लाह अलैह अपनी किताब आईना-ए-अवध मे लिखते हैं कि जिन हज़रात को तारीख़दानी मे तजुर्बा कामिल नही है वो लड़ाई चँदवाड़, कन्नौज और कड़ा मानिकपुर मे शुबहा करते हैं और इन लड़ाईयों को एक ज़माने मे क़रार नही देते और जो लोग एक ही ज़माने के मुक़र्रर हैं वो ये ख़्याल करते हैं कि दो 'जय चँद' थे एक मालिक राज कन्नौज और दूसरा मालिक राज कड़ा, और कन्नौज के राजा जय चँद राठौर को बतौर महाराजा (empror) के जानते हैं, हालांकि इनका ये शुबहा महज़ क़यास है और कोई तारीख़ी सबूत इनके पास नही है!

हज़रत सैय्यदना अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का 'कड़ा' में मुस्तकिल क़याम- कड़ा और मानिकपुर पर मुकम्मल कब्ज़ा हो जाने के बाद अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने अपने तमाम हमराही मुजाहिदीन को तलब करके इरशाद फ़रमाया कि फ़क़ीर की ज़िन्दगी और मौत दोनो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हुक्म के मुताबिक़ कड़ा से जोड़ दी गई है, लिहाज़ा मै तो यहीं जियूँ और मरूँगा अलबत्ता तुम लोगों को बख़ुशी इजाज़त देता हूँ कि अपने अपने वतन लौट जाओ! इस पर इन सबने इल्तिमास किया कि हमारी ज़िन्दगी और मौत भी आप ही के दामने दौलत से वाबस्ता है लिहाज़ा हम भी यहीं जियें और मरेंगे तब इनमे से हर एक को इनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ क़याम के लिये जगेह अता हुई! अमीर कबीर ने दरियाए गंगा के

किनारे और क़िला कड़ा के बिल्कुल सामने एक बुलन्द और सर सब्ज़ टीकरे पर अपने अहले ख़ानदान के साथ रिहाइश अख़्तियार की जिसका नाम इनके नाम के मुनास्बत से क़ुत्बियाना मोहल्ला पड़ गया और आज भी इसी नाम से मौसूम है!

''हसनैन के घर का चिराग़ हैं अमीर

कश्ती-ए-ईमान की पतवार हैं अमीर

उनको चुना है ख़ुद रसूले करीम ने

इस वास्ते इस्लाम की तलवार हैं अमीर

ख़ैबर के शेर थें अली करबोबला मे हुसैन

और जंगे कड़ा व हँस के शेर थेंअमीर

क्या ख़ूब मर्तबा है अमीर कबीर का

वलीयों के हैं वली वो अमीरों के हैं अमीर''

दारुल सल्तनत देहली के शैख़ुल इस्लाम- हज़रत सैय्यदना ग़ौसुल आलमीन अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने सुल्तान बहराम शाह बिन सुल्तान शम्सउद्दीन अलतमश के अहद मे देहली मे शैख़ुल इस्लाम का मन्सब सँभाला और फिर सुल्तान नासिरउद्दीन महमूद सन् 653 हिजरी मे इस मन्सब से सुबुगदोष हुए! आपके हयात-ए-ज़ाहिरी मे देहली मे आठ बादशाह हुए और उन सब ने हद दर्जे आपका और आपकी औलादों का ऐहतिराम और इकराम किया! सुल्तान शम्सउद्दीन अल्तमश तो आपकी क़दम बोसी और दस्त बोसी करता और आपको अपने तख़्त पर बैठाता और ख़ुद नीचे बैठता था, और आपसे बरकत हासिल करता था, और यही हर एक बादशाह का तर्ज़ अमल था! आपके हयात-ए-ज़ाहिरी मे जो आठ बादशाह देहली मे हुए उनके नाम यूँ हैं-

(1) आराम शाह सन् 607 हिजरी से 607 हिजरी के आख़िर तक बादशाह रहा!

(2) शम्सउद्दीन अल्तमश सन् 607 हिजरी से सन् 633 हिजरी तक बादशाह रहें!

(3) रुक़्नउद्दीन बिन अल्तमश सन् 633 हिजरी से 634 हिजरी तक बादशाह रहा!

(4) रज़िया सुल्ताना बिन्त अल्तमश ने सन् 634 से 637 हिजरी तक हुकूमत किया!

(5) बहराम शाह बिन अल्तमश 637 से 639 हिजरी तक बादशाह रहें!

(6) मसऊद शाह बिन अल्तमश ने सन् 639 हिजरी से 644 हिजरी तक हुकूमत किया!

(7) नासिरउद्दीन महमूद 644 हिजरी से 664 हिजरी तक बादशाह रहें!

(8) ग़यासउद्दीन बलबन ने 664 हिजरी से 685 हिजरी तक हुकूमत किया!

मर्तबा व मक़ाम- मुसन्निफ़ तारीख़ फिरोज़ शाही ने इसके मुताल्लिक़ यूँ बयान किया है कि उसने मुअतबर बुज़ुर्गो से सुना है कि सुल्तान ग़यासउद्दीन बलबन के अहद मे चंद हस्तियाँ जो सुल्तान शम्सउद्दीन अल्तमश के मुबारक अहद की यादगार थीं, बाक़ी रह गई थीं, और उस दौर के चंद मलूक व उमरा व अवाने सल्तनत भी मौजूद थें और ये बुज़ुर्ग हस्तियाँ बलबन के अहद के लिये बाइसे फ़ख्र थें! चुनाँचे सादात मे से, कि जो बुज़ुर्गाने उम्मत के सरताज हैं, दारुल सल्तनत देहली के शैख़ुल इस्लाम हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह हैं जो सही नस्बी और आला हस्बी मे बेनज़ीर और कमाले तक़वा से रौनक़ बख़्श वजूद थें!

एज़ाज़ व इकराम- देहली के क़याम के दौरान इनका कितना एज़ाज़ व इकराम था और देहली के बाशिन्दो क्या आम क्या ख़ास सभी के नज़रों मे इनका क्या मर्तबा व मक़ाम था इसका अन्दाज़ा तज़किरह निगारों के इन आली शान और बलन्द व बाला अलक़ाब से बख़ूबी किया जा सकता है, जो इन्होंने हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के मुताल्लिक़ अपनी तहरीरों मे इस्तेमाल किया है!

साहिबे किताब 'बहरुल अंसाब' लिखते हैं- हज़रत सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मोहम्मद मदनी अल हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह अपने वक़्त के सैय्यद, कबीर, आलिम, मुतबहर, फ़क़ीह, हाज़िक़ और वली फ़ाएक़ थे एक ऐसे ज़ाहिद जो नेक कामो और इताअत इलाही मे सरगरम रहने वाले, सलातीन को राहे हिदायत पर क़ायम रखने वाले और सुल्हा से तआवुन करने वाले थे!

साहिबे किताब 'मॅम्बउल अंसाब' लिखते हैं- हज़रत अमीर कबीर सैय्यदना क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह बहुत साहिबे कमाल और मक़बूल बारगाहे इलाही बुज़ुर्ग हैं, जो इनकी दरगाह मे पूरी इरादत व अक़ीदत के साथ जाता है अपना मक़सद पा लेता है, और इनकी करामातें बेहद व बेशुमार हैं!

साहिबे किताब 'बहरे ज़ख़ार' लिखते हैं- मक़ाम क़ुत्बियत पर फ़ाएज़ तफ़ज़लात नबवी के फ़रज़न्द यानी क़ुतुबे वक़्त हज़रत सैय्यद अमीर क़ुतुबउद्दीन कड़वी रहमतउल्लाह अलैह के हालात जो सैय्यद अब्दुल क़ादिर गीलानी रहमतउल्लाह अलैह के नसब से थे, इन्होंने ख़िर्का ख़लाफ़त दस्त ब दस्त अपने बुज़ुर्गो से पाया था, वो करामात और रौशन ख़्वारिक के मालिक, ख़ास व आम मे इज़्ज़त रखने वाले, बेशक व शुबहा अपने ज़माने के साहिबे कमाल, राहे दीन इस्लाम के मुजाहिद, अनवार रब्बुल आलमीन के मुशाहिद, आले ग़ौस समदानी के तस्बीह के दानों के इमाम और आशिक़ाने रब्बानी के पेशवा थे!

इस सारे एज़ाज़ और इकराम के बावजूद जो आम व ख़ास और उलेमा व सलातीन और बुज़ुर्गाने दीन मे इनको हासिल था वो अज़्म शौक जिहाद था! हज़रत अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह उस अज़ीम मक़सद जिहाद व शहादत को एक लम्हें के लिये फ़रामोश न कर सके जिसके लिये वो हिन्दुसतान आए थे और बफ़ज़्ले ख़ुदा तआला उस न्यामते जिहाद से आप बहरामन्द भी हुए!

ख़्वारिक व करामात- हज़रत ग़ौसुल आलमीन क़ुतुबउल अक़ताब अमीर कबीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह की बेहद और बेशुमार करामातें हैं कि जिसका तज़किरह तफ़्सील से किया जाए तो शायद एक पूरी किताब भी बहुत अदना साबित होगी, इसी सबब यहाँ मुसन्निफ़ सिर्फ़ उन करामातों का ज़िक्र कर रहा है जो आपके लिये बहुत मशहूर है-

मशहूर है कि राजा जय चँद राठौर को अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के कड़ा पहुँचने की ख़बर हुई, तो पहले उसने इनका इम्तिहान लेना चाहा, उसने एक मशहूर जोगी 'गँगा बार' नामी को जो इसका गुरू था, अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के पास भेजा और ये ख़्वाहिश हुई के पहले मुक़ाबला करामात व ख़्वारिक मे हो जो इस मे बढ़ जाएगा और ज़्यादा बुलन्दी पर जाएगा इसको साहिबे तसर्रुफ़ मान लिया जाएगा, अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह बख़ुशी इसके

लिये भी तैयार हो गए! जोगी ने हवा मे उड़ना शुरू किया, अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह अपने जूते पहने हुए उसके साथ हवा मे उड़े और उसको ज़मीन पर गिरा दिया, जोगी ने कहा ये ठीक नही है, कोई दूसरी करामात दिखाए अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह ने उसकी ये भी बात मान ली और इस मर्तबा भी उसको नाकामी का मुँह देखना पड़ा, राजा जय चँद ने लड़ाई की ठान लिया और आख़िरकार शिकस्त खाकर उसे क़िला कड़ा से फ़रार होना पड़ा!

मशहूर है कि जोगी ग़ँगा बार करामाते अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह से बहेड़ा का फ़ल खाने के वजह से हामला हो गया और जब नौ महीना का वक़्फ़ा गुज़रा तो उसका पेट चाक किया गया तो औलादे नरीना (बेटा) पैदा हुआ, जादूगर गँगा बार क़बूले इस्लाम के बाद इसी सदमे से मर गया और उसके वसीयत के मुताबिक़ उसकी क़ब्र अमीर कबीर के दरगाह के ताबदान के नीचे बनवाया गया (इसी बहेड़ा के अस्ल से आपके मज़ार मुबारक पर एक पेड़ था कि जिसके फल का ख़ुद ब ख़ुद किसी औरत के गोद मे गिरने से बकरामाते अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह वो औरत हामला हो जाती थी!)

कोर्रह के क़याम के दौरान हज़रत अमीर कबीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के हुक्म से एक मस्जिद तामीर कराई गई जिसके सामने एक कुँआ भी खुदवाया गया इस कुँए मे आपके करामात से आपकी असा मुबारक की ज़र्ब से पानी का चश्मा फूट गया जिसका पानी अब तक जारी और सारी है! (मुसन्निफ़ इस किताब को लिखने के दौरान ही अपने आबाई गाँव कोर्रह सादात के लिये रवाना हुआ जिसे देखने की ख़्वाहिश इसे बचपन से थी वहाँ पहुँच कर वहाँ के तमाम मक़ामात की ज़ियारत किया जिससे इसके आँखो को ठ्न्डक और क़ल्ब को सुकून हासिल हुआ)

ये वो मस्जिद है जिसको हज़रत अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने कोर्रह के क़याम के दौरान तामीर करवाया था जो अब दरगाह मस्जिद के नाम से मशहूर है!

"बड़ा सुकून मयस्सर हुआ क़ल्ब-ए-मुज़तर को

भुला न पाएगा अहक़र कोर्रह के मन्ज़र को"

और

"फिर मै एक बार अपने माज़ी से मिला

क़ल्ब को आया सुकून रूह को मिल गयी जिला"

ग़ौसुल आलमीन अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का बारगाहे ख़ुदावन्दी मे मर्तबा व मक़ाम और अपने औलादों (सादात-ए-क़ुत्बिया) व सिलसिला-ए-क़ुत्बिया कबीरिया के लिये अपकी दुआ- अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के मल्फ़ूज़ात मे से कि जिसको मुसन्निफ़ "ज़हूर क़ुत्बी" ने अपनी किताब मे नक़्ल फ़रमाया वो क़सीदह कि जिसको सुक्रो इश्क ख़ुदावंदी के इस्तग़राक के आलम मे कहे हैं, और जिसमे बारगाहे ख़ुदावंदी मे अपने मर्तबे व मक़ाम का इज़्हार किया है और अपने औलादों (सादात क़ुत्बिया) और अपने मुरीदों के लिए दुआ फ़रमाई है, मुसन्निफ़ भी यहाँ नक़्ल करने की सआदत हासिल कर रहा है!

قُومُوا یا قوم بالحِفْظِ المتینِ
مقاماتِ الامیر القطب دین

तर्जुमा- ऐ मेरी क़ौम के लोगों (मुराद जमात-ए-मोमिनीन) अमीर क़ुतुबउद्दीन के हालात व मर्तबा और मक़ामात को अपनी ग्रादवार निगाहों मे महफ़ूज़ रखो

سَمیرٌ فی بِساطِ القُدسِ حَقًا
امیرٌ فی سِماطِ مُقرّبین

तर्जुमा- अमीर जो शबो रोज़ हमारे क़रीब ज़मीन फ़राख़ व हम्वार व क़ुद्स मे सुकूनत रखते हैं वो मुक़र्रिबाने हज़रत इलाही (औलिया अल्लाह) के सफ़ मे भी अमीर हैं!

رَقیبٌ مَنْ یَلوذُ اِلَیهِ یَنْجو
قریبُ الضّا رِعینِ بِکلِّ حِینِ

तर्जुमा- अमीर उन लोगों के निगेहबान हैं जो शदीद तकलीफ़ के वक़्त इनकी पनाह मे आजाते हैं, और अपनी तकलीफ़ से निजात पाते हैं, नीज़ अमीर आजिज़ों और शिकस्ता दिलों के पास रहते हैं, यानी जिस वक़्त भी वो इनकी जनाब मे इल्तिजा करते हैं वो अपनी मुराद को पहुँचते हैं!

نصیرٌ للُا ناسِ اَوانَ خطبٍ
بشیرًا الخیر للمُتَضَرّعینِ

तर्जुमा- अमीर लोगों के मददगार होते हैं जिस वक़्त उनको कोई हादसा या अम्र अज़ीम पेश आता है और तज़रा करने वालों को भलाई और ख़ुशी का मुश्दाह देने वाले हैं!

ولیٌّ فی بِلادِ الشّرقِ وَالغَرْبِ
عَلیٌّ فِی کَلالِ العا لمینِ

तर्जुमा- अमीर बिलादे शर्क व ग़र्ब मे वली-ए-मुतलक़ हैं, यानी इनकी वलायत तमाम रूहे ज़मीं पर मुँम्बस्त और मुहीत है और अमीर तमाम आलमों पर रिफ़अत और बुज़ुर्गी रखते हैं!

اِذاما کانَ لَیْلٌ مِن لَیا لی
ذَھابٌ فی الوصالِ کَحورِ عینِ

तर्जुमा- जब रातों मे से कोई मख़सूस रात होती है तो अमीर का हूरों से मुलाक़ात (मुराद विसाल माशूक़ हक़ीक़ी) या इतिसाल रूहानी के लिये जाना होता है!

غَمیضاًفیِ رِداءِ الکِبریائی
دَعامِن رَّبِهِ الْحقّ الیقینِ

तर्जुमा- अमीर ने अपने परवरदिगार से हक़्क़ुल यक़ीन को (जो मरातिब यक़ीन मे से बुलन्द तरीन मर्तबा है) तलब किया जो ज़ुलजलाल वल इकराम की चादर किबरियाई मे पोशीदह था!

اِلٰھی انتَ مولانا قَدیمٌ
فَوقِّر مَن یَکونُ مُوَقّرِینِ

तर्जुमा- ऐ मेरे अल्लाह तू ही इस ज़िन्दगी मे और ज़िन्दगी के बाद मालिके मुतलक़ है लिहाज़ा इज़्ज़त और बुज़ुर्गी दे उन लोगों को जो मुझे और मेरी औलादों को इज़्ज़त देते हैं!

وقَھِرْ مَنْ یَعیش مُمَادیًا لی
وَاولادعی الٰی یَوْم الیقینِ

तर्जुमा- और क़हर व ग़ज़ब नाज़िल कर उस पर और अपनी रहमत से दूर रख उस शख़्स को क़यामत तक जो इस हाल में ज़िन्दगी बसर करता है कि मुझसे और मेरी औलादों से दुश्मनी रखता है!

فَھُم فی کُلِّ اوقاتٍ علاةٌ
وَھُم شُرَفاءُ فی الدنیا ودینِ

[illegible]मा- अगर तू अपने फ़ज़ले ख़ास से इनको (मुराद मेरी औलादों को) [illegible] मुअज़्ज़िज़ व मुकर्रम बना दे तो वो हर हाल में तमाम लोगों से बरतर व [illegible]ज और दीन व दुनिया मे अशरफ़ व अफ़ज़ल रहेंगे!

اِلٰهی صِرْ بِهِمْ حُفَّاظَ قومٍ
وصَيِّرِ هُمْ مَلاذَ العا جزينِ

तर्जुमा- ऐ मेरे अल्लाह इनको (यानी मेरी औलादों को) एक क़ौम अज़ीम और लोगों की क़सीर जमात का निगेहबान व पासबान और आजिज़ों दर्दमन्दो की जाए-पनाह बना दे!

فَفِى الكونينِ اِجْعَاْهُمْ عِظاماً
وفِى الدّْارِين سَادَاتِ اَشْرَفِينِ

तर्जुमा- ऐ मेरे अल्लाह इनको (यानी मेरी औलादों को) दोनों जहाँ मे बुज़ुर्गी और अज़मत अता फ़रमा और दोनों मक़ाम में सरदार व अशरफ़ बना!

و بَجِّلْهُم بِتَبجِيلِ عظيمٍ
وَ صُنْهُم فى الاَ بَدُ عمّاَ يشينِ

तर्जुमा- ऐ अल्लाह इनको (यानी मेरी औलादों को) बुज़ुर्ग रख और इनको अज़मत अता फ़रमा ऐसी अज़मत जो बलन्द व बरतर है और हमेशा हिफ़ाज़त कर इनकी ऐबदार चीज़ो से, मिस्ल जिहालत व इर्तिकाब वग़ैरह से!

الٰهى حَفدتى قطرات نورٍ
فَنَوِّرهُم بِاَبدِ الا بدين

तर्जुमा- ऐ मेरे अल्लाह मेरे बेटों और इनकी नस्ल (क़यामत तक आने वाली औलादें) नूर के ज़र्रात व क़तरात हैं कि इनके हसब व नसब मे कोई नक़्स व ख़लल नही बस इनकी रौशनी और ख़ुश्बुओं को हमेशा यानी क़यामत तक क़ायम रख!

اَنا الْحَسَنى و قُطُبِ الدينِ اسمِى
ومِن قَدَمى رُئوسُ الواصِلينِ

तर्जुमा- मै सादात बनि-हसन मुजतबा (अलैहिस्सलाम) से हूँ, क़ुतुबउद्दीन मेरा नाम है, और वासिलाने बहक़ (वली-ए-बरहक़) के सर मेरे क़दम के नीचे है!

اَنَا مِنْ بَحْرِ سُكْرِ العشق نهرٌ
اَنَامِنْ نَهرِ شُكر الحقِ عينِ

तर्जुमा- सुक्र के माईने है मस्ती, इश्क, मोहब्बत चुनाँचे अमीर कबीर यहाँ फ़रमाते हैं मै दरियाए सुक्र इश्क की नहर हूँ और मै जूँ-बार सुक्र उल हक़ का एक चश्माँ हूँ!

اَنَا مُسْتَغْرِقٌ اوقاتِ وَصلِ
بَرَبِ العا شقين الشا ئقينِ

तर्जुमा- अमीर कबीर कहते हैं, मै जमीअ औक़ात में मुश्ताक आशिको के रब के वस्ल मे मुस्तग़रक रहता हूँ, जमीअ औक़ात वस्ल से इस बात का कनाया है कि मै अबुल हाल हूँ जब चाहता हूँ वस्ले हबीब से मुशर्रफ़ होता हूँ इब्नुल हाल या मग़लूबुल हाल नही हूँ!

انا الْمَلْجا لِمَنْ يتضَرّعونَ
انا الغَوّاثُ لِلْمُتَغَاوِشينِ

तर्जुमा- मै हर उस शख़्स की जाए पनाह और गुरेज़गाह हूँ जो आहज़ारी करता है और अपनी इल्तिजा मेरे पास लाता है और मै फ़रियाद करने वालों का फ़रियाद दर्स हूँ!

انافى حَضْرَتِ الرَبِ الكريمِ
غِيَاثٌ لِلْاَناسِ بِما يُعينِ

तर्जुमा- मै बारगाहे करीम मे लोगों का फ़रियाद दर्स हूँ, उस चीज़ से जिससे वो मेरी मदद करता है!

اَنَا مَن يَمْلِكُ الا شياءَ طُرّا
بلُطفِ الحقِ اِكْرامَ لأمين

तर्जुमा- मै हक़ के लुत्फ़ व करम से जमीअ अश्या का मालिक हूँ, और ये लुत्फ़ ऐन इकराम-उल-अमीन है, ये अमानत हक़ वही है जिसका ज़िक्र

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद मे फ़रमाया है!
और मोहक़्क़क़ीन ने कहा है अमानत से मुराद यहाँ उसकी मारफ़त और मोहब्बत है!

مریدی رُح ولزبی کرُوبِ
فَعَطِشٌ انت لی ماءٌ مَعینِ

तर्जुमा- ऐ मेरे इरादतमंदो जाओ और ग़म से फ़ारिग़उल बाल हो जाओ, और ग़म और कर्ब की हालत मे मेरी पनाह पकड़ बस तू शदीद प्यासा है और मेरे पास साफ़ और निथरा पानी है!

سعیدُ البَطنِ یَعُفو نَابجِرَ
شقیٌ مَن یَرُدُّ لِمَا نَرِینِ

तर्जुमा- जो मादरज़ात नेक बख़्त और सआदत मन्द है वो बकोशिश तमाम हमारा हुक्म बजा लाता है, और बदबख़्त है वो जो हमारे हुक्म को रद् कर देता है!

فَیَز کُرُنِی مُدیداً کُلَ حَیِّ
زُبَابٌ طَائرٌیضرِبُ طَنینِ

तर्जुमा- बस हर ज़िन्दा और मुतनफ़्फ़स इरादह और ऐतक़ाद के साथ मुझको याद करता है, हत्ता कि भड़ें (यानी शहद की मक्खी) भी जो भिनभिनाती हैं मुझको याद करती हैं!

وَمَن یَکُ غافِلاً مِنّی زَمَانَا
یَکُنُ فِی الُخلقِ کا لرّجُلِ اللعینِ

तर्जुमा- जो शख़्स किसी वक़्त भी मेरी याद से ग़ाफ़िल हो जाता है, वो उस वक़्त मख़लूक़ात के दरमियान मर्दे मलऊन और रहमते हक़ से दूर रहने वाले के मानिंद होता है!

جمیعُ الملکِ یَفنی بَعدَ دَهرِ
اَنَا مَلِکٌ وَمُلکِی کُلَّ حینِ

तर्जुमा- तमाम बादशाहतें एक मुक़र्रर मुद्दत के बाद फ़ना और नीस्तो नाबूद हो जाएंगी, मै बादशाह मुतलक़ हूँ, मेरी बादशाहत हमेशा क़ायम रहने वाली और लाज़वाल है!

اَنَا اُصبح فامسی عِند رَبیّ
وکُلّ الخَلقِ والِهٌ مِن جنینِ

तर्जुमा- मै अपने रब के पास सुबह करता हूँ और फिर शाम करता हूँ, यानी हमेशा सोहबते हक़ और विसाल माशूक़ हक़ीक़ी रखता हूँ, जैसा कि रसूले अक़दस हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया
और तमाम मख़लूक़ात मेरे इस वक़्त पर जो मुस्तक़िल वस्ल हबीब मे गुज़रता है, मुतहैयर मफ़्तून व मजनूं है क्योंकि वो उस वक़्त के कैफ़ियत व लज़्ज़त का इदराक ही नही कर सकता है!

وَلِی مَعَ رَبّهِ سِرٌ عَجیبٌ
حَجیبٌ مِن کِرامِ الکَاتِبِینِ

तर्जुमा- और मेरे लिये इसके यानी जमीउल ख़ल्क़ के रब के साथ अजीब राज़ का मामला है जो करामन कातबीन से भी पोशीदह है यानी वो दोनों फ़रिश्ते भी जो लोगों के रोज़नामा अफ़आल व अक़्वाल लिखने पर मुक़र्रर हैं इस राज़ से वाक़िफ़ नही हैं!

لِیَ الطَیرانُ فِی الّا هوتِ دَهراً
وَلِیُّ الدَّهرِ عِندِی کَا لجَنینِ

तर्जुमा- अमीर कबीर यहाँ फ़रमा रहे हैं कि मै एक मुद्दत दराज़ से मक़ाम 'लाहूत' मे परवाज़ कर रहा हूँ, मक़ामात 'जबरूत' व 'मलकूत' की तो परवाह भी नही करता और इस ज़माने का वली (जो इस मक़ाम से कोई हिस्सा भी नही रखता) मेरे नज़दीक़ शिकम मादर मे रहने वाले उस बच्चे के मानिंद है जो एक ज़र्रा भी अक़्ल नही रखता है!

سُوالِی مِن اِلٰهِ الخلقِ طُرّاً
یُتِمُّ الخَیرَ لِلمُتَعَلِقِینِ

तर्जुमा- मेरी दरख़्वास्त जमीअ मख़लूक़ात के परवरदिगार से है कि वो मेरे मुताल्लिक़ीन यानी मेरे फ़रज़न्दों और मुरीदों पर दुनिया व आख़रत मे नेकियों और अपनी न्यामतों को मुकम्मल फ़रमाए आमीन ......

विसाल- तीन (3) रमज़ानुल मुबारक सन् 677 हिजरी मुताबिक़ 1278 ईस्वी को बअहेद सुल्तान ग़यासउद्दीन बलबन हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने छयान्वे (96) साल की उम्र में सफ़र-ए-आख़रत तय फ़रमाया!

मज़ार-मुबारक- हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक 'कड़ा' ज़िला कौशाँम्बी मे दरगाह ***ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह के जुनूबी सिम्त मे वाक़े है!

(***हज़रत सैय्यद अहमद उर्फ़ ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह की मुख़्तसर तारीख़-

इस्फ़हान (ईरान) के बादशाह सैय्यद मुहम्मद हैदर (आप इमाम मूसा रज़ा बिन इमाम मूसा काज़िम अलैहिस्सलाम की औलादों में थें) के फ़र्ज़न्द थें सैय्यद हसन और इनके बेटे थें सैय्यद अहमद उर्फ़ हज़रत कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह जो मुल्क इस्फ़हान से

मुरशिद कामिल के तलाश में एक कारवाँ के हमराह बमरौली ज़िला कौशाम्बी तशरीफ़ लाएं यहां पहुँच कर आप पर नींद का ग़लबा तारी हो गया और जब आप नींद से बेदार हुएं तो कारवाँ आगे निकल गया और आप तन्हा हो गएँ आप अपनी तन्हाई पर खूब रोएं इसी दरमियान आप को ग़ैबी इल्हाम हुआ कि बस्ती के तरफ़ जाओ और वहां हज़रत शैख़ इस्माईल क़ुरैशी सहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत अख़्तियार करो! इस इल्हाम से आप को बहुत ख़ुशी हासिल हुई और आप बस्ती के तरफ़ रवाना हुएं जब आप हज़रत शैख़ इस्माईल क़ुरैशी सहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह के ख़िदमत में पहुंचे तो देखा वो आपके पहले से मुन्तज़िर थें हज़रत ने आप का ख़ैरमख़दम किया और आपको एक ख़त देकर फ़रमाया की उस पहाड़ पर जहां रौशनी है चले जाओ! ख़्वाजा साहब पहाड़ के तरफ़ रवाना हुएं और जब आप पहाड़ के दामन में पहुंचे तो एक अज़ीम चश्माँ पानी का बहता पाया आपने उस पानी से ग़ुस्ल फ़रमाया और थोड़ा सा तनाऊल फ़रमाया और फिर पहाड़ के ऊपर चढ़ गएँ जब आप ऊपर पहुंचे तो देखा कि हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम मशग़ूले नमाज़ हैं! हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह ने वो ख़त आपके सामने रख दिया! ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने ख़त देखा और ख़्वाजा साहब से फ़रमाया मुबारक हो आपको मर्तबा अब्दाली पर मामूर किया गया है मय (शराब) को गुलाब बनाकर पिया करो! हज़रत कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह इस अताए ख़लअत अब्दाली से बहुत खुश हुएं और वहां से वापस हज़रत शैख़ इस्माईल क़ुरैशी सहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुएं शैख़ ने आपकी ऐसी तरबियत फ़रमाई की आप से अज़ीमो शान वारदात का ज़हूर होने लगा जिसमे आप मुस्तग़रक हो गएँ और ख़ल्क से बिलकुल बे नियाज़ हो गएँ चुनांचे शैख़ इस्माईल क़ुरैशी सहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह ने आपको मजाज़ बनाकर कड़े के जानिब रवाना किया और आप कड़े आकर मुक़ीम हुएं!

मशहूर है कि एक मर्तबा हज़रत क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी अवैशी रहमतुल्लाअलैह ने आपके लिए एक ख़िरका भेजा आपने उस ख़िरके को आग में डाल दिया ये देखकर वो ख़ादिम जो ख़िरका लेकर आया था वो वापस हज़रत क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी अवैशी रहमतुल्लाअलैह के ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे सारा माजरा कह सुनाया तो हज़रत क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी अवैशी रहमतुल्लाह अलैह ने उस ख़ादिम से फ़रमाया कि तुम वापस जाओ और हज़रत से ख़िरका वापस मांगो ताकि तुम पर कैफ़ियत मरातिब हज़रत ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल मुनकशिफ़ हो जाए! वो ख़ादिम वापस आकर ख़्वाजा साहब से तालिबे ख़िरका हुआ इस पर हज़रत ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल ने फ़रमाया जा उस भट्टी में घुस जा और अपना ख़िरका निकाल ले, जब वो ख़ादिम भट्टी के अन्दर ख़िरका तलाशने गया तो बहुत से ख़िरके को आग में रखा हुआ देखा इस पर शर्मिन्दा हुआ और वापस लौट गया!

तारीख़ निज़ामी में है कि जब सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी हाकिम कड़ा व मानिकपुर था तो उसने बहुत सी फ़ौज जमा करके देवगढ़ पर हमला कर दिया और उसे ताख़्त व ताराज कर दिया और बेशुमार मालो दौलत इखट्ठा कर लिया ये देखकर जलालुद्दीन ख़िलजी उस से डर गया और ये फ़ैसला किया कि देवगढ़ जाकर अलाउद्दीन ख़िलजी को उसकी दौलत समेत कब्ज़े में लेलें चुनांचे जलालुद्दीन ख़िलजी कश्ती में सवार होकर कड़ा के तरफ़ रवाना हुआ, इसकी आमद की ख़बर सुनकर अलाउद्दीन ख़िलजी ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह के ख़िदमत में हाज़िर हुआ और निहायत आज्ज़ि और नियाज़मन्दी से दुआओं का तालिब हुआ! इस पर ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह ने इरशाद फ़रमाया- ***''हर कस के बातू जंग, तन दर कश्ती सर दर गंग''***

तर्जुमा- जो तुझसे जंग करेगा उसका तन कश्ती में और सर दरिया गँगा में होगा! मुल्क अलाउद्दीन ख़िलजी ये बशारत पाकर बहुत खुश हुआ और उसके तीन दिन बाद सतरह (17) रमज़ान सन् 695 हिजरी को सुल्तान जलालुद्दीन ख़िलजी उसी हाल में मारा गया और उसकी जगह उसका भतीजा और दामाद अलाउद्दीन ख़िलजी तख़्तनशीं हुआ! सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी की क़ब्र ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतुल्लाह अलैह के रौज़े के बग़ल में मौजूद है!

मज़ार मुबारक हज़रत अमीर कबीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह और फ़रज़न्द अकबर हज़रत अमीर हसन निज़ामउदीन मदनी (र.अ)

,

'हो ख़ून जिसके रग मे इतना बावक़ार
वो ख़ून जो ख़ून है हैदरे कर्रार
हों क्यों न फिर अमीर हर साअत बेक़रार
जज़्बा-ए-जिहाद से दिल उनका था सरशार
रहमते रब के थें वो हर लम्हा तलबगार
बेशक उनके रब ने बनाया उन्हे अमीर
हर सफ़ मे थे अमीर वो हर दौर मे अमीर
कहते थें ख़ुद अब्दाल भी बेसाख़्ता यही
तू वक़्त का अमीर, तेरी औलाद भी अमीर''

औलाद- हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउल अक़ताब शैख़ुल इस्लाम क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह के तीन शाहज़ादे हुए यानी- (1) हज़रत सैय्यदना हसन निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह (2) हज़रत सैय्यदना क़वामउद्दीन महमूद मदनी रहमतउल्लाह अलैह (3) हज़रत सैय्यदना ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह!

(1) हज़रत सैय्यदना अमीर हसन निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह- हज़रत अमीर कबीर सैय्यदना क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के फ़रज़न्दे अकबर हज़रत सैय्यदना हसन निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह बड़े साहिबे तक़वा व तहारत आलिम बअमल और मुजाहिद फ़ी सबीलअल्लाह थे! बहवाला मलफ़ूज़ अमीर कबीर रहमतउल्लाह अलैह जब अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह देहली मे थे उस वक़्त इब्तिदा मे ये ख़याल था कि सुल्तानी अफ़वाज की मदद हासिल की जाए और मुजाहिदीन और सुल्तानी अफ़वाज मिलकर जिहाद करें! उस वक़्त अमीर सैय्यद निज़ामउद्दीन रहमातउल्लाह अलैह ने इसकी मुख़ालफ़त की और ये राय दी के सुल्तानी अफ़वाज की शमुलियत के बाद से शर्फ़ जिहाद ख़ालिस हम लोगों के लिये न रह जाएगा बेहतर ये है कि हम लोग अल्लाह के भरोसे पर ख़ुद जिहाद करें! अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने अपने फ़रज़न्द की ये बात मन्ज़ूर की और ये कारनामा और शर्फ़ इनके हिस्से मे आया!

अमीर सैय्यद हसन निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह तमाम मारको मे अपने वालिद माजिद के दोश ब दोश बल्कि पेश-पेश रहें! कड़ा के पहाड़ जैसे बलन्द और संगीन क़िला को फ़तेह करने मे उन्होंने बड़ी दिलेरी और शुजाअत का मुज़ाहिरा पेश किया और उसी के मुहासरह मे वो पत्थर के ज़र्ब से ज़ख़्मी भी हुए! कन्नौज और कड़ा फ़तेह के बाद अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने तोहफ़ा और ख़त देकर आपको सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी के पास ग़ज़नी भेजा! चुनांचे वो ग़ज़नी गये और अपने काम काज को अंजाम दिया और अपनी अहलिया शहज़ादी ख़ुनैज़ा ख़ातून बिन्त सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी को लेकर वापस लौट आये! लेकिन क़िला कड़ा के मुहासरे के वक़्त जो ज़ख़्म लगा था उस वजह से अलील रहते थे और आख़िर इसी मर्ज़ मे इन्होंने शहादत पाई! आपने अपने वालिद माजिद के हयात मे ही जामे शहादत नोश फ़रमाया और कड़ा मे दफ़्न हुए!

औलाद- हज़रत सैय्यदना अमीर हसन निज़ामउदीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह की ज़ौजा शहज़ादी सैय्यदा ख़ुनैज़ा ख़ातून बिन्त सुल्तान सैय्यद मसऊद ग़ज़नवी के बत्ने अक़दस से अल्लाह ने आपको सिर्फ़ एक फ़रज़न्द अता किया जिनका इस्म मुबारक हज़रत सैय्यदना अमीर रुक़्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह था जो जद् सादात क़ुत्बिया ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर और इस मुसन्निफ़ के हैं!

''निज़ामउद्दीन हसन ने नोश शर्बते शहादत फ़रमाया
अल्लाह ने करम फिर इन पर ऐसा दिखलाया
नवाज़ा इनको ऐसे औलादे नरीना ब कमाल
ज़माना तलाश्ता है अब तक जिनकी दूसरी मिसाल''

हज़रत सैय्यदना अमीर क़वामउद्दीन महमूद मदनी रहमतउल्लाह अलैह- हज़रत सैय्यदना अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के मंझले फ़रज़न्द अमीर सैय्यद क़वामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह सुल्तान शम्सउद्दीन अल्तमश के अहेद मे एक मुम्ताज़ और नामवर शैख़ थे! अपने वालिद माजिद के फ़तूहात के बाद उन्होंने देहली मे क़याम किया और वहीं मस्नदे सुलूक को आरास्ता किया! तज़्किरहतुल अबरार के अल्फ़ाज़ में सैय्यद क़वामउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह अल्लामा वक़्त थें, कसीर तादाद मे लोग इनके हिदायत व इरशाद से मुस्तफ़ैद हुए थे!

किताब मँम्बाउल अंसाब के मुताबिक़ अमीर सैय्यद अलाउद्दीन जवेरी रहमतउल्लाह अलैह इनके मुरीद और ख़लीफ़ा थें! अपने वालिद के ज़िन्दगी तक वो अकसर इनसे मुलाक़ात करने और दीदार करने कड़ा आते रहते थें!

इनकी शादी शहज़ादी फ़तेह सुल्ताना बिन्त सुल्तान शम्सउद्दीन अल्तमश (तबक़ात नासरी में है कि सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश कराख़ताई तुर्कों के एक बहुत बड़े घरानें से थें और इनके वालिद अलबरी क़बीले के सरदार थें और अपनी दौलत और ग़ुलामों की कसरत कि वजह से आस पास के इलाक़ों में बहुत मशहूर थें! सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश सूरत और सीरत के लिहाज़ से अपने भाईयों में मुमताज़ थें और इनके वालिद इनको सबसे ज़्यादा महबूब रखते थें इस सबब इनके भाई इनसे ख़ुश न थें चुनांचे एक रोज़ इनके भाईयों ने किसी बहाने से इनके वालिद से इनको जुदा करके एक सौदागर के हाथों फ़रोख़्त कर दिया और यके बाद दीगरे इनको कई सौदागरों ने ख़रीदा और फ़रोख़्त किया बिलआख़िर किस्मत की ज़ोरावरी से ये सुल्तान क़ुतुबुद्दीन ऐबक़ के हाथों लगें और बाद में दिल्ली के बादशाह हुएं!) से हुई और आपकी औलादों ने शहर देहली मे ही क़याम किया! आपका सन् पैदाइश 627 हिजरी और सन् वफ़ात 710 हिजरी है!

साहेब बहरुल अंसाब ने आपके मुताल्लिक़ इस तरह लिखा है कि सैय्यद क़वामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह जो हज़रत अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के मंझले फ़रज़न्द है देहली मे क़याम पज़ीर रहे और वो आलिम बअमल, इमाम और अपने वक़्त के क़ुतुबउस सादात थे, सैय्यदउस सादात सैय्यद अलाउद्दीन जवेरी के पीर मुरशिद थे, और जब सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह अपने गिरोह के साथ देहली से ख़ित्ता कड़ा के तरफ़ मुन्तक़िल हुए तो सैय्यद क़वामउद्दीन महमूद रहमतउल्लाह अलैह देहली मे ठहरे और वहीं बूदोबाश अख़्तियार किया! सुल्तान शम्सउद्दीन अल्तमश की एक दुख़्तर फ़तेह सुल्ताना आपकी निकाह मे बतौर ख़िदमत थी! और आपके तलाम्ज़ह मे से इनके बिरादर अकबर के फ़रज़न्द सैय्यद रुक़्नउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह थे जिनसे सैय्यद अलाउद्दीन जवेरी रहमतउल्लाह अलैह भी बरकत हासिल करते थे! सैय्यद क़वामउद्दीन महमूद मदनी रहमतउल्लाह अलैह कभी-कभी अपने वालिद माजिद क़ुतुबउद्दीन मोहम्मद रहमतउल्लाह अलैह से मिलने के लिये जाते रहते थे, सैय्यद क़वामउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह सन् 627 हिजरी मे पैदा हुए और तिरासी साल की उम्र पाई और सन् 710 हिजरी में अपने रब से जा मिले और देहली में आपका मज़ार मुबारक है!

साहेब नुज़हतुल ख़्वातिर ने इनके हालात पर इस तरह रौशनी डाली है- आली मरतबत साहिबे इज़्ज़त व शर्फ़ अल्लामा, पारसा व पाकदामन महमूद बिन मोहम्मद बिन अहमद अल मदनी रहमतउल्लाह अलैह इल्म व मआरफ़त मे हमअस्रो पर फ़ौक़ियत ले जाने वाले फ़ुक़्हा मे से एक इमाम हमाम हज़रत हसन रज़िअल्लाह तआला अन्हु सिब्ते अकबर इन पर और इनके जद् पर सलाम हो की नस्ल पाक से थे वो दुनिया भर मे इल्म व ज़ोहद और शुजाअत व सख़ावत मे अपने अहेद के इमाम थे वो सन् 628 हिजरी मे पैदा हुएं, इल्म मआरफ़त मे कमाल हासिल किया और अपने वालिद अमीर कबीर मिल्लत-ए-बैज़ा के बद्र कामिल क़ुतुबउद्दीन मोहम्मद मदनी बिन अहमद अल हसनी अल हुसैनी अल मदनी के साथ हिन्दुस्तान आये तो शम्सउद्दीन अल्तमश ने इन से अपनी बेटी फ़तेह सुल्ताना की शादी कर दी चुनांचे वो देहली मे क़याम पज़ीर हुए और लोगों की तालीम व तरबियत और उनको फ़ायदा पहुँचाने के लिये मस्नदे रुश्दो हिदायत जमा दी, इनसे इनके भतीजे काज़ी सैय्यद रुक़्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह, शैख़ अलाउद्दीन जवेरी रहमतउल्लाह अलैह और एक ख़ल्क कसीर ने इल्म व मआरफ़त हासिल किया, इन्होंने 710 हिजरी मे वफ़ात पाई!

अमीर सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह- अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह के छोटे फ़रज़न्द अमीर सैय्यद ताजउदीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह का शुमार उस अहेद के उन बाबरकत हस्तियों मे था जो

ग़यासउद्दीन बलबन के अहेद के लिये सरमाया इफ़्तिख़ार कहे जाते थे! शराफ़त व नजाबत और आला नसब के साथ साथ इनके जौहर ज़ाती और ज़ाहिरी व बात्नी कमालात ने इनको उस अहेद के उलेमा व अयान और सूफ़िया व मशाएख़ मे एक नई शान और नया हुस्न अता किया था और उसमे औसाफ़ नब्वी और कमालात नब्वी की झलक अहले बसीरत को नज़र आती थी! बरसो तक वो शहर कड़ा के क़ाज़ी रहें फिर सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी ने उन्हें वहाँ से मुन्तक़िल करके बदायूँ का क़ाज़ी बना दिया और इनकी जगह इनके भतीजे सैय्यद रुक़्नउद्दीन बिन सैय्यद निज़ामउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को कड़ा का क़ाज़ी मुक़र्रर कर दिया! उसके बाद क़ाज़ी सैय्यद ताजउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह सारी ज़िन्दगी बदायूँ ही मे मुक़ीम रहें और उनकी जो औलाद हुई उसने भी वहीं की बूदोबाश अख़्तियार कर लिया और वो सब इल्म व अमल मे मशहूर हुए! सैय्यद ताजउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह का विसाल बदायूँ मे ही हुआ और वहीं 'सिराजुश्शहीद' मे आपका मज़ार मुबारक मौजूद है! क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन बरनी ने इन से मुलाक़ात का शर्फ़ हासिल किया था और उनके मुताल्लिक़ अपने चश्मदीद तास्सुरात अपनी किताब 'तरीख़ फ़िरोज़ शाही' मे दर्ज किये हैं वो हसब ज़ेल है- "और इन सादात मे से एक बुज़ुर्ग जिनके वजूद मुबारक से इस मुल्क (बदायूँ) को इज़्ज़त व इफ़्तिख़ार हासिल था, सैय्यदउस सादात सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह फ़रज़न्द सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह थें और सैय्यद ताजउद्दीन मौसूफ़ बदायूँ के क़ाज़ियों मे से सैय्यद क़ुतुबउद्दीन सानी के वालिद नामदार और सैय्यद अज़ाउद्दीन के जद् बुज़ुर्गवार थें और बरसहा बरस अवध का मन्सबे क़ज़ा इनके सुपुर्द रहा सुल्तान अलाउद्दीन ने इनको अवध से मुन्तक़िल करके बदायूँ का क़ाज़ी मुक़र्रर किया! सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह बड़े जलीलउल क़द्र सैय्यद थें ज़्यादा तर बुज़ुर्गों और तालिबाने ख़ुदा ने हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह की सूरत मे ख़्वाब मे देखा! हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इनकी शक्ल में नज़र आना इनकी सेहत नसब की पुख़्ता दलील है!

साहिबे किताब तारीख़ फ़रिश्ता ने आपके मुताल्लिक़ यूँ लिखा है- सैय्यद ताजउद्दीन मदनी बिन सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी जो सख़ावत व इल्म और दूसरे कमालात इंसानी मे अपने वक़्त के बेमिसाल शख़्स थें और जो मुद्दतों अवध के मंसब क़ज़ा पर फ़ाएज़ रहें फिर उसके बाद बदायूँ के क़ाज़ी हुए, दीगर सैय्यद रुक़्नउद्दीन बिन निज़ामउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह जो कड़ा के क़ाज़ी थें औसाफ़े हमीदह से आरास्ता थें ख़ुसूसी तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं!

क़ाज़ी सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह- क़ाज़ी सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी बिन क़ाज़ी सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह, अपने वालिद सैय्यद ताजउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह के बाद बदायूँ के क़ाज़ी रहें ज़ोहदो तक़वा, उलूम ज़ाहिरी व बात्नी मे मुमताज़ और अज़ीमत व इस्तक़ामत मे बलन्द पाए रखते थें!

क़ाज़ी सैय्यद अज़ाउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह- क़ाज़ी सैय्यद अज़ाउद्दीन बिन क़ाज़ी सैय्यद क़ुतुबउद्दीन बिन क़ाज़ी सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह अपने वालिद माजिद सैय्यद क़ुतुबउद्दीन के बाद बदायूँ के क़ाज़ी हुए, वो भी अपने बाप दादा के तरह तक़वा तहारत, अदबे शरीअत और दीगर औसाफ़ में मुमताज़ मक़ाम पर थे, चुनांचे इन दोनो के मुताल्लिक़ क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी किताब तारीख़ फ़िरोज़ शाही मे क़ाज़ी सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के ज़िक्र के बाद हसब ज़ेल अलफ़ाज़ लिखे हैं - उन सैय्यद बुज़ुर्गवार यानी सैय्यद ताजउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह के फ़रज़न्द सैय्यद क़ुतुबउद्दीन और पोते सैय्यद अज़ाउद्दीन के एख़लाक करीमाना और मोहासिन औसाफ़ तो इनके मुआसिरीन के चश्मदीद वाक़ेआत है, मज़कूरह सादातकिराम में से हर एक बुज़ुर्गी, इल्म, हिल्म व सख़ावत व तमाम फ़ज़ाएल मे अपनी नज़ीर नही रखते!

क़ाज़ी अमीर सैय्यद शाह रुक्नउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह (जद् सादात-ए-क़ुत्बिया ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर)

क़ाज़ी सैय्यद शाह रुक्नउद्दीन मदनी बिन सैय्यद शाह हसन निज़ामउद्दीन मदनी बिन अमीर कबीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह एक जलीलउल क़द्र शैख़ और आलिम व फ़क़ीह थें, ये वही हैं जिनके मुताल्लिक़ सैय्यद निज़ामउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह के विसाल का ज़िक्र करते हुए अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने हसब ज़ेल दुआएं व कलमात कहे हैं- "वो रहमते ख़ुदा से जा मिलें और अपना एक फ़रज़न्द अरजुमन्द छोड़ा कि इन्शाअल्लाह इसके नस्ल मे और उन रफ़ीक़ों के नस्ल मे जिन्होंने इस्लाम के इस अम्र मे जाँसिपारी की है क़याम-ए-क़यामत और हश्र नश्र के वक़्त तक लग़्ज़िश और ख़लल नही होगी"!

हज़रत सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने परवरिश अपने दादा मोहतरम हज़रत ग़ौसुल आलमीन क़ुतुबुल अक़ताब सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के आग़ोशे रहमत व शफ़क़त मे पाई और तालीम व तरबियत अपने चचा मोहतरम हज़रत सैय्यद शाह क़वामउद्दीन महमूद रहमतउल्लाह अलैह के ख़ुसूसी निगरानी मे देहली जाकर हासिल की थी!

अपने जलालते शान इल्म व अमल और ज़ोहदो तक़वा मे मुमताज़ हैसियत के मालिक थे- क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन बरनी ने इनके कमालात का ज़िक्र अपनी किताब तारीख़ फ़िरोज़ शाही मे तफ़सील से किया है और इनकी बहुत तारीफ़ की है-

अपने अम् नामदार सैय्यद ताजउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह के बदायूँ जाने के बाद सैय्यद रुक्नउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह कड़ा मे मन्सब कज़ात पर फ़ाएज़ हुए, इनके ज़माने मे कड़ा मे एक और साहिबे दिल और साहिबे हाल बुज़ुर्ग 'गर्ग उल्लाह' उर्फ़ कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह थें मशहूर है कि वो अपने जज़्ब की कैफ़ियत से हमेशा बरैहना रहते थें मगर काज़ी सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को देख कर जो कपड़ा मिलता उसको ओढ़ लेते थें और फ़रमाते थे यही एक आदमी है जिसको देख कर मुझे शर्म आती है, और क़ाज़ी साहब भी आपका एहतिराम करते थें और उसकी वजह ये थी कि आपके दादा मोहतरम हज़रत सैय्यदना अमीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने पहले ही अपने कश्फ़ से ये ख़बर दे दी थी के मेरे बाद यहाँ एक फ़क़ीर मज्ज़ूब बइस्म 'गर्ग उल्लाह' होगा उसका लिहाज़ रखना! ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह अमीर सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह को हद दर्जे चाहते थें और एहतिराम करते थें, वो जब भी उनसे मिलते तो कहते थें 'तू वक़्त का सरदार है, तेरी औलाद भी सरदार होंगी' तेरे फ़रज़न्द, मेरे फ़रज़न्दैन हैं, जो कोई उनको तकलीफ़ पहुँचाएगा, उसके हक़ मे अच्छा न होगा!

ख़्वाजा साहब के इन्तक़ाल के बाद उनके जलाल की वजह से किसी को उनकी लाश के पास जाने की जसारत नही होती थी ऐसे मे हज़रत क़ाज़ी सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह ने वहाँ पहुँच कर उनको ग़ुस्ल दिया, कफ़नाया और नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई! ख़्वाजा कड़क शाह अब्दाल रहमतउल्लाह अलैह की दरगाह अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह की दरगाह से थोड़ी दूरी पर है!

मुसन्निफ़ तारीख़ फ़िरोज़ शाही ने हज़रत सैय्यद ताजउद्दीन मदनी और आपके भतीजे हज़रत सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह से मुलाक़ात की सआदत हासिल की थी और एतराफ़ किया था कि इन जैसे रौशन औसाफ़ और इन जैसे इज़्ज़त व हशमत वाले लोग उसने बहुत कम देखे है!

क़ाज़ी ज़ियाउद्दीन बरनी ने अपनी किताब तारीख़ फ़िरोज़ शाही मे हज़रत सैय्यदना रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के मुताल्लिक़ यूँ बयान किया है- सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह जो क़ाज़ी सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के भतीजे है, कड़ा के क़ाज़ी थे, अल्लाह ने आपको हर सिफ़त के साथ पैदा किया था, वो साहिबे कश्फ़ व करामात थें, साहिबे समाअ थें और अजीब वज्द व कैफ़ियत रखते थें, तर्क व तजरीद सख़ावत व एसार मे आपका पाया बहुत बलन्द था, मोअर्रिख़ तारीख़ फिरोज़ शाही ने हज़रत सैय्यद ताजउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह और आपके भतीजे सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी रहमतउलाह अलैह की ज़ियारत और क़दम-बोसी की सआदत हासिल की है, और वो फ़रमाते हैं, मैने ऐसे सादात अज़ाम, ऐसे बलन्द औसाफ़, ऐसी शौक़त और हशमत जो अल्लाह ने इनको नसीब की थी, कम देखे है, सयादत खुलासा मनाक़िब है और जनाब रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से निस्बते फ़रज़न्दी सबसे बड़ा एज़ाज़ है, अगर चाहूँ कि इन सादात और दूसरे सादात जो नूर दीदह मुसतफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और जिगर गोशा मुरतज़ा रज़िअल्लाहु अन्हु हैं की तारीफ़ मे कुछ लिखूँ तो हैरान रह जाता हूँ और अपने अज्ज़ का एतराफ़ करना पड़ता है! आप आख़ीर उम्र तक कड़े मे रहे और कज़ात के मन्सब को रौनक़ अफ़रोज़ करते रहें और वहीं विसाल हुआ!

"बमिस्ल शम्सो क़मर नबीरा क़ुतुबउद्दीन थे
ओहदे कज़ाअत के जलवागर सैय्यद रुक्नउद्दीन थें"

सैय्यद सद्रउद्दीन मदनी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- सैय्यद सद्रउद्दीन मदनी क़ुत्बी बिन काज़ी सैय्यद रुक्नउद्दीन मदनी बिन सैय्यद हसन निज़ामउद्दीन मदनी बिन हज़रत सैय्यद अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह इल्म व फ़ज़्ल और सुलूक़ मआरफ़त दोनो मे दस्तगाह कामिल रखते थे, ज़ोहदो तक़्वा, शुजाअत व सख़ावत, एसार व क़नाअत मे अपने दादा और वालिद के नक्शे क़दम पर थे, अल्लाह ने इनके औलादों मे इतने औलिया व उलेमा पैदा किये कि जिनकी मिसाल दूसरे ख़ानदानों मे चिराग़ लेकर तलाशे तो शायद मिलेगी! आपके नस्ल मुबारक मे सैय्यद फ़ज़्लउल्लाह गोशाएँ जैसे बुज़ुर्ग भी हैं जिन्होंने कड़ा से मुन्तक़िल होकर मोहल्ला 'बारा-दरी' सूबा 'बिहार' मे सुकूनत अख़्तियार कर ली थी और वहाँ इनकी ज़ात मर्जए-ख़लायक बन गई, इनकी छटी पुश्त मे एक बुज़ुर्ग सैय्यद मोहम्मद तक़ी जिनको 'दर्वेश बेरिया' के नाम से याद किया जाता है, अपने अस्र के मशाहिर और साहेब सिलसिला मशाएख़ मे थें, शाह फ़र्ख़ सेर इनका शागिर्द और मुरीद था और इनका सिलसिला इस नवाह मे अबभी बाक़ी है, इनके अलावा सैय्यद शाह मोहम्मद स्वाल्हे क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (जद् सादात क़ुत्बिया फ़तेहपुर) जो सालिक़ मज्ज़ूब और औलियाए कामलीन मे थें फ़तेहपुर मे क़याम किया इनके अलावा अमीर सैय्यद अहमद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने माल्तीपुर (बँगाल) मे क़याम किया और वो कामिल औलिया मे से थें इनके अलावा अमीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन सानी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने जायस ज़िला रायबरेली मे सुकूनत अख़्तियार किया जो औलियाए कामलीन मे थें और जद् सादात क़ुत्बिया कबीरिया जायस नसीराबाद थें इनके अलावा अमीर सैय्यद शाह हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह औलिया अल्लाह मे थें और जद् सादात क़ुत्बिया कबीरिया अइ्वह परगना कड़ा थें! अमीर सैय्यद सद्रउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह की सात्वीं पुश्त मे अमीर सैय्यद शाह इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बहुत जलीलुल क़द्र औलिया अल्लाह हुएं हैं आपने कड़ा से उठकर कोर्रह मे सुकूनत अख़्तियार किया और आपके बेटे हज़रत सैय्यद शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह और इनके बेटे सैय्यद शाह हमज़ा और इनके बेटे सैय्यद शाह अब्दुल रसूल रहमतउल्लाह अलैह भी बहुत जलीलुल क़द्र औलिया अल्लाह हुए है जिनसे एक आलम मुनव्वर रहा है, इस किताब के मुसन्निफ़ को भी इसी शाख़े नूरी से पैदा होने का शर्फ़ हासिल है, इनके अलावा सैय्यद शाह ख़लील क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह जो औलियाए कामलीन मे थें और जद् सादात क़ुत्बिया कबीरिया पाटी गल्ली मानिकपुर थें व सैय्यद शाह फ़ैज़उल्लाह क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह जद् सादात क़ुत्बिया मौज़ा कौराली इलाहाबाद थें, जैसे जलीलुल क़द्र औलिया व उलेमा नज़र आते हैं!

अमीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह की औलाद इनके विसाल सन् (677) हिजरी के दो सौ बीस (220) साल यानी सन् (897) हिजरी मुताबिक़ (1492) ईस्वी अहेद सुल्तान सिकन्दर लोदी तक कड़ा मे इज़्ज़त व नेक नामी की ज़िन्दगी बसर करती रही जिनमे से ज़्यादा तर अफ़राद अपने इल्म व फ़ज़ल और तक़वा व तहारत के बिना पर मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर मन्सबे कज़ा पर यके बाद दीगरे फ़ाएज़ होते रहें हैं!

इस लंबे अर्से मे एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल होने के सबब भले ही ख़ानदाने रिसालत की कुछ अज़ीमत बाक़ी ना रही थी फ़िर भी सादाते क़ुत्बिया को इस क़द्र जाह व हशमत हासिल थी कि हज़ारो मौज़ा बतौर जागीर व माफ़ी इनके क़ब्ज़े मे थी और सात सौ (700) पाल्की नशीन इनके ख़िदमत मे शुमार होते थें!

सादात-ए-क़ुत्बिया का दूसरे मक़ामात के तरफ़ मुन्तक़ली- सन् 897 हिजरी मुताबिक़ 1492 ईस्वी मे कन्तित, माण्डा, जौनपुर और बनारस के आसपास के राजाओं ज़मींदारों ने एक लाख सवार व प्यादह इकठ्ठा कर के कड़ा पर हमला कर दिया और अपनी कसरते तादाद के वजह से ग़ालिब आकर शेर ख़ाँ हाकिमे कड़ा को मार डाला! इस हमला मे हाकिमे कड़ा की फ़ौज के अलावा क़रीब तीन हज़ार सादात-ए-क़ुत्बिया भी शहीद हुए! जब हमलावरों का कड़ा पर मुकम्मल क़ब्ज़ा हो गया तो इन्होंने सादात-ए-क़ुत्बिया से ख़ुसूसी दुश्मनी के बिना पर इनके क़त्ले आम का हुक्म सादिर कर दिया, उस वक़्त उनमे से ज़्यादा तर लोग जान व आबरू के ख़ौफ़ से पोशीदह तौर पर दूर व नज़दीक के मौज़ा मे मुन्तक़िल हो गयें और उनमे से कड़ा मे रह जाने वालों की तादाद कम हो गई!

इसका तफ़्सीली ज़िक्र बहवाला किताब 'ज़हूर क़ुत्बी' ये है कि अमीर कबीर सैय्यद क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह के ज़माना जिहाद मे राजगान जय चंद व मानिक चंद क़ौम राठौर के रजवाड़ो कन्नौज, कड़ा व मानिकपुर पर इनायत ख़ुदावंदी से लशकर इस्लाम को फ़तेह हासिल हुई, और राजगान राठौर को ज़िल्लत के साथ फ़रार होने पर मजबूर होना पड़ा और इनकी रिआया को क़त्ल व ग़ारतगरि व क़ैदो बंद की ज़िल्लत सहनी पड़ी यहाँ तक की इनकी औरतें आम मुसलमानों के क़ब्ज़े मे आईं और इनके बच्चे मामूली लश्करियों के लौंडी ग़ुलाम बने! लिहाज़ा राजगान कन्तित और माण्डा हमेशा सादात-ए-क़ुत्बिया से इन्तक़ाम लेने की सोच मे रहें लेकिन सलातीन इस्लाम की क़ूवत व शौक़त रोज़ बरोज़ बढ़ती रही और वो इन राजाओं से जज़िया व ख़िराज वसूल करके इनपर छाय रहें, लिहाज़ा इन लोगों को मौक़ा नही मिलता था कि वो इन्तक़ाम ले सकें अगरचा अमीर गुरगान के हिंदुस्तान से वापस जाने के बाद ताएफ़अल मलूकी की वजह से अहले इस्लाम को वो शौक़त व सऊलत बाक़ी न रही थी ताहम सलातीन जौनपुर इस क़द्र रोके थामे रहें कि रियासत के हर मुद्दई को उन्होंने अपनी जगह साकिन रखा! काफ़ी अर्सा बाद सलातीन जौनपुर की सल्तनत ख़त्म हो जाने और लोदी ख़ानदान के शहज़ादों और अराकीन सल्तनत की ना इत्तेफ़ाक़ी की वजह से कन्तित व माण्डा के राजाओं को बलवे का मौक़ा हाथ आया और वो राजपूतों की मदद से एक लाख सवार और प्यादह बेशुमार के साथ सादात-ए-क़ुत्बिया से ख़ुसूसी दुश्मनी के बिना पर इनसे इन्तक़ाम लेने और कड़े मे फ़िर से अपनी राजगद्दी क़ायम करने की ग़रज़ से हमलावर हुए! इन राजाओं के हमले की ख़बर पाकर सादात-ए-क़ुत्बिया भी शेर ख़ान और मुबारक ख़ान हाकिमाने कड़ा के साथ शहर से बाहर निकल कर जंग करने लगें और ऐसी दाद शुजाअत देते गयें कि हज़ारहा बलवाई इनके हाथों से वासिले जहन्नम हुए लेकिन हमलावरों की तादाद ज़्यादा होने के सबब तीन हज़ार सादात-ए-क़ुत्बिया अलावा हाकिमाने कड़ा की फ़ौज के दर्जा-ए-शहादत को पहुँचे जब शहज़ादा शेर ख़ान भाई मुबारक ख़ान भी शहीद हुआ तब मुसलमान ताब न ला सकें और मुबारक ख़ान दरियाए गंगा के ज़रिये बहराईच के तरफ़ भाग गया और सादात क़ुत्बिया अपने-अपने घरों मे महसोर हो गयें! दरियाए गंगा पार करते हुए जब मुबारक ख़ान भी राजा शहदेव वालिये ठठ के हाथों गिरफ़्तार हुआ तब राजा माण्डा बिला रोक टोक शहर कड़ा मे दाख़िल हो गया और अपनी आबाई गद्दी को सँभाल लिया और इसको ज़्यादा बढ़ाने की नियत से जौनपुर का मुहासरह कर लिया!(दारानगर कड़ा के दख्खिन जानिब म्योरहा तक जिसक़द्र क़ब्रें हैं वो उसी वक़्त के शहीदों की हैं)! इस हंगामा और बलवे की ख़बर पाकर सुल्तान सिकंदर लोदी ने चौबीस रोज़ के बाद एक लश्करे जर्रार के साथ बलवाईयों से

इन्तक़ाम लेने की ग़रज़ से कड़ा के तरफ़ कूच किया! राजा शह देव वालिये ठठ ने सुल्तानी लशकर की आमद के ख़ौफ़ और इसके दबदबा से घबरा कर मुबारक ख़ान हाकिमे कड़ा को अपनी क़ैद से आज़ाद करके पूरे इकराम के साथ सुल्तान के पास रवाना कर दिया जब लशकर सुल्तानी कड़ा के पास ख़ेमा ज़न हुआ तो राजगाने कन्तित और माण्डा मुक़ाबला पर आयें, बड़े ज़ोर का रन हुआ आख़िर बहुत क़त्लो ग़ारतगरि के बाद सुल्तान मुज़फ़्फ़र व मंसूर हुआ! बलवाई राजगान ज़लील व रुस्वा होकर भाग निकले और क़सीर मालेग़नीमत सुल्तानी लशकर के हाथ आया!

इस हंगामे और ख़लफ़िशार के बाद सादात क़ुत्बिया का दिल कड़ा से उचाट हो गया और उन्होंने कड़ा से उठकर दूर नज़्दीक़ के मौज़ा मे मुस्तक़िल सुकूनत अख़्तियार कर लिया! अपनी बुज़ुर्गी और कमालात की वजह से वो वहाँ बहुत मशहूर और मारूफ़ हुएं! हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह की दसवीं पुश्त मे हज़रत सैय्यदना शाह मोहम्मद इस्माईल क़ुत्बी रहमतउलाह अलैह ने कड़ा से उठकर कोर्रह सादात मे मुस्तक़िल सुकूनत अख़्तियार कर लिया!

कोर्रह सादात की मुख़्तसर तारीख़- बाज़ मोअर्रिख़ ये बयान करते है कि हंगाम तशरीफ़आवरी हज़रत सैय्यदना अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी रहमतउल्लाह अलैह की इस मौज़ा मे अहले ख़ानदान राजा जय चंद राठौर के कोई जागीरदार अहले क़िला था जो थोड़ी सी लड़ाई के बाद मख़ज़ूल व मक़तूल हुआ (उस वक़्त के शहीदों के मक़ाबिर पश्चिम जानिब अब तक मौजूद हैं) तब से लेकर ज़माना सिकंदर लोदी बादशाह तक ये मौज़ा सादात क़ुत्बिया के जागीर मे रहा और शुमाली सारे देहात तक़सीम मे हज़रत सैय्यदना मोहम्मद इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के क़ब्ज़े मे आया!

सैय्यदना शाह मोहम्मद इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह-

''रौशन थी इनसे इस्लाम की ईमान की क़न्दील

इस्म मुबारक था जिनका सैय्यद शाह इस्माईल''

हज़रत सैय्यदना शाह इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने कड़ा से उठकर कोर्र्ह सादात मे तरह अक़ामत की डाली और उस ख़ित्ते को अपने नूर बातिन से फ़ैज़याब किया, आप औलियाए कामलीन मे थे और सरहलका-ए-मशाएख़ कबारू सरगिरोह सिलसिलाए कबीर क़ुत्बिया मुरीद और ख़लीफा थें! आपका सिलसिला-ए-बैअत व नसब इस तरह है- हज़रत सैय्यद शाह मोहम्मद इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह लाड क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह राजे क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत शाह सैय्यद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह मूसा क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह ज़ियाउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह क़यामउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह सद्रउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह रुक़्नउद्दीन मदनी रहमतउलाह अलैह बिन हज़रत सैय्यद शाह निज़ामउद्दीन हसन रहमतउल्लाह अलैह बिन हज़रत ग़ौसुल आलमीन क़ुतुबउल अक़ताब सैय्यदना क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह! नक़्ल है कि रियाज़त व मुजाहिदात नफ़्सी यहाँ तक की कि हंगाम अज़ीमत हरमैन शरीफ़ैन ज़ादहमाउल्लाह शरकन अपने घर से एहराम हज बान्धा और उसी एहराम से ज़ियारत मक्का मोअज़्ज़मा से मुशर्र्फ़ हुए! आपके एक फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना जलालउद्दीन जलाल रहमतउल्लाह अलैह हुए! आपका विसाल कोर्र्ह सादात मे ही हुआ और वहीं आपका मज़ार मुबारक मर्जा-ए-ख़लायक है!

''ज़माना मुत्तफ़िक़ है इनके हर अक़वाल का

बजा लाते हैं तकरीम औलिया भी जलालउद्दीन जलाल का''

सैय्यदना शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह- हज़रत सैय्यदना शाह मोहम्मद इस्माईल रहमतउल्लाह अलैह के फ़रज़न्द और ख़लीफ़ा रशीद अमीर सैय्यद शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह आलिम आमिल फ़ाज़िल कामिल मुत्तक़ी जलीलुलक़द्र सज्जादा नशीन आस्ताना आलिया क़ुत्बिया कबीरिया कोर्रह सादात हुए और अपने रुश्दो इरशाद व नूर बातिन से एक आलम को मुनव्वर फ़रमाया! मज़ार मुबारक आपका गोशा पश्चिम व दख्खिन आबादी कोर्रह सादात के वाक़े है और अहले निस्बत उनके मज़ार पुर अनवार से फ़ैज़याब होते आयें है! आपके मज़ार मुबारक पर एक पत्थर नस्ब था जिसपर आपके कहे हुए अशआर नुमाया थे वोह ये हैं- ***درودم رسانم درود، بیاے بیایم رگنبد ضرور، مرا زندہ پندار با خوےشتن، من ایم بجان گر تو آئی با تن***

मज़ार मुबारक हज़रत सैय्यद शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

औलाद मुबारक- आपके तीन फ़रज़न्द सैय्यद शाह मोहम्मद अकबर, व सैय्यद शाह मोहम्मद जहाँ व सैयद शाह हमज़ा रहमतउल्लाह अलैह हुए!

सैय्यद मोहम्मद अकबर- ये पिसर अकबर हज़रत सैय्यद शाह जलालउद्दीन जलाल हैं तबियत इनकी हमेशा ग़ज़नफ़री के तरफ मायल रही! इनकी औलाद बसिलसिला फ़ौज क़ुतुब शाह और आदिल शाह मुन्तज़िम होकर क़िला कुशाई करतें रहें और जो भी इनके नस्ल से हुएं शुजाअत व तहूर में यकताए अस्र रहें हैं! मुसन्निफ़ इस किताब की जद्ह सैय्यदा सेहतुन्निसा बीबी की दादी सैय्यदा ज़ीनत बीबी इसी नस्ल से थीं!

सैय्यद मोहम्मद जहां- पिसर सानी हज़रत सैय्यद शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी ज़मींदारी के तरफ़ मायल हुएं लिहाज़ा ये और इनकी औलाद बतरीक तालुक़दारां और आमलान शाही से लड़ते भिड़ते रहें और चंद मर्तबा राजगान असोथर से लड़ें और मुज़फ़्फ़र व मंसूर हुएं! इस शाख़ की औलादे पिसरी (बेटें) कोई बाक़ी न रही मगर औलादे दुख़्तरी से मुसन्निफ़ की जद्ह सैय्यदा सेहतुन्निसा बीबी के दादा मोहतरम हज़रत सैय्यद हैदर क़ुत्बी (रईसे कड़ा) थें!

हज़रत सैय्यदना शाह हमज़ा रहमतउल्लाह अलैह- पिसर असग़ार सैय्यदना जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह इक़्तसाब इल्म ज़ाहिर व मुजाहिदात नफ़्सी से फ़ारिग़ होकर बैअत व ख़िरका ख़लाफ़त अपने पिदर बुज़ुर्गवार से हासिल किया लिहाज़ा उनके विसाल के बाद सज़ावार सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-आलिया क़ुत्बिया कबीरिया क़रार पायें और मस्नदे इरशाद पर बैठकर ताहयात अपने इल्म व नूर ज़ाहिर व बातिन से आलम को मुनव्वर फ़रमाया और जब आपका विसाल हुआ तो आपके फ़रज़न्द अरजुमन्द हज़रत सैय्यद शाह अब्दुल रसूल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने मस्नदे इरशाद को मुनव्वर फ़रमाया आप भी अपने आबो जद् की तरह औलियाए कामलीन मे से थें इलाहाबाद और फ़तेहपुर के बीच रसूलाबाद रेल्वे स्टेशन आपही के नाम से मौसूम है!

हज़रत सैय्यदना शाह अब्दुल रसूल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के विसाल के बाद मस्नदे इरशाद को आपके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यद शाह पीर मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने रौशन किया और आपके बाद आपके फ़रज़न्द सैय्यदना मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने और उनके बाद उनके फ़रज़न्द अरजुमन्द सैय्यदना ग़ुलाम मीर क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने और उनके बाद उनके फ़रज़न्द हज़रत सैय्यदना शाह फ़तेह मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह अबाअन जद् यके बाद दीगरे मुहि तरीक़ा आबाई के रहें!

चूंकि हज़रत मीर सैय्यद शाह फ़तेह मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह की पहली ज़ौजा से कोई औलाद न हुई तो आपने दूसरा निकाह बक़ाए नाम व नसब सैय्यदा बोंदी बीबी बिन्त सैय्यद शाह रुक़्नउद्दीन क़ुत्बी से फ़रमाया जिनसे आपके दो फ़रज़न्द सैय्यद शाह मोहम्मद हाशिम रहमतउल्लाह अलैह और सैय्यद शाह मोहम्मद अली पैदा हुए! अभी इनकी तालीम व इल्म ज़ाहिर व बातिन और दाख़िल बैअत और ख़लाफ़त नही पहुँची थी कि हज़रत सैय्यद शाह फ़तेह मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह का विसाल हो गया लिहाज़ा बाद उनके सैय्यद शाह मोहम्मद हाशिम रहमतउल्लाह अलैह ने सैय्यद शाह इब्राहीम से जो औलाद हज़रत सैय्यदना राजे हामिद शाह गरदेज़ी मानिकपुरी से थे सिलसिला-ए-चिश्तिया मे बैअत और ख़िरका-ए-ख़लाफ़त हासिल किया!

चूंकि सैय्यद शाह फ़तेह मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह अहले दौलत व जागीर थे इसलिये सैय्यद शाह मोहम्मद अली व सैय्यद शाह हाशिम क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के हिस्से मे काफ़ी रुपय और माफ़ी आई लेकिन इस रुपय और माफ़ी ने सैय्यद मोहम्मद अली को कोई नफ़ा न दिया और वोह कुछ ही अर्सो मे ख़स्ता हालत हो गयें वही सैय्यद शाह हाशिम रहमतउल्लाह अलैह को इस दौलत और माफ़ी से बहुत नफ़ा पहुँचा और उस दौलत मे मज़ीद इज़ाफ़ा होता चला गया और मौज़ा उसरैना परगना हँसवाह कि जो बरसरे सड़क कलाँ कोर्रह सादात से तीन मील है आपकी जायदाद मे रहा!

हज़रत सैय्यद शाह मोहम्मद हाशिम क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह बहुत सख़ी दरिया दिल और ग़रीबपर्वर थे, कई सौ रुपय सालना सर्फ़ हस्नात करते रहें, आप बहुत जाह-हशम के मालिक थे नक़्ल है कि जब आपने अपनी दुख़्तर सैय्यदा बीबी बोबोधिया की शादी सैय्यद बशीर अली ताल्लुक़ेदार पट्टी शाह (जो औलाद मख़्दूम सैय्यदना जहानिया जहाँगश्त रहमतउल्लाह अलैह मे से थे) से किया तो क़ब्ल इसके कि बारात दरवाज़े पर पहुँचे अलावा जहेज़ के कुल सर्फ़ बारात का बीच राह मे सैय्यद बशीर अली के पास भेज दिया! जब नवाब शुजाउद्दौला बहादुर और गवर्नमेंट इँग्लिशिया(english government) के दर्मियान सुलह हुई तो सैय्यद शाह मोहम्मद हाशिम रहमतउल्लाह अलैह की जायदाद ज़ब्त होकर ख़ालसा हो गई!

हज़रत सैय्यद शाह मोहम्मद हाशिम क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह की शादी बीबी सैय्यदा सायरह बिन्त सैय्यद शाह अलीमउल्लाह क़ुत्बी से हुई थी जिनसे आपके दो फ़रज़न्द सैय्यद शाह अली बख़्श क़ुत्बी और सैय्यद शाह करीम बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह और चार दुख़्तर बीबी सैय्यदा ज़राब, बीबी सैय्यदा बोबोधिया, बीबी सैय्यदा सबीहुन्निसा और बीबी सैय्यदा दौलतुन्निसा हुई!

सैय्यद अली बख़्श देहली मे जाकर बवजह सयादत क़ौम शिया मे वाजिबुलताज़ीम हुए और उन्हीं के सोहबत मे रहकर अहले एतबार मज़हब शिया के हो गयें! जब वहाँ से बाद हुसूले इल्म वतन वापस लौटे तो उस मज़हब की इशाअत शुरु करदी, अक्सरों ने उस मज़हब को अख़्तियार किया मगर हज़रत सैय्यद शाह हाशिम रहमतउल्लाह अलैह ने बमुआएना उनके इशाअत अपने पोते सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह पिसर सैय्यद शाह करीम बख़्श रहमतउल्लाह अलैह (जो जद् इस मुसन्निफ़ के हैं) को हुसूल-ए-इल्म के लिये मौलवी बुरहानउद्दीन साहेब रईस देवा परगना ज़िला नवाबगँज बाराबँकी के पास भेज दिया और इस वजह से सिवाय हज़रत सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के कोई शख़्स उस बस्ती मे अहले तसनीन पर क़ायम न रहा!

सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के वालिद माजिद हज़रत सैय्यद शाह करीम बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह निहायत मुत्तक़ी परहेज़गार इबादतगुज़ार सख़ी और ग़नी बुज़ुर्ग थें आपका विसाल भी अपने आबाई ग़ाँव कोर्रह सादात मे ही हुआ! आपकी शादी बीबी सैय्यदा सेहतुन्निसा बिन्त सैय्यद शाह ज़ियाउल्लाह क़ुत्बी से हुई जिनसे आपके सिर्फ़ एक फ़रज़न्द सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह हुएं!

सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने बाद हुसूल-ए-इल्म चालीस बरस तक बाँदा मामूर रहकर लाखों रुपय पैदा करके सर्फ़ हसनात किये जिसकी शोहरत हमेशा हर जवार मे रही है!

नक़ल है कि नवाब फ़ज़ल अली ख़ान एतमातुद्दौला बलवा ख़ज़ाह सुल्तानी लखनऊ से फ़रार होकर एक महीने तक सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के मेहमान रहें और मरासिम मेहमान नवाज़ी हसब शान उनके अदा किये गयें! जब नवाब साहब फिर ओहदा वज़ारत पर मामूर किये गयें तो बग़र्ज़ अताए ओहदा सफ़ारत सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी को लखनऊ तलब किया और सैय्यद मेहन्दी अली ख़ान के ख़िताब से नवाज़ा अभी नौबत अताए ख़लअत सफ़ारत न आई थी कि नवाब साहब और बादशाह नसीरउद्दीन हैदर के दरमियान जंग छिड़ गई और नवाब फ़ज़ल अली ख़ान उर्फ़ एतमातुद्दौला इस जहान से गुज़र गयें तब सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह वहाँ से आकर बओहदा वकालत ज़िला फ़तेहपुर मामूर हुएं! आप निहायत मुत्तक़ी परहेज़गार आबिद और ज़ाहिद थें अपने दौलत को हमेशा ख़ुदा के राह मे ख़र्च करते रहें और अपने इसलाफ़ के जानशीन हुएं, आपने तीन मोहर्रमुल हराम 1259 हिजरी मे इस दुनियाए फ़ानी को अलविदा कहा और अपने आबाई क़ब्रस्तान और अपने आबाई वतन कोर्रह सादात मे सुपुर्दे ख़ाक हुएं!

आबाई कब्रस्तान सादात-ए-क़ुत्बिया (कोर्रह सादात ज़िला फ़तेहपुर)

हज़रत सैय्यद शाह मेहन्दी बख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने दो शादियाँ फ़रमाई थी पहली ज़ौजा सैय्यदा सबीहा फ़ातिमा बिन्त हाफिज़ सैय्यद बरकत अली से हुई जिनसे सिर्फ़ एक दुख़्तर सैय्यदा ग़फूरुन्निसा हुईं तो आपने दूसरी शादी सैय्यदा बीबी रहीमुन्निसा बिन्त सैय्यद शाह नासिर अली क़ुत्बी से फ़रमाया जिनसे चार फ़रज़न्द 1-सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद मानिकपुरी रहमतउल्लाह अलैह (मुसन्निफ़ तारीख़ आईना-ए-अवध) 2-सैय्यद शाह मोहम्मद इस्माईल क़ुत्बी 3-सैय्यद शाह अबुनस्र क़ुत्बी 4-सैय्यद शाह अबुल मुज़फ़्फ़र क़ुत्बी और एक दुख़्तर सैय्यदा बीबी रुक़य्या हुईं! (चूंकि मुसन्निफ़ इस किताब का ताल्लुक़ औलाद हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद मानिकपुरी से रखता है तो ज़िक्र यहाँ अपने जद् अमजद का करेगा बाक़ी और भाईयों का तफ़्सीली ज़िक्र तज़किरह सादात-ए-क़ुत्बिया अज़ सैय्यद तुफ़ैल अहमद क़ुत्बी मदनी साहब मे है जिन क़ारीनकिराम को उससे दिलचस्पी हो वोह उस किताब का मुताला करें)

हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी (शहीद) रहमतउल्लाह अलैह जद् सादात क़ुत्बिया ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर ज़िला प्रतापगढ़ -

''ख़ूब जाह-हश्म था इन्होंने पाया
हासिदो ने इसी सबब था क़त्ल करवाया
ख़ुदा ने इन्हें हयाते जाविदाँ अता फ़रमाया
दुनिया मे नाम इनका अबुलहसन कहलाया''

पैदाइश- हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह की पैदाइश अपने आबाई गाँव कोर्रह सादात ज़िला फ़तेहपुर मे हुई!

नाम व नसब- आपके वालिद ज़ीवक़ार ने आपका नाम अबुल हसन रखा, आपका सिलसिला-ए-नसब इक्कीसवीं पुश्त मे हज़रत सैय्यदना क़ुतुबउल अक़ताब अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह से जा मिलता है!

हालाते ज़िन्दगी- आप अपने भाई बहनों मे सबसे बड़े थें! आपके वालिद माजिद का इन्तक़ाल आपके नौ उम्री मे हो गया था जिसके सबब घर की तमामतर ज़िम्मेदारी आपही के सर पर आगई जिसे आपने बतरीक़े हसन सरअंजाम दिया! एक अर्से तक आप अपने आबाई गाँव कोर्रह सादात मे मुक़ीम रहें फिर तर्क वतन करके कस्बा मानिकपुर ज़िला प्रतापगढ़ जा बसे! आप वजीह, वज़ादार, बवक़ार शख़्सियत के हामिल होने के साथ-साथ हुक्काम मे बरसूख़ थें और ज़ीइल्म अफ़राद मे शुमार किये जाते थें! लखनऊ मे राजा बलरामपुर के जायदाद के एक अर्से तक मैनेजर रहें! डिप्टी कमिश्नर गोण्डा डब्लू.ए.फ़ार्ब्स (W.A.FORBS) के फ़रमाइश पर तारीख़ आईना-ए-अवध तरतीब दी जिसमे सादात क़ुत्बिया की तफ़्सीलात और दीगर मालूमात इस तरह तरतीब दिया कि नसब नामों और शजरों मे ये एक तारीख़ी अहमियत की हामिल है!

मुसन्निफ़ "नुज़हतुल ख़्वातिर" हकीम अब्दुल हई हसनी रायबरैल्वी साहब ने अपनी किताब मे हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह का ज़िक्र किया है और उनकी बहुत तारीफ़ किया है!

हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह को अल्लाह ने बेहद दौलत और इज़्ज़त अता फरमाया और आप क़सीर जायदाद के मालिक थें लेकिन इसी के साथ साथ ग़रीबपर्वर और अपनी रिआया के हालात से बख़बर रहते थें! मशहूर है कि आप रात मे गश्त करते थें और जिनको मुफ़लिस और ख़स्ता हाल पाते उसका वज़ीफा मुक़र्रर कर देते, मण्डी का भाव अगर ज़्यादा होता तो आप उसे कम करवा देते थें! ग़रीबों से सुलह रहमी करते और जाबिरों से सख़्ती से पेश आते थें! आपके वक़्त मे ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर को बहुत शोहरत हासिल थी एक-एक वक़्त मे कई कई ख़ादिम और ख़ादमाएं हर वक़्त मौजूद होते थें, आप बग्घी से चलते थें और मानिकपुर उसके गिर्दोनवाह मे कोई आपका हमपल्ला न था इस सब जाह-हश्म के साथ साथ आप निहायत इबादत गुज़ार शबज़िन्दादार आबिद और ज़ाहिद शख़्सियत थें! सर सैय्यद अहमद ख़ान आपके दोस्तों मे थे और आप ही अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के बुनियादी ख़ाका डालने वालों मे थें! आपका शुमार आज़ादी की तहरीक चलाने वालों मे भी था और आप पीर-ज़ादा, रईस-ज़ादा मानिकपुर के नाम से मारूफ़ थें! इन सब एज़ाज़ इकराम और जाह-हश्म के सबब कुछ हासिदाने मानिकपुर ने आप से बुग्ज़ और इनाद के सबब कड़े के क़ातिलों को बुलवा कर कि जब आप अपने ख़लवतगाह मे आराम फ़रमां थे क़त्ल करवा दिया! मशहूर है कि जब क़ातिलों ने आप पर भरपूर वार किया और ये सोचा कि आपका काम तमाम हो गया, तो वो लौटने लगें लेकिन अभी आपमे जान बाक़ी थी, उसी वक़्त आपने उनसे फ़रमाया कि मैने सब को पहचान लिया है किसी को पानी का डूबा ना बचने दूंगा, इसपर

क़ातिलों ने फिर से उनपर ऐसा वार किया कि आप मर्तबे शहादत पर फ़ाएज़ हुएं! ज़ालिमों ने आपके जिस्म को कई हिस्सों मे तक़सीम कर दिया था जिसे बड़ी हिफ़ाज़त से एक कटैहरे मे रखकर सुपुर्दे ख़ाक किया गया!

मज़ार मुबारक- हज़रत सैय्यदना शाह अबुल हसन क़ुत्बी हसनी अल हुसैनी रहमतउल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ख़ज़ीरह पीर शाह अब्दुल करीम चिश्ती रहमतउल्लाह अलैह मे है जो अन्दरून ख़ानकह शरीफ़ मानिकपुर है!

मज़ार मुबारक हज़रत पीर शाह करीम चिश्ती हुसामी रहमतउल्लाह अलैह ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर
(आप औलाद मख़दूम मानिकपुर हज़रत शाह हुसामउद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह में हैं)

शज्रा-ए-नसब हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर ज़िला प्रतापगढ़

हुज़ूर पुर नूर शहनशाहे कुलकौनैन जनाब मोहम्मदे अरबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम (मदीना मुनव्वरा)

मौला-ए-कायनात जनाब हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाह तआला अन्हु (नजफ़े अशरफ़)

शहज़ादी-ए-आलमीन जनाब सैय्यदा फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाह तआला अन्हा (जन्नतुल बक़ि)

इमाम-ए-मुत्तक़ीन, फ़रज़न्दे बतूल, हज़रत हसन मुजतबा अलैहिस्सलाम (जन्नतुल बक़ि)

सानी-ए-मुजतबा, शहज़ादा-ए-इमाम हसन, हज़रत हसन मुसन्ना रज़िअल्लाह तआला अन्हु (जन्नतुल बक़ि)

नबीरह इमाम हसन मुजतबा, नवासा-ए-इमाम हुसैन शहीदे करबला, हज़रत अब्दुल्लाह अल महज़ रज़िअल्लाह तआला अन्हु (ईराक़)

इमाम-ए-मुत्तक़िया हज़रत सैय्यदना नफ़्से ज़किया रज़िअल्लाह तआला अन्हु (अहजाज़-अल-ज़ैत)

शहीद-ए-सिंध जनाब सैय्यदना अब्दुल्लाह अल अशतर उर्फ़ अब्दुल्लाह शाह ग़ाज़ी रहमतउल्लाह अलैह (जद् सादात-ए-क़ुत्बिया) (क्लिफ़्ट्न कराँची पाकिस्तान)

फ़रज़न्द सैय्यदना अल अशतर, हज़रत सैय्यदना मोहम्मद अल असग़र रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना अवरुलजव्वाद नक़ीब-ए-कूफ़ा रहमतउल्लाह अलैह (कूफ़ा)

हज़रत सैय्यदना अबी मोहम्मद अब्दुल्लाह रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना क़ासिम रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना अबु जाफ़र रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना हुसैन अल-मकनी बाबुल हसन रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना हसन रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना ईसा रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना यूसुफ़ रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना रशीदउद्दीन अहमद मदनी अल ग़ज़नवी रहमतउल्लाह अलैह (मदीना मुनव्वरा)

हज़रत सैय्यदना ग़ौसुल अलमीन क़ुतुबुल अक़ताब शैख़ुल इस्लाम क़दवतुल अइम्मतुलकिराम अमीर कबीर क़ुतुबउद्दीन मदनी हसनी अल हुसैनी अल कड़वी रहमतउल्लाह अलैह (फ़ातेह कड़ा,जद् सादात-ए-क़ुत्बिया हिंदुस्तान) (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना अमीर हसन निज़ामउद्दीन मदनी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना अमीर रुक़्नउद्दीन मदनी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (नवासा सुल्तान मसऊद ग़ज़नवी इब्न सुल्तान महमूद ग़ज़नवी) (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना अमीर सद्रउदीन मदनी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना अमीर क़यामउदीन मदनी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना अमीर ज़ियाउद्दीन मदनी क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना मूसा क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना शाह सैय्यद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना शाह राजे क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना शाह लाड क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कड़ा शरीफ़)

हज़रत सैय्यदना शाह इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (जद् सादात-ए-क़ुत्बिया कोर्रह सादात) (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह जलालउद्दीन जलाल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह हमज़ा क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह अब्दुल रसूल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह पीर मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह ग़ुलाम मीर क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह फ़तेह मोहम्मद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह मोहम्मद हाशिम क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह करीमबख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यदना शाह मेहन्दीबख़्श क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह (कोर्रह सादात)

हज़रत सैय्यद शाह अबुलहसन क़ुत्बी (शहीद) मानिकपुरी रहमतउल्लाह अलैह (जद् सादात-ए-क़ुत्बिया ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर) (मुअर्रिख़ तारीख़ आईना-ए-अवध) (मानिकपुर)

औलाद हज़रत शाह अबुल हसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह-

हज़रत सैय्यद शाह अबुलहसन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह ने कई शादियां फ़रमाई थी जिनमे दूसरी शादी आपने सैय्यदा हाजरह बीबी बिन्त शाह मोहम्मद मोहसिन चिश्ती इब्न शाह ग़ुलाम चिश्ती मानिकपुरी से फ़रमाई जिनसे तीन साहबज़ादे (1) सैय्यद शाह सईदउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ (मुल्लन मियां) (2) सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ (ज़क्कू मियां) (जद् मुसन्निफ़) व (3) सैय्यद शाह मोहम्मद अय्यूब क़ुत्बी उर्फ़ (राजा मियां) और एक दुख़्तर सैय्यदा वजीहुन्निसा बीबी हुईं जो शाह अबुलहसन रहमतउल्लाह अलैह के हक़ीक़ी भतीजे सैय्यद शाह बद्रुल हुदा क़ुत्बी इब्न सैय्यद शाह अबुनस्र क़ुत्बी को बियाह गई!

(1) सैय्यद शाह सईदउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुल्लन मियां- आप साहिबे इल्म नेक और दीनदार शख़्स थें, अरबी की तालीम मुख़्तलिफ़ मदरसों से हासिल किया और चचा हज़रत सैय्यद शाह मोहम्मद इस्माईल क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-आलिया हुसामिया करीमिया क़ुत्बिया के बाद सज्जादा नशीन हुएं! इनके सिर्फ़ एक दुख़्तर सैय्यदा सुलैमा ख़ातून बीबी हुई!

(2) सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ ज़क्कू मियां- (मुसन्निफ़ के परदादा) आप निहायत ख़ूबसूरत थें और साहिबे इल्म थें निहायत इबादत गुज़ार, शबज़िन्दादार आबिद और ज़ाहिद बुज़ुर्ग थें अपने ज़रूरी काम को सरअन्जाम देने के अलावा ख़ानकाह शरीफ़ से बाहर क़दम तक न रखते थें, आपको परिंदों से बहुत लगाव था! अल्लाह ने आपको आपके नाम की सिफ़त भी अता किया, आप ज़िक्रो अश्कार मे मसरूफ़ रहने वाले इबादत इलाही मे कोशा रहने वाले और ग़रीबो से सुलह रहमी करने वाले बुज़ुर्ग थें! अल्लाह ने जाह-हश्म के साथ साथ सीरत और सूरत हर कुछ अता फ़रमाया था! आप अपने बड़े भाई सैय्यद शाह सईदउद्दीन क़ुत्बी के बाद सज्जादा नशीन ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर हुएं और मस्नदे इरशाद को आरास्ता और पैरास्ता किया! आपकी शादी सैय्यदा हबीबुन्निसा बीबी बिन्त शाह अब्दुल समद बिन शाह अब्दुल क़ादिर हुसामी अहले ख़ानदान मख़दूम सैय्यदना हुसामउद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह से हुई जिनसे तीन फ़रज़न्द (1) हज़रत सैय्यद शाह जुनैद अहमद क़ुत्बी उर्फ़ जुन्नू मियां (2) हज़रत सैय्यद शाह इसरार अहमद क़ुत्बी उर्फ़ इस्सू मियां और (3) हज़रत सैय्यद शाह मोहिउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ छोटे मियां (मुसन्निफ़ के दादा मोहतरम) और एक दुख़्तर सैय्यदा हुबैरह ख़ातून बीबी हुईं जो जायस के सज्जादा नशीन हज़रत सैय्यद शाह हुज़ूर अशरफ़ जायसी रहमतउल्लाह अलैह को बियाह गईं जिनसे हज़रत सैय्यद शाह जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह जैसे मादरज़ात वली पैदा हुएं!

(1) सैय्यद शाह जुनैद अहमद क़ुत्बी उर्फ़ जुन्नू मियां- नेक स्वाल्हे और दीनदार शख़्स थें अपने वालिद सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के बाद सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-आलिया हुसामिया करीमिया क़ुत्बिया के हुएं! आपकी शादी अपने ताया सैय्यद शाह सईदउद्दीन क़ुत्बी (उर्फ़ मुल्लन मियां) की दुख़्तर सैय्यदा सुलैमा ख़ातून बीबी से हुई जिनसे तीन फ़रज़न्द (1) सैय्यद शाह वजीह अहमद क़ुत्बी उर्फ़ बस्सन मियां (2) सैय्यद शाह उबैद अहमद क़ुत्बी उर्फ़ उब्बन मियां व (3) सैय्यद शाह इरफ़ान अहमद क़ुत्बी उर्फ़ मुन्नू मियां और दो दुख़्तर सैय्यदा शमीमा ख़ातून (ज़ौजा) सैय्यद मुबीन अशरफ़ व सैय्यदा नसीमा ख़ातून (ज़ौजा) सैय्यद तुफ़ैल अहमद मदनी क़ुत्बी हुई!

(1) सैय्यद शाह वजीह अहमद क़ुत्बी उर्फ़ बस्सन मियां- ये अपने अहलो अयाल के साथ पाकिस्तान मुन्तक़िल हो गयें और ख़ूब दौलत और नाम कमाया और करॉंची (क्लिफ़टन) पाकिस्तान मे अब भी मुक़ीम हैं! इनके बेटे सैय्यद नूर पाकिस्तान के जाने माने (FILM AND ADVERTISEMENT PRODUCER) हैं!

(2) हज़रत सैय्यद शाह उबैद अहमद क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह उर्फ़ उब्बन मियां- निहायत नेक स्वाल्हे, आबिद ज़ाहिद और अपने वालिदैन की दूसरे भाईयों से ज़्यादा ख़िदमत करने वाले और अपने अज़ीज़ों से मोहब्बत करने वाले वली सिफ़त शख़्सियत थें,

आप अपने वालिद के बाद सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-आलिया हुसामिया करीमिया क़ुत्बिया हुएं और ताहयात ख़ानकाह शरीफ़ मे रहें और बहुत कम उम्री मे विसाल फ़रमाया और ख़ज़ीरह पीर अब्दुल करीम चिश्ती मे दफ़्न हुएं! आपकी शादी सैय्यदा आबिदा ख़ातून बीबी बिन्त सैय्यद शाह हुज़ूर अशरफ़ जायसी से हुई, जो अपने नाम के तरह निहायत इबादत गुज़ार और शबज़िन्दादार ख़ातून थीं जो सारी सारी रात ख़ुदा की इबादत मे गुज़ार देतीं हत्ता कि जिस मुसल्ले पर आप इबादत करती थीं उसपर आपके क़दमों और हाथों के निशान बन गये थें! आपने अपनी पूरी ज़िन्दगी मे ख़ानकाह शरीफ़ की चौखट तक न लांगी और शौहर परस्ती मे आपके पाए बहुत बलन्द थें (मुसन्निफ़) ने ख़ुद इनके आग़ोशे रहमत मे परवरिश पाई है और इनसे इसे ख़ुसूसी लगाव रहा है अल्लाह इनकी और तमाम सादात क़ुत्बिया के बुज़ुर्गों की मज़ार को अपने नूर से रौशन फ़रमाए...आमीन! आपके सिर्फ़ एक फ़रज़न्द सैय्यद शाह हसीब अहमद क़ुत्बी हुएं!

सैय्यद शाह हसीब अहमद क़ुत्बी- नेक स्वाल्हे और दीनदार शख़्स हैं और अपने वालिद माजिद के बाद सज्जादा नशीन आस्ताना-ए-आलिया हुसामिया करीमिया क़ुत्बिया हुएं ख़ानदान के जितने भी तबर्रूख़ात जो इस ख़ानदान मे सिलसिला-दर-सिलसिला बाप दादा से चले आ रहें हैं इन्हीं के पास मौजूद है जिसमे बिलख़ुसूस ख़त मुबारक हुज़ूर पुर नूर जनाब मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम है जो आपने सुल्तान मकोकश के पास भेजा था दूसरा हज़रत अली शेरे ख़ुदा रज़िअल्लाह तआला अन्हु की टोपी मुबारक और पीर हज़रत करीम चिश्ती रहमतउल्लाह अलैह का असा मुबारक है जो क़ाबिले ज़ियारत है इसके अलावा और बहुत से तबर्रुख़ात मौजूद है जो इस ख़ानवादा-ए-आलिया से इन्हें हासिल हुआ है! इनकी शादी राना बीबी जो अइहापुर से ताल्लुक़ रखती हैं से हुई जिनसे तीन फ़रज़न्द सैय्यद शाह अज़्मी अहमद क़ुत्बी व सैय्यद शाह कशफ़ी अहमद क़ुत्बी व सैय्यद शाह उवैस अहमद क़ुत्बी और एक दुख़्तर सैय्यदा आएशा क़ुत्बिया हुई हैं!

सैय्यद शाह अज़्मी अहमद क़ुत्बी- ये हुसूले इल्म के बाद मर्चेण्ट नेवी (merchant navy) मे मुलाज़िम है! इनकी शादी सैय्यदा उरूज फ़ातिमा बिन्त सैय्यद वकील अशरफ़ से हुई है जिनसे अभी सिर्फ़ एक बेटी है!

सैय्यद शाह कशफ़ी अहमद क़ुत्बी- इन्होंने माशाअल्लाह ख़ूबसूरती अपने बाप दादा की पाया है और नेक शरीफ़ भी हैं, तालीम हासिल करने के बाद सरकारी बैंक मे मुलाज़मत अख़्तियार करली है! इनकी शादी सैय्यदा सरवत फ़ातिमा बिन्त सैय्यद शाह मौसूफ़ अशरफ़ बसखारवी (मरहूम) से अभी चंदमाह पहले हुई है!

सैय्यद शाह उवैस अहमद क़ुत्बी- ये माशाअल्लाह काफ़ी मोहब्बती शख़्स हैं अपने अज़ीज़ों से मोहब्बत करना इन्हें बख़ूबी आता है, और दीन से भी ख़ासा लगाव रखते हैं ख़ानदानी शजरात मे भी काफ़ी मालूमात है, इनके वालिद ने इन्हें अपना जानशीन चुन लिया है और इनकी ताजपोशी और रस्म सज्जादगी भी हो चुकी है जिसमे मुसन्निफ़ ने शिरकत किया था जो उर्स हज़रत पीर अब्दुल करीम चिश्ती रहमतउल्लाह अलैह के दौरान हुआ था! अल्लाह इनको इनके इस काम मे साबित क़दम रखे आमीन!

(3) सैय्यद शाह इरफ़ान अहमद क़ुत्बी उर्फ़ मुन्नू मियां- ये सैय्यद शाह जुनैद अहमद क़ुत्बी के सबसे छोटे फ़रज़न्द थें चूंकि घर मे सबसे छोटे थे इसलिये इन्हें मुन्नू मियां पुकारा जाता था, माशाअल्लाह ये भी अपने बाप-दादा के तरह बहुत हसीनो जमील थे, पाबन्द सोमसलात थे, इन्होंने तालीम हासिल करने के बाद कई प्राईवेट कँम्पनियों मे नौकरी किया इसी सिलसिले मे इनका बाहर मुल्कों मे भी जाना-आना लगा रहता था इनकी रिहाइश अटाला मोहल्ला शहर इलाहाबाद मे थी! इन्होंने भी कम उम्र मे इन्तक़ाल फ़रमाया और ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे दफ़्न हुएं! इनकी शादी अन्जुम बीबी से हुई जो इलाहाबाद के ही अइहापुर की रहने वाली ख़ातून हैं जिनसे चार बेटे सैय्यद शाह सोबान अहमद क़ुत्बी व सैय्यद शाह फैज़ान अहमद क़ुत्बी व सैय्यद शाह अदनान अहमद क़ुत्बी व सैय्यद शाह

गुलफ़ाम अहमद क़ुत्बी और दो दुख़्तर सैय्यदा क़नज़ीना फ़ातिमा व सैय्यदा रुबीना फ़ातिमा हैं! इन सबकी शादी हो चुकि है और साहिबे औलाद हैं!

(2) सैय्यद शाह इसरार अहमद क़ुत्बी उर्फ़ इस्मू मियां- हज़रत सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के मंझले फ़रज़न्द सैय्यद शाह इसरार अहमद क़ुत्बी बहुत वजीह और हिम्मतवर शख़्स थें और शिकार का बहुत शौक रखते थें, मशहूर है कि आपने एक ऐसे घड़ियाल को मारा था जो कई इंसानों और जानवरों की जान ले चुका था, जिसकी शोहरत ज़िला प्रतापगढ़ मे हमेशा रही! आप अपने जवानी मे एक मर्ज़े मोलिक़ के सबब बग़ैर शादी शुदा ही फ़ौत हो गयें और ख़ानकाह शरीफ़ मे दफ़्न हुएं!

(3) हज़रत सैय्यद शाह मोहिउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ छोटे मियां रहमतउल्लाह अलैह-

"रईस-ए-मानिकपुर
मिस्ल हसन क़ल्बी
इस्म शरीफ़ है जिनका
सैय्यद मोहिउद्दीन क़ुत्बी"

हज़रत सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुत्बी के सबसे छोटे फ़रज़न्द और इस मुसन्निफ़ के दादा मोहतरम निहायत बावक़ार, ज़ी इल्म साहिबे जाह-हश्म, आबिद और ज़ाहिद, शबज़िन्दादार, इबादतगुज़ार, अपने रिश्तेदारों के हालात से बाख़बर रहने वाले और दीगर तमाम इन्सानी कमालात मे मुज़य्यन व कामिल शख़्स का नाम सैय्यद शाह मोहिउद्दीन क़ुत्बी था! अल्लाह ने आपको ऐसे ख़ानदान आली वक़ार मे पैदा फ़रमाया जो हर निस्बत से हर दौर मे अफ़ज़ल व आला रहा है, चाहे वो बुज़ुर्गी के एतबार से हो चाहे हसब नसब के या चाहे दौलत और रईसी के एतबार से हो! चूंकि आप अपने घर मे सबसे छोटे थे इसलिये आपको छोटे मियां के लक़ब से नवाज़ा गया और बाहर आपको लोग बन्ने मियां भी कहते थे! आप मानिकपुर खानकाह शरीफ़ मे ही पैदा हुए आपका नाम हज़रत सैय्यदना ग़ौसुलवरा मोहिउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतउल्लाह अलैह के नाम की मुनास्बत से सैय्यद शाह मोहिउद्दीन रखा गया! अपने वालिद और बड़े भाईयों के दामने शफ़क़त मे पले बढ़े और दीनी दुनियावी इल्म से आरास्ता और पैरास्ता हुए! चूंकि आपके बड़े भाई सैय्यद इसरार अहमद क़ुत्बी ने शादी नही फ़रमाई थी इसलिये अपनी सारी जायदाद को आपके नाम कर दिया था जिससे आप अपने ख़ानदान में भी दोहरी जायदाद के मालिक हो गयें और इस एतबार से आप अपने और अपने बड़े भाई की जायदाद की वजह से सारे मानिकपुर और अपने ख़ानदान मे भी सबसे बड़े ज़मींदार हो गयें थे! आपके इबादत का तो ये आलम था कि सारा दिन इबादत और रियाज़त मे काटते और सारी रात तहाज्जुद मे कटती थी बस कुछ ही देर आराम फ़रमाते थे, मेरे वालिद बताते हैं कि दादा मोहतरम की नमाज़ पूरी ज़िन्दगी मे जब से फ़र्ज़ हुई तबसे लेकर आपके इन्तक़ाल तक कभी भी कज़ा नही हुई! आप निहायत सख़ी और दरियादिल भी थे आपने अपने जायदाद का बहुत सा हिस्सा उन ग़रीबों के नाम कर रखा था जो इस ख़ानदान की ख़िदमतगुज़ारी मे रहते थें, आप इस क़द्र सीधे थे कि कभी किसी को एक उँगली तक न छुलाया क्या अच्छा क्या बुरा सभी से हुस्ने सुलूक़ से पेश आते थें! सब्र का आलम तो ये था कि इतनी बड़ी रियासत ख़त्म होने पर भी कभी ख़ुदा से कोई शिकवा न किया और हमेशा ख़ुदा का शुक्र अदा करते रहें और यही दर्स हम लोगों को भी देते **रहें**! आपको हज़रत पीर क़ासिम शाह रहमतउल्लाह अलैह से जिनका मज़ार मुबारक अन्दरून ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर है जो चिश्तिया सिलसिले के एक बहुत बड़े वली गुज़रे हैं बहुत लगाव रहा है, जब भी आप मानिकपुर जाते घंटों उनकी मज़ार मुबारक की सफ़ाई सुथराई करते और फ़ातेहा और क़ुरआन पाक की तिलावत करते रहते थें, और इसका नतीजा ये हुआ कि हज़रत पीर क़ासिम शाह रहमतउल्लाह अलैह ने आप पर ऐसी नज़रे इनायत फ़रमाई कि हमेशा के लिये अपने क़दमों मे आपकी आरामगाह मुक़र्रर करदी! आपका इन्तक़ाल सन् 1996 ई. मे बहत्तर साल की उम्र मे इलाहाबाद मे हुआ और हज़रत पीर

क़ासिम शाह रहमतउल्लाह अलैह के पैताने ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे दफ़्न हुएं! दादा हुज़ूर के विसाल के बाद वालिदे मोहतरम ने क्या ख़ूब शेर कहा था कि ***''मुझे ख़बर न थी मंज़िल है दो क़दम आगे, ये बात वाज़ेह हुई बाद मेरे मरने के!***

औलादें- आपकी शादी सैय्यदा ख़ातून बीबी बिन्त सैय्यद शाह यूसुफ़ अशरफ़ जायसी उर्फ़ बब्बू मियां से हुई (आप औलाद हज़रत सैय्यदना मख़दूम जहाँगीर अशरफ़ समनानी किछौछवी रहमतउल्लाह अलैह से थें हज़रत सैय्यदना मख़दूम जहाँगीर अशरफ़ समनानी रहमतउल्लाह सिम्नान के सुल्तान थें खुदा के हुक्म से तख़्तो ताज को ठुकरा कर दर्वेशी अख़्तियार करली और सिम्नान से किछौछे तशरीफ़ ले आएं जहां आज भी आपका रूहानी फैज़ आपके मज़ारे अक़दस से जारी और सारी है!) जो निहायत आबिदा ज़ाहिदा सख़ी दरियादिल ग़रीबों से मोहब्बत रखने वाली और पर्दानशीन ख़ातून थीं जिनके बत्न से तीन फ़रज़न्द (1) सैय्यद शाह सलाहउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ वसीम मियां (2) सैय्यद शाह शम्सउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ बब्बू मियां (3) सैय्यद शाह नजमुद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ नजमी मियां हुएं और पाँच दुख़्तर (1) सैय्यदा इक़बाल फ़ातिमा ज़ौजा सैय्यद इसरार अहमद बांदवी (2) सैय्यदा इशरत फ़ातिमा ज़ौजा मुख़तार अहमद (3) सैय्यदा अफ़रोज़ फातिमा ज़ौजा सैय्यद जलालउद्दीन हैदर (4) सैय्यदा रईस फ़ातिमा ज़ौजा सैय्यद मेराज अशरफ़ जायसी (5) सैय्यदा शहनाज़ फ़ातिमा ज़ौजा शाह सलीम आलम हुसामी मानिकपुरी हुई!

(1) सैय्यद शाह सलाहउद्दीन क़ुत्बी- मुसन्निफ़ के बड़े बाप निहायत दरियादिल और ज़िन्दादिल शख़्स हैं, छोटे बड़े हर किसी से हँसी मज़ाक का ताल्लुक़ क़ायम किये रहते हैं और ख़ुश रहते हैं! लकड़ी का कारोबार अर्से से कर रहे हैं और कामियाब हैं! इनकी शादी अतिया बेगम बिन्त रफ़ीक़ अहमद सिद्दीक़ी से हुई है जिनसे चार फरज़न्द सैय्यद शाह इमरान अहमद क़ुत्बी, सैय्यद शाह कामरान अहमद क़ुत्बी, सैय्यद शाह दानिश अहमद क़ुत्बी, व सैय्यद शाह फ़ैज़ान अहमद क़ुत्बी और तीन दुख़्तर सैय्यदा आरज़ू वसीम (ज़ौजा सैय्यद इज़हार अहमद) सैय्यदा शिमरोज़ फ़ातिमा (ज़ौजा राशिद अली) व सैय्यदा इमराना ख़ातून (ज़ौजा अशरफ़ुल हुदा) हुई हैं!

सैय्यद शाह इमरान अहमद क़ुत्बी- ये भी अपने वालिद के तरह हँसी मज़ाक़ और चुटकुलेबाज़ी के काफ़ी शौकीन हैं और ख़ुशो ख़ुर्रम रहते हैं! प्रापर्टी का काम करते हैं और इस पेशे मे कामियाब हैं! इनकी शादी सदफ़ फ़ातिमा बिन्त मक़सूद अहमद जाफ़री से हुई है जिससे एक बेटा सैय्यद रय्यान अहमद क़ुत्बी हुआ है!

(2) **हकीम सैय्यद शाह शम्सउद्दीन क़ुत्बी-** मुसन्निफ़ के वालिद मोहतरम अपने बाप दादा के तरह निहायत इबादत गुज़ार मुत्तक़ि परहेज़गार तहाज्जुद गुज़ार और ग़रीबो से इन्तहाई मोहब्बत रखने वाले शख़्स हैं! चूंकि इस मुसन्निफ़ की पैदाइश के छ: महीने बाद ही मानिकपुर से मुन्तक़िल होकर इलाहाबाद मे सुकूनत पज़ीर हुए और यहीं दोंदीपुर मोहल्ले मे छब्बीस साल से हकीमी की प्रेक्टिस कर रहें हैं जिसमे अल्लाह ने निहायत शोहरत और कामियाबी अता की है और न सिर्फ़ मुल्क के लोगों ने बल्कि बैरूने हिन्द के लोगों ने भी इनके हाथों बड़े-बड़े अमराज़ मे शिफ़ायाबी हासिल की है! ख़िदमते ख़ल्क मे हर वक़्त पेश पेश रहते हैं, दुआ तावीज़ और दवा हाजतमंदो को बग़ैर पैसे बाटते रहते हैं, बाप दादा से बख़्शा हुआ एक नक्श है जो मोहर्रम के दस तरीख़ को चाँदी के पत्ते पर लिखा जाता है ख़ास तौर पर लोगों मे शोहरत हासिल कर चुका है और जिससे दुनिया के कोने कोने के लोग फ़ैज़याब हो चुके हैं! आप अपने भाईयों मे सबसे ज़्यादा लायक़ और माँ बाप की सबसे ज़्यादा ख़िदमत करने वाले थे इसीलिये वालिदैन हमेशा इन्हीं के साथ रहें जिनसे इनका घर हमेशा रौशन रहा और जिनकी दुआओं का समरा आज तक इन्हें हासिल है और लोगों के दरमियान वाजिबुल इज़्ज़त और ताज़ीम हैं, इनकी बुज़ुर्गी की शोहरत दिन ब दिन बढ़ती जा रही है! इन्होंने अपने हक़ीक़ी बहनोई सैय्यद शाह मेराज अशरफ़ जायसी सज्जादा नशीन दरगाह मख़दूम अशरफ़ समनानी रहमतउल्लाह अलैह से बैअत की है जो ख़ुद भी एक बुज़ुर्ग सिफ़त शख़्स हैं जो नाएब ओर ख़लीफ़ा हज़रत सैय्यद शाह जलाल अशरफ़ रहमतउल्लाह अलैह जैसी बुज़ुर्ग शख़्सियत के हैं!

सैय्यद शाह शम्सउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ बब्बू मियां की शादी सैय्यदा अनीस फ़ातिमा बीबी बिन्त सैय्यद मुहम्मद हाशिम इब्न सैय्यद मुहम्मद आक़िल बांदवी से हुई थी (सैय्यद मुहम्मद आक़िल रईसे बांदा थे लेकिन आपकी आपके भाईयों से जायदाद के मसले को लेकर कुछ रन्जिश हो गई थी जिसके सबब आपने अपनी सारी जायदाद अपने भाईयों को दे दिया और ख़ुद कुण्डा ज़िला प्रतापगढ़ मुन्तक़िल हो गयें इनके जद् मे सैय्यद मुहम्मद ख़ालिद साहब ने अपनी एक बहुत बड़ी जायदाद डी.ए.वी (D.A.V) इण्टर कालेज को (donate) कर दिया था जो उस वक़्त एक ग़रीब बच्चों के लिये खोला गया था! क़ज़ियाना मर्दननाका ज़िला बांदा मे आज भी इनकी पुश्तैनी हवेली और ज़मीने मौजूद है जिसको अब दूसरे लोगों ने कब्ज़ा कर रखा है (डी.ए.वी (D.A.V) इण्टर कालेज ने आज ग़ैर मामूली शोहरत हासिल कर रखी है जिसकी शाख़ें तक़रीबन आज पूरे एशिया (Asia) मे मौजूद है)! चूंकि सैय्यद मुहम्मद आक़िल बांदवी साहब मवेशी डाक्टर थें तो इसी पेशे मे आपने काफ़ी शोहरत कमाई अल्लाह ने आपको काफ़ी दौलत और ज़मीन जायदाद का मालिक बना दिया! आपके कई बेटे थें जिनमे सबसे बड़े बेटे का नाम सैय्यद मुहम्मद हाशिम था जो निहायत वजीह बारोब शख़्स थें जो इबादत इलाही मे हमेशा मसरूफ़ रहने वाले निहायत सख़ी और ग़नी थें, चूंकि आप भी डाक्टर थें इसलिये आपने भी काफ़ी दौलत और शोहरत कमाई कुण्डा ज़िला प्रतापगढ़ मे आपकी बहुत शोहरत थी! आपका इन्तक़ाल रमज़ानुल मुबारक में तरावीह पढ़ते हुए हुआ था! आपने लातादाद ग़रीबों यतीमों और बेवाओं की मदद की थी जिसका खुलासा आपके विसाल के बाद हुआ और ऐसी बुज़ुर्ग शख़्सियत की सबसे छोटी बेटी का नाम सैय्यदा अनीस फ़ातिमा था जिसकी औलाद होने का शर्फ़ इस मुसन्निफ़ को ख़ुद हासिल है!

वालिदा माजिदा सैय्यदा अनीस फ़ातिमा बिन्त सैय्यद मुहम्मद हाशिम इब्न सैय्यद मुहम्मद आक़िल बान्दवी की पैदाइश कुण्डा ज़िला प्रतापगढ़ मे हुई, आप सिर्फ़ एक भाई से बड़ी और सब मे छोटी थीं! चूंकि मेरी बड़ी फूफी सैय्यदा इक़बाल फ़ातिमा की शादी मेरे मामू सैय्यद इसरार अहमद से हुई थी इस लिये मेरे घर वालों का मेरे ननिहाल आना जाना रहता था मेरे वालिद भी वहां जाते रहते थे और सबसे मज़े की बात तो ये है कि मेरी वालिदा का रिश्ता लेकर दूसरे मक़ामों पर ख़ुद मेरे वालिद मेरी नानी के साथ जाते रहते थें लेकिन उन रिश्तों मे कुछ न कुछ नक़्स होने के सबब रिश्तों से इनकार होता चला गया शायद इसलिये कि ख़ुदा को कुछ और ही मन्ज़ूर था! एक दिन मेरे नाना के घर हज़रत हबीबुर्रहमान साहब क़िब्ला रईसे उड़ीसा जलवागर थें जिनसे मेरे नाना नानी बैअत थें और वहीं मेरे वालिद साहब भी मौजूद थें इतने मे उन्होंने मेरे वालिद साहब के मुताल्लिक़ मेरे नाना से पूछा कि ये कौन है? उस पर मेरे नाना ने बताया कि ये सैय्यद ज़ादे और पीर ज़ादे ख़ानकाह मानिकपुर शरीफ़ हैं, इतना कहना था कि हबीबुर्रहमान साहब ने मेरे वालिद को गले से लगा लिया और एक रसगुल्ला मुँह मे खिलाया और नाना जान से फ़रमाया इतना आला ख़ानवादे का फ़र्द मौजूद है और आप बेटी जान का रिश्ता कहीं और तलाश रहे हैं, बस फ़िर क्या था मेरे नाना ख़ुशी ख़ुशी इस रिश्ते के लिये तैयार हो गये और इस तरह मेरे वालिद और वालिदा की शादी हुई और ऐसी शख़्सियतों की औलाद होने का मुझे शर्फ़ हासिल हुआ!

मेरी वालिदा को ख़ानदान वाले बाजी के उर्फ़ से पुकारते थे जो निहायत नेक सीधी आला इख़लाक और बलन्द किरदार की मालिक थीं, मैने अपनी पूरी ज़िन्दगी में अपनी वालिदा और दादी से बढ़कर औसाफ़े हमीदा मे कामिला औरते नही देखा क्या अपने क्या ग़ैर कोई ऐसा नही था जो इनके बलन्द किरदार से वाक़िफ़ नही था, रहमदिली और दरियादिली का आलम तो ये था कि कोई फ़क़ीर दरवाज़े से कभी ख़ाली हाथ नही लौटता था, जितना अपने बच्चों से मोहब्बत करती थीं उतना ही दूसरो के बच्चों को चाहती थीं, ख़ानदान वालों और पड़ोसियों को जिस वक़्त भी आपकी मदद की ज़रूरत होती आप चारो हाथ पैर से उनकी मदद के लिये तैयार हो जातीं चाहे आपको ख़ुद जितनी भी तकलीफ़ उठाना पड़ जाये घर मे ख़ानदान वालों और मेहमानों की आमदो रफ़्त साल के बारह महीने रहती लेकिन कभी आपको इज़तिराब न होता और सारा सारा दिन लोगों के इलहान सुबहान मे गुज़र जाता था! मैने पूरी ज़िन्दगी मे अपनी वालिदा को किसी से बदसुलूकी करते ना पाया, ख़ानदान मे कभी किसी से कोई बात हो भी जाती तो उस से मिलने मे ख़ुद पहल करती थीं, घर का सारा काम ख़ुद ही निपटातीं और अपने ताक़त रहने तक कभी किसी ख़ादमा को नही रखा, और इसी बेपनाह मेहनत और मशक़्क़त के सबब दिन ब दिन तबियत ख़राब होती गई और सेहत गिरती गई जिसके सबब काफ़ी बिमारियों ने आ घेरा ब्लड प्रेशर की

मरीज़ रहने लगीं जिसकी मुसलसल दवाएं चलती रही और इसी दवाओं की इन्तेहा और खाने पीने में लापरवाही से आपके दोनो गुर्दे ख़राब हो गयें इस मर्ज़े मोलिक़ में आपने मुसलसल दो महीने तकलीफ़ उठाई लेकिन ज़ुबान से उफ़ तक न किया और إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ कहती रहीं (बेशक आप साबिरा थीं) और फ़िर ऐसा ख़ामोश हुईं कि कभी न बोलीं और बाईस (22) जुलाई सन् 2012 यक शँम्बे के दिन एक रमज़ानुल मुबारक को मुसन्निफ़ के पहलू में आख़री तीन हिचकियाँ लिया और रब्बे हक़ीक़ी से जा मिलीं! उस साल रमज़ान के चाँद को लेकर कुछ इख्तिलाफ़ात लोगों के बीच मचा था जिसमे कुछ ने 21 जुलाई को पहली तारीख़ समझकर रोज़े रखे और कुछ ने नही रखे लेकिन अल्लाह की मशीयत तो देखिये आपको दूसरे दिन जिस दिन ये साफ़ तौर पर वाज़ेह हो गया कि आज रमज़ानुल मुबारक है उस दिन अपने पास बुलाया कि जिसमे किसी के दिल मे कोई पशोपेश न रह जाए अलहम्दुलिल्लाह मेरी वालिदा ने ऐसी क़िसमत पाई (अल्लाह हम सब को अपना बर्गुज़ीदा बंदा बनाए आमीन) और इस तरह पूरे साफ़ तौर पर आप एक रमज़ानुल मुबारक को इस दुनियाए फ़ानी से कूच कर गईं!

ग़मे फ़ुरक़त मे अब सुबहो शब कटती है
कलेजा शक होता है, आँखे नम होती है
मै अपने ग़म को मुस्कुराहट मे छुपाता हूँ
ये नादाँ दुनिया मुझे ख़ुशहाल समझती है
ज़ुबाँ ख़ुश्क हो जाती है कलेजा कटता है
जब माँ की याद आती है सीना फ़टता है
माँ ख़ुदा की अज़ीम न्यामत है, आँखो का नूर है
माँ कि जुदाई के बाद ये दुनिया नाबीना लगती है
कहता है ज़माना भूल जाओ, एक दिन सबको है जाना
उस दिन के लिये मेरी रूह बेचैन है, तड़पती है
भूलेगी कैसे मेरी आँखे वो मन्ज़र
जब मेरी ही माँ मेरे पहलू मे तड़पती है
ग़मे फ़ुरक़त मे अब सुबहो शब कटती है
ग़मे फ़ुरक़त मे अब सुबहो शब कटती है
हमेशा आपके दुआओं का तलबगार आपका फ़रज़न्द- सैय्यद क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (आक़िब)

अल्लाह ने आपके बत्न से हम पाँच भाई बहनों को पैदा फ़रमाया यानी तीन भाई सैय्यद शाह ग़यासउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद साक़िब व सैय्यद शाह निज़ामउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद सादिक़ व सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद आक़िब (मुसन्निफ़ इस किताब का) और दो बहन सैय्यदा शम्स फ़ातिमा उर्फ़ चाँद बीबी (ज़ौजा असद इलियास अलवी) व सैय्यदा नूर फ़ातिमा उर्फ़ नूरी बीबी (ज़ौजा मुहम्मद इरफ़ान फ़ारूक़ी)!

सैय्यद शाह ग़यासउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद साक़िब- मुसन्निफ़ के बड़े भाई, इनकी पैदाइश ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे हुई, शुरु की तालीम दादा मोहतरम हज़रत सैय्यद शाह मोहिउद्दीन क़ुत्बी रहमतउल्लाह अलैह के दामने शफ़क़त मे पाई फिर शहर इलाहाबाद से हाईयर सेकेण्डरी और सीनियर सेकेण्डरी पास किये और उसके बाद फ़ाज़िले तिब किया और साथ साथ मदरसा ऐजूकेशन बोर्ड से

मौलवी और आलिम के एग्ज़ामिनेशन पास किया और अब वालिद साहेब के साथ हकीमी के पेशे से जुड़े हैं और इस फ़न मे काफ़ी माहिर हो गये है! इनकी शादी 29 दिसम्बर सन् 2001 मे नसीम फ़ातिमा बिन्त अहमद ज़करिया अलवी से हुई है जिनसे तीन बेटियाँ सैय्यदा फ़ातिमा ज़ैनब उर्फ़ इल्मा क़ुत्बी, सैय्यदा फ़ातिमा सुकैना उर्फ़ नशरह क़ुत्बी व सैय्यदा फ़ातिमा ज़ैहरा बीबी हुई हैं जो निहायत वजीह ख़ूबसूरत और सबकी चहीती हैं! इल्मा और नशरह अभी तालिबे इल्म हैं दीन और दुनिया दोनो का इल्म हासिल करने मे लगी हैं अल्लाह इनके इल्म मे मज़ीद इज़ाफ़ा करे आमीन!

सैय्यद शाह निज़ामउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद सादिक़- इनकी पैदाइश भी ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे हुई, शुरु मे दीनी तालीम हासिल किया, फिर शहर इलाहाबाद से हाईयर सेकेण्डरी और सीनियर सेकेण्डरी पास किया फिर ड्राफ़्ट इंजीनियरिंग मे डिप्लोमा हासिल किया, आजकल मुम्बई मे हैं और वहाँ बड़े-बड़े बिल्डिंगो का नक्शा बनाते हैं और अब तो अपनी नीजी कँसट्रक्शन कम्पनी खोल रखा है जो मदनी एसोसियेट्स (madni associates) के नाम से मशहूर है और मुम्बई मे ही क़याम पज़ीर हैं! इन्होंने अपनी पसन्द से इलाहाबाद की रहने वाली एक ख़ातून नूर सबा बिन्त मतीन अहमद से अक़्द कर लिया जिनसे बेटी सैय्यदा इरा क़ुत्बी हुई हैं!

सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद आक़िब- ख़ाकसार को अमीर सैय्यद क़ुतुबुद्दीन बिन सैय्यद शम्सुद्दीन बिन सैय्यद मोहिउद्दीन बिन सैय्यद ज़किउद्दीन बिन सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी पीरज़ादा मानिकपुर कहते हैं जो मानिकपुर ख़ानकह शरीफ़ में पैदा हुआ और अपने भाई बहनों मे सबसे छोटा है! शुरु के छ: महीने अपने आबाई मकान और वतन मानिकपुर मे क़याम रहा उसके बाद वालिद माजिद ने इलाहाबाद के एक मोहल्ले सैय्यदवाड़ा मे किराये का मकान लिया जिसमे कुछ दिन रिहाईश रही, फिर पत्थरगली और मिन्हाजपुर मे क़याम रहा और उसके बाद अपने ख़ुद के मकान जो करैली मे वाक़े है क़याम पज़ीर है! शुरु की तालीम दादा,दादी और वालिदा माजिदा के आग़ोशे शफ़क़त मे रहकर हासिल किया जो पूरी तरह दीनी थी जिसमे क़ुरआन पाक को मुकम्मल किया और कई सूरह बज़ुबानी याद किया जिसमे सूरह रहमान और सूरह यासीन ख़ास तौर पर शामिल थी फिर सिलसिला दुनियावी तालीम हासिल करने का हुआ जिसमे कई स्कूलों को बदलने के बाद बिलआख़िर सीनियर सेकेण्डरी और हाईयर सेकेण्डरी अच्छे नंबरों से पास किया फिर इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से बी.काम (B.com) ऐग्रीकल्चर से बी.ए (B.a) और शियाट्स (Shiats) से एम.बी.ए (M.b.a) के एग्ज़ाम्स पास किये और मदरसा ऐजूकेशन बोर्ड से मौलवी और आलिम के एग्ज़ामिनेशन पास किया और अब फ़ाज़िल कर रहा हूँ! मुझे हमेशा अपने अजदाद से बहुत लगाव रहा है घर मे दादी दादा और वालिद साहब से उनके बुज़ुर्गी, शुजाअत और जज़्बा-ए-जिहाद के बारे मे सुनता आया हूँ, चूंकि घर मे ख़ानदानी शज्रों और किताबों का ज़ख़ीरह रहा है जिसमे मेरे जद् मोहतरम हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद मानिकपुरी रहमतउल्लाह अलैह की लिखी किताब आईना-ए-अवध ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र रही है, उसका मुताला करता आया हूँ जिससे मेरे दिल मे हमेशा ये चाहत रही कि मै भी अपने इसलाफ़ के तरह अपने ख़ानदान पर कुछ लिखूं जिससे इस नस्ल के हर एक पुश्त के हालातो-वाक़्यात बयान हों जिससे इस ख़ानदान ज़ीवक़ार की बुज़ुर्गी पूरी तरह लोगों मे वाज़ेह हो जाये, बस फिर क्या था क़लम उठाया और लिखना शुरु किया जिसमे मेरे भाईयों ने मेरी हौसला अफ़ज़ाई किया और मेरा साथ देते रहें जिससे मेरे जुनून मे मज़ीद इज़ाफ़ा होता चला गया और अलहम्दुलिल्लाह इस किताब को एक मुकम्मल शक्ल मे उतार दिया! आख़ीर मे मै अपने बारे मे सिर्फ़ इतना ही कहूँगा बल्कि उस अशआर मे बयान करुँगा जो मेरे ख़ानदान के ही एक फ़र्द मरहूम सैय्यद तुफ़ैल अहमद मदनी क़ुत्बी साहब ने कहा था कि-

"मै क्या हूँ, कौन हूँ, कैसे अभी बताऊँ तुफ़ैल

अभी तो मेरा मुक़द्दर मेरी तलाश मे है"

सैय्यद शाह नजमुद्दीन क़ुत्बी- मुसन्निफ़ के चचा बड़े ज़हीन हैं, अपने दिमाग़ से ऐसी ऐसी चीज़े बनाते रहतें हैं कि लोग हैरान रह जाते हैं टेक्नोलोजी मे बहुत दिमाग़ पाया है अपने घर का नक्शा कि जिसमे इनकी रिहाइश है ख़ुद इन्होंने ही बनाया है! इनकी भी पैदाइश ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे हुई और अब लखनऊ मे रहते हैं, ज़मीन का कारोबार करते हैं और ख़ुश हैं! इनकी शादी शमशाद बानो बिन्त नबी अहमद सिद्दीक़ी से हुई जिनसे एक बेटे सैय्यद अहमद शाफ़ई क़ुत्बी और एक दुख़्तर सैय्यदा निदा क़ुत्बी (ज़ौजा सैय्यद शफ़क़त नज़र) हुई हैं!

सैय्यद अहमद शाफ़ई क़ुत्बी- इनकी पैदाइश ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे हुई है, मुसन्निफ़ का इनसे ख़ुसूसी लगाव रहा है क्योंकि इनके और मुसन्निफ़ के ख़यालात काफ़ी मिलते हैं इसलिए आपस मे ख़ूब पटती है, इन्होंने लख़नऊ से ही सारी तालीम हासिल करके शुरु मे कई प्राईवेट कम्पनियों मे काम किया और अब फ़न-सिटी रियल स्टेट कम्पनी मे काम कर रहे हैं जिसमे कामियाब हैं! इनकी शादी अज़मत फ़ातिमा बिन्त सैय्यद मेराज अशरफ़ जायसी से हुई है जिनके बत्न से दो फ़रज़न्द सैय्यद शाह ज़किउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ हुसैन और सैय्यद शाह ज़ैनुल आबिदीन क़ुत्बी उर्फ़ हमज़ा हुए हैं!

(3) सैय्यद शाह मोहम्मद अय्यूब उर्फ़ राजा मियां- सैय्यद शाह मोहम्मद अय्यूब बिन सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी की पैदाइश ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर मे हुई! इनके दो फ़रज़न्द सैय्यद रज़ी अहमद क़ुत्बी व सैय्यद हसन निज़ामी क़ुत्बी हुए! सैय्यद रज़ी अहमद क़ुत्बी की शादी सैय्यद इब्राहीम हसन क़ुत्बी रईस अइ्वह की साहबज़ादी से हुई, जिनसे दो फ़रज़न्द शाह अबुलआला उर्फ़ मियां लाल व शाह हसन ख़ालिद उर्फ़ राशिद हुए! मियां लाल आख़िर तक मानिकपुर मे रहें जबकि ख़ालिद हसन उर्फ़ राशिद इलाहाबाद मुन्तक़िल हो गयें और साहिबे औलाद हैं जबकि मियां लाल के दो फ़रज़न्द अक़ील अहमद व शकील अहमद और एक दुख़्तर हुई! बड़े बेटे अक़ील अहमद की शादी इलाहाबाद के रहने वाले सैय्यद इरशाद अहमद की बेटी उम्मे उज़मा से हुई जिनसे तीन साहबज़ादे मोहम्मद शाहिद मोहम्मद कैफ़ व मोहम्मद तैय्यब हुए और वो सब इलाहाबाद मे रहते हैं!

सैय्यद हसन निज़ामी क़ुत्बी- इनकी दो शादियाँ हुई, पहली शादी दुख्तर शाह हलीम अता सलवनी से हुई लेकिन ये जल्दी इन्तक़ाल फ़रमा गईं तो दूसरी शादी दुख़्तर सैय्यद सिराजुन्नबी हसनी क़ुत्बी से दायरा शाह इल्मउल्लाह तकिया कलाँ रायबरेली मे हुई और साहिबे औलाद हैं और वहीं क़यामपज़ीर हैं!

मानिकपुर ख़ानकाह शरीफ़ की और मख़दूम मानिकपुर हज़रत शाह मख़दूम हुसामउद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह के अजदाद की मुख़्तसर तारीख़-

जनाब हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद मानिकपुरी रहमतउल्लाह अलैह ने अपनी तसनीफ़ आईने अवध सफ़ा नम्बर 67 दफ़ा नम्बर 32 बहवाला किताब जज़्बुल क़ुलूब हज़रत मख़दूम हुसामुल हक़ मानिकपुरी रहमतउल्लाह अलैह के अजदाद के मुताल्लिक़ यूँ फ़रमाया है कि- जनाब सैय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाह अन्हु के शहादत के बाद यज़ीद पलीद के हुक्म पर वलीद बिन उक़बा ने हरावल लशकर होकर मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई कर दिया और क़त्ले आम शुरु कर दिया और मुद्दत तक मदीना मुनव्वरा वीरान रहा इसी फ़ितने मे हज़रत अमीर हसन बिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाह अन्हु मदीना से मुन्तक़िल होकर शहर यमन मे जा बसे जहां वो और उनकी औलाद शराए दीन-ए-मुहम्मदी की तालीम बाटने मे मसरूफ़ रहें फिर बइनक़िलाब ख़लीफ़ा-ए-अब्बासिया हज़रत अमीर हसन रज़िअल्लाह अन्हु के आठवें जानशीन हज़रत मौलाना शाह इस्माईल क़ुरैशी फ़ारूक़ी रहमतउल्लाह अलैह ने बख़ौफ़ फ़ितना क़याम अपना वहां मुनासिब ना जानकर फ़ारस आयें और फ़िर वहां से बतौर ख़ुद अहेद सुल्तान शम्सउद्दीन अल्तमश देहली पहुँचे लेकिन बवजह आरिफ़ बिल्लाह होने के किसी ख़िदमत सुल्तानी को पसन्द ना फ़रमा कर बहुक्म बातिन वतन मानिकपुर अख़्तियार किया तब हुज़ूर बादशाह से साठ बीघा अराज़ी मानिकपुर ख़ास मे जो अब ख़ानकाह के शक्ल मे है बग़रज़ तामीर मस्जिद ख़ानकाह मदरसा और मकानात के दी गई, बाद तामीर इमारत आपने अपने इल्म ज़ाहिर व बातिन से एक आलम को मुनव्वर फ़रमाया आपका मज़ार मुबारक चौकापारपुर है जो दरगाह मुल्क इमामउद्दीन से मिला हुआ है! हज़रत मौलान शाह इस्माईल क़ुरैशी फ़ारूक़ी रहमतउल्लाह अलैह के तीसरे पुश्त मे हज़रत शाह मख़दूम हुसामुद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह जैसी बर्ग़ुज़ीदा शख़्सियत ने जनम लिया जिनके नूर ज़ाहिर व बातिन से न सिर्फ़ मानिकपुर बल्कि ये पूरा आलम मुनव्वर हुआ और क़यामत तक रहेगा आप ख़लीफ़ा व मुरीद हज़रत नूर क़ुतुबे आलम पंडवी रहमतउल्लाह अलैह के है जो औलाद और ख़लीफ़ा हज़रत अलाउल हक़ पंडवी रहमतउल्लाह अलैह के हैं, आपको वलायत मानिकपुर बअहेद सुल्तान इब्राहीम शाह शरकी सन् 804 हिजरी 1402 ईस्वी, 854 हिजरी 1455 ईस्वी को तजवीज़ हुई, इस अजमाल की तफ़्सील बहवाला रफ़ीकुल आरफ़ीन ये है कि हज़रत शाह नूर क़ुतुबे आलम पंडवी रहमतउल्लाह अलैह ने मख़दूम शाह हुसामउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह को बाद तक्मील तमाम, पंडवा शरीफ़ से देहली लेजाकर बमजमा उलेमाएकिराम व मशाइख़ एज़ाम बैरूने दरवाज़ा दरगाह सुल्तानुल-मशाएख़ हज़रत निज़ामउद्दीन औलिया रहमतउल्लाह अलैह के बअताए ख़िरका ख़लाफ़त सरफ़राज़ फ़रमाया और दस्तार इमतियाज़ के अपने दस्ते मुबारक से मख़दूम साहेब के सर मुबारक पर बांधा और वलायत मानिकपुर पर मामूर फ़रमाया इस पर किसी ने अर्ज़ किया कि मानिकपुर के साहिबे ख़िदमत हज़रत नसीरउद्दीन रहमतउल्लाह अलैह आपके हमशीरा ज़ादे (भांजे) है और इज्तिमा दो साहिबे वलायत का एक जगह मुहाल है तब हज़रत के ज़ुबान मुबारक से ये इरशादो फ़रमान हुआ कि- ***नसीर ता नसीर, हुसाम ता क़याम!*** फ़िर मख़दूम पाक बहुसूल शर्फ़ दस्तूरी देहली से मानिकपुर मे तशरीफ़ लायें और मस्नदे सज्जादा रुश्दो इरशाद पर जलवागर होकर हर ख़ास व आम को अपने फ़ैज़ आम से माला माल फ़रमाया और इल्म बातिन को साथ इल्म ज़ाहिर के ऐसी तल्बीक़ दी कि किसी मशाइख़ व आलिम उस अस्र को बख़ैर तस्लीम के मक़ाम चूँ व चरा का बाक़ी ना रहा उस वक़्त से आज तक जिस क़द्र आलिम व मशाइख़ गुज़रे आपके इरशाद को बतौर तमस्सुक के इस्तदलाल करते हैं और अहले बातिन फ़ैज़याब मज़ार से इस वक़्त तक होते हैं और आपकी एक करामात अब तक ये जारी और सारी है कि हर नेक और बद जो इस दरगाह से जुड़ा है उसका ख़ात्मा बिल ख़ैर होता है!

जनाब अबुल क़ासिम अब्दुल सलाम हुसैनी हसवी ने अपनी किताब अन्साब अशराफ़ सफ़ा नम्बर-367 पर हज़रत शाह मख़दूम हुसामउद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह के मुताल्लिक़ इस तरह लिखा है- शाह हुसामुल हक़ मानिकपुरी जो अपने वक़्त के मशाइख़ और अकाबिर औलिया अल्लाह थे, एक अर्से तक इस ख़ानदान मे तज़किया व अहसान के इश्क की दुकान बरक़रार रही जहाँ से हज़ारो तिश्निगाने रूह ने फ़ैज़ हासिल किया और नसलन दर नसलन ये सिलसिला इस ख़ानदान मे चलता रहा और आपकी औलादों ने मुख़्तलिफ़ जगहों पर बूदबाश अख़्तियार किया और अपने इल्म ज़ाहिर व बातिन से उस ख़ित्ते को मुनव्वर फ़रमाया बफ़ज़्ले ख़ुदा तआला इस किताब का मुसन्निफ़ भी आपके सिलसिला-ए-औलादे दुख़्तरी मे पैदा होने का शर्फ़ रखता है जिसका खुलासा ये है कि- अमीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी उर्फ़ मुहम्मद आक़िब इब्न हकीम सैय्यद शाह शम्सउद्दीन क़ुत्बी (बब्बू मियां) इब्न सैय्यद शाह मोहिउद्दीन क़ुत्बी (छोटे मियां) इब्न हबीबुन्निसा बीबी बिन्त शाह अब्दुलसमद हुसामी मखदूमज़ादा मानिकपुर शरीफ़ जो चौदवें पुश्त मे औलाद मख़दूम हुसामउद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह के हैं!

मज़ार मुबारक हज़रत मख़दूम शाह हुसामउद्दीन हुसामुल हक़ रहमतउल्लाह अलैह (मानिकपुर)

इख़्तितामे किताब

मानिकपुर जिसकी सरज़मीं हमेशा तिश्निगाने रूह के लिए बाइसे आबे क़ौसर रही, जिसकी ख़ाक बीमारों और नादारों के लिए शिफ़ाए कामिला रही, जो हर वक़्त और हर दौर में रूहानी फ़ैज़ का बेबहा चश्माँ बहाती रही जिससे हर किसी की प्यास बुझी ख़्वाह वो मुशरिक हो या मोमिन नेक हो या बद और हर किसी को अपने दामन में पनाह देती रही और दीन दुनिया के लिए उसे रौनक़ बख़्श वजूद बनाती रही! इस मुबारक सरज़मीं को जिसे हज़रत क़ुतुबुल अक़ताब अमीर क़ुतुबुद्दीन मदनी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़तेह किया और इस्लामिक हुकूमत में शामिल कर दिया और फिर जिसे बादशाहों और फ़रमांरवाओं ने आरास्ता व पैरास्ता किया और बुज़ुर्गाने उम्मत ने अपने नूरे बातिन से मुनव्वर और मोअज़्ज़म फ़रमाया और जिसकी ख़ाके पाक (अक्सीर कीमिया) को नादारों, मुफ़लिसों, और हाजतमन्दों ने सर आँखों पर लगाया और इसी मुक़द्दस सरज़मीं की वो मुक़द्दस दर्सगाह (ख़ानकाह) जिसे अहेद सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश में हज़रत सैय्यदना शाह इस्माईल क़ुरैशी रहमतुल्लाह अलैह ने आबाद किया जिसको हज़रत शाह मख़दूम हुसामुद्दीन हुसामी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह क़ासिम रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत शाह अब्दुलकरीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वजूदे नूरानी से मुनव्वर और मामूर फ़रमाया और जिसे हज़रत सैय्यद शाह अबुल हसन क़ुत्बी शहीद रहमतुल्लाह अलैह (पीरज़ादा मानिकपुर) ने अपने हक़शनासी, बुर्दबारी, रहमदिली और अपनी रिआया से मोहब्बत और सुलहरहमी के सबब पूरे गिरदोनवाह में एक नई रौनक़ बख़्शी और जिसकी अज़मत हर अदना और आला बख़ुशी बजा लाया और सर ख़मे ताज़ीम रखा अफ़सोस कि इस ख़ानदान की औलादों का दूसरे मक़ामों में सुकूनत अख़्तियार कर लेने के सबब ये आज अपनी रौनक़ और अज़मत खो बैठी और सिर्फ़ यादे पारीना के तौर पर दुनिया को अपने उजड़ जाने की दास्ताँ सुना रही है!

"हयाते दाईमी नज़र आयी दयारे पारीना में

बजा होता है शुमार इस दर का दरे मदीना में"

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से मेरी यही दुआ है कि इस ख़ानदान की औलादों को इस सरज़मीं से उतनी ही उन्सियत हो जाये जैसे इनके बुज़ुर्गों को थी और वो इस मुक़द्दस ख़ानकाह को फिर से आबाद करें और अपने हुक़ूक़ को जो इनका इस ख़ाके पाक से और इनके बुज़ुर्गों से है उसकी पूरी अदायगी करें कि जिससे बुज़ुर्गों का क़ुर्ब हासिल हो और वो दीन दुनिया में सुर्ख़रूह हो सकें और अपनी ख़ुशबुओं से दुनिया के गोशे-गोशे को महका दें आमीन या रब्बुलआलमीन!

"होती है जुदा ख़ुशबू गुलों में गुलाब की

जैसे है मिस्ल दुनिया में ख़ानदाने अबु तुराब की"

और आख़ीर में इस किताब का इख़्तिताम उस मरसिया से कर रहां हूँ जो सैय्यद शाह वजीह अहमद क़ुत्बी (बस्सन मियाँ) (हाल मुक़ीम क्लिफटन करांची पाकिस्तान) ने ख़ानकाह शरीफ़ मानिकपुर की याद में लिखकर दादा हुज़ूर हज़रत सैय्यद शाह मोहिउद्दीन क़ुत्बी (छोटे मियां) रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पेश किया था और आप सब से दुआओं का तलबगार हूँ साथ ही साथ ये इल्तिजा भी करता हूँ कि मुसन्निफ़ से इस किताब को लिखने में कोई ग़लती या कमीबेशी हुई हो तो उसकी इत्तिला फरमां कर इस्लाह करें, मुसन्निफ़ ममनून रहेगा!

मरसिया-मानिकपुर

दीदनी है घरों की वीरानी
वैहशतें कर रहीं हैं दरबानी
हर तरफ़ एक सकूत है तारी
जाने ये ख़्वाब है कि बेदारी
रास्तों का कोई सुराग़ नही
दूर तक अब कोई चिराग़ नही
किस बियांबाँ मे खो गयीं गलियाँ
ख़ूब जागी थी सो गयीं गलियाँ
राहगीरों का दिल है घबराता
कोई रहरू नज़र नही आता

(2)

ज़िन्दगी थी जहाँ मज़ारों पर
मुर्दनी है वहां बहारों पर
कोई मोनिस है और न हमदम है
हर बरोठे मे 'हू' का आलम है
चेहरे उतरे हुए है ज़ीनो के
मुन्तज़िर हैं मकाँ मकीनों के
हर घड़ी इन्तेज़ार मे गुज़री
चौखटों को शौक़े पा-बोसी
आखें पत्थरा गई हैं ताक़ों की
नही झपकी पलक दरीचों की
कोई तो आये आके दस्तक दे
थक गयें राह तक के दरवाज़े
अपनी बरबादियों पर है हैरान
हर तरफ़ रोब आफ़रीं दालान

(3)

याद माज़ी है सुरंगों मे पड़े
छत के पंखों के डोरियों के कड़े
आयें छज्जों को नींद के झोकें
पाँव थक थक गयें है ज़ीनों के
गयी रौनक़ वो महजबीनों की
गोद ख़ाली है वो शहनशीनों की
साएबां सायं सायं करते हैं
ख़ाली दालाँ आह भरते हैं
इन दरों से निकल कर तख़्त गयें
तख़्त के साथ घर के बख़्त गयें
यही लिखा था इन नसीबों में
चौकियाँ बट गयी ग़रीबों में
बन के आंसू टपक गयें ईंटे
सहेन ख़ाली थे भर गयें ईंटे

(4)

डेरे वीरानियों ने डाले हैं
हर तरफ़ मकड़ियों के जाले हैं
थी मुनव्वर जहाँ पर क़न्दीलें
वहाँ लटकी है अब अबाबीलें
छत के पंखो के गिरेबां है चाक
ख़स की टट्टी हुई ख़सो-ख़ाशाक

मतबख़ों का बुझा हुआ दिल है — एक निशानी घिसी हुई सिल है
ना दिया कुछ सुराग़ फूलों ने — कई चक्कर किये बगूलों ने
सिर्फ़ लौ दे रहें हैं दिल के दाग़ — कोई जलता नहीं कहीं पे चिराग़
फिर भी आ जाये गर कोई ग़मख़्वार — पूछते है यही दरो-दीवार

(5)

मेरे ख़ातिम के वो नगी है कहाँ — मेरे मालिक मेरे मकीं है कहाँ
जिनके दम से खिला था भाग मेरा — जिनसे क़ायम रहा सुहाग मेरा
जिनसे थी मेरे मांग मे अफ़शाँ — वो सितारे बिखर गयें हैं कहाँ
सो गयें मेरे चाहने वाले — वज़अ अपनी बनाने वाले
दिले महज़ों पे मैने जब्र किया — मरने वालों पे ख़ैर सब्र किया
जो मगर मुझसे जीते जी बिछड़े — वो न भूलें हैं और ना भूलेंगे
जिनको गोदों मे मैने पाला था — जिनसे घर घर मेरे उजाला था

(6)

ऐसे भूले कि फिर ख़बर ही न ली — लौट कर मुझपे फिर नज़र भी न की
मेरी क़िसमत बिगाड़ कर निकलें — कोख मेरी उजाड़ कर निकलें
घर से भैया गयें बदल कर भेस — मेरी बिटिया बसा गयें परदेस
डोरियां अपने प्यार की तोड़ी — अपने बाबा की चौखटें छोड़ी
यहीं उतरीं थी जिनकी बारातें — इन्हीं आँगन मे थी मदा रातें
दाग़ दिल इनको अपने दिखलाऊँ — कोई क़ासिद मिले तो कहला दूँ
आग दिल मे मेरे लगाते हैं — रो के सावन तुम्हें बुलातें हैं

(7)

ख़ून दिल हो रहा है मेंहदी का — ख़ुश्क हर पेड़ है चंम्बेली का
कौन इनको गले का हार करे — कौन आकर यहाँ सिंघार करे
सारी झूलों की रस्सियाँ टूटी — कोयलें' कूक कूक कर हारी
अब वो भाई कहाँ बुलायें जो — अब वो बहने कहाँ कि आयें जो
दिल पे घड़ियां अजीब गुज़री हैं — चुनरियाँ दाग़ दाग़ बिखरीं हैं
अपने अश्को से मुँह को धोती हैं — 'नाईने' हाथ मल के रोती हैं

मेरी गलियों का वो सिंघार कहाँ अब वो डोली कहाँ कहार कहाँ

(8)

तख़्त थे मेरे तमक्नत का निशाँ चाँदनी चाँदनी पे थी चिराँ
अन्जुमन थी ये पाकबाज़ों की चौकियाँ थी यहाँ नमाज़ों की
फूल खिलते थे ख़ासदानों मे ढकने बजते थे पानदानों के
दीदनी था पटारियों का सिंघार रंग पर थी गिलोरियों की बहार
हुस्न मेरा था डोलियों मे नहा ज़र्फ़ मेरा था आंगनों से अयां
दौलतें बे हिसाब थी मुझमे रहमतें 'अबु तुराब' थी मुझमे
नाज़ मुझको न सरवरी पे रहा मेरा तकिया कलन्दरी पे रहा
जाम हर एक तिश्ना लब को दिया गौहर बे-बहा अदब को दिया

(9)

नुदरतें दी बयाँ को मैंने वुसअतें दी ज़ुबाँ को मैंने
मैंने नादिर को नुदरतें बख़्शी मैंने मोहसिन को जिदअतें बख़्शी
हर ज़ुबाँ पर मेरा क़सीदा था सिम्त काशी से जानिब मथ
फ़ायदा क्या ज़ुबाँ पर लाकर मैने सब कुछ लुटा दिया तुम पर
अब बसेंगे कभी न वीराने जा के कह दो ये ग़मगुसारों से
मेरी बिछड़ी हुई बहारों से मेरे दीदार को चले आओ

अपनी सूरत ज़रा दिखा जाओ!

मुसन्निफ़- अमीर सैय्यद शाह क़ुतुबउद्दीन क़ुत्बी (मुहम्मद आक़िब)